श्री मदाद्य रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य

श्री १००८ श्री रामदासजी महाराज की

वाणी

(सम्प्रदाय के इतिहास एवं साहित्य-समीक्षण सहित)

प्रधान सम्पादक

वर्तमान खेड़ापा पीठाधीश्वर

श्री १०८ श्री हरिदासजी महाराज

दर्शनायर्वेदाचार्य बी ए

प्रो० रामप्रसाद दाधीच

हिन्दी विभाग,

जसवन्त कॉलेज, जोधपुर

प्रकाशक

श्री मदाद्य रामस्नेहि साहित्य शोध प्रतिष्ठान

प्रधान पीठ, खेड़ापा (जोधपुर)

श्रीरामो जयति

***

निरद्वंदी नह कामना, सिवरं सिरजनहार ।
रामदास साधू इसा, सबसों पर-उपगार ।।
जग सेती रूठा रहै, सांई सेती प्यार ।
रामा ऐसे साधु का, छाना नहिं दीदार ।।

[श्री रामदासजी महाराज]

***

बानी सुखदानी विमल श्री रामदास महाराज की
अद्भुत आनन्दकन्द द्वन्द्व मायाकृत कटि है
आदि अन्त सिद्धान्त दान्त ररकार सुरटि है
अनआतम अध्यास म्यासकृत निश्चय हर है
गुरुगम करत विचार पार भवभूलजु पर है
मनुसृष्टि वृष्टि प्रश्न हु करत घनघुमड मृदु गाज की
बानी सुखदानी विमल श्रीरामदास महाराज की

[श्री दयालु महाराज]

***

।। श्री ।।

समर्पण

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

परमपूज्य ! आचार्य चरण !

चिरकाल से ही आपके नैसर्गिक दयाभाव से निःसृत यह उपदेशामृत संतप्त मानवता को परम सान्त्वना दे रहा है ।

आज जब कि मानवता का गगनभेदी चीत्कार अपनी चरम सीमा पर जा पहुँचा है इसकी अत्यन्त आवश्यकता हो गयी है ।

परमाराध्यचरण !

अतः आपके ही दिव्य गिरा से उद्भूत यह उपदेशामृत आपके अलौकिक करकमलों के स्पर्श से पुनः दिव्य एवं सुवासित होकर आध्यात्मिक पथ के पथिकों का परम सुन्दर पाथेय बने—इसी आशा से ही आपके ही परम पावनीय युगल कर-कमलों में परम भक्ति एवं श्रद्धा से समर्पित है ।

विनम्र—

हरिदास शास्त्री

श्री रामदास जी महाराज की वॉणी :—

अनुक्रमणिका

श्रीरामोजयति

प्रकाशकीय निवेदन

राजस्थान मे रामस्नेही सम्प्रदाय का साहित्य बहुत विशाल है। दु ख यही है कि सन्त-साहित्य के समीक्षको ने इसके साथ पूरा न्याय नही किया। सभव है उनके मार्ग मे अनुसन्धानात्मक असुविधायें रही हो। इस सम्प्रदाय के पीठों और रामद्वारो में सुरक्षित साहित्य का यदि समुचित सर्वेक्षण और अनुसधान किया जाय तो हमारा विश्वास है कि राजस्थानी और हिन्दी साहित्य को अनेक गौरवग्रथ मिल सकते हैं तथा साहित्य क्षेत्र मे सन्तो और सम्प्रदायो के सम्बन्ध मे प्रचलित अनेक भ्रान्तियाँ दूर हो सकती हैं। फिर इस अति विज्ञानवाद और भौतिकता से सत्रस्त विश्व-मानवता के लिए सन्त-साहित्य का सेवन कितना लाभप्रद हो सकता है, यह विज्ञो से छिपा हुआ नही है।

लम्बी अवधि से हमारी यह प्रबल इच्छा थी कि इस सम्प्रदाय के साहित्य के प्रकाशन की कोई समुचित व्यवस्था हो। उक्त कार्य को चरितार्थ करने के लिए वर्तमान खेडापा पीठाधीश्वर श्री हरिदासजी महाराज के उदार एव महान् प्रयत्नो से 'श्रीमदाद्य रामस्नेही साहित्य-शोध प्रतिष्ठान' की स्थापना की गई। इस प्रतिष्ठान की प्रकाशकीय प्रवृत्तियों के सम्बन्ध मे सहयोग और परामर्श देने के लिए उक्त आचार्य श्री ने निम्नाकित महानुभावो की एक परामर्श-समिति (इस समिति मे आचार्य श्री आवश्यकतानुसार समय-समय पर परिवर्तन व परिवर्द्धन भी कर सकेंगे) का निर्माण किया—

सरक्षक—श्री १०८ श्री भगवद्दासजी महाराज श्री सिंहथल पीठाधीश्वर

सस्थापक एव अध्यक्ष—श्री १०८ श्री हरिदासजी महाराज, श्री खेडापा पीठाधीश्वर

मत्री—श्री पुरुषोत्तमदासजी शास्त्री, अधिकारी श्री खेडापा

सदस्य—१ परमहस श्री अभयरामजी महाराज, सूरसागर, जोधपुर
२ प० श्री उत्साहरामजी प्राणाचार्य महाराज, मोतीचौक, जोधपुर
३ श्री तपस्वीजी महाराज, नीमाज
४ श्री पीतमदासजी महाराज, मेडता रोड
५ श्री रामविलासजी महाराज, आयुर्वेदरत्न, राजवैद्य रतलाम
६ श्री च्यवनरामजी महाराज, आयुर्वेदमातण्ड बीकानेर
७ प० श्री केशवदासजी महाराज, आयुर्वेदाचाय, नागौर
८ श्री फतेरामजी महाराज, समर्थेश्वर महादेव, अहमदाबाद
९ श्री कृष्णरामजी शास्त्री, वागर, जोधपुर

श्री खेडापा रामस्नेही सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक आचार्यपाद् श्री रामदासजी महाराज की वाणी का प्रस्तुत सम्पादित ग्रथ उसी योजना के अन्तगत किया गया हमारा प्रथम विनम्र

श्रीरामोजयति

प्रकाशकीय निवेदन

राजस्थान मे रामस्नेही सम्प्रदाय का साहित्य बहुत विशाल है। दुख यही है कि सन्त-साहित्य के समीक्षको ने इसके साथ पूरा न्याय नही किया। सभव है उनके मार्ग मे अनुसन्धानात्मक असुविधायें रही हो। इस सम्प्रदाय के पीठो और रामद्वारो में सुरक्षित साहित्य का यदि समुचित सर्वेक्षण और अनुसधान किया जाय तो हमारा विश्वास है कि राजस्थानी और हिन्दी साहित्य को अनेक गौरवग्रथ मिल सकते हैं तथा साहित्य क्षेत्र मे सन्तो और सम्प्रदायों के सम्बन्ध मे प्रचलित अनेक भ्रान्तियाँ दूर हो सकती हैं। फिर इस अति विज्ञानवाद और भौतिकता से सत्रस्त विश्व-मानवता के लिए सन्त-साहित्य का सेवन कितना लाभप्रद हो सकता है, यह विज्ञो से छिपा हुआ नहीं है।

लम्बी अवधि से हमारी यह प्रबल इच्छा थी कि इस सम्प्रदाय के साहित्य के प्रकाशन की कोई समुचित व्यवस्था हो। उक्त कार्य को चरितार्थ करने के लिए वर्तमान खेडापा पीठाधीश्वर श्री हरिदासजी महाराज के उदार एव महान् प्रयत्नों से 'श्रीमदाद्य रामस्नेही साहित्य-शोध प्रतिष्ठान' की स्थापना की गई। इस प्रतिष्ठान की प्रकाशकीय प्रवृत्तियों के सम्बन्ध मे सहयोग और परामर्श देने के लिए उक्त आचार्य श्री ने निम्नांकित महानुभावो की एक परामर्श-समिति (इस समिति मे आचार्य श्री आवश्यकतानुसार समय-समय पर परिवर्तन व परिवर्द्धन भी कर सकेंगे) का निर्माण किया—

सरक्षक—श्री १०८ श्री भगवद्दासजी महाराज श्री सिंहथल पीठाधीश्वर

सस्थापक एव अध्यक्ष—श्री १०८ श्री हरिदासजी महाराज, श्री खेडापा पीठाधीश्वर

मत्री—श्री पुरुषोत्तमदासजी शास्त्री, अधिकारी श्री खेडापा

सदस्य—१ परमहस श्री अभयरामजी महाराज, सूरसागर, जोधपुर
२ प० श्री उत्साहरामजी प्राणाचार्य महाराज, मोतीचौक, जोधपुर
३ श्री तपस्वीजी महाराज, नीमाज
४ श्री पीतमदासजी महाराज, मेडता रोड
५ श्री रामविलासजी महाराज, आयुर्वेदरत्न, राजवैद्य रतलाम
६ श्री च्यवनरामजी महाराज, आयुर्वेदमार्तण्ड, बीकानेर
७ प० श्री केशवदासजी महाराज, आयुर्वेदाचार्य, नागौर
८ श्री फतेरामजी महाराज, समर्थेश्वर महादेव, अहमदाबाद
९. श्री कृष्णरामजी शास्त्री, बागर, जोधपुर

श्री खेडापा रामस्नेही सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक आचार्यपाद् श्री रामदासजी महाराज की वाणी का प्रस्तुत सम्पादित ग्रथ उसी योजना के अन्तर्गत किया गया हमारा प्रथम विनम्र

प्रयास है। परामर्श समिति के इन सभी सम्मान्य सदस्यों ने न्यूनाधिक रूप से हमें पूर्ण सहयोग दिया है, हम उनके कृतज्ञ हैं। काव्य और दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् खेड़ापाधाम के वर्तमान पीठाधीश्वर पूज्य गुरुदेव श्री हरिदासजी महाराज और राजस्थानी साहित्य के अध्येता श्री रामप्रसादजी दाधीच 'प्रसाद' ने इस ग्रंथ का सुयोग्य सम्पादन किया है—प्रतिष्ठान उनका आभारी है।

इससे पूर्व आचार्य श्री का जीवन चरित्र "आचार्य चरितामृत" नाम से आचार्य श्री हरिदासजी महाराज द्वारा लिखित एवं श्री रामनाथजी लाहोटी एवं उनकी धर्मपत्नी श्री जानी बाई लड्ढा (अमरावती) तथा श्री कान्हूरामजी मेहता जोधपुर के सत्प्रयत्नों से प्रकाशित हो चुका है। आचार्य श्री के साहित्य प्रचार में उनके इस सहयोग का भी प्रतिष्ठान ऋणी है।

हमारे कई प्रिय बन्धुओं ने हमें तन-मन से पूर्ण सहयोग दिया है। उनके सहयोग एवं आदरणीया कृष्णा बाई तथा प्रिय सीताचरणजी के इस प्रकाशन में किये गये सद् प्रयत्नों को भी हम भुला नहीं सकते हैं।

साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक का सहयोग भी महान् प्रशंसनीय है। ग्रंथ के कलेवर को मुद्रण की दृष्टि से आकर्षक बनाने का श्रम उन्हीं को है।

इतने बड़े प्रयास में अभावों और त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। प्रूफों के संशोधन में हमारी अल्पज्ञता असावधानता तथा प्रेस कर्मचारियों की असावधानी के कारण कई महान् त्रुटियाँ रह गई हैं तथा ग्रंथ के अति शीघ्र प्रकाशन के व्यामोह में हम उचित प्रकाशनीय सामग्री भी एकत्र नहीं कर सके हैं—हम इसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

अन्त में उस परब्रह्म परमात्मा एवं सन्त महापुरुषों के चरणों में श्रद्धायुक्त प्रणाम करते हैं जिनके कृपा-कण से यह सम्पादन पाठकों के सम्मुख उपस्थित हो सका। यदि यह ग्रंथ सन्त-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वानों और अध्येताओं को किंचित् भी पसंद आया तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

विनीत—
पुरुषोत्तमदास शास्त्री
मंत्री
श्री महाराज रामस्नेही साहित्य-शोध प्रतिष्ठान
खेड़ापा (जोधपुर)

श्रीरामोजयति

सम्पादकीय

आचार्यपाद श्री रामदासजी महाराज की अनुभव वाणी का सम्पादकीय लिखने के समय हमे विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के ये शब्द याद आ रहे हैं जो उन्होने कभी राजस्थानी के सन्त और भक्ति साहित्य के सम्बन्ध मे अत्यन्त भाव-गद्गद् होकर कहे थे "भक्ति रस का काव्य तो भारतवर्ष के प्रत्येक साहित्य मे किसी-न-किसी कोटि का पाया जाता है परन्तु राजस्थान ने अपने रक्त से जो साहित्य निर्माण किया है उसकी जोड का साहित्य और कही नही पाया जाता। और उसका कारण है, राजस्थानी कवियो ने कठिन सत्य के बीच रह कर युद्ध के नगारो के बीच अपनी कवितायें बनायी थी। प्रकृति का ताण्डव उनके सामने था। क्या आज कोई केवल अपनी भावुकता के बल पर फिर उस काव्य का निर्माण कर सकता है? राजस्थानी भाषा के साहित्य मे जो एक भाव है, जो एक उद्वेग है, वह केवल राजस्थान के लिये ही नही सारे भारतवर्ष के लिये गौरव की वस्तु है। मुझे क्षितिमोहन सेन महाशय से हिन्दी काव्य का आभास मिला था पर आज जो मैंने पाया है वह बिलकुल नवीन वस्तु है। आज मुझे साहित्य का नवीन मार्ग मिला है।"[1] उपरोक्त शब्दो में राजस्थानी के साहित्य की सर्वांग सम्पन्नता की ध्वनि प्राप्त होती है। इसका साहित्य बहुत विशाल है—यह जीवन का साहित्य है। वीर और शृङ्गार ने तो इस प्रदेश और भाषा का गौरव बढ़ाया ही है किन्तु नीति और भक्ति का साहित्य भी किसी दृष्टि से कम महत्व का नही है। परिमाण और साहित्यिक उत्कृष्टता दोनो ही पक्षो से वह महान है। यह साहित्य ऐसे भक्तों और सन्तो की वाणी का प्रसाद है जिन्होने जनता के साथ जनता का जीवन बिताते हुये जीवन तत्वो का अनुभव किया था।

भारतवर्ष के सास्कृतिक और साहित्यिक इतिहास पर तनिक दृष्टिपात से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वतत्रता का अमर गायक, वीरत्व, शौर्य और बलिदान की रोमाचकारी गाथाओ का यह पावन-प्रदेश साहित्य, कला, धर्म और दर्शन की रसवन्त स्रोतस्विनी भी रहा है। जहा भारत की विश्व-विश्रुत सास्कृतिक धरोहर की रक्षा इस प्रदेश ने एक विनम्र प्रहरी के रूप मे की है, वहाँ समय आने पर इसने कई बार सास्कृतिक नेतृत्व की बागडोर भी सभाली है। हमारे देश मे होने वाला ऐसा कोई अद्यातन परिवर्तन अथवा आन्दोलन नही—चाहे वह समाज के जीवन मे हुआ हो, चाहे साहित्य, भक्ति और दर्शन के क्षेत्र में, जिसमे राजस्थान का सक्रिय सहयोग नही रहा। सक्षेप में यह कहा जा सकता है कि राजस्थान भारत की महान् सास्कृतिक आत्मा का एक मधुर उद्घोष है।

---

[1] क्रिसन रुकमणी री वेली, सम्पादक—नरोत्तम स्वामी।

राजस्थान के सन्त साहित्य की पृष्ठभूमि में आचार्य श्री रामदासजी महाराज के साहित्य और व्यक्तित्व पर अपनी अल्प बुद्धि के सहारे दो शब्द कहना ही यहाँ हमारा अभिप्रेत है—राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के विस्तार में जाना अभीष्ट नहीं। 'भारतीय सन्त-साहित्य के महासागर में पहुँचाने वाली राजस्थान की सन्त-धारायें भी अपने भू भाग को आप्लावित करती हुई निरन्तर प्रवाहित रही हैं। मन्दाकिनी सदृश उनका वेग किसी प्रकार भी क्षीण अथवा मन्द नहीं रहा।'[१]

आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व उत्तर भारत में भक्ति और दर्शन की धारायें प्रवाहित हुई। कालक्रम के अनुसार उनके अन्तर और बाह्य में अनेक परिवर्तन हुये। वैदिक उपासना पद्धति को अभिभूत कर के बौद्ध और जैन धर्मों की अनीश्वरवादी साधनायें भी स्थिर-रूप नहीं रहीं। इनमें अनेक मत-मतान्तरों ने जन्म लिया। महायान हीनयान वज्रयान सहजयान के विकास-क्रम से निकलती हुई यह साधना-पद्धति सिद्धों और नाथों की साधनाओं का रूप ग्रहण कर लेती है। आठवीं शताब्दी में वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना के लिये अद्वैतवाद के समर्थक श्री शंकराचार्य का आविर्भाव होता है। शांकर अद्वैत की विभिन्न व्याख्याओं और खंडन के अनन्तर परवर्ती आचार्य रामानुज माधव निम्बार्क और वल्लभ इसी वैदिक पृष्ठभूमि पर अपनी अपूर्व व्याख्याओं की स्थापना करते हैं यथा विशिष्टाद्वैत द्वैताद्वैत द्वैतवाद और शुद्धाद्वैत आदि-आदि। आठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक का समय भारत की भक्ति-साधना का बहुत ही महत्वपूर्ण काल रहा है। राजस्थान इन सभी भक्ति आंदोलनों से निरन्तर प्रभावित होता रहा है। नाथ सम्प्रदाय का तो यह प्रमुख केन्द्र रहा है। जोधपुर जयपुर और उदयपुर के राजाओं ने नाथों को गुरु-सम्मान देकर विशेष आश्रय दिया था ऐसा शिलालेखों और इतिहास ग्रन्थों से प्रमाणित होता है। आज भी नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी अनेक वर्ग राजस्थान में विद्यमान हैं। नाथ और सिद्ध सम्प्रदाय के निर्गुण पद भजन और शब्द लोगों को आज भी कण्ठस्थ हैं और बड़े भाव विभोर होकर वे उन्हें सत्संग के समय गाते हैं।

विशिष्टाद्वैत के समर्थक और श्री सम्प्रदाय के संस्थापक श्री रामानुजाचार्य की शिष्य परम्परा में सं १३५६ में एक और महान विभूति का जन्म हुआ। वे थे रामानन्द। इनके आविर्भाव से उत्तर भारत की भक्ति-साधना में एक और नया मोड़ उपस्थित होता है। युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर यह श्री सम्प्रदाय की साधना-पद्धति और सिद्धान्तों में परिवर्तन करते हैं। विष्णु अथवा नारायण के स्थान पर उन्हीं के अवतार-रूप राम की भक्ति पर इन्होंने जोर दिया। जाति-भेद के बन्धनों को शिथिल कर कर्मकाण्ड समुच्चय की उपेक्षा कर एकमात्र भक्ति को सर्वश्रेष्ठ घोषित कर, संस्कृत के स्थान पर लोकभाषा को अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम स्वीकार कर इस महापुरुष ने एक नये सम्प्रदाय की स्थापना की जिसका नाम रामानन्दीय वैष्णव सम्प्रदाय है।

राजस्थान के आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन में इस महान विभूति ने क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित किया। जोगीनाथों की प्रमुखता के पश्चात् राजस्थान में जितनी

---

१ राजस्थान की सन्त परम्परा—(राजस्थान का आध्यात्मिक परिचय)
—लेखक पं० मनोहर शर्मा

साधना-पद्धतियो अथवा सम्प्रदायो ने जन्म लिया, वे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से श्री रामानन्दीय वैष्णव सम्प्रदाय से ही उद्भूत प्रतीत होती हैं।

रामस्नेही सम्प्रदाय—

राजस्थान की रामानन्दीय सन्त-परम्परा की पृष्ठभूमि मे अब हम रामस्नेही सम्प्रदाय के उद्भव, विकास और इसकी साधना-पद्धति तथा दर्शन की सक्षेप मे विवेचना करेंगे।

राजस्थान मे रामस्नेही नाम की तीन प्रमुख सम्प्रदायें है—१ सिंहथल–खेडापा, २ रैंण, और ३ शाहपुरा। श्री सिंहथल–खेडापा के मूलाचार्य पूज्यपाद श्री जैमलदासजी महाराज हुए, श्री रैंण सम्प्रदाय के मूलाचार्य पूज्यपाद श्री दरियावजी महाराज हुए और श्री शाहपुरा सम्प्रदाय के मूलाचार्य पूज्यवाद श्री रामचरणजी महाराज हुए। यद्यपि इन तीनो सम्प्रदायो की साधना एव साध्य पद्धतियो मे प्राय सादृश्य ही है तथापि इनकी पृथक २ उत्कृष्ट परम्परायें हैं, पृथक २ आदर्श हैं, एव पृथक २ साहित्य सम्पत्ति और पृथक २ आचार्य और शिष्य परम्परायें है। यहा हमारा अभिप्रेत केवल सिंहथल–खेडापा सम्प्रदाय का विवेचन करना है।

जब हम सिंहथल-खेडापा सम्प्रदाय के आदि-उद्गम पर विचार करते हैं तो हमे इसका सूत्र रामानन्द के शिष्य अनन्तानन्द की शिष्य-परम्परा मे दीक्षित पूज्यपाद श्री माधोदासजी महाराज 'मंदानी' से मिलता है। सभवत यही पहले सन्त हैं जिन्होने रामोपासना की परम्परा का प्रारम्भ इस प्रदेश मे किया।

पूज्यपाद माधोदासजी महाराज 'मंदानी' की जीवन सम्बन्धी सम्पूर्ण सामग्री अभी तक अप्राप्य है। इतिहास ग्रथो मे जो कुछ सामग्री उपलब्ध है उसके आधार पर यह निष्कर्ष निकलते हैं कि यह जाति से मालदेत भाटी राजपूत थे। माधोसिंहजी इनका नाम था। जैसलमेर के एक गाव वास टेकरा के यह रहने वाले थे। डाके डालना, गाव लूटना, राहगीरो को सत्रस्त करना इनके कार्य थे। स्वभाव से ये बडे क्रूर थे। किन्तु एक घटना ने इनके जीवन-प्रवाह को ही पलट दिया।

एक दिन यह अपने दल के साथ जगल मे एक यात्री दल को लूटने की घात मे थे। वह सारा प्रदेश इनके नाम से ही भयभीत था। माधोसिह धाडायती (डाकू) के नाम को सुन कर ही लोग कापने लगते थे। वह यात्री-दल रात्रि मे विश्राम करने के लिए उस जगल मे ठहरा और आग जला कर भोजन बनाने लगा। दल के सभी लोग डर रहे थे कि कहीं माधोसिह धाडायती आकर हमे लूट न ले। वे बडे कातर और भयाक्रान्त-से परस्पर अपनी-अपनी दीनता एव असहायता का वर्णन कर रहे थे। माधोसिह अधेरे में छिपे हुये उनकी यह सारी कारुणिक बातचीत सुन रहे थे। अपने कुकर्मो एव उनकी करुणार्द्र वार्ता से तत्क्षण इनको आत्मग्लानी होने लगी। वे अपने साथियो को यह सकेत करके आये थे कि ज्योंही आग बुझ जाय यात्री-दल पर आक्रमण कर देना। यात्रियो की दयनीय दशा से द्रवित माधोसिहजी का अब इन यात्रियो को लूटने का प्रश्न ही नही था। इन्होने यात्रियो को

आश्वस्त किया और चुपचाप चले जाने को कहा। स्वयं उसी अग्नि के समक्ष बैठ कर, एक लंगोट लगा कर एवं अन्य कपड़ों से अग्नि प्रज्वलित करके तप करने लगे। खुला मैदान ही इनका साधना-स्थल था इसलिए बाद में यह माधोदासजी 'मैदानी' कहलाये। अपने योग चमत्कार, ब्रह्मचर्य और सिद्धत्व के कारण यह बहुत ही लोकप्रिय हुये।

इन्हीं माधोदासजी 'मैदानी' की शिष्य-परम्परा में श्री रामस्नेही सम्प्रदाय (सिंहथल खेड़ापा) के मूलाचार्य पूज्यपाद श्री जैमलदासजी महाराज हुए। श्री रामानन्दजी महाराज से श्री जैमलदासजी महाराज तक की शिष्य परम्परा निम्नानुसार है—

श्री १०८ श्री रामानन्दजी महाराज
|
श्री अनन्तानन्दजी महाराज
|
श्री कर्मचन्दजी महाराज
|
श्री दैवाकरजी महाराज
|
श्री पूर्णमालजी महाराज
|
श्री दासदामोदरजी महाराज
|
श्री नारायणदासजी महाराज
|
श्री मोहनदासजी महाराज
|
श्री माधोदासजी महाराज
|
श्री सुन्दरदासजी महाराज
|
श्री चरणदासजी महाराज
|
श्री जैमलदासजी महाराज

रामस्नेही सम्प्रदाय के मूलाचार्य और आदि प्रवर्तक के सम्बन्ध में विद्वानों की विभिन्न मान्यतायें रही हैं। अपने दृष्टिकोण और विचाराभिव्यक्ति में प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है। हमारा विश्वास है कि किसी भी सम्प्रदाय का आविर्भाव किसी न किसी ईश्वरीय आदेश से होता है। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि सिंहथल-खेड़ापा रैण और शाहपुरा तीनों ही सम्प्रदायों के मूलाचार्यों को पृथक २ समय पर ईश्वरीय आदेश प्राप्त हुए थे और उन्हीं की प्रेरणा-स्वरूप इन महापुरुषों ने पृथक २ कालों में रामस्नेही सम्प्रदायों का प्रवर्तन किया।

श्री १०८ श्री जैमलदासजी महाराज का जीवन-वृत्त

सिंहथल-खेड़ापा सम्प्रदाय के मूलाचार्य श्री जैमलदासजी महाराज पहले वैष्णवधर्मी थे और सगुणोपासना किया करते थे। माधोदासजी 'मैदानी' की शिष्य-परम्परा के सन्त

पूज्य श्री चरणदासजी महाराज इनके गुरु थे। १८ वी शताब्दी के आरम्भ मे इनका आविर्भाव माना जाता है। वि० स० १७६० के भाद्रपद मास मे एक बार यह सावतसर (बीकानेर) ग्राम के श्री गोपाल मन्दिर मे श्री मद्भागवत की कथा कर रहे थे। तब पथिक रूप मे गूदडवेष धारण कर स्वय परब्रह्म ने आकर इनमे अपनी तृषा निवृत्ति के लिए जल मागा। जल पी लेने के पश्चात् उस पथिक ने आपसे एक दूसरे गाव का मार्ग पूछा। पूज्य जैमलदासजी मार्ग बताने के लिये पथिक के साथ रवाना हुये। जगल मे एक शमी वृक्ष के नीचे बैठने के लिए उस पथिक ने पूज्य महाराज को आदेश दिया। वहीं वार्तालाप के समय उस गूदडवेशी पथिक ने इन्हे सगुणोपासना से ऊचे उठ कर योग-साधना सहित निराकार रामोपासना की विधि बताई और स्वय उसी क्षण अन्तर्ध्यान हो गये। आपको इस आकस्मिक घटना पर बडा आश्चर्य हुआ, दुःख भी हुआ कि वे उस रहस्यमय व्यक्ति का अधिक सान्निध्य-लाभ प्राप्त नही कर सके। तभी आकाशवाणी हुई और आपको पुन निराकार राम की उपासना का आदेश प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् आप अपनी वैरागी सम्प्रदाय का पूर्णत परित्याग कर निराकार-रामोपासना करने लगे।

इस घटना का उल्लेख पूज्य श्री दयालजी महाराज ने अपनी काव्यकृति 'परची' मे इस प्रकार किया है—

एक दिन गूदड स्वामी आया, कथा करत हमको बतलाया।

× × ×

रामनाम निर्गुण कर भक्ति, सगुण छाडि देवो आसक्ति।
दरश स्वरूप दियो गुरु सोई, उर दुर्मति तिल रही न कोई।
गोप्यज्ञान गुरु गुझ उचार्‌यो, करि प्रणाम ध्यान उर धार्‌यो।
भेष पथ का सग तजि दीया, होय निरतर हरिपद लीया।

उपरोक्त पद्याश की अन्तिम पक्ति 'भेष पथ का सग तजि दीया, होय निरतर हरिपद लीया' यह स्पष्ट सकेत करती है कि पूज्य श्री जैमलदासजी महाराज ने ईश्वरीय आदेश पाकर अपनी पूर्व साधना पद्धति एव वैरागी सम्प्रदाय का पूर्णत परित्याग कर दिया।

पूज्य श्री जैमलदासजी महाराज के प्रारम्भिक शिष्य वैरागी रहे हैं और आज भी दुलसाचर और रोडा (बीकानेर) स्थानो के शिष्य जिनसे इनका प्रारम्भिक सम्बन्ध रहा है, वैरागी ही होते हैं, किन्तु जब से यह निराकार रामोपासना मे दीक्षित हुये तब से पूज्य श्री हरिरामदासजी महाराज के अतिरिक्त इनका कोई अन्य शिष्य हुआ हो तथा इनका अन्य स्वतत्र आचार्य पीठ रहा हो ऐसा प्रमाण नही मिलता।

उपरोक्त तथ्य के आधार पर सिंहथल-खेडापा सम्प्रदाय का आदि उद्गम पूज्य श्री जैमलदासजी महाराज से ही माना जाता है और इस प्रकार ये ही इस सम्प्रदाय के सस्थापक एव मूलाचार्य होते हैं। वि० स० १८१० में आपको परमधाम प्राप्त हुआ।

सिंहथल पीठ के सस्थापक पूज्यपाद श्री हरिरामदासजी महाराज इन्ही पूज्य श्री जैमलदासजी महाराज के प्रधान शिष्य हुये और तत्पश्चात वे ही इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक तथा सिंहथल पीठ के प्रधान आचार्य कहलाये।

श्री १००८ श्री हरिरामदासजी महाराज का जीवन-वृत्त

आचार्य श्री हरिरामदासजी महाराज के जन्मकाल के निश्चित ऐतिहासिक प्रमाण आज भी उपलब्ध नहीं है। पं० मन्नालाल शर्मा इसे अठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध मानते हैं। इनका जन्म सिंहथल ग्राम में श्री भाग्यचन्दजी जोशी के यहाँ हुआ। ये बाल्यकाल से ही अतीव तीक्ष्ण बुद्धि के थे। योगाभ्यास और आत्मचिन्तन की ओर प्रारम्भ से ही इनकी प्रवृत्ति थी। अपने एक हितैषी रामसर निवासी श्री उदयारामजी की प्रेरणा से पूज्य श्री जैमलदासजी महाराज से आपका सम्पर्क हुआ। इन्हीं से आपने आषाढ़ कृष्णा १३ वि० सं० १८०० में दीक्षा ग्रहण की। आचार्य श्री हरिरामदासजी महाराज ने स्वयं इसका उल्लेख इस प्रकार किया है—

हरिया संवत सत्तरहसो बरस सई को काल।
तिथि तेरस आसाढ़ वद सतगुरु पड़ी निहाल॥

(अमर निसाणी)

अपने गुरु द्वारा साधना-मार्ग का निरन्तर लाभ प्राप्त करने के लिये १४ मील की पैदल यात्रा करके आप प्रति सन्ध्या सिंहथल से दुलचासर ग्राम आया करते थे। पूज्य गुरु ने इन्हें सिंहथल में ही रह कर अपनी साधना को समुन्नत करने का आदेश दिया। गुरु आज्ञा से आप सिंहथल में ही रह कर साधना करने लगे। पश्चात् हर सातवें दिन जाकर गुरु-दर्शन करते। आपका साधना-क्रम इस प्रकार चलता रहा और कुछ वर्षों में ही आप पूर्ण सिद्ध योगी हो गये। यह उच्च कोटि के कवि भी थे। आपने योग-पथ की स्वानुभूतियों से पूर्ण उत्कृष्ट वाणी का सृजन किया जो राजस्थानी सन्त-साहित्य की अमूल्य निधि है।

वि० सं० १८३५ चैत्र शुक्ला ७ को आप अपने पार्थिव शरीर का परित्याग कर के ब्रह्मलीन हो गये। आपके शिष्य निम्नानुसार हुये—

१ श्री नारायणदासजी महाराज (वि० सं० १८०६ १८६३) उदरासर (बीकानेर)
२ " बिहारीदासजी महाराज (वि० सं० १८२१ १८३१) सिंहथल (बीकानेर)
[आप आचार्य श्री के जीवनकाल में ही परमधाम को प्राप्त हो गये थे।]
३ " रामदासजी महाराज (१८०३ १८५५) खेड़ापा (जोधपुर)
४ " लक्ष्मणदासजी महाराज पुनलसर
५ " माधूरामजी महाराज बालमदेसर (बीकानेर)
६ " अमीरामजी महाराज सिंहथल (बीकानेर)
७ " देवीदासजी महाराज सिंहथल (बीकानेर)

श्री सिंहथल पीठ की अद्यावधि आचार्य परम्परा निम्नांकित है—

श्री १००८ श्री हरिदेवदासजी महाराज
|
श्री मोतीरामजी महाराज
|

श्री १०८ श्री रघुनाथदासजी महाराज

,, श्री चेतनदासजी महाराज

,, श्री रामप्रतापजी महाराज

,, श्री चौकसरामजी महाराज

,, श्री रामनारायणजी महाराज
[आपने कुछ वर्ष पूर्व अपूर्व त्याग का प्रदर्शन करते हुये गादी का त्याग कर दिया था।]

,, श्री भगवत्‌दासजी महाराज (वर्तमान पीठाधीश्वर)

हम ऊपर लिख आये हैं कि प्रस्तुत वाणी-ग्रथ के कर्ता पूज्यपाद श्री रामदासजी महाराज पूज्यपाद श्री हरिरामदासजी महाराज के ही शिष्य थे। यद्यपि इनके कुल ७ शिष्य थे किन्तु पूज्य रामदासजी महाराज के तपस्वी जीवन मे कुछ ऐसा वैशिष्ट्य था कि स्वयं गुरु इनका विशेष समादर करते थे। पूज्य रामदासजी महाराज को भी अपने साधना-काल मे ईश्वरीय आदेश प्राप्त हुआ था। श्री दयालजी महाराज ने अपनी काव्यकृति 'परची' मे इसका उल्लेख इस प्रकार किया है—

प्रकट शब्द एक ऐसो हुयो, दृष्टि न आवत श्रवण लयो।
रामदास पथ चले तुमारो, सत्य वचन यह सदा हमारो॥

उपरोक्त पद्याश की पक्ति 'रामदास पथ चले तुमारो, सत्य वचन यह सदा हमारो' में पूज्य रामदासजी महाराज को ईश्वर का स्पष्ट आदेश है। इसी ईश्वरीय आदेश से जनता का उद्धार करने के लिये आचार्य श्री ने खेडापा पीठ की स्थापना की तथा अपने अलौकिक प्रभाव से देश के कोने-कोने मे धर्म का प्रचार किया।

पूज्यपाद श्री रामदासजी महाराज का जीवन-वृत्त

इस अनुभव वाणी के रचयिता आचार्य श्री रामदासजी महाराज के जीवन-वृत्त-सम्बन्धी सामग्री रामस्नेही सम्प्रदाय के साहित्य-ग्रथो[1] मे विस्तार से प्राप्त होती है। अन्त-साक्ष्य के रूप मे आचार्य श्री ने स्वय अपनी वाणी मे कई स्थलो पर आवश्यक सकेत दिये हैं। राजस्थान के, विशेषकर मारवाड के इतिहास-ग्रथो में भी आचार्य श्री का उल्लेख हुआ है। उन सब के आधार पर जो आधिकारिक सामग्री और तथ्य हमें उपलब्ध हुये हैं वे सक्षेप मे नीचे प्रस्तुत हैं।

---

[1](१) पूज्यपाद श्री दयालजी महाराज द्वारा रचित 'परची'।
(२) पूज्य हरिदासजी द्वारा रचित 'आचार्य चरितामृत'।

वि० सं० १७८१ के फाल्गुन कृष्णा ११ को आचार्य श्री ने जोधपुर जिले के बीकमकोर नामक ग्राम में एक वैष्णवधर्मी किसान परिवार में जन्म ग्रहण किया। यह ग्राम जोधपुर नगर से ४० मील दूर जोधपुर पोकरण रेलवे लाइन पर स्थित है। आचार्य श्री के पिता का नाम बाबू लखी था और माता का नाम अणुमी देवी।

सन्तान न होने के कारण यह दम्पत्ति विशेषकर अणुमी देवी बहुत दुखी रहा करती थीं। पति-पत्नी में अपूर्व प्रेम था—दोनों ईश्वर के भक्त थे। ऐसी मान्यता है कि आचार्य श्री इस दम्पत्ति को भगवत्-कृपा के प्रसादस्वरूप ही प्राप्त हुये थे। बड़े प्रेम से इस बालक का नाम रामो रखा गया।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात' कहावत को सार्थक करते हुये यह बालक अपने अवतारी चरित्र के चमत्कार अपनी बाल्यकाल में ही दिखाने लगा। इन चमत्कारों को लेकर अनेक किवदन्तियाँ आज भी रामस्नेही सम्प्रदाय के अनुयायियों में प्रचलित हैं। सर्प से खेलना भगवान राम के चित्र को देख कर मंत्रमुग्ध हो जाना देवी की पूजा के बलि-दृश्य से उस पूजा के विद्रोही हो जाना आदि विशिष्ट घटनायें इनके बाल्यकाल में ही घटित होने लगी थी।

जब यह ५, ६ वर्ष के थे तभी दुर्भाग्य से इनकी स्नेहमयी माता का वात्सल्य इनसे छिन गया। इस घटना से श्री बाबू लखी को भी बहुत आघात लगा फलस्वरूप वे गांव छोड़ कर खेड़ापा (जोधपुर) में रहने लगे। यहीं बालक रामो के विद्याध्ययन का प्रारम्भ हुआ। गांव की पाठशाला में जाकर थोड़े से समय में ही इन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय दे दिया। पाठशाला में जो भी विषय पढ़ाये गये उनमें यह निष्णात हो गये। खेलने में इनकी कोई प्रवृत्ति नहीं थी। मित्र के नाम पर बस एक ही बालक केसरी था जो इनका मौसेरा भाई भी होता था।

तभी एक और दुर्घटना घटी—वह थी सर्पदंश से पिता की आकस्मिक मृत्यु। इस विपत्ति ने बालक रामो का हृदय विदीर्ण कर दिया जीवन की नश्वरता का निर्दय पाठ इस प्रकार इन्हें बहुत ही छोटी आयु में विधाता ने दे दिया।

गांव में प्रचलित अन्धविश्वासपूर्ण पंचपीर-उपासना ने अब इन्हें भी आकृष्ट किया और अपने अशान्त तथा निराश मन को किसी प्रकार आश्वस्त करने के लिये ही यह उपासना करने लगे। थोड़े ही समय में इन्हें सिद्धि भी प्राप्त हो गई। यह अपने निकटवर्ती प्रदेश में इन सांसारिक सिद्धियों के कारण विख्यात भी होने लगे। इन्हीं दिनों इन्हें एक बार यमदूत के दर्शन हुये। इस दृश्य से ये अत्यन्त भयभीत हुए। अपने इष्ट पंचपीरों का इन्होंने बहुत स्मरण किया परन्तु उनके द्वारा इनका भय निवृत्त नहीं हुआ। भगवत्-कृपा से इनको उसी समय भगवान के नाम का स्मरण हो गया और उसी नामोच्चारण से इनका सारा भय स्वप्न की तरह दूर हो गया। इस घटना से इनका मन पंचपीरों की उपासना से विमुख हो गया एवं सिद्धि के अन्य मार्ग को ढूंढने के लिये भटकने लगा।

इस प्रकार इनका प्रारम्भिक साधक जीवन कठिन संघर्ष और ऊहापोह में से गुजरा। आत्मज्ञान की जिज्ञासा इनमें बाल्यकाल से ही बहुत तीव्र थी। परमतत्त्व की गवेषणा में यह

भ्रमित से भटकते रहे। कभी मन्त्रोपासना और कभी हठयोग की साधना—इन्हें सामयिक सिद्धियाँ भी मिलती गईं। इस प्रकार इन्होने १२ गुरु बनाये किन्तु साधना का चरम लक्ष्य—आत्मानद प्राप्त नही हुआ।

साधनाक्रम मे इन्होने परिव्राजक, औघड आदि कई वेष धारण किये। औघड वेष मे यात्रा करते हुये ये एक बार बीकानेर पहुँचे तो वहाँ एक अन्य सहृदय भक्त से इनकी भेंट हो गई। आचार्य श्री हरिरामदासजी महाराज द्वारा विरचित 'रेखता' जिसकी एक पंक्ति नीचे दी जा रही है, आपको उस भक्त ने सुनाई—

"अगम अगाध में ज्ञान पोथी पढ्या
भर्म अज्ञान कू दूरी डार्या"

इस पंक्ति को सुनते ही वे गद्‌गद् हो गये—उनके हृदय मे नया प्रकाश फैल गया और उन्होंने सिंहथल की ओर प्रस्थान किया। वहा पहुचते ही वे आचार्य श्री हरिरामदासजी महाराज के चरणो मे गिर गये। आचार्य श्री ने इनके मुख-मण्डल की तेजोराशि देखी—वे बहुत प्रभावित हुये। उन्हें लगा कि शायद परब्रह्म ने ही ऐसा विधान किया है। पूज्य रामदासजी महाराज ने आचार्य श्री हरिरामदासजी महाराज के समक्ष परमतत्व के साक्षात्कार की अपनी इच्छा प्रकट की। वि० स० १८०९ वैसाख शु० ११ को गुरुदेव ने इन्हे दीक्षित किया और रामनाम के महत्व को इन शब्दो में समझाया—

जन मन बन नहि कर सके, कलिमल गज पैसार।
उभयसिंह गर्जत रहे, नाथ रकार मकार॥

दीक्षा के पश्चात् इनका नया नाम गुरु ने रामदास रखा। एक सच्चे रामस्नेही की जीवन और साधना-पद्धति का पूरा ज्ञान भी गुरु ने इन्हें कराया।

अब गुरु से आज्ञा लेकर यह मेलाना (जोधपुर) गाव के बाहर रामनाम-तारक मत्र की साधना करने लगे। एकान्त साधक और अयाचक योगी के रूप मे यह इनका अत्यन्त कठिन तप था। वि० स० १८१२ मे मारवाड मे पडे भयकर दुर्भिक्ष के समय आप इसी गाव मे तपस्या कर रहे थे। अपनी साधना की प्रगति से गुरुदेव को अवगत कराने के लिये यह समय-समय पर सिंहथल चले जाते थे। अपनी साधना में इन्हें कई प्रकार के कष्ट उठाने पडे। साधना की कई अवस्थाओ को पार कर अब यह रागात्मिका-भक्ति के द्वार पर आ गये थे। रसना, कठ एव हृदय के कमल को विकसित कर के इन्होने नाभि मे शब्द की गति को स्थित कर लिया था। प्रिय (परात्पर ब्रह्म) से भेंटने के लिए आत्मा (साधक) अत्यन्त व्याकुल हो गई थी। विरह की ज्वाला मे वे निरन्तर जलने लगे थे—

अन्तर दाझण अति घणी, पिंजर करे पुकार।
नेत्र रोय राता किया, तो कारण भरतार॥
विरह आय घायल किया, रोम रोम मे पीर।
रामदास दुखिया घणा, हृदय खटूके तीर॥

इसी अवधि में एक और ऐतिहासिक घटना घटती है। माधोजी सिन्धिया की सेनायें मारवाड़ के अन्य गांवों को लूटती-खसोटती मेलाना पर भी आक्रमण करती हैं। इस गांव का ठाकुर नाहरसिंह आचार्य श्री का परम भक्त था। वह दौड़ा हुआ परामर्श के लिये आता है। आचार्य श्री उसे आक्रमण का सामना करने के लिये उत्साहित करते हैं। सिन्धिया की सेना बहुत बड़ी किन्तु आचार्य के आशिर्वचनों से नाहरसिंह अकेला सेना के सामने आता है। सिन्धिया की सेना का सेनापति इसके अदम्य साहस को देख कर इसे अपना भाई बना लेता है। यह भी आचार्य श्री का एक ऐसा चमत्कार है कि सिन्धिया की सेना का सेनापति भी आचार्य से बड़ा प्रभावित होता है और मारवाड़ के किसी ग्राम पर आक्रमण न करने का संकल्प लेकर लौट जाता है।

हम पीछे एक स्थान पर लिख आये हैं कि ध्यानावस्था में आचार्य श्री को साक्षात् राम के दर्शन हुये और उनके कानों में एक दिव्य-ध्वनि भी हुई 'उपदेश के द्वारा मेरी परम भक्ति का प्रचार करो।

इस दिव्यप्रेरणा के पश्चात् वे पुनः देशाटन करने लगे। मेवाड़ मालवा और मारवाड़ के अनेक गांवों में घूम-घूम कर आचार्य ने राम-भक्ति का प्रचार किया—अनेक शिष्य बनाये।

दांतोप भी वे काफी समय तक रहे और यहीं नौसर तालाब के ऊपर इन्हें एक खेजड़ी में साधना का परम-तत्व निर्विकल्प समाधि की अवस्था प्राप्त हुई।

वि सं १८२२ से यह पुनः खेड़ापा में स्थायी रूप से विराजने लगे। अपने गुरु पूज्यपाद श्री हरिरामदासजी महाराज से प्रार्थना कर इन्हें खेड़ापा में बुलाया। फा सु ४ सं १८२ में उन्हीं के आदेश से रामस्नेही सम्प्रदाय के पीठस्थान की स्थापना यहाँ की गई। आज यह स्थान रामस्नेही सम्प्रदाय के भक्तों और अनुयायियों का प्रमुख तीर्थ बना हुआ है।

आचार्य श्री में अपने गुरु के प्रति अनन्य भक्ति थी। यद्यपि इन्हें परमतत्व का ज्ञान हो गया था किन्तु अपने गुरु से मिलने के लिए यह सर्वदा व्याकुल रहा करते थे। रामस्नेही सम्प्रदाय के मूलभूत सिद्धान्तों—गुरुभक्ति कोमलहित रामस्मरण एवं संत सेवा का आपने प्राणपण से पालन किया एवं जीवन भर प्रचार किया।

वि सं १८४ के फाल्गुन सु ९ को एक और दुखद घटना घटती है। उस समय मारवाड़ में महाराजा विजयसिंहजी राज्य करते थे वे स्वयं तो बड़े ही धर्मपरायण नरेश थे किन्तु भी आचार्य द्वारा सत्कार न पाने से क्रुद्ध होकर इनके गुरु ने इन्हें बढ़ा चढ़ा कर बहकाया कि खेड़ापा में पाखण्ड पंथ का प्रचार हो रहा है वहाँ चारों वर्णों के लोग साधु बन कर जगह जगह उपदेश दे रहे हैं; मूर्तिपूजा का खण्डन किया जा रहा है धर्म का नाश हो रहा है आदि आदि। इस पर महाराजा ने बिना सत्यासत्य का पता लगाये आचार्य श्री को तत्काल ही मारवाड़ से बाहर निकल जाने का आदेश दे दिया। आदेश पाते ही आचार्य श्री अपने गुरुदेव की वाणी—पुस्तक रही एवं कंबल तथा अन्य सब कुछ वैसा ही छोड़ कर अपनी सर्वश्रेष्ठ शिष्य मण्डली के साथ मारवाड़ की भूमि से बाहर निकलने के लिए चल पड़े।

इस घटना का उल्लेख श्री दयालजी महाराज की परची मे किया गया है—

हाथ छडी गुरुदेव की, कवलि गुरु अस्थान ।
बैठे ज्योंही उठि चले, हरिधन जीवन प्रान ।।
राम धणी जासों वणी, राम राल तह सत ।
तेरी सैंठी राखियो, भगवत की भगवंत ।।

मारवाड के बाहर निकलने के पश्चात् रामभक्ति का उपदेश देते हुए यह कई राज्यों मे भ्रमण करते रहे । सभी स्थानो पर इनका अत्यधिक सत्कार हुआ । अपनी योगसाधना, तपस्वी आचरण के चमत्कारो से इन्होंने सर्वसाधारण जनता, श्रीमन्तो और राजाओ को अभिभूत किया । मेवाड प्रान्तान्तर्गत देवगढ के चूडावत एव करेडे के नृप राजा गोपालसिहजी आदि ने आचार्यपाद का शिष्यत्व स्वीकार किया ।

देश-निष्कासन के काल मे जब आचार्य श्री बीकानेर राज्य मे धर्म-प्रचार कर रहे थे तब उन्हीं दिनो बीकानेर मे महाराजा सूरतसिहजी राज्य कर रहे थे । वे बडे निर्दय और कठोर शासक थे—राज्यप्राप्ति के लिए इन्होने अपने परिवार के सदस्यो की हत्या तक की थी । आचार्य श्री के महान प्रभाव से यह भी प्रभावित हुए और बीकानेर मे उनका चातुर्मास कराया । नरेश ने आचार्य श्री का उपदेश ग्रहण कर शिष्यत्व भी स्वीकार किया । उस समय चातुर्मास मे बीकानेर मे घोर दुर्भिक्ष पडा । निंदको को आचार्य श्री की निंदा करने का अच्छा मौका मिला और वे आपकी खूब निंदा करने लगे । सत महापुरुष लोक की मगलकामना किया करते हैं—प्राणियो का दुःख उनसे नही देखा जाता । आचार्य श्री ने भगवान मे जलवृष्टि के लिए प्रार्थना की—

मेह बरसावो बापजी, दुनिया पावै दुख ।
रामदास की वीनती, जन उपजावै सुख ।।

और तत्काल ही भगवान ने इस लोक-सेवी सत की प्रार्थना सुनी । वर्षा हुई और प्राणियों का सन्ताप दूर हो गया—

मेह वूठा हरिया हुआ, भाज गया भव काल ।
रामदास सुख ऊपज्या, जह तह भया सुकाल ।।

आचार्य श्री के देश-निष्कासनस्वरूप मारवाड मे दुष्कर काल पडा और भयकर उत्पात होने लगे । माधोजी सिन्धिया तुकोजी के साथ पुन मारवाड पर आक्रमण कर बैठे । इस आक्रमण का सामना करने के लिए बीकानेर, जोधपुर और किशनगढ की सेनायें मेडता मे एकत्र होने लगी । अजमेर और परबतसर पर मराठों का अधिकार हो गया । जोधपुर नरेश श्री विजयसिह की सेनाओ को अकेले छोड कर बीकानेर और किशनगढ की सेनायें अपने राज्यो मे किसी कारण से वापिस लौट गईं । इधर माधोजी सिन्धिया किसी प्रकार जोधपुर के किले पर अधिकार करना चाहते थे । अस्तु, महाराज विजयसिहजी ने मराठो से समझौता कर लेना ही उचित समझा । विपुल धनराशि और भूमि देकर इस सकट को टालना पडा ।

जब से आचार्य श्री मारवाड़ से निष्कासित होकर पधार गये थे तब से जोधपुर नरेश की आन्तरिक राज्यव्यवस्था भी विच्छृंखल हो रही थी। प्रेयसी गुलाबराय को लेकर पारिवारिक कलह, राज्य के सामन्त सरदारों का असन्तोष आदि कारणों से महाराजा बड़े दुखी रहने लगे थे। सरदारों के षड्यन्त्रों के कारण शासनाधिकार इनके हाथ से छिन गया और यह एक विवश व असहाय व्यक्ति के रूप में जीवन व्यतीत करने लगे। यह सोचने लगे कि मेरे दुखों का कारण क्या है? आपके अन्तरंग सहायक बड़ाबस ठाकुर श्री हरिसिंहजी ने भी कहा राजन्! यह सब आचार्य श्री रामदासजी महाराज के प्रति कटु व्यवहार का प्रतिफल है।

महाराज को अपने इस कुकृत्य पर बड़ा आत्म-पीड़न हुआ और उन्होंने तुरन्त ही आचार्य श्री के पास जो उस समय बीकानेर में धर्म-प्रचार कर रहे थे दूत भेजे और क्षमा याचना की तथा उन्हें तत्काल ही पुनः मारवाड़ में पधारने का भावभरा निवेदन पत्र भी भेजा। श्री दयालजी महाराज ने नरेश के प्रार्थना-पत्र का इस प्रकार प्रत्युत्तर दिया—

जब कहियो जावो परा कारण कोम प्रवेश।
अब कहियो आवो इहां दुष्ट राज विशेष॥
हम तु जी करता किसा मुंडी अमृ करंत।
जो याही करता नृपति सोई सिरे धरंत॥

(श्री दयाल कृत 'परची')

नरेश ने पुनः बीकानेर नरेश के द्वारा आपसे मारवाड़ में पधारने की प्रार्थना की।

सन्त करुणामय होते हैं। जोधपुर नरेश के इस पश्चात्ताप पर उन्हें करुणा हो आई और राज्य में लौट आने का आश्वासन दे दिया। अपने गुरुधाम सिंहथल के दर्शन कर वि. सं. १८४६ की कार्तिक कृष्णा १४ को वह अपनी भक्तमण्डली के साथ खेड़ापा लौट आये।

मारवाड़ की स्थिति उस समय बड़ी नाजुक थी। चारों ओर लूटखसोट और अराजकता फैली हुई थी। आचार्य श्री के मारवाड़ की सीमा में पदार्पण करते ही इनकी अलौकिक शक्ति से सर्वत्र शान्ति छा गई और सामन्त सरदार एक होकर महाराजा को सहयोग देने लगे। महाराज पुनः सिंहासनारूढ़ हो गये। इस प्रकार राज्य मे पुनः शान्ति स्थापित हो गई। इतिहास-ग्रंथों में यह प्रमाण मिलते हैं कि महाराजा ने आचार्य श्री से खेड़ापा पीठ के लिये जागीरी के रूप में कई गांव स्वीकार करने की प्रार्थना की थी किन्तु आचार्य ने बहुत ही सुन्दर उत्तर दिया—

और पदारथ जिन चाह का अब भी अन्तर दाम।
राम बड़ा है रामदास दिन दिन दूना धाम॥

अब आचार्य श्री अपने धाम पर ही विराजने लगे थे। इन्हीं दिनों में एक बार और अपने परम शिष्य जीवोदासजी के देहावसान होने पर शिष्य बनीरामजी का आग्रहपूर्ण निमंत्रण पाकर आप रतलाम पधारे। इनके तपोनिष्ठ व्यक्तित्व और उपदेश से प्रभावित होकर रतलाम के नरेश भी इनके शिष्य बन गये।

मालव प्रान्त के अन्य गांवों में भ्रमण करके आचार्य श्री ने रामभक्ति का प्रचार किया। अपने इसी प्रवास-काल में अन्य अनेक निर्धन और कर्मी व्यक्तियों को इन्होंने

भगवद्भक्त बना दिया। दातारिया ग्राम के ठाकुर सालमसिंह और मालवा का भय सारगा डाकू भी इनके चरणो मे आकर श्रद्धानत हो गये। यह सब आचार्य के तप और साधना का ही बल था।

वि० स० १८५५ के आषाढ कृष्णा ७ मगलवार को आचार्य श्री ने खेडापा मे ही देह-लीला सवरण करके निर्विकल्प समाधि लगाई।

आचार्य श्री का साधना पथ निरापद नही रहा। निन्दको ने अनेक प्रकार के आरोप इन पर लगाये, दुष्टो ने अनेक प्रकार की बाधायें इनके भक्ति-मार्ग पर उपस्थित की, यहाँ तक कि राज्य के नरेश को बहका कर इन्हें देशनिष्कासित भी करवाया, पडितो ने इन्हें शास्त्रार्थ मे परास्त करना चाहा किन्तु यह अपने साधना-पथ पर हिमालय की भाँति अडिग रहे। महानता का पथ विपत्तियो और बाधाओ से ही प्रशस्त होता है। भर्तृहरि ने निम्नाकित श्लोक मे इसी भाव को व्यक्त किया है—

निदन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथ प्रविचलति पद न धीरा

सस्कृत की एक प्रसिद्ध काव्यकृति सूक्ति-पदावली मे एक सूक्ति है जिसका भावार्थ इस प्रकार है—काव्य रचना, व्याकरण, न्यायशास्त्र, सिद्धान्त, बीज शास्त्र, ज्योतिष-विद्या मे निपुण अनेक आचार्य होते हैं किन्तु चरित्र मे जो निपुण हो वैसे आचार्य विरले ही होते हैं। आचार्य श्री रामदासजी महाराज के समग्र जीवन से यह ध्वनि निकलती है। यही कारण था कि तीव्र विरोधो के बावजूद भी लक्ष-लक्ष लोगो की श्रद्धा उनमे रही। पडित और अज्ञानी शासक और शासित, श्रीमन्त और निर्धन, भद्र और अभद्र, धार्मिक और अधार्मिक सभी आचार्य के पावन चरणो मे बैठ कर ज्ञानलाभ करके अपने को कृतार्थ मानते थे। इनकी लोक-प्रसिद्धि का सब से बडा प्रमाण यही है कि इनकी अनुभव वाणी आज भी श्रद्धालु भक्तजनो मे रामचरित मानस की भाति समादृत है।

पूज्य श्री आचार्य चरण के अनेक शिष्य थे, उनमे से ५२ प्रसिद्ध हैं। आचार्य श्री के ये सभी शिष्य थाभायत महन्त कहलाये—शिष्यो की नामावली निम्नानुसार है—

१ श्री गगारामजी महाराज (बडलू)
२ ,, कान्हडदासजी महाराज (बालीसर)
३ ,, हरजीदासजी महाराज (खेडापा)
४ ,, हेमदासजी महाराज (जैतारण)
५ ,, मनीरामजी महाराज (बडलू)

६ श्री पीथोदासजी महाराज (रतलाम)
७ ,, अज्ञानदासजी महाराज (कालाऊना)
८ ,, निर्मलदासजी महाराज (पाली)
९ ,, हरिदासजी महाराज (अटिया)
१० ,, बल्लूरामजी महाराज (देवातडा)

श्री रामस्नेही
सम्प्रदायाचार्य
राम
प्रधानपीठ खेड़ापा जोधपुर

प्रधान पीठ के पूज्य आचार्यों की परम्परा निम्नांकित है—

श्री १००८ श्री दयालजी महाराज
|
,, श्री पूर्णदासजी महाराज
|
,, श्री अर्जुनदासजी महाराज
|
,, श्री हरलालदासजी महाराज
|
,, श्री लालदासजी महाराज
|
,, श्री केवलरामजी महाराज
|
,, श्री हरिदासजी शास्त्री—वर्तमान पीठाधीश्वर

हमने ऊपर सक्षेप मे रामस्नेही सम्प्रदाय और उसके मूलाचार्य, सस्थापक और प्रवर्तक के परिचय दिये जो इस सम्प्रदाय की साधना-पद्धति और दर्शन को ठीक-ठीक समझने के लिये आवश्यक है।

रामस्नेही—रामस्नेही शब्द का अभिधार्थ तो यही है कि वह कोई भी व्यक्ति जो भगवान राम मे स्नेह और भक्ति रखता है रामस्नेही है किन्तु सम्प्रदाय मे आकर यह कुछ रूढ और तात्विक हो गया है। रामस्नेही सम्प्रदाय के अनुयायी का ससार के प्रति निर्वेद का भाव होता है। राम ही उसके जीवन का एकमात्र केन्द्रबिन्दु होता है—उसकी सारी कामनायें, साधनायें और जीवन के काय-व्यापार राम को ही समर्पित होते हैं। रामस्नेही का राम दाशरथी नही—वह तो सृष्टि के कण-कण मे व्याप्त परब्रह्म ही है—ऐसा परब्रह्म जो आगे चल कर ररकार मात्र रह जाता है। ऐसे भक्त मे राम के प्रति सहज रागानुभक्ति होती है। इसीलिये वह 'रामस्नेही' कहलाता है। निर्गुण राम का नामस्मरण ही रामस्नेही अपनी मुक्ति का सवश्रेष्ठ अथवा एकमात्र साधन मानता है।

रामस्नेही सतो के प्रमुख दो भेद होते है—प्रवृत्त और विरक्त। विरक्त के चार भेद माने गये हैं—उपराम, गूदड, विदेह और परमहस। श्री खेड़ापा रामस्नेही सम्प्रदाय के परमहस सत श्री सेवगरामजी महाराज (सूरसागर) ने विरक्त सत के लक्षण इस प्रकार बताये हैं—

॥ चौपाई ॥

परसराम प्रकट जग माही, विचरत रहे गोप कहु नांही।
जगत भेष सब के मन भावे, धिन्न धिन्न कर सब महिमा गावे ॥ १
जिनकी सगत सन्त अनेका, भक्ति ज्ञान वैराग विवेका।
विरकत वृत श्रवन सुन लीजे, जाके दरश परस अघ छीजे ॥ २
पर इच्छा प्रसाद हि पावे, जो अपने बिन जान्यं आवे।
फे जन भवर व्रत कर लेही, ताहीं सू निरभावे देही ॥ ३

पाच पचीस सनेह सनेहा, पचकोष मध चितवन देहा।
एता नेह तजे रे भाई, एक प्रीति गुरु-चरण सभाई॥
रामसनेही जाको नामा, हरिगुरु साधु सगति विश्रामा।
(श्री दयालु परची)

छप्पय

मिलता पारख प्रसिद्ध विमल चित रामसनेही।
नर कोमल मुख निर्मल प्रेम प्रवाह विदेही॥
दरसण परसण भाव नेम नित श्रद्धा दासा।
साच वाच गुरु ज्ञान भक्ति प्रण मत एक आशा॥
देह गेह सम्पति सकल हरि अर्पण परमानिये।
जन रामा मन वच कर्म रामस्नेही जानिये॥ १
खान पान पहिरान निर्मली दशा सदाई।
सात्विक लेत आहार हिसा करि है न कदाई॥
नीर छाण तन वरत दया जीवां पर राखे।
बोले ज्ञान विचार असत कबहू नहिं भाखे॥
साधु सगति पणव्रत सुदृढ नेम दासा लिया।
रामस्नेही रामदास तन मन धन लेखे किया॥ २
श्रद्धा सुमरण राम मीन मन राम सनेही।
गुणचाही गुणवन्त लाय लेणे हरि देही॥
अमल तम्बाकू भाग तजे आमिष मद पाने।
जुआ द्यूत का कर्म नारि पर माता जाने॥
साच शील क्षमा गहै राम राम सुमरण रता।
रामा भक्ति भावदृढ़ रामस्नेही ये मता॥ ३
(श्री दयालु वाणी)

इसी प्रकार रामस्नेही साधक के लिए साधना के नियम भी आचार्य श्री दयालजी महाराज ने अपनी 'परची' मे बताये हैं—

भैरव आदि भवानी देवा, प्रथम छाडियो इनकी सेवा।
आन मत्र और सबै बिसारो, राम मत्र एक मुखां उचारो॥
होका अमल निकट मति लावो, सुरापान आमिष मति खावो।

रामस्नेही के उपरोक्त आचार-धर्म से यह प्रकट हो जाता है कि वह केवल राम का मुखजाप करने वाला भक्त ही नही है अपितु एक विशिष्ट साधक है जिसका एक विशिष्ट जीवन-दर्शन और पद्धति भी है।

भारतीय सन्त-मत मे मध्यम मार्ग को सर्वाधिक स्वीकृति मिली है। सन्त अतिवाद के विरोधी रहे हैं। अतिवाद मे जो सैद्धान्तिक आग्रह होता है वह कभी भी आत्मिक सन्तोष और शान्ति का साधक नही होता। सन्त साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान श्री परशुराम

चतुर्वेदी ने कहा है 'सन्तों ने प्रवृत्ति एवं निवृत्ति मार्गों के मध्यवर्ती सहज मार्ग को ही अपनाया है और विश्व कल्याण में सदा निरत रहते हुए भूतल पर स्वर्गलोक का स्वप्न देखा है। रामस्नेही सम्प्रदाय का मूलाधार भी यही मध्यम मार्ग है। आचार्य श्री रामदासजी महाराज ने मध्यममार्ग का महत्व इस प्रकार प्रकट किया है—

रामदास मध अंगुली पकड़ राख विसवास।
आसपास को दूर कर ज्यूं पावो सुख रास॥
आसपास को छाड़ दे रहो मध्य सूं लाग।
रामा आसेपास में दोमू कीनो त्याग॥
मध्य आंगुली लागकर, पहुंता सुख की तीर।
रामदास पंथ अमुन बिन काहूं पकड़ी तीर॥[2]

रामस्नेही सन्तों के लिये सद्गुरु और सत्संग के निरन्तर सेवन का निर्देश किया गया है। यों यह दोनों ही विषय सन्त-मत के प्राण हैं। हमारी संस्कृति में गुरु और ईश्वर को समान माना है। विभिन्न सम्प्रदायों और संत-मतों के आचार्यों ने सद्गुरु और सत्संग का गुणानुवाद किया है। भारतीय संस्कृति की ऐसी मान्यता रही है कि आध्यात्मिक साधना के पथ पर ऐसा गुरु ही मार्ग प्रदर्शन कर सकता है जिसने इस साधना पथ के समस्त रहस्यों का प्रत्यक्ष अनुभव किया हो। यह पथ बड़ा कठिन है—साधक का बिना गुरुज्ञान के इतस्ततः भटक जाना बहुत सम्भव है। इसी प्रकार सत्संग के निरन्तर सेवन से साधना के लिये अनुकूल वातावरण बना रहता है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है "संतों की जीवन-योजना में आखिरी बात है सत्संग की चाह। सामान्य व्यावहारिक विद्या की प्राप्ति के लिये भी जब उस विद्या के जानकार का सहारा लेना पड़ता है तब आध्यात्मिक साधना में प्रवेश की इच्छा रखने वाले को अनुभवी संत पुरुषों की संगति ढूंढनी ही पड़ेगी।"[3] आचार्य श्री रामदासजी महाराज ने सद्गुरु का साधक के जीवन में महत्व इन शब्दों में प्रकट किया है—

रामदास सतगुरु मिल्या मिलिया राम-दयाल।
सुखसागर में रम रह्या मेट्या जिर्ध जंजाल॥
गोविन्द तें गुरु अधिक है रामे कह्या विचार।
गुरु मिलावें राम कूं राम अमर करतार॥

सत्संग—

साधु-संगति बिन रामदास किनी न पायो राम।
दुर्लभ होती मौन कर किता भया विहाल॥
साधु-संगत साची सदा झूठी कदे न जाय।
रामदास हितकर किया कांई दब निरजाय॥[4]

---

[1] उत्तर भारत की सन्त-परम्परा —श्री परशुराम चतुर्वेदी
[2] अनुभव वाणी—आचार्य श्री रामदासजी महाराज
[3] सन्त सुधासार—श्री वियोगी हरि
[4] अनुभव वाणी—आचार्य श्री रामदासजी महाराज

रामस्नेही सम्प्रदाय का दर्शन —

सन्त साहित्य के अध्येताओं का एक मत यह रहा है कि सन्तो के साहित्य मे किसी व्यवस्थित विशिष्ट दर्शन की धारा को ढूढना अनुचित है। वे लोग शास्त्रज्ञ और पडित नही होते थे। स्वानुभूति ही उनकी प्रधान प्रेरक शक्ति रही है और इसी के बल पर वे अमूल्य विचार वाणी के माध्यम से देते चले गये। डा० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल ने भी कहा है, "ये दार्शनिक न होकर आध्यात्मिक महापुरुष मात्र है।"[1] अत सन्त सम्प्रदायो मे अद्वैत, द्वैत, त्रैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत और शुद्धाद्वैत ढूढना समीचीन नही। शास्त्र के रूढ व घिसेपिटे ज्ञान के स्थान पर इन्होंने लोकधर्म की प्रतिष्ठा की। अत काका कालेलकर के शब्दो मे यदि यह कहा जाय कि लोक-धर्म में जो अच्छा अश उन्हें मिला, उसी की उन्होने प्रतिष्ठा बढाई और अनिष्ट अश का प्राण-पण से विरोध किया।[2] अपने अनुभव, अपने निरीक्षण और लोक कल्याण के आधार पर उन्होने विशिष्ट सिद्धान्त-निरपेक्ष धर्म चलाया तो अधिक युक्तिसगत होगा। विशिष्ट सिद्धान्त ढूढने की दृष्टि सदैव स्वस्थ नही कही जा सकती। मतो के आग्रह ने कबीर-दर्शन की जो छिछालेदर की है वह विद्वानो से छिपी हुई नही है।

रामस्नेही सम्प्रदाय के दर्शन पर उपरोक्त पृष्ठभूमि मे विचार कर के ही हम किसी निश्चित निर्णय पर पहुच सकते हैं। भारत मे प्रचलित तत्कालीन सन्त सम्प्रदायो की भांति इस सम्प्रदाय के दर्शन मे भी अनेक साधना पद्धतियो का समावेश हुआ है। शकर का अद्वैत, रामानुज का विशिष्टाद्वैत, नाथ और सिद्धो का योग, वैष्णवो की सगुणोपासना और सूफियो का प्रेममार्ग—सभी इस सम्प्रदाय के दर्शन मे समाविष्ठ हुये हैं। इस सम्प्रदाय मे ही ऐसा हुआ हो सो बात नही। देखा जाय तो सन्त-मत की यह सामान्य प्रवृत्ति रही है। इसके सम्बन्ध मे श्री विनोबा भावे ने कहा भी है, "हमारे सन्तो की पाचन-शक्ति प्रखर होने के कारण ये सारे भिन्न-भिन्न दर्शन उनको विरोधी नही मालूम होते, बल्कि इन सबको वे एक साथ हजम कर लेते हैं।"[3]

रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य और सन्त भी बडे उदार रहे हैं और जहा जिस साधना-पद्धति मे उन्हें अच्छाई लगी उसे बिना किसी पूर्वाग्रह के ग्रहण कर लिया—यह उनकी सारग्राही प्रवृत्ति थी।

भक्ति-साधना की जिन प्रचलित पद्धतियो को इसमे स्वीकृति नही मिली उनका खण्डन अथवा विरोध करने का भाव रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्यों का नही रहा। वह केवल निषेधात्मक प्रवृत्ति है, खण्डनात्मक नही। उदाहरण के लिए इस सम्प्रदाय मे सगुणोपासना का निषेध किया गया है तो इसका कारण यही रहा है कि रामस्नेही सन्त को सगुणोपासक प्रकृत भक्त' से ऊचे उठने का लक्ष्य दिया गया है। मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा

---

[1] हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय—डा० बडथ्वाल

[2] सन्तवाणी—श्री वियोगी हरि

[3] सन्त सुधासार—श्री वियोगी हरि

आदि साधना-पद्धतियों का रामस्नेही मत में भी निरूपण हुआ है। यहाँ तक कि कहीं-कहीं पर कटु आलोचना भी की है किन्तु इस सब के पीछे अपने अनुयायियों को श्रेयस्कर साधना मार्ग का ज्ञान कराने की ही भावना रही है।

हमारे धर्मशास्त्रों में साधक के दो प्रमुख भेद माने गये हैं—एक मस्तिष्कप्रधान अर्थात् तार्किक या ज्ञानमार्गी और दूसरा हृदयप्रधान अर्थात् भक्ति-भावना और श्रद्धायुक्त। शास्त्रों से प्रसूत सम्प्रदायों और साधना-पद्धतियों में अक्सर मस्तिष्क पक्ष की ही प्रधानता होती है—उनका भावना और श्रद्धा का पक्ष प्रायः बहुत दुर्बल होता है।

विश्व के विविध धर्मों (बौद्ध यवन ईसाई आदि) के जन्म के इतिहास का यदि हम अध्ययन करें तो हमें पता लगेगा कि वे सब अपने अपने प्रवर्तक के मस्तिष्क का उत्पादन मात्र हैं। उनमें जो जनहित का भाव सम्मिलित है। हिन्दू धर्म किसी व्यक्ति विशेष की सूझ नहीं अपितु उद्‌भट आचार्यों एवं भगवान के विशेष अवतारों द्वारा इसका आविष्कार, संस्थापना एवं संरक्षण हुआ है। इस हिन्दू धर्म में निर्गुण-सगुण निराकार-साकार आदि उपासना-पद्धतियाँ हैं। रामस्नेही सम्प्रदाय इसी आविष्कृत हिन्दू धर्म का पंथ है किन्तु इसके दर्शन की अपनी मौलिकता है।

रामस्नेही सम्प्रदाय के दार्शनिक धरातल की रूपरेखा संक्षेप में इस प्रकार दी जा सकती है—

१ *रामस्नेही सम्प्रदाय का दर्शन शंकर के अद्वैत और रामानुज के विशिष्टाद्वैत* से प्रभावित है।

२ रामस्नेही सम्प्रदाय में राम के अगुण निराकार रूप का सुमिरण और साधना होती है। 'यह राम दाशरथी राम नहीं है। यह एक शब्द में अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का सृजन करने वाला है। यह निरंजन ब्रह्म है। यह अचल अलख अनाम है। यह पतितपावन है, सर्वान्तर्यामी है। राम ही परब्रह्म है राम ही परमतत्व है और राम ही ब्रह्म तारक है।'' रामस्नेही का राम द्वैत अद्वैत सगुण निर्गुण सभी सीमाओं से परे है। निर्गुण राम के सगुण रूप की आराधना अनेक सन्त-मतों में हुई है। रामस्नेही सन्तों की अनुभव वाणी में भी यत्र तत्र तेज अवतारी स्वरूप का गुणगान मिलता किन्तु इनकी मूल आस्था निराकार-राम में ही है। निर्गुण राम के सगुण रूप की आराधना इसलिए हुई है क्योंकि इस सम्प्रदाय का दर्शन ब्रह्म में क्षमा वात्सल्य दयालुता आदि गुणों का स्वीकारता है।

३ रामस्नेही सम्प्रदाय का विश्वास भी 'ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या' में है। कबीर की भाँति रामस्नेही सन्तों ने भी माया की खूब ही भर्त्सना की है। आचार्य की

राम एव परंब्रह्म राम एव परंतप।
राम एव परंतत्त्वं श्री रामो ब्रह्मतारकम्॥
(राम रहस्योपनिषद्)

रामदासजी के शब्दो मे देखिये—

> रामा माया डाकिणी, ढकणाया(डकणायो) ससार ।
> काढ कलेजो खायगी, जाकी सुध्ध न सार ।'
> मायावासी रामदास, सब नाख्या फद माय ।
> तीन लोक कू घेर कर, हरि सू लिया छुडाय ।।

४ रामस्नेही सम्प्रदाय की साधना-पद्धति मे योगशास्त्र की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग हुआ है । 'सुरति-शब्द-योग' उसमे प्रमुख है । यह एक साधना-पद्धति है । इसकी व्युत्पत्ति और अर्थ के सम्बन्ध मे विद्वान आज भी एकमत नही हैं । रामस्नेही सम्प्रदाय मे सुरति-निरति शब्दो का विशिष्ट प्रयोग हुआ है । यहाँ सुरति शब्द से चित्त की उस विशेष वृत्ति का द्योतन होता है जो ररकार ध्वनि के साथ अबाध रूप से एकाग्र होकर उसमे समाहित रहती है । निरति शब्द से यहाँ तात्पर्य उस सहजावस्था से है जहाँ पर मन, बुद्धि, चित्त, अहकार आदि का लय हो जाता है—साधना का अन्त होकर जहा साध्यावस्था प्राप्त हो जाती है ।

उपरोक्त सुरति शब्द योग के अनुसार रामस्नेही साधना का मार्ग निम्नानुसार है—

इस सम्प्रदाय मे रामनाम का स्मरण एक विशिष्ट योग-पद्धति से अवलम्बित है । रसना, कण्ठ, हृदय, नाभि आदि स्थानो पर शब्द सुरति की स्थिति होती है इसलिए इस नाम स्मरण की चार कोटियाँ हैं—१ अध (अधम), २ मध (मध्यम) ३ उत्तम, ४ अति उत्तम अर्थात रसना के द्वारा स्मरण अधं स्मरण कहलाता है, कण्ठ के द्वारा मध्यम स्मरण कहलाता है, हृदय के द्वारा उत्तम स्मरण कहलाता है और नाभि के द्वारा अतिउत्तम-स्मरण कहलाता है । नाभि मे जाकर राममत्र के 'मकार' एव 'अकार' जो माया एव जीव के स्वरूप माने जाते हैं केवल 'रकार' रूप होकर परब्रह्म मे लीन हो जाते हैं । नाभि मे शब्द के स्थित होने पर शरीर की सम्पूर्ण रोमावलियो से केवल 'रकार' ध्वनि होती है । नाभि से आगे साधना के द्वारा कुण्डलिनी को जागृत कर, मेरुदण्ड की २१ मणियो का छेदन कर शब्द उर्ध्वगति को प्राप्त होता है । त्रिकुटी मे जाकर यही शब्द सुरति एव निरति के द्वारा ब्रह्म मे लीन हो जाता है । इससे आगे माया का कोई प्रवेश नही है—'जीव' और 'सीव' का यही सम्मिलन है । जीव जीवत्व-मुक्त होकर यहा ब्रह्मलीन हो जाता है एव साधक को योगियों की सी सहज समाधि एव निर्विकल्प अवस्था प्राप्त हो जाती है । यही रामस्नेही सन्त की परम-साध्यावस्था है ।

रामस्नेही सम्प्रदाय मे भक्ति एव योग का जो समन्वय हुआ है वह अपना विशिष्ट स्थान रखता है और इस सम्प्रदाय को अपनी इसी मौलिकता के कारण इतर सम्प्रदायो से पृथक करता है ।

५ रामस्नेही सम्प्रदाय मे जीवनमुक्त अवस्था को ही मुक्ति माना है । ससार मे रहते हुये, शरीर को धारण करते हुये, मन को निर्जीव कर लेना और ब्रह्म मे लीन

होने की अवस्था ही जीवन्मुक्ति है। आचार्य श्री रामदासजी महाराज ने 'मरजीवा' के लक्षण इस प्रकार बताये हैं—

> और सार पूछे नहीं जम की तजी पिछाण।
> रामदास मरतक भया लगै न जम का बाण॥
> रामदास जन ऊबरया अम्मर बूटी पाय।
> जीवत-मरतक हुय रह्या साईं सरण संभाय॥
> (अनुभव वाणी)

वाणी का साहित्यिक मूल्यांकन—

सन्त-साहित्य का मूल्यांकन शास्त्रीय मापदण्डों पर करना उचित नहीं। साहित्य के सम्बन्ध में सन्तों की मान्यतायें पृथक रही हैं। छन्द अलंकार और भाषा-शास्त्र की सूक्ष्मताओं की गहराई में वह नहीं गये। ऐसी परिस्थिति में यदि आलोचक साहित्य-सिद्धान्तों का आग्रह करें भी तो इसमें कोई न्याय्यता नहीं। श्रद्धेय श्री वियोगी हरि ने आलोचकों की इस मनोवृत्ति के सम्बन्ध में कहा है 'मैंने देखा कि रीति-ग्रन्थों का फीता लेकर वे साहित्यालोचक संत-वाणी का असीम क्षेत्रफल निर्धारित करने गये थे—जो कोर बँधे हुये तालाब पर धीरे धीरे सरकती हुई नौका जैसे असीम अगम्य सागर के बिखरे वैभव को मापने पहुँची थी।

सन्तों ने जो कुछ लिखा वह जन-समाज के लिए लिखा। भावों का प्रकाशन ही उसमें प्रधान हुआ है और भाषा का प्रभाव गौण। यही कारण है कि भाषा व्याकरण और काव्यशास्त्र सम्बन्धी अनेक असंगतियाँ इस साहित्य में उपलब्ध होती हैं किन्तु साहित्य जीवन के लिये के सिद्धान्तों का जितना अनुसरण इस साहित्य में हुआ है उतना अन्यत्र उत्कृष्टतम व प्रगतिशील कहे जाने वाले साहित्य में भी दृष्टिगोचर नहीं होता। लोक-हृदय को स्पर्श करने की शक्ति सन्तो में अपूर्व रही है और इसका कारण यही रहा है कि समाज-हृदय से वे कभी दूर नहीं हुये। लोक भाषा में सरल से सरल अभिव्यक्ति से सन्तों ने अपने अनुभव कहे और व लोक-मानस को बिना किसी चेष्टा के ग्राह्य हो गये। साहित्य की सार्थकता की इससे अधिक उत्तम कसौटी और क्या हो सकती है ? यह आरोप कि "इन संतों की अटपटी रचनाओं में न तो साहित्यिक सरसता है न संगीत की लय है और न कला की ऊँची अभिव्यंजना ही और भाषा भी इनकी ऊबड़-खाबड़ सी है साहित्यिक उदारता को प्रकट नहीं कर हमारे पूर्वाग्रही अस्वस्थ दृष्टिकोण का परिचायक है।

आचार्य श्री रामदासजी की वाणी का साहित्यिक मूल्यांकन करने से पूर्व उपरोक्त स्पष्टीकरण इसलिये आवश्यक था कि सिद्धान्तों के फीतें से नापतौल करने वाले विद्वानों को निराश नहीं होना पड़े। सन्त कवियों की सामान्य प्रवृत्तियों के आचार्य श्री कोई अपवाद नहीं हैं। भाषा अभिव्यंजना और पद्धतियों में पूर्ण साम्य का निर्वाह हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि साधना मार्ग पर चले ही इन लोगों ने पृथक-पृथक अटपटी राहों का अनुसन्धान किया हो किन्तु जहाँ लोक तक अपनी अनुभूतियों को पहुँचाने की पद्धति और माध्यम का प्रश्न था यह सभी सहधर्मी रहे। सभी सन्त-कवियों ने जन-भाषा को अपनाया। सभी ने

लोक प्रचलित छन्दो (साखी, चौपाई, पद, कुण्डलिया) का प्रयोग किया, सभी ने सगीत-शास्त्र की कर्णमधुर रागनियो का सहारा लिया।

आचार्य श्री रामदासजी महाराज द्वारा रचित वाणी गुण और परिमाण दोनो ही दृष्टियों से अत्यन्त विस्तृत है। सन्त साहित्य की परम्परा के अनुसार सारी वाणी अगो और प्रसगो (विषयो) मे विभाजित है। यह इतने विस्तार मे है कि आध्यात्मिक और लौकिक जीवन का कोई पहलू छूट नही पाया। इन अगो मे आध्यात्मिक जीवन के रहस्यो की अत्यन्त सूक्ष्मता और सरलता से विवेचना हुई है। पाडित्य-प्रदर्शन का मोह कही नहीं है। कुल अग और प्रसग इस प्रकार है—

अग—

गुरु स्तुति मत्र, गुरुदेव को अग, गुरु पारख को अग, गुरु वदन को अग, गुरु धरम को अग, सिवरण को अग, सिवरण मेघ्या को अग, अकल को अग, उपदेश को अग, विरह को अग, ज्ञान-सजोग विरह को अग, परचा को अग, सूर परचा को अग, पीव परचा को अग, हरिरस को अग, लोभ को अग, हैरान को अग, हेरत को अग, जरणा को अग, लिव को अंग, पतिव्रता को अग, चित्राकरण को अग, मन को अग, मन मृतक को अग, सूक्ष्म मारग को अग, लाबा मारग को अग, माया को अग, मान को अग, चाणक को अग, कामी नर को अग, सहज को अग, कुसगत को अग, सगत को अग, असाध को अग, साध को अग, देखादेखी को अग, साध साक्षीभूत को अग, साधु मैहमा को अग, मध्य को अग, विचार को अग, सारग्राही को अग, पीव पिछाण को अग, विश्वास को अग, धीरज को अग, वृकताई को अग, सुन्य-सरोवर को अग, प्रेम को अग, कुसबद को अग, सबद को अग, करम को अग, काल को अग, मच्छी को अग, सजीवन को अग, चित कपटी को अग, गुरु-सिष को अग, हेतप्रीत को अग, सूरातन को अग, जीवत-मृतक को अग, मासआहारी को अग, पारख को अग, आन देव को अग, निंदा को अग, दया निरवैरता को अग, सुन्दर को अग, उपजण को अग, किस्तुरधा मृग को अग, निगुणा को अग, बिनती को अग, तन-मन माला को अग, माला को अग, कडवी बेली को अग, बेली को अग, बेहद को अग, सुरत विचार को अग, उभै को अग, माया ब्रह्म निर्णय को अग, वृक्ष को अग, ब्रह्म एकता को अग और ब्रह्म-समाधि को अग।

प्रसग—धर अबर को प्रसग, चाह को प्रसग और तकिया को प्रसग।

कुछ विषय स्फुट-साखियो (छुटकर साखी) के रूप में भी लिख गये हैं। स्फुट साखियो का विषय भी अध्यात्म और आत्म-कल्याण ही है।

आचार्य श्री ने साखी-काव्य के अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण छोटे-बडे ग्रथ भी लिखे। छोटी-सी प्रबन्ध-रचना को भी सत-युग मे ग्रथ कहने की प्रथा थी इसलिये आचार्य ने भी अपनी छोटी-बडी प्रबन्ध-रचनाओ को ग्रथ ही कहा है। एक बात और भी है—इन ग्रथो मे प्रबन्ध काव्य के लक्षणो का निर्वाह हुआ हो सो बात नही है—एक कथा-सूत्रता अथवा सगठित विषय-क्रम भी शायद नहीं मिले। छन्द-विविधता इनमे अवश्य दृष्टिगोचर होती है। लोक प्रचलित साखी के अतिरिक्त इन ग्रथो मे कवित्त, चौपाई, सोरठा, निसाणी, झूलना, अर्द्ध भुजगी, उधोर, चन्द्रायण, छप्पय, कुण्डलिया आदि छन्दों का अवश्य प्रयोग हुआ है। इन छन्दो के

सैद्धान्तिक पक्ष की चर्चा हम बाद में करेंगे। यहां इतना ही कहेंगे कि इन ग्रंथों में छन्द वैविध्य के कारण मॉनोटोनी नहीं रही और अभिव्यंजना में सौन्दर्य आ गया।

इन ग्रंथों का विषय भी प्रमुख रूप से अध्यात्म ही है। साखियों में वर्णित विषयों की इनमें कहीं-कहीं पुनरावृत्ति भी हुई है। डा. रामकुमार वर्मा ने लिखा है— 'सन्त काव्य में जिन सिद्धान्तों की चर्चा की गई है वे अनेक बार दोहराये गये हैं। किसी भी कवि ने अपनी ओर से मौलिकता प्रदर्शित करने का श्रम नहीं उठाया। वही बातें बार-बार एक ही रूप में उठाई गई हैं।" अस्तु वर्माजी अपनी मान्यता में कितने सत्य हैं यह विवाद का विषय नहीं है किन्तु सन्त-काव्य की इस प्रवृत्ति को हमें युग-धर्म और सन्तों की मनोवृत्तियों की पृष्ठ-भूमि में देखना चाहिए। उनका सारा काव्य अनुभूतिजन्य है—अपने साधना पथ पर जैसी-जैसी अनुभूतियां समय-समय पर उन्हें होती रहीं उन्हीं को उन्होंने पूरी निष्ठा और सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया है। चमत्कार पांडित्य अथवा यश-लिप्सा से प्रसूत न होकर यह समस्त-काव्य साधना पथ के आनन्दमय अनुभवों से प्रसूत है और इसीलिए इसमें पुनरावृत्ति भी निश्चित रूप से है। ऐसा मान तो इस पुनरावृत्ति को गुण माना जाना चाहिए। उपनिषदों में भी जैसे 'तत्त्वमसि श्वेतकेतु' को नौ बार कहा गया है। यह पुनरावृत्ति सार्थक है।

आचार्य श्री द्वारा विरचित ग्रंथ जो इस सम्पादित ग्रंथ में सम्मिलित किये गये हैं, इस प्रकार हैं—

१ ग्रंथ गुरु महिमा
२ भक्तमाल
३ चेतावनी
४ „ कालबोध
५ „ जग मग
६ „ रणजीत
७ ज्ञान विवेक
८ „ अमर बोध
९ „ मूल पुराण
१० „ उभय ज्ञान
११ आदि बोध
१२ „ आश्रय बोध
१३ ग्रंथ नाम माला
१४ „ आतम सार
१५ ब्रह्म जिज्ञासा
१६ „ षट दरसणी
१७ „ पद बत्तीसी
१८ „ पंच मात्रा
१९ „ सोलह कला
२० „ आतम बेली
२१ „ निरालंब
२२ „ अक्षर निसाणी
२३ „ रेखता
२४ राम रक्षा

इन ग्रंथों के अतिरिक्त अनेक कवित्त और हरजस भी आचार्य श्री ने लिखे हैं।

काव्य पक्ष—

कबीर के काव्य के सम्बन्ध में एक स्थान पर उल्लेख हुआ है 'कविता के लिये उन्होंने कविता नहीं की उनकी विचारधारा सत्य की खोज में बही है उसी का प्रकाश करना उनका ध्येय है। उनकी विचारधारा का प्रवाह जीवन-धारा के प्रवाह से भिन्न नहीं। उसमें उनका हृदय घुला मिला है। सत्य के प्रकाश का साधन बन कर जिसको प्रकाश

अनुभूति उनको हुई थी, कविता स्वयमेव उनकी जिह्वा पर आ बैठी है।" यह शब्द सभी सन्तो के काव्य पर लागू होते हैं। आचार्य श्री रामदासजी महाराज के समस्त साहित्य मे एक परम सत्य की खोज की आतुरता निहित है। इनकी वाणी और अन्य काव्य-कृतिय मे काव्य-तत्वो का सम्यक निर्वाह भी हुआ है। रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, दृष्टान्त, भ्रान्तिमान, अनुप्रास आदि अलकारो के दर्शन आचार्य श्री की वाणी मे अनेक स्थलो पर किये जा सकते है। वे सब नैसर्गिक रूप मे आ गये हैं—कोई भी प्रयत्नजन्य नही। स्वभावोक्ति तो सन्त साहित्य की विशेषता है ही।

इसी प्रकार आचार्य श्री की वाणी मे काव्य-रसो का परिपाक भी हुआ है। शृङ्गार के दोनो पक्ष—सयोग और विप्रलम्भ चित्रित हुये है। सुन्दरी आत्मा और प्रियतम ब्रह्म के सयोग का एक चित्र देखिये—

सुरत सुहागण सुन्दरी, मन राख्यो बिलमाय।
रामदास नग निरखता, प्रीतम मिलिया आय॥
प्रीतम मिलिया प्रेम सू, पूरी मन की आस।
सुन्य सेजा मे रामदास, आठू पहौर विलास॥

विरहिणी आत्मा की विरह दशा का चित्र भी देखिये—

विरह आय घायल किया, रोम रोम में पीर।
रामदास दुखिया घणा, हृदं खटूके तीर॥
बेनड झूरं पीव कू, वर कू झूरै नार।
रामा झूरं पीव कू, दरसण दो भरतार॥
रैण विहाणी जोवता, दिन भी बीतो जाय।
रामदास बिरहिन झुरै, पीव न पाया माय॥

करुण, हास्य और कही-कही बीभत्स रस का परिपाक भी आचार्य श्री की काव्य-कृतियो मे मिलता है। वीर रस का तो बहुत ही ओजस्वी वर्णन सन्त काव्य मे मिलेगा। यद्यपि यह वीर रस युद्ध-स्थल मे राज्य, शक्ति, प्रतिष्ठा और जन-धन की रक्षा अथवा प्राप्ति के लिये तलवार चलाने वाले शूरवीरो से सम्बन्धित नही है। यह उन तेजस्वी आत्माओ की वीरता, उन शूरवीरो के बलिदानो का वर्णन है जो ब्रह्म-साधना के मार्ग पर आने वाली प्रत्येक मायावी विपत्ति, होने वाले प्रत्येक विरोधात्मक आक्रमण का साहस के साथ मुकाबला करते हैं।

घुरं दमामा गगन मैं, सुण-सुण चढ़िया नूर।
रामदास सनमुख लडै, ऐसा है निज सूर॥
रामदास सूरा चढ्या, ज्ञान तणे गजराज।
मडिया जांझा जग में, मुजरो है महाराज॥
रामदास सूरा मढ्या, घणां दला के बीच।
कायर भागा बापडा, सुण-सुण सिंधू नीच॥

अद्भुत का चित्रण भी आचार्य ने उक्त साखियों की पद्धति पर लिखी अपनी चमत्कारपूर्ण रचनाओं में किया है—यद्यपि इनकी संख्या स्वल्प ही है। उदाहरण—

रामदास दरियाव में अपनी लागी चोंच।
हीर रतन सबही मिलें ऐसा अचरज चोंच॥
अगम आदली रामदास बज कीनो विस्तार।
अमल देख दुखिया भया वाच्छत है संसार॥

काव्य रूप—

आचार्य श्री की वाणी की छन्द-योजना पर जब दृष्टिपात करते हैं तो हमें यहां परम्परानुसरण दिखाई देता है। इन्होंने उन सभी काव्य-विधाओं में लिखा जो इनके युग में प्रचलित थी। 'सन्त-काव्य में सब से अधिक प्रयोग साखियों और शब्दों का हुआ है। साखी तो दोहा छंद है और 'शब्द' रागों के अनुसार पद हैं।" डॉ रामकुमार वर्मा का यह कथन आचार्य श्री रामदासजी की छन्द-योजना पर भी अक्षरशः प्रयुक्त होता है। सन्त युग में मुक्तक लिखने की ही काव्य प्रथा थी। 'मुक्तकों में प्रबन्ध निरपेक्षता होती है। यह अनु रणात्मक खंड-दृश्यों के चित्रण में अधिक सूक्ष्म होते हैं। इनमें चमत्कार की सृष्टि भी आसानी से हो जाती है।"[१] साधना मार्ग के अपने अनुभवों को छोटे छन्द में कहने में उन्हें सुविधा भी रहती थी। दूसरी बात यह भी रही कि सन्त जिन लोगों के लिये साहित्य का सृजन करते थे वे काव्य-मर्मज्ञ तो होते नहीं थे। अतः सरल और लोक-अभिव्यंजना पद्धति के द्वारा ही अपने भावों का संप्रेषण सन्तों को अभीष्ट था।

आचार्य श्री की वाणी में साखी और शब्दों के अतिरिक्त चौपाई, सोरठा, निशाणी *झूलना अर्द्धभुजंगी अर्द्ध त्रिभंगी चकोर चन्द्रायण छप्पय कुण्डलिया आदि छन्दों का भी* यथावश्य प्रयोग हुआ है।

संगीत पक्ष—

आचार्य श्री के वाणी साहित्य में परम्परामुक्त संगीत पक्ष भी प्रबल है। सन्त-काव्य में जिन्हें शब्द कहा गया है वे रागों के अनुसार पद ही हैं। सन्त अपने पदों को सत्संग में गाया करते थे और उन्हीं के माध्यम से भक्त-समुदाय को जीवन जगत और ब्रह्म के रहस्यों का ज्ञान कराते थे। सन्त-काव्य के इस संगीत पक्ष के सम्बन्ध में डॉ धर्मवीर भारती ने कहा है—"यह कह सकना सरल नहीं कि किस निश्चित समय काव्य रचना की यह गेय शैली प्रचलित हुई। सिद्धों के चर्या-पदों से इसका इतिहास जोड़ा जा सकता है। परन्तु इसके विकास का मूल स्रोत लोक-गीतों की परम्परा ही मानी जा सकती है। वस्तुतः हिन्दी के *मात्रिक छन्दों के विकास में भी लोक-छन्दों का आधार था और मात्रिक छन्द लोक-गीतों की* प्रकृति से पूरे मेल खाते हैं। पद शैली के साथ दूसरी समस्या संगीत शास्त्र की है। प्रायः पदों के साथ किसी न किसी राग का निर्देश मिलता है। इसका अर्थ यह नहीं कि कवि ने पद-रचना

---

[१] हिन्दी साहित्य का इतिहास—आचार्य रामचंद्र शुक्ल (रीतिकाल)

का आधार राग विशिष्ट रखा था या पद उसी राग मे गाया जा सकता है।" वस्तुत इन निर्देशो का अभिप्राय यही हो सकता है कि सम्प्रदाय मे इन पदो मे सगीत का समन्वय अवश्य है, पर ये राग-प्रधान नही माने जा सकते क्योकि ये राग, स्वर और ताल प्रधान होते हैं परन्तु इनमे प्रधानता भावाभिव्यक्ति की है।" सतो की सगीत शैली भी पृथक ही है। आचार्य श्री ने अनेक हरजस भी लिखे जो किसी न किसी राग मे रचित हैं। इनमे निम्नाकित राग-रागिनियो को आधार बना कर पद-रचनायें हुई हैं और कही-कही पर ताल-निर्देश भी दिये गये हैं।

राग आसावरी, भैरवी, विलावल, गूढ विलावल, सारग, कल्याण, कानडा, विहाग, काफी, वसत, कनेडी, घनाश्रयी, प्रभाती, सोरठा आदि।

इन हरजसो मे काव्य लालित्य, सगीत की मनोहरता, भक्त का दैन्य और समर्पण सभी कुछ एक ही स्थान पर एकत्र हो गये हैं।

बापजी विडद तुमारो जोवो।
तुम हो पिता पुत्र मैं तेरो, करम हमारा खोवो।

×

सतो सचो करो हरिनाम को।
इस सचा सू बहु सुख पावै, आवि अत यो काम को।

भाषा—

मध्ययुगीन सन्तो के काव्य की भाषा को लेकर आज भी बहुत बडा विवाद हिन्दी साहित्य के विद्वानो मे है। प्रदेश-सापेक्षता अथवा मताग्रह इसके कारण रहे हैं। किसी सन्त की भाषा को पजाबी के निकट लाकर खडा किया गया है तो किसी को पूर्वी हिन्दी के और किसी का दामन खीच कर राजस्थानी की पक्ति मे बैठाया गया है। एक आरोप सन्त-साहित्य की भाषा-परिष्कृति को लेकर भी है। "सन्त काव्य मे भाषा बहुत अपरिष्कृत है। उसमे कोई विशेष सौन्दर्य नही है। भावो का प्रकाशन प्रधान है और भाषा का प्रयोग गौण।"[1]

आचार्य श्री के काव्य की भाषा के सम्बन्ध मे भाषा-विवाद के दोनो आधारो को लेकर विवाद की कोई गुजाइश नही है। इनकी भाषा पूर्ण रूप से राजस्थानी है। इसका क्रिया रूप, वाक्य-विन्यास और मुहावरे सभी राजस्थानी के हैं। हाँ, मध्य प्रदेश, मालवा, गुजरात आदि प्रान्तो मे देशाटन के फलस्वरूप इनकी भाषा मे इतर प्रान्तो के शब्द भी समाविष्ट हो गये हैं। अपभ्रश, उर्दू, फारसी, पजावी और सस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग भी यथा-स्थान हुआ है। यह भी सन्त-साहित्य की प्रवृत्तिगत विशेषता मानी जानी चाहिये। सन्त वहुश्रुत थे—सत्सग मे अनेक विद्वानो और साधुओ के सम्पर्क मे आते थे, अस्तु, भावों के साथ भाषा से भी प्रभावित होते थे।

---

[1] हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ स २६६—डॉ० रामकुमार वर्मा।

कबीर की शैली पर एक बहुत बड़ा आरोप है— 'उनकी भाषा में अक्खड़पन है और साहित्यिक कोमलता या प्रसाद का सर्वथा अभाव है।"[1] यही बात कभी-कभी अन्य सन्तों की भाषाशैली के सम्बन्ध में कही जाती है किन्तु आचार्य श्री की भाषा के सम्बन्ध में यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि उनकी शैली में कहीं अक्खड़पन नहीं कहीं अभद्रता नहीं। यह सर्वत्र स्वाभाविक कोमलता और कमनीयता से संयुक्त है।

हंस बुगां की रामदास समझ'र करो पिछाण।
ऊ मोताहल चुग करे यो मच्छी परवाण॥
दादू तोमें बीभड़ी राम बिना कहे बेण।
रामदास इक राम बिन कण तुम्हारे सण॥
गन कर मह्यो पहरियो सखिया सब सिणगार।
नैणा काजल नेम का दीपक दिल-दीदार॥
बालपणा की प्रीतड़ी बहु सजनता आय।
रामदास तन भीतरे पड़गी काम कुराय॥
पवन नगारा बाजिया कलहलिया बेकाज।
कायर सुण-सुण भाजग्या अमन मारग्या बाज॥

उपरोक्त साखियों में निर्वेद करुणा और प्रीति आदि भावों की बहुत ही सहज अभिव्यक्ति हुई है। कहीं पर भी अत्युक्ति अथवा अभद्रता का प्रदर्शन नहीं।

आचार्य श्री की भाषा में राजस्थानी लोक-जीवन में प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी बहुत ही समीचीन हुआ है—

१ तन-जोबन बीतो पछे कारी लगे न कोय।
२ आछा बणिया राम का रामो राम रटाय॥
३ रामदास मन मूंड ले दण मूंड्या सिध होय।
४ सब पाप्यां को रामदास माथे बांध्यो मोड॥

अस्तु आचार्य श्री की भाषा के सम्बन्ध में यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं कि चाहे भाषा-शास्त्र के नियमों का उन्होंने कठोरता से पालन नहीं किया हो चाहे व्याकरण के दुर्लंघ्य नियमों की उन्होंने अवहेलना की हो किन्तु राजस्थानी भाषा की भावाभिव्यंजना की सामर्थ्य उसका पुष्ट और सजीव रूप इनकी वाणी में प्रकट हुआ है। आचार्य काका कालेलकर के सन्तों की भाषा के सम्बन्ध में कहे गये ये शब्द कितने संगत हैं—"भाषा की दृष्टि से भी सन्तों की सेवा कुछ कम नहीं है। सन्तों में तो भाषा को एक टकसाल ही खोल दी है जिसमें से नई-नई निरन्तर की अशर्फियां नित्य ढल-ढल कर निकलती रहती हैं। बंदूक की गोली की तरह संत-वाणी सीधे मनुष्य के हृदय तक पहुंच कर उस प्राण के अन्दर उसकी मरी हुई धर्म-बुद्धि को पुनर्जीवित कर देती है।"

---

[1] कबीर ग्रन्थावली पृ. स. ९ —श्यामसुन्दरदास।
सन्तवाणी—वियोगी हरि।

लोक पक्ष—

सन्त साहित्य का एक पक्ष बहुत ही प्रबल है और वह है—लोक-धर्म और लोकहित। धर्म, अध्यात्म, दर्शन, भाषा और साहित्य की तो सन्तो ने सेवा की ही है किन्तु लोक-मानस को मानव समाज मे प्रचलित धार्मिक रूढिया, अन्ध विश्वास और मिथ्या बाह्याचार के विरुद्ध जागृत करने मे जो भूमिका इन लोगो ने प्रस्तुत की है, वह भी बहुमूल्य है। शकराचार्य ने सन्तो की लोकहित दृष्टि का बहुत ही सम्यक् वर्णन निम्नाकित श्लोक मे किया है—

शान्ता महान्तो निवसन्ति सन्तो, वसन्तवल्लोकहित चरन्त.।
तीर्णा स्वय भीमभवार्णव जनात् अहेतुनान्यानपि तारयन्त ॥[१]

सन्तो ने स्वय अपनी वाणियो मे लोकहित के इस अभिप्राय को स्पष्ट किया है। ज्ञानेश्वर कहते है कि इस ससार को हमे ऊचा उठाना है। सन्त नामदेव ने भी कहा है कि सन्त ससार मे गरीबो का उद्धार-करने के लिए अवतीर्ण होते हैं।[१] कबीर, दादू, नानक आदि ने भी यह भाव प्रकट किया है।

आचार्य श्री रामदासजी महाराज का वाणी साहित्य भी इस तथ्य का साक्षी है। सन्तों की यह मान्यता थी कि मनुष्य को कथनी और करनी मे कोई अन्तर नही होना चाहिए। मानव चरित्र की यह पावनता लोकहित के लिए अत्यन्त आवश्यक होती है किन्तु सन्तो ने देखा कि अपने आपको आचार्य, साधु, ब्राह्मण और पण्डित कहने वाले लोग कितने झूठे और कपटी हैं, वे कहते कुछ और है और करते कुछ और। साथ ही वेद, पुराण और शास्त्र की दुहाई देकर भी उपेक्षित, असहाय, अबोध मानव-समाज को ईश्वर और धर्म के नाम पर लूटा जा रहा है। बौद्धिक तर्क-वितर्क की चकाचौंध मे लोगो को मोहित और भ्रमित किया जा रहा है। इन सारी धार्मिक और सामाजिक बुराइयो का सन्तो ने डट कर विरोध किया। उन्होने धम और अध्यात्म की साधना के बीच से विराट मानवता के हित की साधना की। व्यक्ति की शुद्धि से सम्पूर्ण समाज की शुद्धि पर जोर दिया। डॉ० वि० भि० कोलते ने कहा है—"यह धारणा गलत है कि सन्त समाज मे रह कर भी उससे विमुख होते हैं, वे केवल धार्मिक कार्य करते हैं, सामाजिक या अन्य प्रकार के कार्य नही। धर्म और लोक-जीवन के बीच वे एक गहरी खाई खोदते है। पर मनुष्य का धार्मिक जीवन क्या समाजिक जीवन, आर्थिक जीवन और ऐतिहासिक जीवन से भिन्न होता है ? क्या ये ऐसी तग कोठरिया हैं जिनके बीच अभेद्य दीवारे खडी है ? नही, जीवन तो एक सागर है। प्रसगवश उसमे यदाकदा बुद्बुद् क्यो न उठते हो, लेकिन जीवन जीवन ही है।"[२]

आचार्य श्री ने सत्य, निष्कपट व्यवहार, प्रेम, सहयोग, अहिंसा, करुणा, नीति, पातिव्रत्य, विश्वास आदि मानवधर्मी तत्वो का लौकिक जीवन मे अत्यन्त महत्व बताया है। बाह्याचारी लोकविरोधी तत्वो का उन्होंने विरोध भी किया है—पडित पर किये गये व्यग का एक चित्र देखिये—

पडित पढ़ कर रामदास, बहुता करै गुमान।
दोय अक्षर पढियां बिना, अत हुवैगी हान॥

---

[१] मराठी सन्तों का सामाजिक कार्य—डा० वि० भि० कोलते।
[२] „ „ „ „

आनदेव कू रामदास, दुनिया पूजण जाय।
भूल गई हरि भगत कू, जम के आई दाय ॥

आचार्य श्री ने नीतिविषयक बहुत से प्रसगो की चर्चा भी अत्यन्त ही काव्यमय ढग से अपनी वाणी में की है। कपटी के सम्बन्ध में देखिये—

निवण देख धीजै मती, निवणं घणो विचार।
रामदास चीतो निवें, मारै मिरग पछार ॥
मुख ऊपर मीठी चवै, पूठै बुरी कहाय।
रामदास ता मिनख सू, प्रीत करो मत जाय ॥
आया कू आदर नहीं, दीठां मोडै मुक्ख।
रामा तहा न जाइये, जे कोइ उपजै सुक्ख ॥

निन्दा के सम्बन्ध मे देखिये—

औरां की निंद्या किया, ताके ज्ञान न कोय।
रामा सिवरो राम कूं, ज्ञान गरीबी जोय ॥
रामा नीच न निंदियै, सबसू निरसा होय।
किणी'क औसर आय कर, दुख देवेगा तोय ॥

इसी प्रकार जीव-हिंसा कर मासाहार करने वाले को भी आचार्य श्री ने फटकारा है—

मास खाय सो रामदास, राकस ढेढ़ समान।
सूकर कूकर सारसा, सग कियां ह्वै हान ॥
मास कुता को खाण है, कै राकस कै भूत।
रामदास सगत कियां, मारैगा जमदूत ॥

इस प्रकार उपरोक्त चर्चा से यह प्रकट हो जाता है कि आचार्य श्री मे लोकहित की भावना बडी प्रबल थी। समाज का और मानव-मन का अध्ययन उनका बडा गहरा था। एक कुशल वैद्य की भाति रोग का निदान कर सही उपचार मे उनका विश्वास था और इसीलिए स्नेह और भर्त्सना के बीच मे से सुधार का मार्ग उन्होंने निकाला। सतो की इस लोक-सेवा के सम्बन्ध मे आचार्य काका कालेलकर के शब्द अक्षरश सत्य हैं—"सतो ने सबसे बडा यह काम किया कि धर्म और रूढ़ि के नाम पर जो भ्रम, वहम या गलतफहमियाँ फैली हुई थी, उनको दूर कर दिया। सभवत सतो का सबसे श्रेष्ठ कार्य यही है।"

राजस्थानी सन्त काव्य मे स्थान—

यह निश्चित है कि सन्त काव्य-धारा के आदि प्रवर्त्तक कबीर ने जो रसवन्ती प्रवाहित की वह शाखा-प्रशाखाओं के रूप मे उत्तर भारत के अन्य प्रान्तो मे भी बहने लगी। भाषा, भाव और शैली के प्रकृति-भेद के कारण कालान्तर मे उनका अपना पृथक स्वरूप बन गया। आचार्य श्री रामदासजी महाराज की वाणी को यो सत काव्य-धारा के आदि रूप मे ढूढ़ा जा सकता है किन्तु राजस्थानी सन्त काव्य को इनकी देन महान है—क्या गुणात्मक दृष्टि से और क्या परिमाणात्मक दृष्टि से। इन्होने आज से दो सो वर्ष पूर्व, राजस्थान की जन-भाषा

के भावाभिव्यञ्जन की शक्ति और सामर्थ्य को प्रकट किया। सूक्ष्म से सूक्ष्म और गहन से गहन भाव की अभिव्यक्ति बहुत सरल और सादे रूप में इनके काव्य में हुई। दादू गरीबदास रज्जबजी सुन्दरदास चरणदास दयाबाई सहजोबाई, रामचरणजी हरिरामजी लालदास आदि निगुणी सन्त कवि इस प्रान्त में हुये और इन्होंने प्रमुख रूप से राजस्थानी में ही लिखा किन्तु जो स्वभावोक्ति, व्यंजना का लालित्य और हृदय को सीधे छूने की शक्ति इनके काव्य में है उतनी दूसरों में प्राप्त नहीं होती। व्यंग और फटकार की निर्भीकता भी इनमें अपूर्व है। इनकी उक्तियां रहस्यवाद का सूखा उपदेश मात्र नहीं है, उनमें काव्य-सौन्दर्य भी प्रस्फुटित हुआ है। राजस्थान के धार्मिक आध्यात्मिक और लौकिक जीवन की जो सेवायें आचार्य श्री ने अपनी अमृत वाणी और साधनामय जीवनाचरण से की हैं वे अक्षुण्ण हैं।

सम्पादन के सम्बन्ध में—

आचार्य श्री की वाणी का प्रस्तुत सम्पादन हमने रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रधान पीठ खेड़ापा (जोधपुर) के संग्रहालय में सुरक्षित उनकी वाणी की एक मुख्य प्रति व अन्य प्रकीर्ण ग्रन्थों की प्रतियों के आधार पर किया है। चांपडा रामद्वारे में सुरक्षित एक और प्रति से भी हमने सहायता ली है।

प्रस्तुत ग्रंथ में हमने आचार्य श्री की भाषा के मूल स्वरूप को ही रखा है जिससे राजस्थानी भाषा के गवेषकों और विद्वानों को अपने शोध कार्य में सुविधा रहे। जब-तब जहां हमें उचित लगा वहां पाठान्तर भी दे दिये गये हैं।

राजस्थान के बाहर भी आचार्य श्री के साहित्य को पढ़ा जायेगा इसलिये वाणी में प्रयुक्त राजस्थानी के कठिन शब्दों का भावात्मक अर्थ भी दिया है। साधना रहस्य और योग के प्रतीकों के अर्थ देकर हमने इस सम्पादन को पूर्ण बनाने का विनम्र प्रयत्न किया है।

यद्यपि यह ग्रंथ पूज्यपाद श्री रामदासजी महाराज की वाणी का ही सम्पादन है तथापि सम्प्रदाय के नियमानुसार सभी पाठ्य ग्रंथों के लिये पंचवाणी का होना अनिवार्य है। अत इसी परम्परा के अनुसरण में हमने सर्व प्रथम पूज्यपाद श्री दयालदासजी महाराज सिंहथल पीठाधीश्वर पूज्यपाद ,श्री हरिरामदासजी महाराज श्री कबीरजी तथा श्री नामदेवजी महाराज की कुछ वाणियां भी दी हैं। अन्त में खेड़ापा पीठ के सम्पूर्ण आचार्यों की वाणी के कुछ अंश देकर यह पाठ-योग्य ग्रंथ तैयार किया गया है।

उपसंहार—

अपने वक्तव्य को समाप्त करने के पूर्व विद्वद् जगत के सामने हम एक निवेदन और करना चाहेंगे। राजस्थान का सन्त साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। यहां के सन्त कवियों ने लोक और धर्म का शाश्वत सन्देश दिया है। ऐसे अमृत की धारा बहाई है जिसका पान करके आज के संत्रासित और दमित जीवित युग की संत्रस्त मानवता धार्मिक युग की मांग को समझी है। जो कुछ कार्य इस क्षेत्र में हुआ है और हो रहा है वह अधिक उत्साहवर्द्धक और सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। इस विषय में सम्बन्धित इतिहास और समीक्षा ग्रंथों को जब देखते हैं तो निराश ही होना पड़ता है। इस प्रान्त में विद्यमान सभी सन्त सम्प्रदायों का

साहित्य विशाल है। अकेले रामस्नेही सम्प्रदाय मे ही ऐसे सन्त कवि हो गये है जिन्होने लाखो की सख्या मे साखी और पद लिखे और आज भी उनका साहित्य सम्प्रदाय के पीठ-स्थलो और उनके भक्त समुदाय के पास सुरक्षित है। श्री दयालजी महाराज ने उच्चकोटि का साहित्य लिख कर राजस्थानी व हिन्दी की जो सेवायें की हैं वे साहित्य समाज को कैसे विस्मृत होसकती है। उनके द्वारा विरचित भक्तमाल तो आगरा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भी हुई है। किन्तु या तो इन सन्त कवियो का उल्लेख साहित्य के इतिहास मे किया ही नही गया और यदि कही किया गया है तो अत्यन्त भ्रामक और अपूर्ण। कही-कही पर तो केवल औपचारिकता मात्र ही निभाई गई है। इस साहित्य का गवेषण, सर्वेक्षण, अध्ययन और प्रकाशन तीव्रता से होना चाहिये।

आचार्य काका कालेलकर के शब्द हम यहा उद्धृत करेंगे—"सतवाणी किसी भी राष्ट्र की सर्वश्रेष्ठ पूजी है। वह वाणी का विलास नही, किन्तु जीवन का निचोड है, इसलिये वह जीवित और अमर होती है। सत-वाणी वह परम पवित्र गगा है, जिसमे स्नान पान करने से लोक-जीवन पवित्र, समृद्ध, स्वतत्र और समर्थ हो जाता है।" आचार्य के इन शब्दो की पृष्ठभूमि मे ही सन्त साहित्य की खोज, प्रकाशन और पुनरोद्धार तीव्र गति से होना चाहिये। राष्ट्रीय एकता के इस ज्वलत प्रश्न के समय हमारा सन्त साहित्य कितनी बडी भूमिका पुन प्रस्तुत कर सकता है, मध्ययुगीन इतिहास की पृष्ठभूमि मे इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

अन्त मे यदि हमने उन विद्वानो के प्रति जिनके बहुमूल्य ग्रथो की इस ग्रथ के सम्पादन और भूमिका लिखने मे सहायता ली हैं, अपनी कृतज्ञता अर्पित नही की तो हमारा यह अनुष्ठान अधूरा ही रहेगा। सन्त साहित्य के विद्वानों ने अमूल्य सम्मतियां भेज कर हमारा उत्साह-वर्द्धन किया है, हम उनके भी आभारी हैं।

बीकानेर निवासी एव वाणी साहित्य के मर्मज्ञ स्वर्गीय श्री लक्षरामजी महाराज के सहयोग को कभी नही भुलाया जा सकता। अपनी रुग्णावस्था मे भी खेडापा धाम मे रह कर आचार्य श्री की प्रस्तुत वाणी के अर्थ-ज्ञान मे उन्होंने हमारा मार्ग प्रदर्शन किया। श्रद्धेय श्री तपस्वीजी महाराज, नीमाज ने पुस्तक मे यत्र तत्र सशोधन किये हैं, अत हम उनके ऋणी भी है।

परमादरणीय एव परम विरक्त श्री स्वामी रामसुखदासजी महाराज ने इस ग्रथ के सम्पादन व भूमिका लेखन के कार्य मे हमे अमूल्य परामर्श देकर अनुगृहीत किया है।

सन्त शिरोमणी परमहस श्री उभयरामजी महाराज (सूरसागर), पडित उत्साह-रामजी प्राणाचार्य (मोतीचौक, जोधपुर), श्री पीतमदासजी महाराज (मेडता रोड) एवं श्री च्यवनरामजी आयुर्वेदमार्तण्ड, बीकानेर का सहयोग भी अपूर्व रहा है—हम इनके भी हृदय से कृतज्ञ हैं।

हमारे प्रिय बन्धु श्री पूरणचन्द्र शर्मा के सहयोग को भी हम विस्मृत नही कर सकते। पथिक वेष मे आकर वे लम्बे समय तक खेडापा धाम में रहे और वहां के पुस्तकालय की हस्तलिखित पुस्तको से बडे ही परिश्रम के साथ उन्होने इस ग्रथ की मुद्रण प्रति तैयार की।

अन्त में परब्रह्म परमात्मा आचार्य श्री एवं उनके प्रधान शिष्य श्री दयालु महाराज के पादपद्मों में भक्ति और श्रद्धा से नत होकर हम यह अल्प प्रयास विद्वत् समाज के समक्ष रखने का साहस कर रहे हैं।

इस ग्रन्थ की सभी अच्छाइयाँ और गुण विद्वानों की कृपा के ही फल हैं। त्रुटियाँ और अभाव हमारी अल्पज्ञता के द्योतक समझे जाय।

श्री दयालु भवन
जोधपुर
माघ कृष्णा १
वि. सं २ १८

हरिदास शास्त्री
रामप्रसाद दाधीच

* श्री रामो जयति *

श्रीमद्रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री रामदासजी महाराज की वाणी

[१]

प्रथम गुरु-स्तुति अंग

[गुरु स्तुति]

साखी

सतगुरु सेती बीनती, परब्रह्म सू परणाम ।
अनत कोट सत रामदास, निसदिन करू सिलाम ॥ १

प्रथम वद परब्रह्म नित, जिना दिये सिर पाव ।
दुतीय वद गुरुदेव कू, दिये भगत के भाव ॥ २

त्रितीय वद धिन सत कू, सबकै लागू पाय ।
परब्रह्म गुरु सत कू, रामदास नित गाय ॥ ३

प्रथम वद गुरुदेव कू, जिना दिये तत-ग्यान ।
दुतीये वद परब्रह्म कू, अतर प्रगटे ग्रान ॥ ४

त्रितीय वद सब सत कू, तिहु ठौर लौ मान ।
नाम तीन बप एक है, रामदास कह ग्यान ॥ ५

---

१ निर्गुणमतावलबी सन्तोकी भक्ति-परम्परा मे गुरु, परब्रह्म एव सतजन एक रूप से आराध्य रहे है । अत मगलाचरण मे सभी सतों ने इन तीनो की वदना की है ।

२ भगत – भक्ति । ४ तत-ग्यान – तत्वज्ञान । ५ बप – शरीर ।

दुख दालद भव भाजग्या, मिल्या निरजन नाथ ।
ररकार रट रामदास, कर सतगुरु को साथ ।। ४

सतगुरु समद सरूप है, सिष्प नदी हुय जाय ।
रामदास मिल एकता, सहजा रहे समाय ।। ५

राम-नाम तो दुलभ है, जैसी खाडा धार ।
सतगुरु सेती सग रमै, से जन उतरै पार ।। ६

सतगुरु सेती प्रीतडी, जे कर जानै कोय ।
राम-नाम धन पायबौ, आवागवरण न होय ।। ७

राम-रसायण भर पियै, सतगुरु सेती सग ।
रामदास लागी रहै, रूम-रूम बिच रंग ।। ८

रूम-रूम मै रुच पिया, मन मै भया मगन्न ।
अरधनाम रत्ता रहे, रामदास हरि जन्न ।। ९

गरु जैसा गुरुदेव है, रामा दूजा नाहि ।
भवसागर मै डूबता, काढ लिया गहि बाहि ।। १०

रामदास सतगुरु मिल्या, भरम किया सब दूर ।
निस-अधारा मिट गया, ऊगा निरमल सूर ।। ११

रामदास गुरुदेव की, मै बलिहारी जाहि ।
सासा सबही मेट कै, ब्रह्म बताया माहि ।। १२

रामदास सतगुरु मिल्या, कह्या अमोलक बैन ।
सुन सागर साई मिल्या, आदि आपका सैण ।। १३

सतगुरु का मुख देखता, पाप सरीरा जाय ।
साध सगत सत रामदास, अटल पदी ले जाय ।। १४

---

५ **समद** – समुद्र । ६ **खाड** – खड्ग ।

९. **अरधनाम** – धारावाहिक राम-स्मरण करने से राम शब्द के 'म' रूप माया एव 'अकार' रूप जीवात्मा के लय हो जाने पर अवशिष्ट 'रकार', शुद्ध ब्रह्म रूप ही 'अरधनाम' है । १३ **अमोलक** – अमूल्य । **सुन** – शून्य ।

१४ **अटल पदी** – निर्वाण-पद ।

ब्रह्म विलासी सतजन, अगमींगम्म अपार ।
सायर सा सूभर भर्‌या, सतगुरु सिरजनहार ॥ १५

सतगुरु मेरै सोस पर मैं चरणां की रज्ज ।
सरणै आयो रामियो लख चौरासी तज्ज ॥ १६

चौरासी का जीव था सरणै लिया समाय ।
औगुण मेटया रामदास सतगुरु करी सहाय ॥ १७

रामदास की वीनती साभलिय गुरुदेव ।
और कछू मांगू नहीं जुग-जुग तुमरी सेव ॥ १८

रामदास की वीनती, साभलियै गुरुद्याल ।
रामनाम सिवराइयै मेटो चिपै जजाल ॥ १९

किरपा की गुरुदेवजी सबद दिया निज सार ।
रामदास निसदिन भजो छाडौ सबै विकार ॥ २०

भव-सागर में डूबता सतगुरु काढ्या आय ।
रामदास गुरुदेवजी सहजां करी सहाय ॥ २१

गुरु की महिमा रामदास, कहियै कहा बनाय ।
हमसा पतित उधारिया जम पै लिया छुडाय ॥ २२

सतगुरु सा दूजा नहीं भव सागर के मांय ।
अनता जीव उधारिया मिल्या आदि-घर आय ॥ २३

सतगुर ऐसा रामदास जसा पारस जाण ।
लोहासो कचन करे तन मन सूपे प्राण ॥ २४

सतगुरु एसा रामदास जमा सूर प्रकास ।
गत अग्यान मिटायके अन्तर करे उजास ॥ २५

---

१५ अगमींगम्म – अगम्य का ज्ञान । सायर – सागर ।
१६ लख चौरासी तज्ज – भारतीय दर्शन के अनुसार चौरासी लाख योनियाँ ।
१[illegible] साभलियै – सुन लिया स्वीकार किया । चिप – विषय-वासना ।
२[illegible] आदि-घर – परब्रह्म-परमात्मा । २५ अग्यान – अज्ञान ।

सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा पूरण चद ।
सप को इम्रत पाय कर, अमर किया आनद ।। २६

सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा इदर जाण ।
किरपा कर बिरखा करी, भीज गया सब प्राण ।। २७

दीया एक ही रामदास, घर घर दीया जोय ।
सबै अधारा मिट गया, जगै अखडत लोय ।। २८

सतगुरु दीपक रामदास, सिप चल आया पास ।
अनता जीव जगाविया, अतर भया उजास ।। २९

गुरु जैसा गुरुदेव है, साची कहूँ विचार ।
गुरु मिलावै ब्रह्म सू, और वार के वार ।। ३०

सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा चदन होय ।
सिष सेती सीतल करै, विपिया डारै खोय ।। ३१

सतगुरु ऐसा रामदास, जैसी तरुवर छाय ।
सीतल छाया मुगत-फल, ता बिच केलि कराय ।। ३२

गुरु की महिमा रामदास, मो पै कही न जाय ।
चौरासी का जीव कू, मुगत-देस ले जाय ।। ३३

गोविन्द तै गुरु अधिक है, रामै कहा विचार ।
गुरु मिलावै राम कू, राम अमर भरतार ।। ३४

राम सबै ही सिरजिया, लख चौरासी जीव ।
रामदास सतगुरु विना, परत न पावै पीव ।। ३५

लख चौरासी जूण मे, सबही बध्या जीव ।
सतगुरु बध छुडाय कर, मेल्या आदू पीव ।। ३६

---

२७ इदर – इन्द्र ।

३०. वार के वार – अन्य उपासना मे मोक्ष-प्राप्ति मे विलम्ब ।

३१. विषिया – विषय वासना । ३२ केलि – क्रीडा ।

३५. परत – प्रत्यक्ष । पीव – परब्रह्म-परमात्मा । ३६. आदू – आदि ।

रामदास सतगुरु मिल्या मिलिया राम-दयाल ।
सुख सागर मैं रम रह्या मेट्या विषै-जजाल ।। ३७

इति गुरुदेव को अंग

*

[१]

अथ गुरु पारख को अंग

साखी

गुरु ही अंधा रामदास, सिष ही अंधा होय ।
आंधे कू आंधा मिल्या पार न पहुँचा कोय ।। १

आंधे हूदी डांगड़ी, आंधै झाली आय ।
दोनूं डूबा रामदास काल-कूप के मांय ।। २

आंधे गुरु की रामदास अंदर फूटी आंख ।
आंधे कू आंधा मिल्या, बांध'र दीया न्हांख ।। ३

आंधा सिष आंधा गुरु आंधा पूजणहार ।
आंधे कूं आंधा मिल्या कूण उतारै पार ।। ४

सतगुरु सूजत क्या करै, जो सिष आंधा होय ।
रामदास पारख बिना आपो दीयो खोय ।। ५

सिष ही अंधा रामदास आंधा ही गुरु-पीर ।
पूरे सतगुरु बाहिरो लहै न सुख की सीर ।। ६

आंधा ही सिष रामदास आंधा ही गुरुदेव ।
आंध आंधा कूकियो करै अंध की सेव ।। ७

---

२ हूदी – थी । डांगड़ी – लाठी । झाली – पकड़ी ।
३ अंदर – आन्तरिक । न्हांख – फेंक दिया । ६ सीर – धारा ।

आधी दुनिया रामदास, आधा राणा-राव ।
पूरै सतगुरु बाहिरौ, खेलै जम सिर डाव ॥ ८

सतगुरु पूरा क्या करै, पारख नही लगार ।
रामदास पारख बिना, वुहौ जाय ससार ॥ ९

इति श्री गुरु पारख को अग

★

[४]

अथ गुरु-वंदन को अंग

साखी

गुरुवदन ते रामदास, मिट जाय आल-जजाल ।
गुरु* मिलावै राम कू, आठ पहौर मतवाल ॥ १

गुरु को वदन कीजिये, मुख सू कहिये राम ।
रामदास सो सिष-जन, पावे आदू धाम ॥ २

सतगुरु वदन अधिक फल, जाका अत न पार ।
रामदास मै का कहू, कह गये सत अपार ॥ ३

सतगुरु वदिया रामदास, चौरासी मिट जाय ।
सरग-नरग दोनू मिटे, जामण-मरण मिटाय ॥ ४

सतगुरु वदिया रामदास, टल जाय कोटि विकार ।
करम कटै सब जीव का, मिले मुगत के द्वार ॥ ५

सतगुरु वदिया बाहिरो, राम न पावे कोय ।
चौरासी मे रामदास, जीव जूण बहौ होय ॥ ६

---

८ बाहिरौ – रहित । ९. लिगार – कुछ भी ।
१ आल-जजाल – सासारिक भ्रम ।
४ सरग-नरग – स्वर्ग और नर्क । जामण-मरण – जन्म और मृत्यु ।
६ जूण – योनि । *पाठ भेद 'जाय मिले पर ब्रह्म मे ।'

बदन कर निंदा करै जाका मुह मल बीठ ।
रामदास या जीव कूं जम-दरगा में पीट ।। ७

बदन कर निंद्या करै, भुगते नरक दवार ।
रामदास या दुख को ल्है कोई वार न पार ।। ८

किरपा की गुरुदेवजी भतर किया उजाल ।
रामदास निंद्या किया प्रांण भमटे काल ।। ९

सतगुरु जो सिष ऊपरे कोप करे सौ वार ।
तोही सिष सीतल हुवे प्राणै नहीं अहंकार ।। १०

सतगुरु लोभी लालची क्रोध रूप वहौ होय ।
बलि राजा प्रहलाद कूं देख निवाज्या सोय ।। ११

सतगुरु का गुण अनत है औगुण एक न जाण ।
रामदास घट भीतरे, आपा लेहि पिछाण ।। १२

सतगुरु दीया रामनाम निराकार निरवाण ।
या में औगुण को नहीं आपा लेहि पिछाण ।। १३

पारस रूपी सतगुरु सिष है लोह निराट ।
रामदास मिलिया समां पलट और ही घाट ।। १४

लोह पारस की क्या कहु सतगुरु अगम अपार ।
तन-मन सूंप्या रामदास करे आप दीवार ।। १५

इति गुरु-वंदन को अंग

---

७ पीट – पीटा जायगा । ११ निवाज्या – कृपा की ।

१२ आपा लेहि पिछाण – आत्म-साक्षात्कार ।

[५]

अथ गुरु-धरम को अंग

सतगुरु सू पूठा फिरै, जाके अंतर काण ।
रामदास ताकू वद्या, बहोती ह्वैगी हाण ।। १

सतगुरु सू पूठा फिरै, सो अपती बहौ जीव ।
अनत निंदा गुरुदेव की, परत न पावे पीव ।। २

निदक का मुहडा बुरा, दीठा लागै पाप ।
गुरुद्रोही सू रामदास, अलगा रहिये आप ।। ३

गुरु-धरमी का रामदास, दरसण कीजैं जाय ।
दरसण सू औगुण मिटै, करम विलै हुय जाय ।। ४

सतगुरु बड सिख साख है, रुपी धरण मे आय ।
रामदास बड लग गया, गिगन गरजिया जाय ।। ५

गिगन गरजिया रामदास, फूल्या सुन्य मझार ।
डाल चली चहु कूट मे, सिष फल लगे अपार ।। ६

डाल चली बड पेड ते, सब बड का बिस्तार ।
रामा पेड जु सीचिया, सब हरियाली डार ।। ७

विट लागा सो नीपना, जल पडिया गदलाय ।
गुरु त्यागे हरि कू भजै, निस्चय नर्का जाय ।। ८

गुरु हितकारी रामदास, दिन-दिन दूणा थाय ।
उलट समावै ब्रह्म मे, ओत-पोत हुय जाय ।। ९

सिप तो ऐसा चाहिए, रहै सतगुरु सो रत्त ।
सतगुरु जो न्यारा रहै, सिष न छाडै तत्त ।। १०

इति गुरु-धरम को अंग

---

१ काण–कमी, अभाव २ अपती–पापी ३ दीठा–देखने से ४ विलै–विलय
५ बड–वटवृक्ष ८ विट–फल का ऊपरी भाग १०. तत्त–तत्त्व-ज्ञान ।

नौ

अथ सिवरण को* अंग

साखी

परथम सिवरण जीभ सू चौड करो वजाय ।
दोय अछर रट रामदास, साँई माद सुणाय ॥ १

सिवरण कीज रामदास, रोम रोम भरपूर ।
सवरण सू साँई मिलै सेवग सदा हजूर ॥ २

रामदास सिवरण कियां रोम रोम मुख स्वाद ।
नाड़-नाड़ सुर साँभलै धुर अनाहद नाद ॥ ३

रामदास सिवरण कियां सिवरण निपज साध ।
सिवरण सू सुन गढ़ चढ़ सिवरण लगे समाध ॥ ४

सरवण सुणिया रामदास मुख सू सुमर्‌या राम ।
रसना हिरदे नाभ विच सहज किया बिसराम ॥ ५

रसना सू सिवरण किया अंतर लागी तार ।
रूम-रूम बिच रामदास ऊठत एक पुकार ॥ ६

मुख सेती सिवरण किया मन भायो इतबार ।
दूजा सबही कूड़ है रामा सिवरण सार ॥ ७

रामा सिवरण सार है सास उसासां ध्याय ।
किया करम सब ही कटे दूजा लगै न आय ॥ ८

केताई कुकरम किया जाण्या नहीं विचार ।
सरब पाप पल में कटै राम राम चित धार ॥ ९

---

* सिवरण–स्मरण (नाम-स्मरण)

१ नाद–शब्द-ध्वनि ।

४ सुन गढ़ चढ़–शून्य गढ़ [परब्रह्म परमात्मा] पर विजय प्राप्त करना अर्थात परब्रह्म को पा लेना ।

७ इतबार–विश्वास ।

कुकरम करू न विष भखू, लगी सबद की चोट ।
सतगुरु सरणै रामदास, पाई हरि की ओट ।। १०

बुरा भला तुम सब किया, घट मे बैठे राम ।
'मै' 'तै' मिटगी रामदास, सहज मिल्या निज धाम ।। ११

बुरा किया सब मै किया, तुम केवल हो राम ।
रामदास की बीनती, मेटो सकल विराम ।। १२

रामदास सिवरण बिना, कदे न छूटै जीव
अनत जनम तई पुन करे, तोहि न पावे पीव ।। १३

पाप पुन सू रामदास, सुरग-नरग मे जाय ।
सिवरण बिन छूटै नही, कोटिक करो उपाय ।। १४

सिवरण एको सार है, दूजा आल-जजाल ।
रामदास सब सोजिया, हरि बिन परलै-काल ।। १५

हरि सिवरण कर लीजिए, सास उसासो ध्याय ।
रामदास सिवरण किया, साहिब मिलसी आय ।। १६

सब इद्री सिवरण करै, मन ही करै पुकार ।
रामदास अब आविया, सुख-सागर भरतार ।। १७

रामदास सिवरण तणा, विवरा देउ बताय ।
घट माही अजपा हुवे, सुणो सकल चित लाय ।। १८

रामदास सिवरण किया, परथम जगी एक नार ।
सहस एक चौवन मही, सबद करत गुजार ।। १९

---

११ सहज – सरलता से, मायारहित परब्रह्म-परमात्मा
'मै' 'तै' – मेरापन और तेरापन [अहम् और त्वम्]

१५ परलै-काल – प्रलय-काल । १६ साहिब – परमात्मा । १८ विवरा – विवरण [रहस्य] अजपा – विना रसना के स्वाभाविक जप ।

१९ एक नार – रसना स्थित नाडी ।
सहस एक चौवन मही – रसना मे स्थित एक हजार एक सौ चौवन सूक्ष्म नाडियाँ ।

कंठ प्रेम प्रकासिया हृदे होत धमकार ।
नाड़ नाड चेतन भई मन आयो इतबार ।। २०

नाभ कवल में सचर्‌या सहस च्यार परकास ।
नाड़-नाड ण्यारी धुर सुणे रामियादास ।। २१

बहोतर नाड़ी बंक की मिली बंक में आय ।
रामदास सब फेर क, उलटा अभर भराय ।। २२

नाड सवासौ एक ही सहस पांच परवान ।
रामदास तन भीतर, ए वड नाड बखाण ।। २३

महो नाड दूजी घणी, तीन लोक विस्तार ।
रामदास तन सौंफ कर सब का करो विचार ।। २४

नाडी बहोत्तर हजार हैं सब ही तन के माय ।
सबी मिलाणी तीन सू, तिरवेणी में आय ।। २५

इला पिंगला सुषमणा तिरवेणी के तट्ट ।
रामदास ता ऊपर, मंडया सहुज ही मट्ट ।। २६

वाहां सू आगा गया परम सुन्न के मांय ।
गिगन-कूप मे रामदास, अमृत भर भर पाय ।। २७

---

२० कंठ प्रेम प्रकासिया – शब्द की गति का कंठ मे प्रवेश करने पर विशेष स्थिति ।
हृदे होत धमकार – शब्द के हृदय तक पहुँचने पर विशेष स्थिति ।
२१ सहस च्यार परकास – शब्द के नाभि-कमल तक पहुँचने पर नाभि स्थित चार हजार नाड़ियो में प्रकाश का होना ।
२२ बहोतर नाड़ी बंक की – बंक नाल की बहत्तर नाड़ियां ।
२३ ए वड – शरीर के भीतर पांच हजार एक सौ पच्चीस नाड़ियां बड़ी नाड़ियां ।
२४ महो नाड़ – सूक्ष्म नाड़ियां ।
२५ तीन सूं – इला पिंगला और सुषुम्ना । बहोत्तर हजार – योगाभ्यासी सन्तों के मतानुसार शरीर मे कुल बहत्तर हजार नाड़ियां मानी गई हैं जिनमे शब्द द्वारा प्रकाश होता है । तिरवेणी – इला पिंगला व सुषुम्ना का संगम-स्थल ।
२६ सहुज ही मट्ट – माया विशिष्ट परब्रह्म परमात्मा का स्थान ।
२७ परम सुन्न – माया रहित परब्रह्म परमात्मा का स्थान । गिगन कूप – शून्याकाश ।

नाड नाड अमृत झरै, पीवत सबै सरीर ।
रूम-रूम बिच रामदास, चलत सुखम की सीर ।। २८

साढा तीन किरोड मे, एक होत ररकार ।
सहजै सिवरण रामदास, ताका अत न पार ।। २९

उर अतर नख-सिख बिचे, एक अजप्पा होय ।
रामदास या सतगति, साधू जाणे कोय ।। ३०

जाप किया मुख द्वार ते, रसना चाली सीर ।
अजपा सिवरण घट विचै, को जाणै गुरुपीर ।। ३१

गिगन-मडल मे रामदास, अनहद घुरिया नाद ।
रूम-रूम साई मिल्या, सिवरण पाया स्वाद ।। ३२

इति श्री सिवरण को अग

★

[७]

अथ श्री सिवरण मेध्या को अंग*

साखी

अध-सिवरण रसणा लिया, मास दोय इक सास ।
कठ-कवल मे रामदास, प्रेम भया परकास ।। १

---

२८ **सुखम की सीर** – सुषुम्ना नाडी से स्रावित होने वाली अमृत की धारा ।

२९ **साढ़ा तीन किरोड** – योगाभ्यासी सन्तो के मतानुसार शरीर पर स्थित रोमावलियाँ । **सहजै सिवरण** – नाभि मे शब्द का प्रकाश होने पर अजपा जाप होता है, वही सहज सिवरण कहलाता है । **ररकार** – माया रहित परब्रह्म-परमात्मा के 'रकार' का गूजन ।

३१ **गुरुपीर** – गुरु-भक्त ।

३२ **अनहद** – अनाहत, योगियो को सुनाई देने वाली एक आतरिक 'रकार' ध्वनि ।

*टिप्पणी—इस अग मे आचार्य श्री रामदासजी महाराज ने अपनी भजन-साधना मे शब्द की गति के काल क्रम का स्वानुभवो के आधार पर विवेचन किया है ।

१ **अध-सिवरण** – रसना का स्मरण [निरन्तर श्वासोच्छ्वास राम-स्मरण से रसना मे दो मास तक शब्द गति की स्थिति]

मध सियरण कठ होत है, गदगद उठ इक धार ।
सूरा साधू रामदास, करत हृदा की सार ॥ २

बरस एक अरु पच दिन हृदा कवल में ध्याय ।
उत्तम सिवरण रामदास, सहजां सुरत लगाय ॥ ३

अत उत्तम सियरण नाम में रूम-रूम भणकार ।
रामदास गुरु सबद तें सहजां लगी पुकार ॥ ४

नाभि कमल अस्थान में बरस दोय विश्राम ।
बक-नाल हुय रामदास लिया मेरु मुकाम ॥ ५

मेरु उलघ ऊंचा चढ्या त्रगुटी सिंध मझार ।
रामदास धीरज नहीं अन्तर अत पुकार ॥ ६

त्रगुटी सुख कहा जाणिए तीन गुणां का धाम ।
रामदास त्रगुटी पर अमर निरंजन राम ॥ ७

आठ बरस और मास चत्त, पिछम त्रगुटी घाट ।
रामदास तापे पछे खुली सुन्न की घाट ॥ ८

रामदास बीसो बरस तामें काती मास ।
ता दिन छाडी त्रगुटी किया ब्रह्म में वास ॥ ९

---

२ मध-सिवरण – कंठ-स्मरण (कंठ में शब्द की स्थिति)

३ उत्तम-सिवरण – हृदय-स्मरण [हृदय-कमल में शब्द प्रकाश की स्थिति एक वर्ष और पाँच दिन तक] सहजां सुरत – स्वाभाविक शब्द एवं सुरत का संयोग ।

४ अति उत्तम सिवरण – नाभि-स्मरण [नाभि-कमल में शब्द गति की स्थिति दो वर्ष तक] पुकार – अजपा जाप ।

५ मेरु मुकाम – मेरुदण्ड में प्रवेश ।

६ त्रिकुटी – सहस्रार चक्र

७ तीन गुणों का धाम – १ प्रकृति का स्थान ।

८ — त्रिकुटी स्थित शब्दपति आठ वर्ष और चार मास तक रही तदन्तर परब्रह्म परमात्मा के निवास (सुन्न) का द्वार खुल गया ।

९ — आचार्य श्री को संवत् १८१ के कार्तिक मास में भजन-साधना के अन्तिम लक्ष्य असम्प्रज्ञात-समाधि की स्थिति प्राप्त हुई ।

त्रगुटी ताई रामदास, पडै काल को घात ।
त्रगुटी जीता सुन गया, ताकी पूरण बात ॥ १०

त्रगुटी हेठै दास हुय, त्रुगटी चढिया साध ।
जाय मिल्या पर-सुन्य मे, जाका मता अगाध ॥ ११

जाय मिल्या पर-सुन्य मे, सो मेरे सिरताज ।
रामदास देख्या सही, एक ब्रह्म का राज ॥ १२

इति श्री सिवरण मेघ्या को अग

*

अथ अकल को अंग

साखी

अकल दई है रामजी, किरपा कर करतार ।
रामदास सता लई, और चले जग हार ॥ १

अकल आप अवगत्त की, चल आई जग माहि ।
सत सभाई रामदास, दुनिया कू गम नाहि ॥ २

अकल जिरणा दी जाणिये, सिवरे सिरजणहार ।
रामदास सिवरण बिना, और अकल सब ख्वार ॥ ३

इति श्री अकल को अग

*

---

११ त्रगुटी हेठै वास – त्रिकुटी तक साधक की अवस्था ।
त्रिगुटी चढ़िया साध – त्रिकुटी से ऊपर सिद्ध की अवस्था ।
२ अवगत्त – अविगत (परब्रह्म) ३ ख्वार – निस्सार ।

[१]

अथ उपदेश को अंग

साखी

रामदास सत सबद की एक धारणा धार ।
भवसागर में जीव है समझ'र उतर पार ।। १

रामदास गुरुदेव सू ता दिन मिलिया आय ।
आदि अंत लग जोडिये कोडीधज्ज कहाय ।। २

सब मे व्यापक ब्रह्म है देख निरख सुध हाल ।
जमी तुम कमज्या करो तसी मैं फिर माल ।। ३

कमज्या कीज राम की सतगुरु के उपदेस ।
रामदास कमज्या किया पावै नाम नरेस ।। ४

चार वेद ब्रह्मा कहै अनंत कोटि कह संत ।
रामदास सिव सेस कहै विष्णु कहै निज तत ।। ५

हणूमान लछमण कहै सीता ई कह राम ।
रामाइण उपदेस बिन कहां नही विश्राम ।। ६

सबको यो उपदेस है समझ'र करो विचार ।
रामदास इक राम बिन बुहो जाय संसार ।। ७

सतगुरु के उपदेस सू हम सिवर्‌या नित नेम ।
आदि-अंत बिच रामदास रह्यो एक ही प्रेम ।। ८

कादू तोने जीभडी, राम बिना कहे बैण ।
रामदास इक राम बिन कुण तुम्हारे सैण ।। ९

जीभ बिचारी क्या कर मन हाथ सब बात ।
रामदास मन उलट कर सिवर्‌या त्रिभुवन-नाथ ।। १०

---

१ कमज्या – करणी (कर्म) ।

मन माया सू काढ कै, साई माहि मिलाय ।
रामदास सवसे परे, परम पुरुप मे जाय ।। ११

मीठी वाणी वोलिये, रामा सोच विचार ।
मुख पावे साई मिले, ओरा कू उपकार ।। १२

रामा सुमिरो राम कू, भूलो मती गिवार ।
ऐसो औसर वहौर के, मिले न वारम्वार ।। १३

तू चाल्यो है किधर कू, साई है कुण देस ।
जिण गेले साई मिले, सो न्यारा उपदेस ।। १४

गुरु गोविंद की महर ते, हम तो पाया ग्यान ।
रामदास रट राम कू, अतर उपजै ध्यान ।। १५

चद्रायण

पेडे मे बिसराम विलम नही लाइये ।
सतगुरु सरणे आय रामगुण गाइये ।।
मुगत द्वार ले सोज विचारे ग्यान रे ।
हरि हा यू कहे रामादास और मत मान रे ।। १६

साम विना सिणगार, कहो कुण काम रे ।
सव जग जमपे जाय, भज्यो नहि राम रे ।।
राम बिना ससार, सवी है झूठ रे ।
हर, हा राम-रतन सा धन्न, रामिया लूट रे ।। १७

इति श्री उपदेस को अग

---

१५ महर – कृपा ।

[१]

अथ बिरह को अंग

साखी

नैण हमारा रामदास, पिव बिन रह्या विसूर ।
असर दाभण मिलण की, तन इन्द्री मन झूर ॥ १

असर दाभण मिलन की पिंजर करे पुकार ।
नैणा रोय राता किया सो कारण भरतार ॥ २

घाव कलेजे भाल बिन रामा साले नित्त ।
रात दिना खटकत रहै तुझ कारण मुझ मित्त ॥ ३

बिरह भाल उर में लगी अन्तर साले नित्त ।
रामदास सुख ऊपजे आय मिले मुझ मित्त ॥ ४

बांझ नार के पुत्र बिन नित झूरत दिन जाय ।
रामदास यूं तुझ बिनां तालाबेली मांय ॥ ५

निरधन झूरे धन बिना फल बिन नागर बेल ।
रामा झूर राम बिन बिरही साले सेल ॥ ६

बिरह आय घायल किया रोम रोम में पीर ।
रामदास दुखिया घणा हूद सदूक तीर ॥ ७

मुजर झूर मम यूं मूमा अवा काज ।
बिरहन झूरे पीव यूं अवे मिलो महाराज ॥ ८

बनड़ झूरे बीर यूं यर यूं झूरै मार ।
रामा झूर पीय यूं दरसण दो भरतार ॥ ९

दरसण कारण रामजी तलफत हूं दिनरात ।
रामा पिय पाया नहीं प्राण हुयो परभात ॥ १०

---

१ दाभण – दाह जलन । २ पिंजर – काया । ५ तालाबेली – व्याकुलता ।

आठ पहौर चौसठ घडी, झूरत मेरा जीव ।
रामदास दुखिया घणा, दरसण द्यो अब पीव ॥ ११

तुमरे दरसण वाहिरो, सब दिन अहला जाय ।
सो दिन नीका होगया, तुम ही मिलोगा आय ॥ १२

तुम मिलवा के कारणे, रामा झूरै सास ।
तालावेली जीव मे, कद पूरोगे आस ॥ १३

विरह आय अन्तर वसै, सतगुरु के परताप ।
रामदास सुख ऊपजे, आय मिलोगे आप ॥ १४

तुमरे मिलिया वाहिरो, दाझै वारुवार ।
रामा विरहिन कारणे, आण मिलो भरतार ॥ १५

तुम मिलिया विन मै दुखी, विरही ऊठे लाय ।
रामदास के तुम विना, दम-दम अहला जाय ॥ १६

रामा स्वारथ कारणे, झूरै सब ससार ।
मै झूरू परब्रह्म कू, अन्तर दो दीदार ॥ १७

अन्तर दाझण बिरह की, तुम कारण निज राम ।
तुमरै दरसण बाहिरो, सकल अलूणो काम ॥ १८

तुम मिलबा के कारणे, विरहण बूझे ध्याय ।
रामा तणो सदेसडो, कहो बटाऊ जाय ॥ १९

वाट बटाउ सब थक्या, थकिया मेरा प्राण ।
रामदास तन भीतरै, बिरही लागे बाण ॥ २०

पाव पख मेरे नही, मै अबला बल नाहि ।
मिलबा की सरदा नही, झुरणो पिजर माहि ॥ २१

मो झुरवा को जोर है, दूजा कछू ना होय ।
तुम हो जैसी कीजिये, दरसण दीजे मोय ॥ २२

---

१६ लाय – अग्नि की लपट । १८. बटाऊ – पथिक ।

बिरह बिलापा कर रही दुखी होय महो जम ।
रामदास निज पीव कू झुर रण-द्यू मन ॥ २३

रैण बिहाणी जागतां दिन भी बीतो जाय ।
रामदास बिरहिन झुरे पीव न पाया माय ॥ २४

रामदास बिरहन दुखी दुखी होत वहो जिंद ।
दुखी जीव करुणा करे तोहि बिना गोविन्द ॥ २५

रामदास कहै बिरहिनो, जाल करू तन छार ।
हरि दरसण पायां बिना ध्रिग जीतब जम्मार ॥ २६

ध्रिग हमारा जीविया मांज करू तन भूख ।
रामदास सांई बिना रोम रोम में दूख ॥ २७

बिरहो तणो संदेसडो सुणो पियारे मित्त ।
सो दिन झूरे रामियो, सास-उसासा नित्त ॥ २८

तुम आवो अब रामजी तुम बिन दुखिया जीव ।
तुम बिन झूरे बिरहिनी परमसनेही पीव ॥ २९

तुम मिलबा के कारणे दिन दिन दूणी चाय ।
रामदास बिरही भया अन्दर लागी लाय ॥ ३०

आठ पहोर बिरही जगै जाका मोटा भाग ।
रामा प्रीतम कारणे उनमन अति बैराग ॥ ३१

अंतर दाभण बिरह की ताको लखै न कोय ।
रामदास सो जाणसी जा घट लागी सोय ॥ ३२

लागी जब हि जाणिये आठू पहोर बिसूर ।
रामा प्रीतम कारणे रूम-रूम सब झूर ॥ ३३

---

२३ रैण-द्यू – रात और दिन । २६ ध्रिग – धिक्कार । जीवत – जीवित रहना ।
जम्मार – मनुष्य-योनि ।

३१ उनमन – उन्मना अवस्था (नाभि-कमल से आगे पवन की स्थिति में बिरहावस्था की जागृति)

पिव मिलवा के कारणे, विरहिन ऊठै लाय ।
रामदास कैसे मिटे, पीव विना दुख पाय ।। ३४

तुम सुख सागर साइंया, विरही दाझ मिटाय ।
दव लागो तन भीतरे, तुम मिलिया सुख पाय ।। ३५

रामदास के विरह की, अन्तर लगी पुकार ।
रातदिना लागी रहे, सतगुर के उपकार ।। ३६

इति विरह को अग

*

[११]

अथ ज्ञान संजोग बिरह को अंग

साखी

दीपक लाया रामदास, भीतर धरिया आण ।
पावक तेल मिलाविया, हुवा चानणा जाण ।। १

तन दीपक कर रामदास, मनवा तेल मिलाय ।
जीव पतगा जानिये, साईं पावक लाय ।। २

पावक भीतर परजल्या, धूवा दीसै नाहि ।
रामा जुग जाणे नही, पीडा पिजर माहि ।। ३

बिरह लगाई सतगुरु, हुई अपरबल आग ।
रामा जाली जल गई, न्यारा हुय बडभाग ।। ४

बिरह-अगन घट मे जगै, ताहि लखै नहिं कोय ।
का जाणो जिणही दिया, का बीती हुय सोय ।। ५

लगी चोट तन भीतरै, सब तन खोला थाय ।
रामदास बीती बिना, कहो कैसे पतआय ।। ६

---

३५ दव – दावाग्नि ।

३ परजल्या – प्रज्वलित हुई । ४ अपरबल – प्रबल । ६ पतआय – विश्वास आये ।

विरह ज्ञान परकासिया, अंतर भया उजास ।
रामदास अब विरह कू पीव मिलण की आस ॥ ७

विरह ज्ञान अंतर धस्या, प्राण उद ह्वा ग्यान ।
रामदास सोभी भई मिटग्या तिमिर अग्यान ॥ ८

विरह ज्ञान परकासिया घट घट दीसे एक ।
रामदास कुबध्या मिटी पाया ग्यान बसेक ॥ ९

ज्ञान विरह तब जानिये पिव सू लागी प्रीत ।
और विरह अज्ञान की, जाए जगत की रीत ॥ १०

विरह न छांडू रामदास तन मन रहू लगाय ।
विरहा मोहि मिलावसी परम सुन्य के मांय ॥ ११

रामा मिलणा दुलभ है साहिब सेती जाय ।
विरह ग्यान परकासिया आण मिलाया मांय ॥ १२

बिरह ज्ञान बिचारिया, घट में आतम राम ।
रामें पर किरपा करो सकल सुधारण काम ॥ १३

विरहा आया ज्ञान का रोम रोम भरपूर ।
रामा साईं सू मिल्या और सकल भ्रम दूर ॥ १४

जड़ चेतन में रामदास रहे राम भरपूर ।
ग्यारचक्र चवदे भवन सब घट एको नूर ॥ १५

सब घट मेरो सांइयां दूजा और न कोय ।
विरह ज्ञान परकासिया जित देखू तित सोय ॥ १६

रामा गुरु के ज्ञान का अन्तर किया विचार ।
किरपा कर पधारिया सुख-सागर भरतार ॥ १७

इति श्री ज्ञान संजोग विरह को अंग

---

९ बसेक – विशेष ।
१५ एकोनूर – एक ही परमात्मा का प्रकाश (परब्रह्म)

[१२]

अथ परचा* को अंग

साखी

राम मिल्या रसणा हृदै, चले नाव निज नाभ ।
वक-नाल सेरी खुली, घुरै अखड घन आभ ॥ १

मेरु उलघे रामदास, चढे त्रगुटी जाय ।
सुपम धार चहु दिस चलै, दिना-रात लै न्हाय ॥ २

गग चलत अकास ते, पीवत सब ही गाव ।
नाड - नाड रस ऊपजै, रामदास निज नाव ॥ ३

धुन लागी आकास मे, रूम-रूम झणकार ।
नखसिख सारा वीधिया, रामदास ररकार ॥ ४

सता की गति रामदास, जग तै लखी न जाय ।
बाहिर तो ससार सा, भीतर उल्टा थाय ॥ ५

उलटा खेल बिकट घर, मिलै रामियादास ।
पाच पचीस सू उलट कर, किया ब्रह्म मे वास ॥ ६

मन लागा निज मन ते, निज मन है निज रूप ।
ब्रह्म निरालब रामदास, अनभै अकल अरूप ॥ ७

देही माही देहरा, तामे निरजन देव ।
रामदास उलटा मिलो, करो सुरत वध सेव ॥ ८

---

* परचा—परिचय [योग-साधना के मार्ग की अनुभूतियाँ]

१ आभ – आकास । सेरी – छोटा दरवाजा ।

३ गग – सुषुम्ना ।

६ पांच पचीस – पाच तत्त्व और पच्चीस प्रकृतिया [प्रकृति का सम्पूर्ण विकार]

७ अनभै – अनुभव रूप—अनुभवजन्य ।

८ देही माही देहरा – शरीर मे स्थित आत्मा का मन्दिर ।

आहार शुक्ष्म निद्रा तज आसण करै असड ।
पांच उलट क रामदास यू भेंटै ब्रह्माड ॥ ९

सुरत मिली ब्रह्मंड में, घुरे अनाहद तूर ।
हुवा चांनणा रामदास सुन मे ऊगा सूर ॥ १०

रामदास सुन-सहर म वास किया है जाय ।
चाकर एकई ब्रह्म का खरा महीना खाय ॥ ११

रामा राम हजूर में, आठ पहोर आधीन ।
परालखद की प्रीत सू दोसत पाया दीन ॥ १२

मन मेवासी बस किया थाणा दिया उठाय ।
रामदास गढ़ पर चढ्या निरभै नौबत वाय ॥ १३

रामदास गढ़ पर चढ्या भेंट्या राम दिवाण ।
रण मिटी भय भाजग्या, कोटक ऊगा भाण ॥ १४

दरग पहोता दीन मे, सनमुख कीनी बात ।
सुरत नण सुं निरखिया, रामा ब्रह्म अजात ॥ १५

ग्यानी ध्यानी सब सुणो सुणो जगत सब भेख ।
रामदास साची कहै मिसिया अमर अलख ॥ १६

राम मिल्या या रामदास समाचार है एक ।
[illegible] दागी पाय सस मया पर मनख ॥ १७

राम मिल्या या रामदास मनमे आणद होय ।
जगत भरम पू गम नही [illegible] ॥ १८

[illegible] ॥ १९

---

९ उलट—[illegible] । १२ परालखद—[illegible] । दीन—[illegible] ।
१४ कोटक ऊगा भाण—[illegible] ।
१९ [illegible] ।

मै मिलिया दीदार मे, साहिब सेती जाय ।
रामदास सुन सहर मे, रहे अटल मठ छाय ।। २०

इला पिगला सुषुम्ना, तिरवेणी के तीर ।
रामदास ता बीच मे, चले सुखम की सीर ।। २१

सीरा छूटी चहु दिसा, भीजत सबही अग ।
रामदास जह रम रह्या, साई हदै सग ।। २२

रामदास सत सबद की, चली पयाला सीर ।
जाय मिली आकास मे, सुख सागर के तीर ।। २३

रामदास पाताल का, पाणी चढ्या आकास ।
जह साधुजन सपडै, नीर पिवै निज दास ।। २४

अधर ध्यान आकास मे, रहे अटल मठ छाय ।
रामदास घर सत का, काल न पहुचे जाय ।। २५

जह काल तणो सारो नही, नाही जम का जोर ।
रामदास जह रम रह्या, अनहद की घन घोर ।। २६

रामदास अनहद परै, सत किया जाय वास ।
जह चद, सूर, तारा नही, नही धरण आकास ।। २७

रामदास घर सत का, जहा न दूजा लेस ।
जहा ओऊ सोऊं नही, ना माया परवेस ।। २८

सोऊ सबद नाभि बसै, ओऊ त्रगुटी माय ।
रामदास ताके परै, अखै निरजन राय ।। २९

---

२३ पयाला – पाताल ।

२४ जब शब्द-गति बकनाल के मार्ग से मेरुदण्ड का भेदन कर और सुषुम्ना मे धावित होकर त्रिकुटी मे स्थित होती है तब वहा जो अमृत-स्रवण होता है, सत-जन उसी मे स्नान करते हैं एव उसी अमृत का पान करते हैं ।

२८ ओऊ सोऊ – मायाविशिष्ट परमात्मा का स्वरूप ।

२९ अखै – अक्षय ।

पाच पचीस सू रामदास मिल त्रगुटी माय ।
सुरत समाणी निरत में निरत निरजन राय ।। ३०

निरत नियारा ब्रह्म है वासु मिलाया जीव ।
रामदास सासा मिट्या पाया अम्मर पीव ।। ३१

पीव प्रीसमा ब्रह्म है जहां निरञ्जण जोत ।
रामदास तासू मिल्या मिटी सकल भ्रम छोत ।। ३२

जहां पाप पुन पहुचे नहीं जामण मरण मिटाय ।
रामदास ता घर महो, कोई साधुजन जाय । ३३

अघर घर तकिया अघर, अघर अमर दीवाण ।
रामदास तासू मिल्या, पाया पद निरवाण ।। ३४

बाण जहां लाग नहीं, निरभय हूवा दास ।
रामदास जह मिल रह्या नहीं काल की पास ।। ३५

जह जनम-मरण व्याप नहीं नहीं काल को जाल ।
रामदास जहं मिल रह्या बारे मास सुकाल ।। ३६

जहं राग दोष व्यापै नहीं है अणभगी देस ।
रामदास जहं घर किया सतगुरु के उपदेस ।। ३७

हद बेहद दोनू नहीं धरण गिगन दोउ नांहि ।
मन पवना दोनू नहीं रामा जिस घर मांहि ।। ३८

चंद सूर दोनू नहीं ना आचार विचार ।
षुधा तृषा व्यापै नही है सुख अनत अपार ।। ३९

'मोऊं सोऊं' जहां नहीं जह नहि सांस उसांस ।
ब्रह्मा विष्णु सिव सेस नहीं जहं है ब्रह्म विलास ।। ४०

---

३४ तकिया अघर – फकीर का स्थान ।
३५ काल की पास – यमराज की फांसी बन्धन ।
३७ अणभंगी – देशकाल एवं परिणाम से रहित [परब्रह्म]

रामा ब्रह्म विलास मे, दिष्ट मुष्ट कछु नाहिं ।
निराकार निर्लेप है, जीव सीव के माहि ॥ ४१

जीव सीव भेला भया, मिले ओत अरु पोत ।
रामा साईं एक है, जहा ब्रह्म निज जोत ॥ ४२

जोत मिलाणी जोत मे, एक मेक दरसाय ।
रामा साईं ए है, कबहु न्यारा नाहि ॥ ४३

इति परचै को अग

*

[१३]

अथ सूर* परचा को अंग

साखी

पूरब-दिस हरिजन मड्या, सत का खडग सभाय ।
मनवा आया चालकै, सनमुख राड कराय ॥ १

पूरब पौल भारत मड्यो, करै लडाई सूर ।
रामदास आघा धसै, जा मुख सेती नूर ॥ २

दोय महीना बीच मे, जीता पूरब पौल ।
रामदास सत-सूरवा, मोह घर घाली रौल ॥ ३

मोह पकड पूठा दिया, कठ मे मडिया जाय ।
जीव जगाया रामदास, गद-गद लहरा थाय ॥ ४

उभै पौल कायम करी, मोह कु दिया उठाय ।
थाणा थपिया राम का, रामो राम रटाय ॥ ५

---

४१ दिष्ट मुष्ट – दृश्य, दृष्टा तथा ग्राहक, ग्राह्य । सीव – ब्रह्म ।

*सूर परचा – शूरवीर का परिचय (आध्यात्म-साधक को धर्म-ग्रथो मे शूरवीर माना गया है)

१ राड – युद्ध । ३ दोय महीना बीच मे, जीता पूरब पौल – दो मास तक नाम-स्मरण कर रसना-द्वार पर विजय प्राप्त की । रौल – झगडा ।

५ उभै पौल – रासना एव कठ-स्थान ।

दोनों पोलां जीत कर, तीजी मढ़िया जाय ।
रामदास सत सूरवां सत का सेस सभाय ।। ६

हिरदे में सिवरण हुवे, स्रवणां मुरली वाज ।
रामदास हरिजन मढ्या तजी लोक-कुल-लाज ।। ७

काम क्रोध को मारिया, भागा मान-गुमान ।
रामदास निज सत के हिरदे लगा एक ध्यान ।। ८

हुवा कवल में रामदास हरिजन मांही राड ।
मन पकड़ पूठा दिया करी सील की वाड ।। ९

बरस एक मास पांच दिन हुवा कवल बस कीन ।
रामदास आगे चल्या मनुवा होय लवलीन ।। १०

हस्ती चढ़िया ज्ञान के साथ सील संतोष ।
नाभ कवल में रामदास, उठी सबद की सोष ।। ११

तीनूं पोलां जीत क, चौथी मढ़िया जाय ।
रूम-रूम विच रामदास, एको राम रमाय ।। १२

मन पवना एके हुआ सिवरण सांस उसांस ।
रामदास सत सूरवां नाभी कीना वास ।। १३

नाड़-नाड़ चेतन भई रूंम-रूम झणकार ।
उर-अंतर विच रामदास एक सबद ररकार ।। १४

नाद गरजिया गिगन में घर भंवर गुजाय ।
रूंम-रूम विच रामदास सहजां नाच नचाय ।। १५

चारूं पोलां बस करी थप्या राम का राज ।
रामदास हरिजण सुरा मगंड माव की याज ।। १६

---

६ तीजी – तीसरी पोल अर्थात् हृदय-स्थान ।
११ सोष – मरी । १२ तीनूं पोलां जीत कं – रसना कंठ और हृदय ।
चौथी – नाभि-स्थान ।

दोय बरस नाभो रह्या, थाणा दिया थपाय ।
ताकै पीछै रामदास, चल्या पयाला जाय ।। १७

सप्त पयाला बीच मे, एको राम रमाय ।
सेस चरण मे रामदास, सीस निवाया जाय ।। १८

सेस तणी दरसण कियो, अटल सेस को धाम ।
दोय हजारा जीभ विच, एक राम ही राम ।। १९

सेस रटण देखी जबै, सिवरण मता अगाध ।
रामदास ऐसे रटै, उलट कहावै साध ।। २०

रामदास आघा चल्यो, पछिम दिसा की वाट ।
वक नाल हुय चालिया, लघिया औघट घाट ।। २१

सुरग इकीसा बीच में, एको राम रमाय ।
रामदास सत सूरवा, मड्या मेरु मे जाय ।। २२

मेरु उलघ्या रामदास, दिया काल सिर पाव ।
आकासा आसण किया, उलट खेलिया डाव ।। २३

आकासा आसण किया, लग्या उनमनी ध्यान ।
तेजपुज परकासिया, अनता ऊगा भाण ।। २४

नौबत बाजै गिडगिडी, अनहद घुरै निसाण ।
रामदास चढ त्रगुटी, धरै अखण्डत ध्यान ।। २५

पिण्ड ब्रह्मण्ड को जीत के, चढै त्रगुटी जाय ।
रूम-रूम बिच रामदास, एको राम रमाय ।। २६

रामदास गढ पर चढ्या, अनहद घुरै निसाण ।
तीन लोक चवदै भवन, फिरी राम की आण ।। २७

---

१८ सप्त पयाला – सात पाताल ।

२२ सुरग इकीसा – मेरुदण्ड की इक्कीस मणिया ।

भोम्या सब सनमुख हुवा चोर पलट भया साह ।
घरी सो मिसर हुआ, निकट चलायो राह ॥ २८

तिहूलोक मिल त्रगुटि हद-बेहद बिच धाम ।
रामदास थाक परै, अमर निरजन राम ॥ २९

सूरबीर सू रामदास, मिल्या त्रगुटी माय ।
त्रगुटी आग चालबो देसी सीस कटाय ॥ ३०

पांच पचीस सू रामदास मिले त्रगुटी मांहि ।
आगे केवल ब्रह्म है, या सेती गम नांहि ॥ ३१

मन पवना अरु चित बुध त्रगुटी ताईं दौड़ ।
आगे केवल ब्रह्म है या चलबा नहीं ठौड ॥ ३२

मन मनसा का रामदास त्रगुटी ताईं सूत ।
आगे केवल ब्रह्म है जहां न माया भूत ॥ ३३

मह-माया जोती प्रकृति मिल्या सुन्य के मांहि ।
सुन आतम इछा मिली, इछा भाव के मांहि ॥ ३४

भाव मिल्या परभाव में, ता पर केवल ब्रह्म ।
तिहूंलोक जाणे नहीं रामा यांका भ्रम ॥ ३५

इति श्री सूर परचा को अंग

★

---

२८ भोम्या – भूमिपति राजा ।
३५ भ्रम – मर्म ।

[१४]

अथ पीव परचा को अंग

साखी

रामा एकै पीव बिन, मेरे दुख अपार ।
सुखिया केम दुहागिणी, कहो किनके आधार ।। १

एक दिहाडा पीव बिन, मेरे अहला जाय ।
रामदास दुहागिनी, कहौ कैसे सुख थाय ।। २

रामदास घोडै चढौ, बार न लाग्रो छिन ।
वेगि मिलो निज पीव सू, पीछै पडसी भिन ।। ३

घोडा करिये ज्ञान का, सवद-ताजणा हाथ ।
लिव की करो लगामडी, साथे जान-बरात ।। ४

पीठी करिये प्रीत की, प्रेम पटोलो लाय ।
रामदास कर कचवौ, साडी सुमत ओढाय ।। ५

तत तोरण मन थभ कर, हरि हथलेवो लाय ।
रामा चवरी अगम की, पिव सू फेरा खाय ।। ६

गम कर गहणो पहरियो, सजिया सब सिणगार ।
नैणा काजल नेम का, दीपक दिल दीदार ।। ७

रामदास महला चढ्या, पिव सू परचा होय ।
अरस परस मिल खेलिया, दूजो और न कोय ।। ८

सुरत सुहागण सुन्दरी, मन राख्यो बिलमाय ।
रामदास नग निरखता, प्रीतम मिलिया आय ।। ९

---

२ दिहाडा – दिन ।

४ सबद-ताजणा – शब्दों के चाबुक ।

प्रीतम मिलिया प्रेम सूं, पूरी मन की आस ।
सुन्य सेजां में रामदास आठूं पहौर विलास ॥ १०

पीहर मेरा परम गुरु भाई सील सतोख ।
पीव हमारा ब्रह्म है, रामे पाया पोख ॥ ११

पिता हमारा सतगुरु ररकार भरतार ।
सुन सेजां में रामदास आठ पहौर हुसियार ॥ १२

पिता मोहि परणाविया पूरबला भरतार ।
अमर सुहागिन में भई अमर पुरस की नार ॥ १३

इति श्री पीव परचे को अंग

*

[१५]

अथ हरिरस को अंग

साखी

रामदास प्याला पिया झूम झूम भरपूर ।
दुनिया भ्रखक नाथ सूं ओर भरम सब दूर ॥ १

रामदास हरिरस पिया मायागयण मिटाय ।
पापा भस्म कुम्हार का फेर न पकसी आय ॥ २

रामा हरिरस पीवता चढ़ी अधिक मसताम ।
सूरवीर सा पीवसी मांगे सीस पसाम ॥ ३

रामदास हरिरस पिया तन मन अरप्या प्राण ।
राम मूप्यां सु हरि मिल जब सग सुणो जाण ॥ ४

---

४ पाठा० — [illegible]

[illegible]

पिया पियाला प्रेम का, पीवत अधिक रसाल ।
रामदासे लागी रहै, आठ पहौर मतवाल ।। ५

रामदास मतवाल की, महिमा कही न जाय ।
पीया सोई जाणसी, औरा गम्म न काय ।। ६

सबै रसायण सोझ कर, अतर किया विचार ।
रामदास हरिरस सही, और रसायण छार ।। ७

रूम-रूम मे रस पिया, लागी अधिक खुमार ।
मुगत न मागे रामदास, मागे हरि दीदार ।। ८

हरिरस पीया रामदास, पीकर भया मगन्न ।
जाय मिल्या परब्रह्म मे, हरि सू लगी लगन्न ।। ९

और अमल सब झूठ है, सो जग का ब्यौहार ।
रामदास जिनही पिया, किया जनम सब छार ।। १०

मद पीवे मतवाल कर, पल मे ऊतर जाय ।
रामदास फिट मानबी, और अमल क्या खाय ।। ११

और अमल सब झूठ है, सो दुनिया के काज ।
रामा राम अमल सू, मिले राम महाराज ।। १२

रामदास हरिरस पिया, जग ते न्यारा होय ।
जिण दिसा मे घर किया, नर सुर नाग न कोय ।। १३

जन रामा हरिरस पिया, दीया सीस उतार ।
जनम-मरण सब मेटिया, दूजी देह विसार ।। १४

तारी लागी गिगन मे, अगम चढी मतवाल ।
रामदास अब मगन हुय, घूमे घरा कलाल ।। १५

तन-मन दिया कलाल कू, सीस सूपिया जाय ।
रामदास प्यासा घणा, भर-भर प्याला पाय ।। १६

---

११ फिट – धिक्कार ।

भाटी पव गिगन में सुरत पियाला झेल ।
रामदास पी मगन हुय मंडया अगम घर खेल ।। १७

हरिरस पीया रामदास, अछक छक्या है प्राण ।
आठ पहोर घूमत रहूं, जग की तजी पिछाण ।। १८

एसा पीया रामदास दूजा सबै भुलाय ।
आठ पहोर दीदार में साइ सूं लिव लाय ।। १९

साई सूं रत्ता रहै बिसर गया जग वाण ।
रामदास घूमत रहै पाया पद निरबाण ।। २०

इति हरिरस को अंग

[११]

अथ लोभ को अंग

साखी

प्राण हमारा रामदास पीया निर्मल नीर ।
अतर तिरषा ना मिटी प्यासा बहुत सरीर ।। १

रामदास लोभी भया समदां किया सिनान ।
अतर पाणी ना पिया तिरसा घणी पिराण ।। २

माया-धन के कारण भूर मेरा मन ।
जोडत जोडत जोडिया तिरषा मिटे न मन्न ।। ३

रामदास लोभी भया उलटा मिलिया आय ।
मन अधप धापै नहीं फेर अगम सूं जाय ।। ४

इति लोभ को अंग

[१७]

अथ हैरान को अंग

साखी

रामदास साई बिना, सब झूठा जजाल ।
पडित ताहि न जानसी, झूठा भखै जजाल ।। १
साई सबके बीच मे, सब ही का करतार ।
पडित ताहि न औलखै, झूठा करे बिचार ।। २
दुनिया झूठे राचणी, केता करे सरूप ।
रामा ताहि न ओलखै, घट मे अकल अरूप ।। ३
हरि बिन सब हैरान है, तामे फेर न सार ।
रामदास साचो कहे, सब ही झूठ बिचार ।। ४
पडित सेती मै कहू, सब ही झूठी जाण ।
रामदास साई बिना, सब ही है हैरान ।। ५

इति हैरान को अग

[१८]

अथ हेरत को अंग

साखी

रामदास हेरू भया, हरि को हेरण जाय ।
बूद समाणी समुद मे, सो कैसे हेराय ।। १
रामदास हरि हेरता, कैसा करू बखान ।
समुद समाणा बूद मे, जिण का क्या परवाण ।। २

इति हेरत को अग

१ भखै – कहता है । २ औलखै – पहिचानना । ३ राचणी – प्रसन्न होती है ।

अथ जरणा को अंग

साखी

भारी हलका क्या कहू मो पे कह्या न जाय ।
रामदास सांई मिल्या निरख रहू लिव ल्याय ॥ १

माह निरख्या रामदास साहि न मान कोय ।
सांई सू मिलता रहो, मिलता होय सो होय ॥ २

रामा ऐसी क्या कहो भारी बात अथाय ।
भणिया गुणिया ना लहै कही न माने काय ॥ ३

रामा सांई अगम है अगम अगोचर बात ।
रात-दिवस सिवरण करो तजिये दूजी तात ॥ ४

अगम देस पैंडो घणो कब जाऊ उस गांव ।
रामदास धीरज धरो पहली कहा कहाय ॥ ५

मोटा वाल न बोलिये, करता अगम अपार ।
रामदास धीरज धरो सहज होय दीदार ॥ ६

जाण छाड अजाण हुय सुध-बुध सब बिसराय ।
रामा ऐसी धारिए, विघन न उपज काय ॥ ७

वाद-विरोध सब छाड कं, रहो राम लिव लाय ।
रामदास एसी गहो दूजी दूर मिटाय ॥ ८

मथ ब्रम छाड्या रामदास निरमल कीया नग्र ।
तीन लोक अवद अथम निरभ खेल जग्र ॥ ६

इति जरणा को अंग

---

८ वाद-विरोध – विवाद और विरोध ।

[२०]

अथ लिव* को अंग

साखी

पाचू उलटा रामदास, मन एके घर आण ।
सुरत न खडै सबद सू, लिव लागी जब जाण ।। १

लिव लागी जब जाणिये, आठू पहोर अभग ।
कबू न छाडे रामदास, सुरत सबद का सग ।। २

सुरत उडाणी गिगन कू, मिली सून्य मे जाय ।
भाव जागिया रामदास, परभावे लिव लाय ।। ३

रामदास लिव जह लगी, जह निरजण निरकार ।
स्वामी सेवक एक हुय, अरस-परस दीदार ।। ४

नर सुर नाग न सचरै, मुनिजन सके न जाय ।
मन-पवना पहुचे नही, ता घर मे लिव लाय ।। ५

अधर देस लिव अधर है, अधर रहे लिव लाय ।
रामदास मिल अधर मे, सुर नर सकै न जाय ।। ६

रामदास देही परे, मिल्या विदेह मे जाय ।
जह रकार रसना बिना, सहज रहे लिव लाय ।। ७

सोरठा

तज सब ही आकार, निराकार मे पैठ रहै ।
लिव लागी निरधार, रामदास जो सतजन ।। ८

साखी

ऊठत बैठत चालता, सोवत लेह सभार ।
लिव की महिमा का कहू, रामा खडै न तार ।। ९

इति लिव को अग

---

* लगन

[२१]

अथ पतिव्रता* को अंग

साखी

पतिवरता कै पीव बिन, और न किन सूं प्रीत ।
रामदास विभचारणी, याके अन्त्र अनीत ॥ १

पतिवरता सो पीव बिन, निजर न झांकै और ।
रामदास विभचारणी जाके नैण न ठौर ॥ २

निजर ठौर रास नहीं दसों दिसी भरमाय ।
पतिवरता सो पीव सू रहै निजर ठराय ॥ ३

विभचारण सो रामदास भाखै आल जजाल ।
पतिवरता के पीव की आठ पहोर मतवाल ॥ ४

पतिवरता सो जानिये एक पीव सू नेह ।
रामदास पिव सूं मिल्या दूधां वूठा मेह ॥ ५

विभचारण पिव देखिया अतर अस यस आय ।
रामदास दुखिया घणी नणा लागी लाय ॥ ६

यार मिल्या हरखै घणी तन-मन हरखै प्राण ।
रामदास विभचारणी इसा मारसां जाण ॥ ७

यार बहुत है मढ में जाका वार न पार ।
रामदास विभचारणी सब सूं भई खुवार ॥ ८

पतिवरता के पीव बिन बोल्या जीभ कटाय ।
रामदास सुन्य-सेज में पिव सूं हिलमिल थाय ॥ ९

नोट —निर्गुण संत संप्रदाय में साधक संत को पतिव्रता स्त्री एवं परब्रह्म परमात्मा को पति का रूपक दिया गया है।

१ अंत्र – अंतर में (भीतर)   ७ मारसां – [illegible]।

८ यार – पर-पुरुष (लक्षणा से परब्रह्म परमात्मा से अतिरिक्त अन्य देवता)

नैण वेण पिव सू मिल्या, तन मन हरखै प्राण ।
पतवरता के पीव का, आठू पहोर बखाण ।। १०

विभचारण के रामदास, अन्तर दूजी बेल ।
प्रीतम सेती रोसणो, जारा सू हस-खेल ।। ११

पतवरता के रामदास, फाटा कपडा होय ।
नागी भूखी जो रहै, और न जाचै कोय ।। १२

विभचारण नागी रहे, जारा करे पुकार ।
औरा को मन राखती, खाली गई गिवार ।। १३

धरिया सो सब जार है, अधर एक निज देव ।
रामदास धरिया तजौ, करो अधर की सेव ।। १४

धरिया सबही जावसी, धारण हारा जाय ।
रामदास मिल अधर सू, अटल अमर पद पाय ।। १५

रामा सेवक अधर का, सारै सबही काम ।
नागा भूखा ना रहै, आसा पूरण राम ।। १६

सब जग आसा बधिया, निरआसा कोई सत ।
रामा रत्ता राम सू, परस्यो एको तत ।। १७

काची आसा आण की, सतन के नहिं दाय ।
रामा हरिजन सूरवा, अलख खजीना खाय ।। १८

अलख खजीना अगम घर, सूरवीर का खेल ।
रामदास सो सतजन, दूजी धरे न बेल ।। १९

एको घर एकै मतै, एक तणा विस्वास ।
रामदास एक राम बिन, सबै आन की आस ।। २०

सबै आण धारै मरै, अधर अलख निज एक ।
रामदास तासू मिल्या, तजिया और अनेक ।। २१

---

१४ धरिया – मायाजन्य अथवा माया विशिष्ट देवता आदि ।

मैं भी हू भगवत का चोटी हरि के हाथ ।
रामदास कर बंदगी, आठ पहौर दिन रात ॥ २२

रामा मेहतर राम का झाड़ूदार गुलाम ।
झैंठा टूका डारिये, सांइ करू सिलाम ॥ २३

रामा कुत्ता मलेच्छ का, सदा धणी की लार ।
भावै टूका डारिये, भाव गरदन मार ॥ २४

गलै तुमारी डोरडी, रजा पडे ज्यूं राख ।
रामदास की बीनती, सांई सुणिये साख ॥ २५

तुमसा मेरे को नही, सुणो निरजन राय ।
मो डूबा का डर नहीं बिड़द तुमारो जाय ॥ २६

तुम करता सब कुछ हुवे, सुण हो दीनदयाल ।
रामै पर किरपा करो बारै मास सुकाल ॥ २७

तुम सब घट में रम रह्या, सबी तुमारे मांहि ।
रामदास तुम सूं मिल्या अब किसका डर नांहि ॥ २८

राम मिल्या गुरुदेव से राम मांहि सब संत ।
संतां मांही रामदास एक नकेवल तंत ॥ २९

तत संत गुरुदेव बिच, दूज न जाणो कोय ।
रामदास एको बिरम जह तह व्यापक होय ॥ ३०

दस अवतार ब्रह्म का सदा हजूरी पूत ।
रामदास सुत तासका सिमरण करो सपूत ॥ ३१

ब्रह्म-यात भीणी घणी भेद न जाणे कोय ।
रामदास सो जाणसी, परा परी का होय ॥ ३२

---

१ बिरम — ब्रह्म ।

३१ दस अवतार ब्रह्म का — पुराणों में विष्णु के २४ अवतार माने गये हैं। इनमें से दस प्रमुख हैं—मत्स्य कच्छप वराह नृसिंह वामन परशुराम राम कृष्ण बुद्ध और कल्कि ।

पीव एक ही रामदास, दूजा कह्या न जाय ।
जो दूजा प्रीतम कहू, तो परलै जग थाय ॥ ३३

परलै हुय उपजै खपै, सब ही आवै जाय ।
रामा साई अमर है, ता सू प्रीत लगाय ॥ ३४

प्रीत लगी निज पीव सू, सब घट व्यापक होय ।
पतिवरता पिव सू मिली, दुबध्या रही न कोय ॥ ३५

सीप समद मे नीपजे, रहे समुद के माहि ।
समदर सू न्यारी रहै, पतिव्रत छाडे नाहि ॥ ३६

मास एक आसोज के, स्वात बूद को आस ।
पतिवरता यू रामदास, औरा रहे उदास ॥ ३७

जल-थल वही धरती पड्या, चात्रग के नहि भाय ।
अधर बूद आसा करै, अधर मिलावै आय ॥ ३८

पतिवरता के अधर है, सब घट रह्या समाय ।
रामदास यू उलट कर, अधरा माहि समाय ॥ ३९

हस बुगा का रामदास, एके सरवर बास ।
एक वरण एको दसा, एको करत विलास ॥ ४०

हस बुगा की रामदास, समझ'र करो पिछाण ।
ऊ मोताहल चूण कर, यो मच्छी परवाण ॥ ४१

बुगलो उडियो समद सू, छीलरिये चित देह ।
रामदास मच्छी घणी, जहा- तहा चुग लेह ॥ ४२

हस समद सू बिछडियो, छीलर दिसा न जाय ।
रामदास तन दुख सहै, मोती बिना न खाय ॥ ४३

हस समद छाडै नही, मोती चुगबा काज ।
सुख-समदर मे रामदास, सहजा रहे विराज ॥ ४४

---

३७ स्वात – स्वाति-नक्षत्र । ३८ चात्रग – चातक । ४० बुगा – बगुला ।
४२ छीलरिये – गन्दे पानी का तालाब ।

मैं भी हू भगवत का चोटी हरि के हाथ ।
रामदास कर बंदगी आठ पहौर दिन रात ॥ २२

रामा मेहतर राम का, झाडूदार गुलाम ।
मैंठा टूका डारिये, साह करू सिलाम ॥ २३

रामा कुत्ता मलेच्छ का, सदा धणी की लार ।
भावै टूका डारिये, भावै गरदन मार ॥ २४

गलै तुमारी डोरडी रजा पड़े ज्यू रास ।
रामदास की बीनती सांई सुणिये खास ॥ २५

तुमसा मेरे को नहीं सुणो निरंजन राय ।
मो डूबा का डर नहीं बिड़द तुमारो जाय ॥ २६

तुम करता सब कुछ हुये, सुण हो दीनदयाल ।
रामै पर किरपा करो बारै मास सुकाल ॥ २७

तुम सब घट में रम रह्या सभी तुमारे माहि ।
रामदास तुम सूं मिल्या अब किसका डर नाहि ॥ २८

राम मिल्या गुरुदेव से राम माहि सब सत ।
सतां मांही रामदास एक मर्कबल सत ॥ २९

सत सत गुरुदेव बिच, दूज न जाणो कोय ।
रामदास एको बिरम जह तहं व्यापक होय ॥ ३०

दस अवतारू ब्रह्म का, सदा हजूरी पूत ।
रामदास सुत सासका सिमरण करो सपूत ॥ ३१

ब्रह्म-बात झीणी घणी भेद न जाणे कोय ।
रामदास सो जाणसी, परा परी का होय ॥ ३२

---

१ बिरम — ब्रह्म ।

३१ दस अवतार ब्रह्म का — पुराणों में विष्णु के २४ अवतार माने गये हैं । इनमें से दस प्रमुख हैं—मत्स्य कच्छप वराह नृसिंह वामन परशुराम राम कृष्ण बुद्ध और कल्कि ।

पतिवरता पिव सू मिली, पिव के रूप न रेख ।
रामदास जह मिल रह्या, अम्मर आप अलेख ।। ५७

सुरत जहा पिव सू मिली, जाय हुई लिवलीन ।
रामदास जह मिल रह्या, ब्रह्म झीण सू झीण ।। ५८

निरभै खेलै पीव सू, अह-निस आठू जाम ।
पतिवरता पिव पाविया, अमर निरजण राम ।। ५९

अमर पीव प्यारी अमर, अमर अमर की सेव ।
रामदास निज पाविया, अमर अलख निज देव ।। ६०

इति श्री पतिवरता को अग

*

[२२]

अथ चित्रांमण को अंग

साखी

राजा राणा सब चलै, चलै राव अरु रक ।
महल मिंद्र सबही चलै, चलै कोट-गढ बक ।। १

नार रूप रभा चलै, दासी चलै खवास ।
रामदास हरि नाव बिन, सब ही झूठ बिलास ।। २

झूठा नारी पुत्र है, झूठा ही परिवार ।
रामा साचा राम है, हल सिवरो हुसियार ।। ३

नौबत बाजै गिड-गिडी, बाजै भेर निसाण ।
राग छतीसू बाजती, बहुते हुते बखाण ।। ४

---

६० अमर पीव – परब्रह्म, अमर । प्यारी अमर – साधक (जीव) ।
अमर अमर की सेव – अमर साधक (जीव) द्वारा परब्रह्म की सेवा ।
३ हल – हमेशा ।

दिल सागर दरियाव है, हंसा मेरा जीव ।
मोती निरमल नाम है, चुग बैठा निज पीव ॥ ४५

पतिवरता कै एक बल, दूजी दिसा न जाय ।
विभचारण के बहुत बल धका धणी विन खाय ॥ ४६

धका-धकी में रामदास जनम गवायो आल ।
पीव बिना खाली रही, आण झपेटी काल ॥ ४७

पतिवरता पिव सू मिली जह निरभ का खेल ।
दीपक दीस गव का विन बाती विन तेल ॥ ४८

पतिवरता पिव सू मिली, पीव तणा सुख लेह ।
रामदास अमर भई, फेर न धारै देह ॥ ४९

पतिवरता पिय सूं मिली पायो अमर सुहाग ।
सेज रमै निरभै भई जन रामा बड भाग ॥ ५०

तेजपुंज परकासिया अनत जोत परकास ।
रामदास सेज्यां रमै पूरणब्रह्म विलास ॥ ५१

अनत उजाला गैव का अनत सेज सुख लेह ।
पतिवरता पिव सू मिली रामदास गुण एह ॥ ५२

रामदास सुख पीव का तन में वेस लखाय ।
मुख सोभा छानी नहीं मण निर्मला थाय ॥ ५३

पीव मिल्या का रामदास कहु वे मुख का नूर ।
मुख लाली लागी रहै सुय झलक्या सूर ॥ ५४

साईं मेरे सुख विया झूज रही गल लाग ।
पतिवरता पिव सू मिली रामदास वड़ भाग ॥ ५५

नींव नहीं देवल नहीं विना देह जहं देव ।
रामदास जहां मिल रह्या आठ पहोर निस सेव ॥ ५६

---

४८. गैव – अज्ञात परब्रह्म । ५४ झलक्या – प्रकाशित हुआ ।

पतिवरता पिव सू मिली, पिव के रूप न रेख ।
रामदास जह मिल रह्या, अम्मर आप अलेख ।। ५७

सुरत जहा पिव सू मिली, जाय हुई लिवलीन ।
रामदास जह मिल रह्या, ब्रह्म झीण सू झीण ।। ५८

निरभै खेलै पीव सू, अह-निस आठू जाम ।
पतिवरता पिव पाविया, अमर निरजण राम ।। ५९

अमर पीव प्यारी अमर, अमर अमर की सेव ।
रामदास निज पाविया, अमर अलख निज देव ।। ६०

इति श्री पतिवरता को अग

*

[२२]

अथ चित्रांमण को अंग

साखी

राजा राणा सब चलै, चलै राव अरु रक ।
महल मिंद्र सबही चलै, चलै कोट-गढ बक ।। १

नार रूप रभा चलै, दासी चलै खवास ।
रामदास हरि नाव बिन, सब ही झूठ बिलास ।। २

झूठा नारी पुत्र है, झूठा ही परिवार ।
रामा साचा राम है, हल सिवरो हुसियार ।। ३

नौबत बाजै गिड-गिडी, बाजै भेर निसाण ।
राग छतीसू बाजती, बहुते हुते बखाण ।। ४

---

६० अमर पीव – परब्रह्म, अमर । प्यारी अमर – साधक (जीव) ।
अमर अमर की सेव – अमर साधक (जीव) द्वारा परब्रह्म की सेवा ।
३ हल – हमेशा ।

सुण सांभल बहा रीझते, मगन हुते मन मांहि ।
रामदास से चल गये राम विना कुछ नांहि ॥ ५

हुकम मद मे हालते ज्यू करता त्यू होय ।
रामदास हरि नाव बिन, गया जमारो खोय ॥ ६

रात गमाई नींद सुख, दिन गमायो धंध ।
रामदास हरि भजन बिन रह्या जीव मत अंध ॥ ७

राम बिना खाली रह्या, कहा रंक कहा राव ।
जनम गम्यो विष-वाद में, आण पहूती आव ॥ ८

धरती आण उतारियो दुनी कहावे राम ।
रामदास रसणा थकी ऊठ गयो बेकाम ॥ ९

प्रीत करी संसार सू हर सूं किया न ध्यान ।
रामा स्वारथ कारण फिर-फिर पूज्या आन ॥ १०

आन जगत यां ही रहै जीव एकलो जाय ।
रामदास जम-द्वार में मार मुगदरां खाय ॥ ११

कौल कियो करतार तें कर भूल्यो जग संग ।
रामदास जम-द्वार में पड़े मार बहो अंग ॥ १२

मार पड़ परलै कर ज्यू बादल की छांय ।
मूला केरे खेत ज्यूं सब समूला जाय ॥ १३

छिन सुख मांही रामदास, जीव रह्या लपटाय ।
एकण हरि का नाम बिन जम पै बांध्या जाय ॥ १४

राम पियाला छोड़ कर विषै पियाला लेह ।
रामदास ता मुख में पड़े नित्त प्रति खेह ॥ १५

हरि बिन सबही चालसी रूप रंग त्योहार ।
रामदास सांई विना और न को आधार ॥ १६

---

८ आव – आयु । १५ खेह – राख (धूलि)

दीसे सोई थिर नही, दिष्ट - कूट आकार ।
रामदास सब बिनससी, रहै सिरज्जणहार ।। १७

जावे दाणू (दानव) देवता, जावे नर सुर नाग ।
रहता एको रामदास, रहो जना सू लाग ।। १८

चद सूर सब ही चलै, चलता सेस महेस ।
विष्णु ब्रह्मा इदर चलै, मब सुपना को देस ।। १९

सुपनौ सुरग पताल है, सुपनो मरत मडाण ।
सुपनो सब वैराट हैं, सुपनो करै बखाण ।। २०

सुपनो देवी - देवता, सुपनै धरिया रूप ।
रामदास सुपनौ सबै, राव रक बड भूप ।। २१

सुपनै सब उपजै खपै, सुपने आवै जाय ।
रामदास सुपनै परै, अभै निरजण-राय ।। २२

सुपनो जामण-मरण है, सुपनो आवागूण ।
रामदास सुपनौ सबै, लख - चौरासी जूण ।। २३

सपनौ सब घरबार है, सपनो माय'रु बाप ।
रामदास सुपनो सबै, काई पुन अरु पाप ।। २४

सुपनौ पुरखा नार है, सुपनौ भाई बध ।
सुपनौ सब परिवार है, रामा झूठा धध ।। २५

सूता सुपनै रैन के, बहोत मिल्यो है माल ।
रामदास जब जागिया, उही ह्वाल का ह्वाल ।। २६

सूता सुपनै रैण के, पाई बस्तु अपार ।
रामदास सब जागिया, गाठी हुतीस, त्यार ।। २७

ऐसो सुपनौ जागरत, सबको करो विचार ।
रामदास साई बिना, सब झूठा ब्योहार ।। २८

---

१७ दिष्ट-कूट आकार – दृश्यमान वस्तुएँ । २० मरत मडाण – मृत्युलोक ।

झूठा देख न धीजिए छिन में जाय बिलाय ।
रामदास झूठी तजो साच रहो लिव लाय ॥ २९

साचा एको राम है तासूं प्रीत लगाय ।
रामदास सांइ बिना सब देखता जाय ॥ ३०

रूख राय सब जायंगे, जावै सब बनराय ।
चार दिनां दिसटंग रच्यो छिन मे जाय बिलाय ॥ ३१

रामदास बन पांगर्‌या हरिया दीसे घास ।
देखत ही सूकायसी याकी झूठ मास ॥ ३२

वेलड़ियां बन छाविया बहुता लाग्या फूल ।
दिनां चार को देखबो रामदास मत भूल ॥ ३३

फूल बेल ज्यूं रामदास सब ही है संसार ।
देखत ही चल जायंगे तू मत भूल गिंवार ॥ ३४

जिण तेरा जिव मेलिया, जनम दिया जग माहि ।
सब मांही व्यापक रहे ताकूं भूल काहि ॥ ३५

नवै महीने रामदास धारै लाया जीव ।
मास माहि अम्रत कियो ऐसा समरथ पीव ॥ ३६

नैन नासिका मुख किया स्रवण हाथ अरु पांव ।
नख सिख सब सवारिया राम बनायो डांव ॥ ३७

पहरण कूं कपड़ा किया पुष्या कारण अन्न ।
प्यास कूं पाणी किया अब लग धार्‌या तन ॥ ३८

बालपणो भोला गयो सुध-बुध समझ न काम ।
रामदास खेलत फिरै बालां के संग जाय ॥ ३९

मात-पिता सग फूलियो कुटुम कुटुंब माहिं ।
धन-जोबन ओरै भयो अब परणी सग जाहिं ॥ ४०

---

३१ दिसटंग – दृष्टांत । ३२ पांगर्‌या – फैल कर बड़े हुये । ३६ अम्रत – दूध ।

रामदास दीरघ भयो, गरव्यौ फिरै गिवार ।
सो साहिब किम बीसरै, तन को सिरजनहार ।। ४१

ज्वानी मे गरव्यौ फिरै, सुत वित नारी देख ।
रामदास तेरा नही, अत एक को एक ।। ४२

अत जायगौ एकलौ, मन मे सोच विचार ।
रामा एकण राम विन, सकल झूठ परिवार ।। ४३

बालपणै मे बुध नही, समझ न उपजी काय ।
दीरघ मे जौरै भयो, मद माया फूलाय ।। ४४

विरधपणै बूढो भयो, सबै छूटग्या बध ।
रामदास सब रस घट्या, रीतो चाल्यो अध ।। ४५

रामदास सू समझ लै, घर पडोसी जोय ।
राम बिना रीता रह्या, यू ही उठग्या रोय ।। ४६

घर-घर मे अगनी जगै, घर-घर लागी लाय ।
रामदास सबही बलै, चहु दिस घेर्या आय ।। ४७

पाडोस्या का देख कर, रामा भया उदास ।
राम सिवर निरभै भयो, तजी पराई आस ।। ४८

सुिवरण कीजै राम को, जग को देख न भूल ।
रामदास पहली करौ, तन अपने को सूल ।। ४९

तन-जोबन चेतन थका, रामदास हरि गाय ।
तन-जोबन बीता पछै, कारी लगै न काय ।। ५०

सब जग रीता रामदास, हरि बिन खाली जाहि ।
भव-सागर मे आय कर, सुकृत कीयो नाहि ।। ५१

सब जग खाली रामदास, हरि बिन खाली जाय ।
सिवरण सौदा ना किया, पूजी मिली न काय ।। ५२

सब जग खाली रामदास, हरिजन है भरपूर ।
भरिया है हरिनाम सू, सता मे सत सूर ।। ५३

सब जग भूला रामदास भतकाल पछिताय ।
खोये दीये वाहिरो भलो कहां से थाय ॥ ५४

रामनाम लीयो नही दियो नही कुछ हाथ ।
रामदास यूंही गया चल्यो नहीं कछु साथ ॥ ५५

रामदास भूलो मती राम-सबद कू ध्याय ।
परमारथ में पैस रहो दीजे हाथ उठाय ॥ ५६

दीनो भाडो भावसी चौरासी के माहि ।
राम सिवरिया रामदास भमरापुर कूं जाहि ॥ ५७

हरि कूं सिवरो रामदास हरि बिन वारै वाट ।
हरि बिन सबही जाहिगे पुर पाटण क्या हाट ॥ ५८

रामदास सब जावसी क्या सांवत क्या सूर ।
रहता एको राम है ताहि भजो भरपूर ॥ ५९

सात वार सोलह तिथा नखतर जाय सरब ।
नवग्रह सबही जायेंगे रहे एक ही रब ॥ ६०

सिव ब्रह्मा सबही चले जावै वेद पुराण ।
रामदास सांई सदा, रहे एक रहमाण ॥ ६१

चाप विष्णु सबही चले तन धरिया सब जाय ।
रामा रहता राम है ताहि रहो सिव लाय ॥ ६२

गढ मठ सबही जाहिगे जावेंगे सब गाम ।
कुटम-कबूलो जाहिग सदा सगी है राम ॥ ६३

नरपुर सुरपुर नागपुर जावेंगे ब्रह्मण्ड ।
रामदास सब जायग सप्तदीप नवखण्ड ॥ ६४

दीसे सा सब जायगे ज्यूं गल पाणी लूण ।
तिपण दिहाडे रामदास कहो रहेगा पूण ॥ ६५

---

५६ पैस – प्रवेश । ६० — चौदह तिथियां एवं अमावस्या और पूर्णिमा इस प्रकार कुल सोलह तिथियां । रब – परब्रह्म परमात्मा । ६५. तिपण दिहाडे – उस दिन ।

दास समावै ब्रह्म मे, डिगै न डोले जाय।
रामा रत्ता राम सू, रहे अटल मठ छाय ॥ ६६
रहता एको राम है, और सकल क्रित जाय।
रामदास जाता तजी, रहत रहो लिव लाय ॥ ६७
रहता सू वहीता रह्या, सतगुरु के परताप।
रामदास सतगुरु बिना, ह्वैगा सोक सताप ॥ ६८
जन रामा सतगुरु मिल्या, राख्या चरण लगाय।
गुरु-गोविन्द की महर ते, रहे राम लिव लाय ॥ ६९

इति श्री चित्रामण को अग

*

[२३]

अथ मन को अंग

साखी

रामदास मन आपणा, हरि कू दीया जाय।
हरि कू दे निश्चल भया, धौखौ मिटियौ माय ॥ १
रामदास मन बस करो, पाचू पकड मराय।
जे मन राखै तन्न मे, तो सिष सबै कहाय ॥ २
मनवा मेरा बस नही, मन मैला सग जाय।
कागद केरी नाव चढ, कैसे समद तिराय ॥ ३
मन जावै पाताल मे, मन ही चढै अकास।
तीन-लोक मे रामदास, सबही मन का वास ॥ ४
मन ही राजा मड का, सारा के सिर राव।
सबही दीसे रामदास, एकण मन का डाव ॥ ५

९. महर – कृपा।

ज्ञान मतै हालै नही, हालै अपनै ह्वाल ।
रामदास मन बहु करै, न्यारा - न्यारा ख्याल ॥ १८

छिन मे मन हस्ती चढै, छिन घोडै वैसाय ।
रामदास छिन पालखी, छिन प्यादौ हुय जाय ॥ १९

छिन मे मन राजा हुवै, छिन मे ह्वै मन रक ।
छिन मे मन दुरबल हुवै, छिन हुय चालै वक ॥ २०

छिन मे मन राई हुवै, छिन मे परवत होय ।
रामदास या मन्न का, मता न जाणै कोय ॥ २१

मनवो चाहै आपदा, आप मुरादौ जाय ।
रामदास मन मुतलवी, दिसा दिसी दौडाय ॥ २२

मन कू पूठा फेरिये, ज्ञान गरीवी देह ।
पाच पचीमू वम करौ, उलट अफूटा लेह ॥ २३

मन मेवासी वस करौ, गुरु को अकुस लाय ।
रामदाम मुख ऊपजै, पिरथी लागै पाय ॥ २४

मन मेवासी वस करो, गुरु को अकुस लाय ।
रामदास आपौ सुखी, औरा जाण वलाय ॥ २५

मन परमोध्या वाहिरौ, झूठा झकै जजाल ।
रामदास मन मारसी, मन हुय बैठा काल ॥ २६

मन परमोध्या वाहिरौ, झूठा ज्ञान 'रु ध्यान ।
रामदास मन वस विना, उर उपजै अज्ञान ॥ २७

मन हस्ती मे मद घणो, चालै चाल कुचाल ।
रामदास सब ढायके, कीया बहुत हवाल ॥ २८

रामदास मन बस करो, उलट अफूटा फेर ।
जो लावै हरि नाम सू, पिसण होय सब जेर ॥ २९

---

२४ पिरथी – पृथ्वी । २६ परमोध्या – उपदेश दिया । २९ अफूटा – पीठ करना, विमुख होना । पिसण – वैरी । जेर – आधीन करना ।

[२४]

अथ मन-मृतक को अंग

साखी

रामदास मन मारिया, मार 'रु कीया छार ।
मूवा पीछे भूत हुय, फेर त्यार का त्यार ॥ १

रामदास मन मारिया, मार 'रु दीया बाल ।
घर लागी अगनी बुझी, फेर ऊठगी झाल ॥ २

सरप मार अरु नाखियो, रामा सामै वाय ।
वाय लाग चेतन भयो, उलट उनी कू खाय ॥ ३

मर मरतक कू जाण कर, मत कीज्यो विसबास ।
रामदास मन सरप ज्यू, जद तद करै विनास ॥ ४

रामदास मन मारियो, मार 'रु काढी खाल ।
घाडेरा खरगोस ज्यू, फेर ऊठग्यौ चाल ॥ ५

मन मरतक कू जाण कर, मत कोइ रहौ नचीत ।
रामदास कबु ऊठ कर, अतर करै कुपीत ॥ ६

मन मरतक सो जाणियै, घायल ज्यू किरराय ।
रामदास दुखिया रहै, हरि सिवरत दिन जाय ॥ ७

जन रामा सतगुरु मिल्या, अरथ वताया एक ।
मन मरतक हुय लग रह्यो, आदि अत या टेक ॥ ८

इति श्री मन मृतक को अग

---

३ वाय – वायु । ४ मरतक – मृतक । ५. घाडेरा – पर्वतीय घाटी के ।
६ नचीत – निश्चिन्त । कुपीत – उपद्रव । ७ किरराय – चीखना ।

गुरु सबदा सूं मारियो, भीतर करे पुकार।
रामदास मन जहं गयो भगत मुगत के द्वार॥ ३०

मन मरा मूधा भया, रह्या गिगन ठहराय।
रामदास बहु सुख मिल्या, अब कछु छोड न जाय॥ ३१

मन लाग्या गुरुज्ञान सें उलट मिल्या गुरु घाट।
रामदास निज सुख लह्या, गया जगत सू फाट॥ ३२

मनवा मरा पलट कर, उलट हुआ निज मग्न।
रामदास जहं सुख लह्या फर न धार मग्न॥ ३३

मनवा सिवर राम कू सिवर राम ही हाय।
रामदास राम मिल्या, दुतिया और न काय॥ ३४

जो मन चाले रामवास तन कूं पवन रलाय।
जो मन लागे तन चले सब रस महला पाय॥ ३५

तन मेती गढ लागिया मनवा उलट मिलाय।

[२४]

अथ मन-मृतक को अंग

साखी

रामदास मन मारिया, मार 'रु कीया छार ।
मूवा पीछे भूत हुय, फेर त्यार का त्यार ।। १
रामदास मन मारिया, मार 'रु दीया बाल ।
घर लागी अगनी बुझी, फेर ऊठगी झाल ।। २
सरप मार अरु नाखियो, रामा सामैं वाय ।
वाय लाग चेतन भयो, उलट उनी कू खाय ।। ३
मर मरतक कू जाण कर, मत कीज्यो विसबास ।
रामदास मन सरप ज्यू, जद तद करै विनास ।। ४
रामदास मन मारियो, मार 'रु काढी खाल ।
घाडेरा खरगोस ज्यू, फेर ऊठग्यौ चाल ।। ५
मन मरतक कू जाण कर, मत कोइ रहौ नचीत ।
रामदास कबु ऊठ कर, अतर करै कुपीत ।। ६
मन मरतक सो जाणियै, घायल ज्यू किरराय ।
रामदास दुखिया रहै, हरि सिवरत दिन जाय ।। ७
जन रामा सतगुरु मिल्या, अरथ वताया एक ।
मन मरतक हुय लग रह्यो, आदि अत या टेक ।। ८

इति श्री मन मृतक को अग

---

३. वाय – वायु । ४ मरतक – मृतक । ५. घाडेरा – पर्वतीय घाटी के ।
६. नचीत – निश्चिन्त । कुपीत – उपद्रव । ७ किरराय – चीखना ।

[२५]

अथ सुक्ष्म मारग को अंग*

साखी

सा मारग पाया नहीं, साधु पहूता घ्याय ।
रामदास आगे रह्या कलह अलपना मांय ॥ १

रामदास घर अलग है, जाका थाह न कोय ।
अंतर निश्चय बिन हुवे है वाका भग सोय ॥ २

कून दिसा सूं आवियो कहो कूणि दिस जाय ।
रामदास अब भूलग्या इहां पड़े है आय ॥ ३

रामदास उन देस सू चाल न आया कोय ।
कहो कुण कूं ले बूझिये मेरे मन की सोय ॥ ४

रामदास उण देस सूं आवे सब ससार ।
भार सीस पर सीत को जाकी सुध्य न सार ॥ ५

बादल आड़ा जगत के, सूर आभ बिच नाहि ।
साधु देह ससार में, परम पटंतर माहि ॥ ६

साधु राम सो एक है बिरला जाणे कोय ।
रामा साधु ब्रह्म में, ब्रह्म साधु में होय ॥ ७

ब्रह्म देस सूं सतजन आन धर्‌यो अवतार ।
रामदास उन देस को, अनभै कियौ विचार ॥ ८

रामदास यूं समझ कर सत की सरण सभाय ।
सांसा दूर गमाय कर अमर देस मे जाय ॥ ९

धरती अरु आकास बिच बेल बधी असरास ।
रामदास सब साभिया, सार चस्या चहुं मास ॥ १०

---

* सुक्ष्म मारग – ब्रह्मप्राप्ति का मार्ग। पहूता – पहुँचा। ४ सोय – इच्छा याचा अभिप्राय।
५ सीत को – अविचार का। ६ परम पटंतर – ब्रह्म तुल्य। बधी – बढ़ी बढ़ी हुई।
असरास – भयंकर अतिप्यामी बिसाम।

सिध, साधक, जोगी, जती, सबही किया विचार ।
रामदास समझ्या बिना, धोखौ बारबार ।। ११

आशा तृष्णा बेलडी, जामण - मरण अखूट ।
समझ्या सो तो सिध हुवा, अन समझ्या सो झूठ ।। १२

मारग अगम अथाह सा, मोपे लख्या न जाय ।
जन रामा सतगुरु मिल्या, पल मे दिया लखाय ।। १३

इति श्री सूक्ष्म मार्ग को अग

*

[२६]

अथ लांबा मारग को अंग

साखी

रामा पैंडो अति घणो, दूर दिसन्तर देस ।
हरि दरसण किम पाइये, सतो दौ उपदेस ।। १

वस्तु अमोलक रामदास, पहुच न सक्कै कोय ।
अनत सयाणा सुध बिना, आपौ बैठा खोय ।। २

रामा तरुवर अगम है, अगम फूलियो जाय ।
फल लागा सो अगम है, सैणा पच्च रहाय ।। ३

रामदास फल अगम है, सीस दिया सू खाय ।
सिर सूप्या बिन नालहै, कोटिक करौ उपाय ।। ४

रामदास फल अगम है, तन - मन दीया खाय ।
तन - मन दीया बाहिरो, जग मे खाली जाय ।। ५

---

१२ बेलडी – लता । अखूट – अनन्त ।
लाबा मारग – लम्बा मार्ग । १ पेंडो – यात्रा-माग । दिसन्तर – देशान्तर ।
२ सयाणा – बुद्धिमान, विवेकशील, चतुर, सज्जन ।

तरुवर केवल ब्रह्म है मुगत महाफल होय ।
रामदास मन पंछिया, चढ़ कर पाया सोय ।। ६

जन रामा सतगुरु मिल्या तरुवर दिया बताय ।
सुख-सागर मे रम रह्या मुगत महाफल खाय ।। ७

।। इति श्री लोभ मारण को अंग

★

[२७]

अथ माया को अंग

साखी

माया कारण रामदास, भूरै सब ससार ।
देणी हरि के हाथ है इमकी नहीं लिगार ।। १

रामदास ससार सूं प्रीत करो मत काय ।
माया रूपी जगत है हरि सिवरण विसराय ।। २

माया जालम जोर है घेर किया सब जीव ।
पकड़ बांधिया रामदास, विसर गया निज पीव ।। ३

रामा माया डाकिणी डकणाया (डकणायो) संसार ।
काढ़ कलेजो खायगी जाकी सुध्य न सार ।। ४

केई मारया मिन्न सूं कई निजरां खाय ।
रामा माया डाकिणी सबै समूला खाय ।। ५

माया विष की बेलड़ी तीन लोक विस्तार ।
रामदास फल कारण भूरे सब ससार ।। ६

---

१ भूरै – बिलखता । इमकी – रत्तीभर । ४ डाकिनी – राक्षसनी । डकणाया – मारणा रूप । पाठ भेद—डकणायो – खा गई [डकार गई] ।

५. निजरां – दृष्टि से ।

छप्पन

बेली को फल आपदा, आसा तृष्णा दोय ।
रामदास तिहु लोक मे, कहा न छूटण होय ।। ७

आसा तृष्णा आपदा, घर-घर लागी लाय ।
रामदास सब बालिया, कोई न सवर्क जाय ।। ८

माया की अगनी जगै, दाझत है स्व जीव ।
रामदास सो ऊवरै, सिवरै समरथ पीव ।। ९

माया सू लागो रहे, पीव करै नहि याद ।
रामदास सब डूबग्या, करि करि विषै-विवाद ।। १०

माया संमदर हुय रही, सब पैठो ससार ।
रामा स्वारथ कारणै, डूवा पसू गिवार ।। ११

रामा माया हाडको, कूकर लाग्या दोय ।
माहो माहे पच मुवा, या जग की गति जोय ।। १२

जग मे माया रामदास, किनक कामनी जोर ।
जो लागा सू यू गया, जाण उडाया सोर ।। १३

माया केरो दव लग्यो, गिगन पहूती झाल ।
रामदास सब जग जलै, देख पड्या जजाल ।। १४

रामदास दुखिया हुवा, जल-थल दाझै जीव ।
माया झोले जग जल्या, विसर गया निज पीव ।। १५

मायापासी रामदास, सब ही नाख्या घेर ।
तीन लोक कू वस किया, सुर नर नागा जेर ।। १६

मायापासी रामदास, सब नाख्या फद माय ।
तीन लोक कू घेर कर, हरि सू लिया तुडाय ।। १७

---

७ बेली – लता ९ दाझत – जलता है । ११ गिवार – मूर्ख ।
१२ हाडको – अस्थि । १३ किनक – कनक । १५ दाझै – जल गये ।
१६ मायापासी – मायापाश, माया का बन्धन ।

माया जालम रामदास तीन लोक कूं खाय ।
कोइ साधुजन ऊबरे सतगुरु सरण आय ॥ १८

माया में सब फस रह्या कांइ नर अरु नार ।
भांड किया सब भांडणी रामा सब कूं ख्वार ॥ १६

माया कू झुरबो करे, अन्तर आठू जाम ।
रामदास मन बह गया कहो कुण सिवरै राम ॥ २०

रामसनेही ना मिले, माया हन्दा यार ।
रामदास ताकू तजो गुरुमुख ज्ञान विचार ॥ २१

माया अजगर रामदास, सब सैसा गिट जाय ।
हाल मूल छोड नहीं ऐसी बडी बलाय ॥ २२

ऐसा गिटिया जागतां कैसा नींद के मांहि ।
कता गिटिया भाजतां रामा छोड नांहि ॥ २३

माया जालम जोर है औरै चढ़ी जवान ।
रामदास सब मारिया भर भर मारै बाण ॥ २४

क्या राजा क्या पातसा क्या बांमण क्या देव ।
रामदास सबही करे निज माया की सेव ॥ २५

माया बैरण रामदास सब कूं घाल घात ।
कोइक हरिजन ऊबरे ता सिर हरि का हाथ ॥ २६

माया ठगणी रामदास पहली दय बांहि ।
भीतर पस र मारिया घास सके कोई नांहि ॥ २७

---

१८ जालम – जालिम अत्याचारी ।
१६ भांड – विदूषक जाति विशेष जो नाच गाकर हंसाने का व्यवसाय करती है बदनाम करना । भांडणी – बदनाम करने वाली भांडजाति की स्त्री यहां माया से तात्पर्य है ।
२ आठू जाम – अष्ट-याम
२२ सैंसा – शक्तिशाली सामर्थ्यवान मनुष्य । बलाये – धारण करना ।
२३ गिटिया – निगल गई । २५ पातसा – बादशाह । २७ ठगणी – ठगने वाली ।

घात घाल घायल किया, मार्‍या बिन हथियार ।
रामदास जन ऊबर्‍या, साहिब हदा यार ।। २८

माया तीनू लोक मे, सबकू घाल्या घाण ।
रामदास यू पीलिया, कोई न पावै जाण ।। २९

रामदास सबकू कहै, मत कीजौ विसवास ।
माया नाखै नरक मे, घाल गला में पास ।। ३०

माया जिसकू मारिया, सो माया का मित्त ।
माया त्यागै हरि भजै, सो नर रह्या नचित ।। ३१

माया बीछण रामदास, खाया सू कूकाय ।
बीछण खाया ऊबरै, वा नरका ले जाय ।। ३२

रामा माया बीजली, कडक'र पडी धरन्न ।
जग सारो ई मारियो, हरिजन राम सरन्न ।। ३३

मन माया कू त्याग कर, जाय चढ्या आकास ।
वा सू पूठा घेर लै, जो छिन करै विसास ।। ३४

माया बहौ प्रकार की, सब ही बध्या लोय ।
(ज्यू) बीछण बिछिया ऊपरै, खाय कोकलो होय ।। ३५

माया का बहु सूत है, सब कू लिया बधाय ।
रामदास छूटै नही, भावै जह लग जाय ।। ३६

क्या घर मे क्या वन्न मे, क्या ग्रैही क्या त्याग ।
रामदास माया बुरी, कह लग जावै भाग ।। ३७

माया देवल देहरा, तप तीरथ असनान ।
रामदास निज नाम बिन, सब माया का ध्यान ।। ३८

---

२९ घाण – घाणी, चक्कर मे डालना ।
३२. बीछण – मादा बिच्छू । कूकाय – चिल्लाना । ३३ धरन्न – धरती ।
सरन्न – शरण । ३४ विसास – विश्वास । ३५. लोय – लोग । कोकलो – खोखला ।
३७ ग्रैही – गृहस्थी । त्याग – त्यागी सन्त ।

सब माया में ऊपज्या सब कू माया खाय ।
रामदास निज नाम बिन सब माया घर आय ।। ३९

माया दमडी रामदास, जोड़ै सब संसार ।
जोड़त-जोड़त ऊठग्या संग न चली लिगार ।। ४०

माया कवडी रामदास ताहि पचै सब लोय ।
माया कू पन्ना करी ताकू लख न कोय ।। ४१

ताहि लख्यां बिन रामदास कारज सरै न एक ।
माया संग चाली नहीं आप चल्यो हुए सेस ।। ४२

काया माया कारण रोवै सब संसार ।
मात पिता सुत बंधवा कै पूता परिवार ।। ४३

मनछा ममता कलपना ए सब व्यापक होय ।
रामा एकै राम बिन सब कू मारया टोय ।। ४४

त्यागी पच है बिंद कूं गिरसत धन के काज ।
ऊ चल जाव नरक में तपसी पावै राज ।। ४५

सुरग नरग माया मही कहा आद वैकूंठ ।
रामदास हरि सूं मिल्या द माया कूं पूठ ।। ४६

सांख्य योग नवध्या सब ॐकार लग जाण ।
रामदास याकै परै समरथ पद निरवाण ।। ४७

---

४१ कवडी – कौड़ी । पचै – परिश्रम करना । ४२ सेस – शेष कुछ नहीं ।
४४ टोय – टूट २ करके । ४५ बिंद कूं – वीर्यरक्षा ।
४७ सांख्य – कपिल मुनि द्वारा स्थापित दर्शन का एक अंग जिसमें पुरुष द्वारा चेतनता को प्राप्त कर त्रिगुणात्मक प्रकृति ही सारे संसार का मूल कारण मानी गई है । पुरुष केवल दृष्टा एवं चिन्मय है । योग – महर्षि पतंजलि कृत अष्टांग योग दर्शन का भेद । नवध्या – नौ प्रकार से की जाने वाली भक्ति, नवधाभक्ति (श्रवण कीर्तन स्मरण पादसेवन अर्चन वंदन दास्य सख्य और आत्मनिवेदन) ।
ॐकार – प्रणव माया विशिष्ट ब्रह्म ।

ॐकार निज मात है, ब्रह्म एक निरकार ।
रामदास वा सू मिलौ, तजौ सरव आकार ।। ४८

माया राणी ब्रह्म की, ब्रह्म पिता मम देव ।
रामदास वा सू मिलौ, करौ सहज मे सेव ।। ४९

सोऊ सवद नाभी बसै, ओऊ त्रगुटी माय ।
रामदास ताके परै, अषै निरजण राय ।। ५०

नाद बिद सू क्या पचै, ए माया के माहि ।
रामा सगी जीव का, हरि बिन दूजा नाहिं ।। ५१

सबही साधन देह लग, देही झूठी जाण ।
रामा तेरा राम भज, पद पावै निरबाण ।। ५२

माया ऊची रामदास, जाणै नही ससार ।
माया झाबर झौल मे, यू पच मुवा गवार ।। ५३

मै तो वचिया रामदास, सतगुरु सरणै आय ।
माया सू दूरा रह्या, रह्या राम लिव लाय ।। ५४

जन रामा सतगुरु मिल्या, जिना बतायो भेव ।
माया सेती काट कै, मिल्या निरजन देव ।। ५५

इति माया को अग

---

४८ ॐकार निज मात है – ओकार, चिद् विशिष्ट माया ।
५१ नाद बिंद – स्फोट व वीर्य [हठयोग के पारिभाषिक शब्द] त्यागी और गृहस्थी ।
५३ झावर झौल – प्रपच, बन्धन ।
५५ भेव – भेद, रहस्य ।

[२८]

अथ मान को अंग

साखी

देखत माया छोड कर, वहुता गया सुजाण ।
रामा झीणी ना तजी भीतर मार वाण ॥ १

झीणी माया झीण हुय वठी घट घट माय ।
तपसी त्यागी मुनिजना सब काहू को खाय ॥ २

दिष्ट कूट माया तजी, मान तज्यो नहीं जाय ।
मान सबल है रामदास बडा बडा कूं खाय ॥ ३

मान तहां तो राम नहीं राम तहां नहीं मान ।
दानूं भला ना रहै, रामदास कहै ग्यान ॥ ४

मान वडाई ईरषो सब ही वठा माय ।
माया तजिया क्या हुवे ये सबही कूं खाय ॥ ५

मान बडाई ईरषो, ए सब कूकर जाण ।
रामा सहु गरीब बिन महुसी करसी हांण ॥ ६

मान वास भसमी करूं बड़पण खाऊ झाग ।
रामा मारूं ईरषो रहु सतगुर सा लाग ॥ ७

जन रामा सतगुरु मिल्या जिनो बताया भेद ।
सुरग सगाई मान-गढ़ सतर कीया छेद ॥ ८

इति मान को अंग

---

१ झीणी – सूक्ष्म । ३ दिष्टकूट – दृष्टि कूट पहेली के समान कथन ।
६ कूकर – कुत्ता ७ बड़पण – बड़प्पन बड़ाई ।

[२६]

अथ चांणक* को अंग

साखी

पराकिरत पढ रामदास, संसकृत्त लै जोय ।
सबही कूकस तूतडा, राम-नाम कण होय ।। १

चार वेद षट-शास्तर, पुराण अठारै जोय ।
रामदास इक राम बिन, कारज सरै न कोय ।। २

पडित पढ कर रामदास, बहुता करै गुमान ।
दोय अक्षर पढिया बिना, अत हुवैगी हान ।। ३

पढिया गुणिया रामदास, सरै न ऐको काम ।
वेद पुराण सब सोधिया, सत्त सबद है राम ।। ४

पडित पोथी हाथ कर, ज्ञान दिठावण जाय ।
अतर आसा जगत की, राम न आवै दाय ।। ५

ज्ञान बाच चरचा करै, सब कू दे उपदेस ।
रामदास सिंवरण बिना, मिटै न मनका लेस ।। ६

ज्ञान बाच सूरा हुवै, भूठा करै पुमाव ।
रामदास सिवरण बिना, पडै काल का डाव ।। ७

---

*चाणक अभिधार्थ – चाणक्य, लक्षणार्थ–नीतिशास्त्र ।

१ पराकिरत – प्राकृत भाष। । संसकृत – सस्कृत भाषा ।

कूकस तूतडा – कदम्ब के ऊपर का छिलका ।

२ चार वेद – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ऋग्वेद ।

षट-सास्तर – छ शास्त्र (आदेश, धर्म, दर्शन, साहित्य, विज्ञान और कला) व्याकरण, छन्द, ज्योतिष काव्य, निरुक्त, शिक्षा । पुराण अठारै – प्रसिद्ध हिन्दू धर्म-ग्रन्थ (विष्णु, वायु, पद्म, ब्रह्म, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, लिग, वराह स्कद, वामन, कूर्म, गरुड, भविष्य, मत्स्य)

३ दोय अछर – राम का नाम । ४ सत्त सबद – सत्य शब्द । ५ दिठावण –दिखाने ।

७ बाच – पढ कर । पुमाव – घमड (प्रफुल्लित होना) । डाव – अवसर ।

श्रौरां सूं उपदेस है आप चल अज्ञान ।
चार वेद में फस रहा हरि सू नाहीं ध्यान ॥ ८

गुरू कहाव जगत का, सब तें ऊंचा होय ।
औरां सेती दूज कर आपो बठा खोय ॥ ९

चौको दे रोटी कर चुतराई मू मग्न ।
रामदास दुखघ्या धर निंद हरि का जग्न ॥ १०

बेद विद्या मे रामदास बध्यौ सब ससार ।
गुरु जजमान सबही चल्या भला नरक दवार ॥ ११

आप ही चाल्या जाय था जगत लिवी सब साथ ।
रामा मारग भूलग्या ऊपर काली रात ॥ १२

सब ही डिया कूप मे हरि बिन पसू गिवार ।
जनेऊ का जोर सूं समझ्या नही लिगार ॥ १३

गुरू कहाये सरब का सब सूं ह्व आधीन ।
रामदास साधू निंद दुरस गमायो दीन । १४

बेद पढ़े पढ़ रामदास तन का करै गुमान ।
भगत गमाई राम की खोया सब जजमान ॥ १५

चौके माहि चित घणो चतुराई की रीज ।
जीव मारियां गार म क हांडो में सीज ॥ १६

अतर दया न उपज विद्या का अति जोर ।
दुनिया का आधीन हुय रामा हरि का चोर ॥ १७

बांमनियां गुरु मद का भगत बधाया वेद ।
चोरासी मे ले चल्या पाया नहि हरि भेद ॥ १८

---

९ दूज कर — भरना का भाव । १२ काली रात — काल रात्रि ।
१४ दुरस — श्रेष्ठ पुनम । १६ रीज — मग्नता । गार — मिट्टी ।

वेदा मे उलझाय कर, बोई सारी मड ।
रामदास पायो नही, एको नाम अखड ।। १९

रामदास पडित कथा, बाचै करै विचार ।
अरथ वतावै और कू, आपा सुध्ध न सार ।। २०

अरथा का अनरथ करै, ज्ञान हि करै अज्ञान ।
रामा पडित पाठ कर, छोडावै हरिध्यान ।। २१

अपनै स्वारथ कारणै, भाखै आल-जजाल ।
रामदास हरि भजन बिन, आण झपेटे काल ।। २२

रामदास पडित कथा, है आधा की ज्याज ।
वैसण हारा अधरा, डूबा होय अकाज ।। २३

रामदास पडित कथा, जाण ठगा को वास ।
ठगिया सब ससार कू, गल मे घाली पास ।। २४

पासी चारूवेद है, ठग बामनिया होय ।
रामदास पानै पड्या, साजा गया न कोय ।। २५

राम-भगति जानै नही, आन दिठावै ज्ञान ।
रामदास खाली रह्या, ज्यू तैगै बिन म्यान ।। २६

आपणपौ का छूकरे, आपौ खौजै नाहि ।
आपो खोज्या बाहिरौ, चौरासी मे जाहिं ।। २७

एक आपदा कारणै, बोयो सब ससार ।
कलि का वामन रामदास, चाल्या दीन विसार ।। २८

रामदास कलि-वैसनु, बहुता करै कलाप ।
सिष-साषा सू प्रीत कर, भूल्या आदू बाप ।। २९

---

२३ ज्याज – जहाज । २४ पास – पाश, बन्धन । २५ पासी – बन्धन । बामनिया – ब्राह्मण । २६ दिठावै – दिखावे । तैगै – तलवार ।

२८ कलि का वामन – कलियुग के ब्राह्मण । २९ सिष-साषा – शिष्य परम्परा और सम्प्रदाय । आदू बाप – परब्रह्म ।

घर का टावर छोडिया छोडया बाप'र माय ।
रामदास त्यागी हुवा कपडा दूर कराय ॥ ३०

वेष छाडियो जगत को दूजो धर्यो सवेस ।
रामदास घर छाडियो, गयो और ही देस ॥ ३१

हुओ बडगो जगत में सब ही को गुरुदेय ।
रामदास आधी-जगत सुख बिन लागी सेख ॥ ३२

सिष-साषा बहुता कर, बहोत दिठाव ज्ञान ।
रामदास हरि सू अलग आन धराव ध्यान ॥ ३३

सिष-साषा परमोध के मन माया के माहि ।
संता की निंदा करै आपो समझ नाहिं ॥ ३४

राम नाम सू बरता, करै साध सू घेस ।
जग मे सांमी रामदास ऐसो इचरज देस ॥ ३५

पीतल की मूरत कर माथ बांध उठाय ।
मान मह्तु क कारणे बडी ठौड चल जाय ॥ ३६

अरथ बतावै अलगला, बाच गीता ज्ञान ।
रामदास दुनिया ठगण हरि सू नांही ध्यान ॥ ३७

रामदास आंधी जगत चाले आंधी ज्ञान ।
सामी सबग एकमत स्वामी जाय निदान ॥ ३८

कण रूपी एक राम है आदि भुगत का बीज ।
सामी सबग रामदास ताहि करै मिन खीज ॥ ३९

झूठे मूं मय मोड मिल्ल माथै दिसा म जाय ।
लोभी लपटो राजसी ता सूं जगत रिझाय ॥ ४०

---

३२ बडेरो – पूज्य साधु मैं बड़ । ३४ परमोध के – उपदेश देना ।
संता की निंदा करै – भक्तारियों के स्थान पर गागुरु प्राप्त सच्चे संतों की निंदा करना । ३७ अलगला – विभिन्न विपरीत । ४० लपटी – लम्पट ।
राजसी – रजोगुण सम्पन्न व्यक्ति ।

तीरथ को जावै दुनी, फिर-फिर धोखै धाम ।
रामदास आधी जगत, कहौ किम पावै राम ।। ४१

जप-तप सजम जोग जिग, धरम नेम पुन दान ।
तीरथ सब एकादसी, हरि बिन सबही आन ।। ४२

आन धरम लागी दुनी, क्या ग्रैही क्या भेष ।
रामदास खाली रह्या, पाया नही अलेख ।। ४३

सब बल थोथा रामदास, जोग ध्यान अरु त्याग ।
कण रूपी इक राम है, तासू विरला लाग ।। ४४

जप तप तीरथ रामदास, सबही फूल समानि ।
फल रूपी हरि भगत है, सो तो विरला जानि ।। ४५

फल पाया जब जानिये, फूल गया कुमलाय ।
रामदास आधी जगत, फूला रही लुभाय ।। ४६

काशी जावै द्वारका, वदरी अरु जगनाथ ।
रामदास हरि भगति बिन, कछू न आवै हाथ ।। ४७

तीरथ फिर फिर सब किया, धोकी चारू धाम ।
रामदास फिर यू रह्या, मिल्या न आतम राम ।। ४८

गगा न्हाया रामदास, सबही धोया तन्न ।
न्हाय धोय यूही रह्या, सागे ऊहीज मन्न ।। ४९

सब फिरिया न्हाया सबै, मन मे बहुत हुलास ।
रामदास हरि-भगत बिन, नहचै गया निरास ।। ५०

अपना घर कू छाड के, स्वामी नाम धराय ।
रामदास घर चार बिच, मढी बधाई जाय ।। ५१

---

४१ दुनी – दुनिया । ४२ सजम – सयम । जोग जिग – योग और यज्ञ ।
आन – व्यर्थ । ४३ ग्रैही – गृहस्थी । भेष – भेषधारी पाखण्डी । अलेख – अलक्ष्य ।
४४ थोथा – कोरे, खाली । ४९ ऊहीज – वही । ५० नहचै – निश्चय ।
५१ घर चार – बस्ती

क्या बाबू बाबा कहा, क्या स्वामी वैराग ।
रामदास हरि-भगति बिन, झूठा ग्रैही त्याग ।। ६३

सब सत हेला देत है, रामदास हरि ध्याय ।
नाक कान अख तीन बिन, भलौ कहा ते थाय ।। ६४

उर बिच मे लोचन नही, नाक नही मन माहि ।
कान नही अज्ञान तै, तातै जम ले जाहि ।। ६५

जम फाडेगा जीव कू, ज्यू भेड वखेरै नार ।
रामदास तिहु बाहिरो, रहे बार के वार ।। ६६

रामदास हेला दिया, सुणज्यो सब ससार ।
बहरी अधी जगत सब, सुणै न निरख लिगार ।। ६७

जन रामा सतगुरु मिल्या, वहरा चूध मिटाय ।
अनतर आख्या खोल कर, रहे राम लिव लाय ।। ६८

इति श्री चाणक को अग

*

[३०]

अथ कामी नर को अंग

साखी

काजल ही का घर वस्या, काजल को ब्यौहार ।
कालज मै रहबौ सदा, सब मोहै ससार ।। १

आगै पूछै रामदास, अगल बगल सब ठौर ।
काजल सब ससार है, भाजै कितीयक दौर ।। २

---

६६ वखेरै – बिखेरना, टुकडे २ कर देना । ६७ निरख – पूर्ण ।
६८ चूध – कम दिखाई देना । अतर आख्या – अन्तर्चक्षु । २ कितीयक – कितनी ।

राम नाम रत्ता रहै जग से रहै उदास ।
रामदास उण संत के लग न काजल पास ॥ ३

रामदास नारी बुरी प्रीत करो मत कोय ।
जैसे दिया पतंग का, सब बैठा तन खोय ॥ ४

रामा नारी नागिनी, गूछल मारया दूर ।
तीन-लोक भीतर लिया सब कर बैठी पूर ॥ ५

नारी नदिया सारसी सब जग लिया बुहाय ।
रामदास बूया सब मुवा गुलचिया खाय ॥ ६

रामा नारी कूप सी, ऊंडी वहोत अथाह ।
भीतर पड्या सो डूबग्या, एक न आयो साह ॥ ७

रामदास फंद रोपिया कनक कामिनी दोय ।
नेड़ा सा फंद में पड्या लिया अलगला टोय ॥ ८

तन-मन अपणा वस किया इन्द्री पांच मराय ।
कनक कामणी रामदास दिसा न ताके जाय ॥ ९

दोय घाटी यह दुलभ है संता करो विचार ।
रामदास त्या वीच में मारयो सब संसार ॥ १०

इक तो घाटी कामिनी दूजी कनक जू होय ।
रामदास त्या बीच में, साजा गया न कोय ॥ ११

राम नाम बिन रामदास सब ही काम विकार ।
एकण हरि का नाम बिन उलट रह्यो संसार ॥ १२

क्या इन्दर को बसणो क्या परलोकां वास ।
रामदास इक राम बिन सबही भोग विलास ॥ १३

---

५. गूछल – कुण्डलनी । ६ सारसी – जैसी ।
७ साह् – सुरक्षित । ८ अलगला टोय – दूर की वस्तुओं को ढूंढ कर ।
११ साजा – सुरक्षित कुशलपूर्वक ।

रामदास विरकत भया, नारी एक न कोय ।
निरभै गोरखनाथ ज्यू, सिध्ध भया यू जोय ॥ १४

रामदास नारी नही, सब ही राम रमाय ।
नारी पलटी नर भया, नार कही नहि जाय ॥ १५

जह तह कामण को नही, ऐको राम रमाय ।
से नर गोरखनाथ ज्यू, अमर भया कलि माय ॥ १६

कनक कामनी वेल है, फल लागा विपवाद ।
रामदास खाया सवै, साह न आया याद ॥ १७

रामदास बेली बली, बल कर भसमी होय ।
भसमी अग लागा पछै, नरक गया सब कोय ॥ १८

नारी आपही नरक है, तामे फैर न सार ।
रामदास से ऊबर्‍या, सिवरै सिरजणहार ॥ १९

कामी पडिया काम बस, कैसे सिवरैं राम ।
रामदास मन थिर बिना, कही नही बिसराम ॥ २०

कामी को मन काम मे, राम न आवे दाय ।
रामा चाल्या नरक मे, सवै समूला जाय ॥ २१

कामी सा पापी नही, इण भवसागर माहि ।
इद्री स्वारथ कारणै, राम विसार्‍या जाहि ॥ २२

कामी नर के काम की, आसा आठू जाम ।
रामदास कबु भूल कर, कहै न केवल राम ॥ २३

कामी नर तै रामदास, कूकर आछा होय ।
ऐसी ममता दिढ करै, रुत बिन काम न होय ॥ २४

भगति बिगाडी रामदास, कामी कलि मे आय ।
कै तो कीनी आपदा, कै सूता कै खाय ॥ २५

---

१५ नारी–प्रकृति। नर–पुरुष (ब्रह्म)। १७ साह – साहिब (ईश्वर)। २४. दिढ़ – दृढ़।

कामी नर के रामदास, कामण ही गुरु होय ।
कामी रत्ता लोभ सू ता सिर दमड़ा दोय ।। २६

रामदास के सीस पर, ऐसा सतगुरु सत ।
सता म गुरु राम है परा परी निज तत ।। २७

पर नारी सूं रामदास जब तब भांडी होय ।
चारी जारी बीच म आपो बैठा खोय ।। २८

जन रामा सतगुरु मिल्या जिना बताया भेद ।
चोरा जारी मद म दानू बात नखेद ।। २९

इति श्री कामी नर को अंग

*

[११]

अथ सहज को अंग

साखी

रामदास सहजां लगी बात न जाणे कोय ।
सहजां सहजां हरि मिले सहजां साहिब होय ।। १

रामदास या सहज में समझे नहीं समाय ।
सहजां सूं सांई मिलै, ऐसा सहज विचार ।। २

सहजां सहजां सब मिल्या राम धणी ने काम ।
रामदास सहजां मिल्या अपना आतम राम ।। ३

---

२६ दमड़ा – [illegible] । २७ परा परी – परम्परा में । २८ भांडी – अपमानित होना ।
२९ नखेद – निंदित ।
१ सहज – [illegible] ।

सहजा सहजा सब मिटै, विष इद्री अघवाद ।
रामदास कलपौ मती, कर साई कू याद ।। ४

चद्रायण

सहजा कामण काम, सहज सब जाय रै ।
सहजा मिटै विषवाद, सहज लिव लाय रै ।।
सहजा खुलिया द्वार, मुगत का देस रै ।
हर हाँ यू कहै रामादास, गुरु उपदेस रै ।। ५

सोरठा

सहजा सब कुछ होय, जे कोई जाणै सहज कूं ।
सहजा मिलिया तोय, रामा साहिब आपणा ।। ६

साखी

सहजा सहजा चल गया, मुगत-देस कै धाम ।
सहजा सहजा सब मिट्या, कामण किनक'रु काम ।। ७

इति श्री सहज को अग

×

[३२]

अथ साच को अंग

साखी

रामदास हरिजन इसा, साचा भाखै वैण ।
भावै तो दुरजन हुवौ, भावै हुय कोइ सैण ।। १

---

४ विष इद्री अघवाद – विषय-वासना और इन्द्रिय द्वारा पाप ।

हरिजन तो साची कहै काण न राखै काय ।
रामदास राजी हुवौ भाव विलखौ थाय ॥ २

साची को माने नहीं ऐसा कलजुग पूर ।
रामा झूठा जगत सब रहै साच सूं दूर ॥ ३

साच कह्या स रामदास जगत कर सब राड ।
कलजुग काला कूकरा बोल्या खावै फाड़ ॥ ४

साच सरीसा रामदास न कोई तपस्या त्याग ।
साचां सूं सांइ मिल उर उपजे वैराग ॥ ५

झूठ सरीसा रामदास ऐसा पाप न कोय ।
झूठां सू सांई अलग सगो कदं न होय ॥ ६

रामा झूठ न बोलिये जे कोई मेले राम ।
झूठा के संग जे गया जिसका बिगड्या काम ॥ ७

रामा झूठ न बोलिये, झूठ भला न होय ।
झूठा कलि में मानवी कवड़ी बदल जोय ॥ ८

समझै सबही साच म जाण समावे कूर ।
रामदास उन मिनख सू समझ'र रहिये दूर ॥ ९

झूठ त्याग साची कहै जाम कांठै आय ।
रामदास व जन सही पल म पार संघाय ॥ १०

झूठां सू झूठां मिल झूठ दिखावै ज्ञान ।
रामदास मोह मगन हुय परल गया निदान ॥ ११

हरिजन तो साची कहै काण न राख काय ।
रामदास उण साध मे, दोष नहीं ठहराय ॥ १२

---

१. काण – संकोच [illegible] का ख्याल ।
४. फाड़ फाड़ – दूसरे २ पर ला जाना ।
८. कवड़ी – कौड़ी । ९. जाण – जान बूझ कर । कूर – झूठा ।

झूठ साच दोउ रामदास, भेला रहे न वीर ।
झूठा सू साचा मिलै, रहे नही पल सीर ॥ १३

साई रीझै साच सू, झूठ न रीझै कोय ।
रामा साची पकड रहौ, सुणौ साच की सोय ॥ १४

भावै केस मुडायले, भावै केस वधार ।
रामा साई साच बिन, रीझै नही लिगार ॥ १५

रामा साची पकड रहो, निस-दिन रहो अबीह ।
साचा विपहर ना डसै, साचा भखै न सीह ॥ १६

ना क्यू मुदरा घालिया, ना क्यू घाल्या राख ।
रामा रीझै रामजी, अदर साची आख ॥ १७

मुल्ला रोजा क्या करै, चुप रे बाग पुकार ।
रामा साई साच बिन, रीझै नही लिगार ॥ १८

मीया सुन्नत तैं करी, खलडी काटी काय ।
साई रीझै साच सू, साच विना कछु नाय ॥ १९

रामदास ससार की, लज्जा खरौ डराय ।
निरख परख साची तजै, न्याय नरक मे जाय ॥ २०

रामा साचा राम है, दूजा सब है झूठ ।
दुनिया चाली झूठ सग, दिवी साच को पूठ ॥ २१

साहिब की चोरी करे, चोरा के सग जाय ।
रामा जन-दरगाह मे, मार गैब की खाय ॥ २२

साई लेखा मागसी, जाका वार न पार ।
झूठ साच को न्याय सब, साई के दरबार ॥ २३

---

१५ वधार – कटाना । १६ अबीह – अभय । विषहर – विषधर । सीह – सिंह ।
१७ मुदरा – कान की मुद्रायें ।

लेखा सो सबही भला, हरि करसी ज्यूं होय ।
रामदास दही थका सिंवरण करलो सोय ॥ २४

मुल्ला बन्द समाय कर गला और का काट ।
या जीवां का रामदास लेखा लसी हाट ॥ २५

मनम साच विचारिये करद आप कूं वाय ।
जो पांचू बिसमिल करै, रामा मिलै खुदाय ॥ २६

क्या तपसी त्यागी भवै क्या बैरागी सेष ।
रामा मांची राम है और कहण का भेख ॥ २७

रामदास झूठी तजो साच रहो लिव लाय ।
साचा हरि दरगाह में सदा हजूरी थाय ॥ २८

जन रामा सतगुरु मिल्या जिना बताया साच ।
गुरु किरपा सूं जांणिया, यो कंचन यो काच ॥ २९

इति साच को अंग

*

[११]

अथ भ्रम बिधूंसण का अंग

साखी

रामा पत्थर पूजिया हार मूढ अजाण ।
सतगुरु मिलिया शब्द में पाया पद निरवाण ॥ १

रामदास पांणी [illegible] पूज [illegible] पाखाण ।
[illegible] पूज [illegible] रया, [illegible] ॥ २

११ [illegible]

भेद न पावै भरमिया, पत्थर कह करतार ।
केई साधु समझिया, पाया हरि दीदार ।। ३

पत्थर लावै पाड को, घडै सिलावट फोड ।
रामदास आधी दुनी, ताकी धारै ओड ।। ४

के मूरत पाषाण की, काय काठ की होय ।
इनी भरोसा रामदास, आपो बैठा खोय ।। ५

काठ धातु पाषाण की, हाथा लिवी घडाय ।
रामदास आधी दुनी, ताको पूज चढाय ।। ६

दमडा देकर मोल ले, देवल हाथ चुणाय ।
चूना को गारौ करै, ता भीतर पधराय ।। ७

ता को फिर करता कहै, ऐसी आधी लोय ।
रामदास साईं अमर, किया न किस का होय ।। ८

मूरत फूटै रामदास, चुणिया वीखर जाय ।
इणी भरोसै जगत सब, जद कहु कहा रहाय ।। ९

कै तो पूजै पत्थर कौ, के जल पूजण जाय ।
रामा साहिब घट्ट मे, ताकू लखै न काय ।। १०

पत्थर पूजत रामदास, जनम गम्यौ बेकाम ।
फिर फिर यू मर मुवा, मिल्या न आतम-राम ।। ११

पत्थर केरै पूजणौ, बूडी सबही मड ।
रामदास पिंडता किया, बिच ही खड-विहड ।। १२

पत्थर पिंडता रामदास, घेर्‌या सबही जीव ।
इणकै आसै जे रह्या, कदे न पावैं पीव ।। १३

---

३ भरमिया – भ्रमित । ४ पाड को – पर्वत का ।
७ पधराय – प्रवेश कराना, (स्थापित करना) ।

रामदास आधी दुनी पत्थर पूजण जाय ।
एकण सतगुरु माहिरो निश्चय जवरो खाय ॥ १४

रामा पत्थर झूठ है बांधे छाड उठाय ।
ताकी झूठी सेव है ताकी कूण बलाय ॥ १५

साईं साचा देव है घट घट रह्या विराज ।
रामदास ताकूं भजो, सो सबका म्हाराज ॥ १६

मुसलमान मसीत कूं क मक्का कूं जाय ।
रामा ताहि न ओलखे घट में बस खुदाय ॥ १७

सब सालिगराम कूं जाय द्वारका धाम ।
रामा ताहि न ओलखे घट में सालिगराम ॥ १८

जल पत्थर कूं सब नुवे पक्षा पक्षी ससार ।
रामा ताहि न ओलखे घट मे सिरजणहार ॥ १९

पक्ष छोडो निरपक्ष रहो तजो पत्थर की सेव ।
रामदास घट में मिल्यो तहां निरजण देव ॥ २०

मै ही पत्थर पूजता आंधा हुता निराट ।
जन रामा सतगुरु मिल्या जिनां बताई वाट ॥ २१

इति भ्रम-विधूसण को अंग

---

१७ मसीत – मस्जिद । ओलखे – पहिचानना । १९ नुवे – नमन करना ।
पक्षा पक्षी – पक्षा-पक्षी देखा-देखी । २० निरपक्ष – निष्पक्ष ।
२१ निराट – पूर्ण ।

[३४]

अथ भेष को अंग

साखी

गृह त्याग बन मे गया, मन चाल्यौ गृह माय ।
रामदास धोबी कुतौ, भटक भटक दुख पाय ॥ १

घर मे मिल्यौ न घाट मे, भटक न आयौ हाथ ।
रामदास दोनू गया, लह्या न ऐकौ साथ ॥ २

गृह त्याग बन मे गया, बन मे भज्यौ न राम ।
रामदास दोनू गया, सर्यो न ऐकौ काम ॥ ३

गृह्न सझ्यौ नही वन सझ्यौ, लागौ वाद-विवाद ।
भेष पहर भाडी करी, साई कियौ न याद ॥ ४

भेष पहर त्यागी भया, मन तै त्याग न होय ।
रामा धूल बगूल की, पडै धरण मे सोय ॥ ५

अनड पख आकास मे, इड पड्यो धर आय ।
रामदास यू समझ कर, उलट आद घर जाय ॥ ६

अनड पख ज्यू साधु है, और पखी ज्यू भेष ।
रामा उदर कारणै, करै साधु सू धेख ॥ ७

माला कठी तिलक-धर, हुय बैठा निज सत ।
रामा स्वारथ कारणै, भूल गया निज तत ॥ ८

साग पहर साधु हुआ, भगति न आई हाथ ।
रामा स्वारथ कारणै, चल्या जगत की साथ ॥ ९

---

४ सझ्यौ – निर्वाह । ५ बगूल – ववण्डर ।

६ अनड़ पख – अनल पक्षी (यह आकाश मे ही रहता है) । इड – अण्डा ।

९ साग – रूप, स्वाग ।

जगत भली है रामदास चाल कुल की लाज ।
भप पहर भांडी कर (री), सर्‌यौ न ऐको काज ॥ १०

त्याग कियो भसमी घसी बैठो बन मे माहि ।
रामा भ्रासा जगत की राम जाणियो नाहि ॥ ११

भेष सब ही रामदास कर जगत की भ्रास ।
साघू रत्ता राम सू मिल्न निरञ्जण पास ॥ १२

क लोभी क लालची कामी क्रोधी होय ।
रामदास ससार मैं हरिजन विरला जोय ॥ १३

जिण घर मल्या रामजी, जहां रहणौ मुसकल्ल ।
काम क्रोध बहु ऊपज, दुख-सुख बहुती गल्ल ॥ १४

एसं दुग म रामदाम सिवर सिरजणहार ।
सो साधूजन जानियै तीनलोक ततसार ॥ १५

चदन ज्हां त्हां गामदास बन मैं देख्या नाहि ।
सूरा सघरा फौज मैं कोइक विरला थाय ॥ १६

रामनाम हीरा कहां किणीक समदर माहि ।
यूं साघू ससार म जहं तहं देख्या नाहि ॥ १७

साधु भष की पारखा सतगुरु दई बताय ।
जन रामा सतगुरु मिल्या सांग न भाय दाय ॥ १८

इति श्री भष को अंग

*

---

१४ [illegible]। १७ [illegible]।

[३५]

अथ कुसंगत को अंग

साखी

उज्जल नीर अकास का, पड्या धरण मे आय ।
मैली सू मिल बीगड्या, यूहि कुसगत थाय ।। १

बूद एक ही रामदास, फाट हुई तिहु भाग ।
क्यु कदली क्यु सीप मे, क्यु सरपं मुख लाग ।। २

सरपा के मुख जहर हुय, सीपा मोती थाय ।
रामदास कदली पडी, सोहि कपूर निपाय ।। ३

रामदास विचार कर, यूहि कुसग कहाय ।
सरप जहर ज्यू नीपना, काल गिरा सै आय ।। ४

कुसगत केता गया, जाका अत न पार ।
रामा नागर वेलि ज्यू, निरफल रह्या गिवार ।। ५

खल की सगत रामदास, निरफल नागर वेलि ।
केता नर यू ही रह्या, कर कुसग कू बेलि ।। ६

बोर केल भेली हुई, बध कीनौ विस्तार ।
रामदास हाल्या पछै, पान सरब ही फार ।। ७

बौर केल के सेवणै, यूहि कुसगत होय ।
रामदास सगत किया, आपौ बैठा खोय ।। ८

कुसगत सू प्रीत कर, केता जाय विलाय ।
ज्यू दीपक सग रामदास, पडै पतग विलाय ।। ९

---

३. निपाय – उत्पन्न होना ।
७ बध – बढ कर । फार – चीरना ।

कुसगमें मैं भी हुता करता करम अपार ।
जन रामा सतगुरु मिल्या, सात लह्या विचार ।। १०

इति श्री कुसंगत को अंग

*

[११]

अथ संगत को अंग

साखी

सहर गली को रामदास पानी मिलिया जाय ।
दौसी[1] खाई कोट की ता में रह्यो समाय ।। १

उज्जल पानी रामदास कुसगते बिगडाय ।
निकस मिल्यो जाय गग में सब गगोदक थाय ।। २

ऐसी सगत साधु की करे जीव सू ब्रह्म ।
विपिया मेटे रामदास, काट कोटि करम ।। ३

रामदास पानी विना नैपे कछु न थाय ।
साधु साधु बिन ना हुवे कोटिक करो उपाय ।। ४

रामदास पानी विना भटक मरे ससार ।
साधु-सगत बिन रामदास है कोई वार न पार ।। ५

रामदास नदी चली भर समदर की सुध्य ।
यूं सिध सतगुरु सू मिल अतर होवे सुध्य ।। ६

---

१ दौसी – पहरी । कोट – नगर का परकोटा ।

साध नदी सिष वाहला, कियौ समद सू सीर ।
रामदास सिलता भई, वहती वहै गभीर ।। ७

रामदास नदी चली, कर समदर को ध्यान ।
आसपास को नीर लै, मिली आद-अस्थान ।। ८

सिलता ज्यू तो साधु है, ब्रह्म समद ज्यू जाण ।
रामा मिलिया सगत सू, परस्या पद निरवाण ।। ९

पालौ मैंदी रामदास, या कौ एकौ अग ।
महदी को गुण साथ है, ओरा चाढै रग ।। १०

घडी पलक छिन मात्र मे, साधु-सगत मे जाय ।
रामदास ऐस नफो, काल न ग्रासै आय ।। ११

साधु-सगत जिन्हा करी, आगै तिर्या अनेक ।
रामदास सगत बिना, तिर्यौ न सुनियौ एक ।। १२

साधु-सगत जे कोइ करै, सरै सकल ही काम ।
और काम की कुण चली, मिलै निरजन राम ।। १३

साधु-सगत साची सदा, झूठी कदे न जाण ।
रामदास हितकर किया, पावै पद निरबाण ।। १४

साधु-सगत बिन रामदास, सब दिन जान अकाज ।
यू ही जनम गमाय मत, मिनख देह सौ राज ।। १५

मिनखा देही राज-थान, जै सगत मे जाय ।
रामदास सगत बिना, अहलौ जन्म गमाय ।। १६

साधु राम का पौलिया, कूची ताकै हाथ ।
राम पियारा रामदास, करो सता को साथ ।। १७

साधु-सगति बिन रामदास, किणी न पायौ राम ।
कुसगत सेती प्रीत कर, केता गया बिकाम ।। १८

---

७ **वाहला** – नाला । १७ **पौलिया** – द्वारपाल ।
१८. **बिकाम** – व्यर्थ ही, वेकाम ।

सगत को गुण अधिक है मो पै कह्या न जाय ।
रामा मारग मुगत का छिन में देय बताय ॥ १९

रामा सगत साधु की मिलै निरजन राय ।
जीव पलट अरु ब्रह्म हुय न्यारा कबू न थाय ॥ २०

तल पलट फूलल हुय सगत का गुण जोय ।
रामा सगत साध की, ऐसा साधु होय ॥ २१

चंदन के सग रामदास जेती ह्वै बनराय ।
सोई पलटी सग सूं सबही चदन थाय ॥ २२

चदन गुण सब कूं दिया, कर-कर सब सूं प्रीत ।
बांस न काम्यो रामदास ताके अन्त अनीत ॥ २३

बांस सरीसा आदमी कबहू भेदै नाहिं ।
रामा सगत क्या करै गांठ घणी मन माहिं ॥ २४

सरप चान चदन गया, अग सेती लपटाय ।
रामदास विष सूं भरया सीतल कैसे थाय ॥ २५

चदन रूपो साधु है रामदास जग माहिं ।
सरपां ज्यूं भूंडूं नरा विषिया छांड नाहिं ॥ २६

रामा अपती जीव कौं सरप जिसो कर जाण ।
दूध पिलायां विष हुय वैसा कर्रू बखाण ॥ २७

साधु चन्दन बावनो मूरख काट्यो जाय ।
जाकूं मोल राखियो सोई बैरी थाय ॥ २८

चंदन से बिदस ग्या सब ही मिले अजाण ।
रामा बाल्यो काठ कूं किणी न पाई जाण ॥ २९

चन्न गुण छाड्यो नहीं सब कूं दीनो बास ।
रामदास साधू इसा नित परमारथ पास ॥ ३०

---

११ [illegible] २८ [illegible] २७ [illegible]

सन-सगत काई करै, जै मन जाय कुबाट ।
रामदास हरि मिलन के, आडी आई दाट ॥ ३१

काजी दूध बिगाडिया, घिरत न आयो हाथ ।
रामा सगत क्या करै, मनवो जाय कुसाथ ॥ ३२

रामा धागा लील का, धोया केती वार ।
साबू खोया गाठ का, उण ऊही दीदार ॥ ३३

कउआ सेती रामदास, बहुता कह्या विचार ।
पलट'रु हसा ना हुआ, उन उन्ही उनहार ॥ ३४

सत सगत काई करै, मन मे नही इतबार ।
रामा कुमत कर कर मुवा, केता इण ससार ॥ ३५

जन रामा सतगुरु मिल्या, जिना कही इक बात ।
सगत कीजै साधु की, राम भजौ दिन रात ॥ ३६

इति श्री सगत को अग

★

[३७]

अथ असाध* को अंग

साखी

अतर मै दुविध्या घणी, मूडै मीठा होय ।
कपट धार साधु हुया, ताहि न धीजो कोय ॥ १

---

३१ कुबाट – कुपथ । दाट – रुकावट । ३२ कांजी – अम्ल विशेष, राई का खमीरा
३३ लील – नील । ऊही दीदार – वही रूप ।
३४ उनहार – स्वरूप, मुखाकृति । ३५ कुमत – बुरा विचार, षडयत्र । केता – कितने ही ।
*असाध – असाधु । १ दुविध्या – कठिनाई, द्वेष ।

खाकूं पीण्यां रामदास भली कदे नहीं थाय ।
पहली मीठा माल कर, न्हास ऊंडे माय ॥ २

दुनिया मीठ से मिलै, कड़वे दिसा न जाय ।
साधू सोई जानिये कड़वी कहे बजाय ॥ ३

कड़वा काट रोग कूं नींम पीय कर जोय ।
रामा मीठी खाड है पियां रोग बहु होय ॥ ४

रामा साधु असाधु की पारख करो पिछाण ।
साधु सची साची कहै उ झूठा कर उफाण ॥ ५

रामदास सतगुरु मिल्या जिनां बताई रीत ।
असाधु कूं छाड कर, करो साधु सू प्रीत ॥ ६

इति श्री असाधु को अंग

★

[१८]

अथ साध को* अंग

साखी

निरदुन्दी मह कामना सिमरे सिरजणहार ।
रामदास साधु इसा, सबसों पर-उपगार ॥ १

साधु सोई जानिये निरपक्ष रहै निरास ।
हरि सिवरण परमारथी रामा पंथ उदास ॥ २

---

२ ऊंडे – गहरा। ५ उफाण – उफान व्यर्थ की बकवास।
*साध – साधु। १ पर उपगार – परोपकार।
२ निरपक्ष रहै निरास – निष्पक्ष और विरक्त। पंथ – साम्प्रदायिक पन्थ है।

टिप्पणी

साधु न छाडै तत्त कू, तन-मन अरपै प्राण ।
रामदास गुण गह रहै, कोटिक मिलो अजाण ।। ३

चदन दोला सरप है, विप भरिया वहु अग ।
चदन सीतल अग सदा, रामा तजै न सग ।। ४

रामा साधू जानिये, कलह कलपना नाहि ।
काम क्रोध तृष्णा नही, सदा राम पद माहि ।। ५

व्याह वृध अरु नातरौ, नही साध को काम ।
जगत जजाली रामदास, हरिजन रत्ता राम ।। ६

कुण्डलिया

हरिजन सोई जानिये, किन तै दावा नाहिं ।
सील पकड सिवरण करै, रटै एक मन माहि ।।
रटै एक मन माहिं, और हिरदै नही धारै ।
सत का सबद सभाय, पकड पचन कू मारै ।।
रामदास से सतजन, मिलै ब्रह्म के माहि ।
हरिजन सोई जानियै, किन तै दावा नाहि ।। ७

सोरठा

रामा सोई साधु, जग ते न्यारा हुय रहे ।
एको राम अराध, धेष न किन सू ईरखौ ।। ८

साखो

राग धेष जिनके नही, हृदै अपरबल ज्ञान ।
रामदास से सतजन, सदा एक हरि ध्यान ।। ९

---

३ **अजाण** – अपरिचित । ४ **दोला** – चारो ओर लिपटे हुये ।
६ **वृध** – ब्याज आदि लेना । **नातरौ** – पुर्नविवाह । **रत्ता** – अनुरक्त ।
८ **अराध** – आराधना कर । **ईरखौ** – ईर्ष्या । ९. **अपरबल** – अपरिमित ।

साधू ऐसा चाहिये चाल ज्ञान विचार ।
अंतर में दुविध्या नहीं, रामा सब सै प्यार ॥ १०

हितकर मिलणो साधु सू औरां सूं उनमन ।
रामा बाहर भीतर, किन से राख न भिन्न ॥ ११

एक समै जो रामदास हरिजन बोल्या जाय ।
छिनक एक दुविध्या धरै, पीछै ऊईज भाव ॥ १२

जन रामा सतगुरु मिल्या अंतर दीया खोल ।
साधू-मत छाड मती, एक राम नित बोल ॥ १३

इति श्री साध को अंग

★

[१६]

अथ देखा-देखी को अंग

साखी

देखा-देखी रामदास बहुता बैसे आय ।
देखा देखी सिमरण करै, ऊठ्या सुध हर जाय ॥ १

देखा-देखी राम कहि अंतर नाहिं विचार ।
भीड़ पड़ै जब छाड दें, पड जाय विष विकार ॥ २

देखा-देखी रामदास चल मचल ही मंड ।
कामी विरूया अंत भी होवे खंड विहंड ॥ ३

देखा-देखी राम कहि, हुय बैस निज दास ।
रामदास अंत घर में जानो गया निरास ॥ ४

---

११ भिन्न – भेदभाव । १२ ऊईज भाव – वही स्वभाव ।
[illegible]

देखादेखी छाड़ [illegible] कर्म ज्ञान कूं [illegible] ।
रामदास जो परससी, आतम तत्त्व [illegible] ॥ ५

रामदास इन प्रीतड़ी साची मन [illegible] धार ।
भीड़ पड़्या छाडै नहीं, साचो [illegible] [illegible] सार ॥ ६

देखा-देखी त्याग कर, [illegible] उलगो भार ।
अन्त [illegible] रामदास, साची नहीं विचार ॥ ७

सतगुरु के परताप सूं, देखा-देखी त्याग ।
रामदास मन भीतरै, [illegible] राम लिव लाग ॥ ८

इति श्री देखादेखी को अंग

*

[८०]

अथ साध स्वार्जाभिन्न को अंग

साखी

रामदास तन झूठ है, सफल लगावो काम ।
हरिजन री सेवा करो, सुख सिवरावो राम ॥ १

साधू साहिब एक है, तामें फेर न सार ।
रामदास दुरमत तजो, योही ज्ञान विचार ॥ २

अंतर दुविधा रामदास, ता सूं दीसै दोय ।
साधू साहिब एक है, परखै बिरला कोय ॥ ३

---

५ परससी — स्पर्श करेगा, अनुभव करेगा ।
६ प्रीतड़ी — प्रीति । भीड़ पड़्या — विपत्ति के समय ।
२ दुरमत — दुर्मति, कुबुद्धि । ३ दोय — द्वैत ।

मोह छाड निरमोह हुवा राग धेस भी नाहिं ।
इसा सत की रामदास चाहि देवता माहिं ॥ ४

वर साध जाके नहीं सिवर सिरजणहार ।
विषवास व्यापै नहीं जन रामा निज सार ॥ ५

रामसनेही साधवा रामा छाना नाहिं ।
उनमुन सू लागा रहै निरभ रत्ता माहिं ॥ ६

जग सतो रूठा रहै सांइ सेती प्यार ।
रामा ऐसे साधु का छाना नहि दीदार ॥ ७

रामदास साधूजना सिवरै सिरजणहार ।
रात दिना दुखिया घणा असर एक पुकार ॥ ८

रात न आवै नींदडी दिना धाप नहिं खाय ।
रामा असर दुख घणो तालावेली माय ॥ ९

रामा सहजां दुख घणो हिय खटूक सेल ।
पिंजर मरा यूं करे जाण कसाई सेल ॥ १०

खाय दुनी जाणै नहीं मरे पिंजर पीर ।
हिवडा माहैं हल वहे रामा दुखी सरीर ॥ ११

जगत मयी सुखिया रहै जाण नहीं विचार ।
रामदास मैं धूखिया तातैं दुख अपार ॥ १२

सांइ कारण दूबला ताहि न जान कोय ।
नागरबेली पान ज्यूं रामा पीला होय ॥ १३

रामदास सांयण वर मांइ मिलया आज ।
त्याग पहै, विष रोगिया, मो बिन जाय अकाज ॥ १४

---

५ दोष – विरोध । विषवास – विषय-वासना । ६ निरभै – निर्भय होकर ।
७ छाना नहीं दीदार – साक्षात्कार छिपा हुआ नहीं है । ८ [illegible] – [illegible] होकर ।
१० हिये खटूक सेल – हृदय में बाण चुभे हैं । ११ हल वहे – हल चलता है ।
१४ सांयण – अपराध । विष रोगिया – [illegible] ।

खूणै बैठा रामदास, भजन करू दिन-रात ।
राम पधार्‌या ना छिपै, चली चहू दिस वात ।। १५

वात चली चहू कूट मे, सव्द दिसन्तर जाय ।
सप्त-दीप नवखड मे, रामा परगट थाय ।। १६

जिण घट राम पधारिया, जा घट परगट नूर ।
रामा छाना क्यू रहै, जग मे ऊगा सूर ।। १७

विपै भर्‌यौ ससार सव, ठौर-ठौर भरपूर ।
रामा रत्ता राम सू, ता घट सेती नूर ।। १८

घट-घट मे साई बसै, सदा जागरत होय ।
कै जागै विपया भर्‌या, कै रामसनेही होय ।। १९

घट-घट माही काम है, काम बिना नहिं कोय ।
रामदास जहा राम है, वह तौ काम न होय ।। २०

काम मिलावै राम कू जे कोइ जाणै भेव ।
रामदास सब सत कह, साख भरै सुकदेव ।। २१

रामा मन की कामना, साईं माहिं मिलाय ।
घेर-घार सिवरण करै, मिलै निरजण राय ।। २२

रामदास सासो बुरो, सासो करो न कोय ।
जिण तन मे सासो बसै, राम न परसण होय ।। २३

पखा-पखी मे रामदास, लागौ सब ससार ।
निरपख हुय सव सो मिलै, सो साहिब का यार ।। २४

साईं सबकै बीच मे, ज्हा त्हा रहा विराज ।
रामदास जिण परखिया, सो मेरे सिरताज ।। २५

---

१५ खूणै – कोने मे । १९ जागरत – जागृत ।
२० काम – कामना । २१ साख भरै सुकदेव – भागवत् के व्याख्याता एव अद्वैतज्ञान के देदीप्यमान प्रतीक शुकदेव मुनि भी जिसकी साक्षी भरते है । २३ सांसो – चिन्ता ।

रामा निरखत मैं फिरू साईं हदा यार ।
सो जन सांईं सूं मिल्या, छाना नहीं दीदार ॥ २६

कुण्डलिया

चार वरण में सो बडा साईं सिवरै राम ।
कुल करमों कू त्याग कर मिल परम सुखधाम ॥
मिल परम-सुख धाम प्रीत ज्हां हरि सू लाय ।
आठ पहोर इक सास उलट गोविंद गुण गावे ॥
रामदास सो सतजन, तज मनोरथ काम ।
चार वरण में सो बडा सोई सिवरै राम ॥ २७

साखी

रामदास साधू घणा भव सागर के बीच ।
राम रता सो एक है और भेष सब नीच ॥ २८
ऊच नीच की रामदास पारख कर परवाण ।
सो मेरे सिर ऊपर, परस्या पद निरवाण ॥ २९
जन रामा सतगुरु मिल्या जिनो बताया एक ।
ग्यान विवेकी साधु है और झूठ सब भेष ॥ ३०

इति श्री साध साखीमृत को ग्रंथ

★

---

२७ चार वरण – चार वर्ण (क्षत्रिय ब्राह्मण वैश्य शूद्र)।
२९. परवाण – माप परिमाण।

अथ साधु मैंहमा* को अंग

साखी

साधु बडा ससार मे, धर-अबर बिच राज ।
अमर पटा दै रामदास, तिहू लोक सिरताज ।। १

और पटा दिन च्यार का, चढ भी ऊतर जाय ।
राम पटा है रामदास, दिन-दिन दूणा थाय ।। २

अणभै पटा अलेख का, अखी ब्रह्म का राज ।
रामा चाकर आदि का, धिन तोकू महाराज ।। ३

कवित्त

ॐकार भी नाहिं, हुता नहि सोऊ सासा ।
धर-अबर भी नाहि, हुता नहि देव विलासा ।।
चद सूर भी नाहिं, हुता नहि पवन'रु पाणी ।
तिहू देव भी नाहिं, हुती नहि पाण न वाणी ।।
अखड लोक परलय गया, जठा पहल की बात ।
ररकार रहमाण था, ना दिन रामा साथ ।। ४

साखी

हस्ती घोडा गाव गढ, पुत्र असतरी राज ।
रामदास हरि भगति बिन, सब सुख जाण अकाज ।। ५

---

*मैंहमा – महिमा । ३ अखी – अक्षय, अखिल । ४. षाण – खानी । परलय – प्रलय । जठा पहल की बात – यह बात 'प्रलय और सृष्टि के क्रम' के पूर्व की है अर्थात् जब शून्यावस्था थी । ५ असतरी – स्त्री ।

रामा निरखत मैं फिरू साद हुवा यार ।
सो जन साद सू मिल्या, छाना नहीं दीदार ।। २६

कुण्डलिया

चार वरण में सो बड़ा सोई सिंवरै राम ।
कुल करमां कूं त्याग कर मिलै परम सुखधाम ।।
मिलै परम-सुख-धाम प्रीत ज्हां हरि सू लावै ।
आठ पहोर इक सास उलट गोविंद गुण गावै ।।
रामदास सो सतजन, तजै मनोरथ काम ।
चार वरण में सो बड़ा सोई सिंवरै राम ।। २७

साखी

रामदास साधू बणा भव सागर के बीच ।
राम रता सो एक है और भेष सब नीच ।। २८
ऊंच नीच की रामदास पारख कर परवाण ।
सो मेरे सिर ऊपर, परस्या पद निरवाण ।। २९
जन रामा सतगुरु मिल्या जिनां बताया एक ।
ग्यांन विवेकी साधु है और झूठ सब भेष ।। ३०

इति श्री साध सबलीभूत को अंग

*

---

२७. चार वरण – चार वर्ण (क्षत्रिय ब्राह्मण वैश्य शूद्र) ।
२९. परवाण – माप परिमाण ।

दुख दो जग-दालद भलो, हरि सिवरत दिन जाय ।
रामदास हरिनाम बिन, सब सुख गए विलाय ।। १७

वाभन भया तो क्या भया, सिवरण बिन बेकाम ।
रामदास धिन हीण कुल, जो सिवरै मुख राम ।। १८

राम बिना साकट सबै, साग सकल ससार ।
रामदास तुम मत मिलौ, मिलिया होय खवार ।। १९

हरिजन हीरा रामदास, साकट पत्थर जाण ।
कचन यो काच है, ता सू मिलिया हाण ।। २०

जन रामा सतगुरु मिल्या, साची दिवी बताय ।
धिन साधू ससार मे, मैहमा कही न जाय ।। २१

इति श्री साधु मैंहमा को अग

*

[४२]

अथ मध्य* को अंग

साखी

रामदास मध अगुली, पकड राख बिसवास ।
आसपास की दूर कर, ज्यू पावौ सुख रास ।। १

रामदास दुविध्या तजौ, दुविध्या तिर्‌यौ न कोय ।
दुविध्या माहै चालता, भलौ कहा ते होय ।। २

आसपास की छाड दे, रहो मध्य सू लाग ।
रामा आसैपास मैं, दोनू कीनी आग ।। ३

१७ जग दालद – भव-दारिद्रय। १८ वाभन – ब्राह्मण। १९ साकट – नास्तिक।
*मध्य – मध्यम मार्गवादी।

एकण हरि का नाम बिन जाल परा सब सुख ।
हरि सिवरण बिन रामदास, आदि अंत में दुख ॥ ६

दुनिया चाहे सुक्ख कू सुख सबही है झूठ ।
रामदास सो सुक्ख है ता सू रहियो रूठ ॥ ७

सुख-सागर इक राम है और दुखां की रास ।
रामा सब कू पूठ दे मिलै निरजण पास ॥ ८

ररकार है रामदास, अनत सुखां को सार ।
रिध-सिध सुख आग धणी खोलै मोष दवार ॥ ९

रिध सिध दास खवास है भगति बिना बेकाम ।
रामदास तोटो भलो, जो मुख सिवरै राम ॥ १०

राम कहत हीणो भलो ता सू करिये प्रीत ।
ऊंचा कुल किस काम का, भगति बिना बेरीत ॥ ११

रामदास कन्या भली जो सिवरै हरि नाम ।
हरि बिन सुत किस काम का जिसका नाम न ठाम ॥ १२

रामदास हरि भगति बिन सब ही जाण अऊत ।
राव रंक अरु भूपती सबका सूत कसूत ॥ १३

जिण नगरी साधू बसै सो नगरी धिन होय ।
रामदास साधू बिना सब ही सूना जोय ॥ १४

ओढण पहरण ना मिलै धाप धान नहिं खाय ।
रामदास निज साध के इद्र न आवै दाय ॥ १५

रामदास कुल धिग है साधु जनमिया आय ।
सबही कुल हरि भगति बिन यूं ही गया बिलाय ॥ १६

---

८ रास – राशि । ९ रिध-सिध – रिद्धियां और सिद्धियां । मोष-दवार मुक्ति का द्वार ।
१० खवास – नाई । ११ हीणो – निम्न जाति का । १३ जाण अऊत – निस्सन्तान समझ ।
सूत कसूत – पुत्र कुपुत्र । १६ धिग – धन्य । बिलाय – विलय हो जाना ।

अथ विचार को अंग

साखी

राम कहा तो क्या भया, जाण्या नही विचार ।
रामा ज्ञान विचार बिन, सुध-बुध नही लिगार ॥ १

मुख सेती बाता करै, भोजण तणा बखाण ।
रामदास बिन जीमिया, खुध्या मिटी न प्राण ॥ २

मुख सेती पाणी कहै, पीये नही लिगार ।
रामदास पीया बिना, प्यासा रह ससार ॥ ३

पावक कहिया क्या हुवै, माहि न चापै पाव ।
रामदास चाप्या बिना, यू ही झूठा दाव ॥ ४

रामदास उलटा मिल्या, सुन सागर के माहि ।
ज्ञान विचार'र देखिया, दूजा कोऊ नाहि ॥ ५

रामदास सबही तज्या, आया ज्ञान विचार ।
एको साईं साच है, समझ हृदा मै धार ॥ ६

केता ज्ञानी मड मै, जाका अत न पार ।
रामा ज्ञान विचार बिन, रहै बार के बार ॥ ७

जिन एको सत जानिया, उलट समाया माहि ।
रामै ज्ञान विचारिया, दूजा कोऊ नाहि ॥ ८

जन रामा सतगुरु मिल्या, जिह्वा कह्या विचार ।
एकण सिवरण बाहिरौ, सबही झूठ गिवार ॥ ९

इति श्री विचार को अग

---

२ जीमिया – भोजन किया । खुध्या – क्षुधा । ४. चापै – दबाना
७ ज्ञानी – सासारिक ज्ञानयुक्त । ज्ञान विचार – आत्मानात्म विवक ।
रहै बार के बार – उन्हें मोक्ष प्राप्ति मे विलम्ब ही लगेगा ।

मध्य आंगुली झाल कर, पहुता सुख की सीर ।
रामदास गंग जमुन बिच जाहां त्रगुटी तीर ॥ ४

सुन मंडल में घर किया लषिया औघट घाट ।
सुर नर मुनि जन देवता रामा लहै न बाट ॥ ५

रामदास सतगुरु मिल्या मघ कूं दिया बताय ।
नरक कुण्ड सूं काढ कर सांई दिया मिलाय ॥ ६

सांई हदी गोद में आदू पहौर रमाय ।
रामदास दुविध्या गई सब सुख में दिन जाय ॥ ७

धुनी पख्त दोनूं गया, चौरासी की बाट ।
रामदास मध्य गह रह्या मिल्या अपूरब घाट ॥ ८

रामदास सुख सहज में मैरे ब्रह्म बिलास ।
जग दुविध्या में जग मुवा पड़्या काल की पास ॥ ९

पास मिटी जब जानिये दोय पखां सूं दूर ।
रामदास सब दिष्ट में सब घट ऐको नूर ॥ १०

अनड अकासा बीच में रह्या अधर भर बाय ।
रामदास पख छाड क साहिब सूं लिव लाय ॥ ११

हींदू खींचे किधर कूं तुरक किधर कूं जाय ।
रामदास दुविध्या मुवा जीया निरपख पाय ॥ १२

हमर मय ही एक है कहा राम रहमान ।
जन रामा सतगुरु मिल्या पाया पद निरवान ॥ १३

इति श्री मध्य को अंग

---

५ सुन-मंडल — शून्य मंडल ।
औघट घाट — कठिन घाटी अथवा घाट [प्रकृति के गुणों की विषम अवस्था अर्थात् १४ निराट] । ८ अपूरब घाट — अलौकिक घाट ।

अथ विचार को अंग

साखी

राम कहा तो क्या भया, जाण्या नही विचार ।
रामा ज्ञान विचार बिन, सुध-बुध नही लिगार ।। १

मुख सेती बाता करै, भोजण तणा बखाण ।
रामदास बिन जीमिया, खुध्या मिटी न प्राण ।। २

मुख सेती पाणी कहै, पीये नही लिगार ।
रामदास पीया बिना, प्यासा रह ससार ।। ३

पावक कहिया क्या हुवै, माहिं न चापै पाव ।
रामदास चाप्या बिना, यू ही भूठा दाव ।। ४

रामदास उलटा मिल्या, सुन सागर के माहिं ।
ज्ञान विचार'र देखिया, दूजा कोऊ नाहि ।। ५

रामदास सबही तज्या, आया ज्ञान विचार ।
एको साई साच है, समभ हृदा मै धार ।। ६

केता ज्ञानी मड मै, जाका अत न पार ।
रामा ज्ञान विचार बिन, रहै बार के बार ।। ७

जिन एको सत जानिया, उलट समाया माहि ।
रामै ज्ञान विचारिया, दूजा कोऊ नाहि ।। ८

जन रामा सतगुरु मिल्या, जिह्वा कह्या विचार ।
एकण सिवरण बाहिरौ, सबही भूठ गिवार ।। ९

इति श्री विचार को अग

---

२ जीमिया – भोजन किया । खुध्या – क्षुधा । ४ चापै – दबाना
७ ज्ञानी – सासारिक ज्ञानयुक्त । ज्ञान विचार – आत्मानात्म विवेक ।
रहै बार के बार – उन्हें मोक्ष प्राप्ति मे विलम्ब ही लगेगा ।

मध्य आंगुली झाल कर, पहुता सुख की सोर ।
रामदास गंग जमुन विच जाहां त्रगुटी सीर ॥ ४

सुन-मण्डल[१] में घर किया लखिया औघट घाट ।
सुर नर मुनि जन देवता रामा लहै न बाट ॥ ५

रामदास सतगुरु मिल्या मध कूं दिया बताय ।
नरक कुण्ड सूं काढ कर सांई दिया मिलाय ॥ ६

सांई हूंदी गोद में आठूं पहोर रमाय ।
रामदास दुविध्या गई सब सुख में दिन जाय ॥ ७

दुनी पखत दोनूं गया चोरासी की बाट ।
रामदास मध्य गह रहा मिल्या अपूरब घाट ॥ ८

रामदास सुख सहज में भैरे ब्रह्म विलास ।
जग दुविध्या में जग मुवा, पड्या काल की पास ॥ ९

पास मिटी अब जानिये दोय पखा सूं दूर ।
रामदास सम दिष्ट में सब घट ऐको नूर ॥ १०

अनड अकासा बीच में रह्या अधर घर बाय ।
रामदास पख छाड कर साहिब सूं लिव लाय ॥ ११

हींदू खींच किधर कूं तुरक किधर कूं जाय ।
रामदास दुविध्या मुवा जीया निरपख पाय ॥ १२

हमरे मध ही एक है ब्रह्म राम रहमान ।
जन रामा सतगुरु मिल्या पाया पद निरवांन ॥ १३

इति श्री मध्य को अंग

---

१ सुन-मण्डल – शून्य मंडल ।
औघट घाट – कठिन भारी अवघट घाट [प्रकृति के गुणों की विषम अवस्था । महत्‌आदि २४ विकार] । अपूरब घाट – अलौकिक घाट ।

[४५]

अथ पीव पिछांण को अंग

साखी

पडदा मे रह रामदास, सो तो धणी न जाण ।
सकल मड मे रम रह्या, ता सू करो पिछाण ।। १

सब सू न्यारा रामदास, दुनिया जाणै नाहिं ।
मै हू सेवग जास का, सकल मड ता माहिं ।। २

माय बाप जाकै नही, है अणघड्ड अलेख ।
रामा ऐसा झीण है, रग रूप नहि रेख ।। ३

सबका करता एक है, पारब्रह्म निज देव ।
रामदास घडिया तजौ, करौ जासकी सेव ।। ४

रामा एक पिछाणिया, ताही सू लिव लाय ।
जो दूजी मुख नीकसै, तौ दू जीभ कटाय ।। ५

सतगुरु कै परताप सू, लीया पीव पिछाण ।
रामदास मुख आपणौ, दूजी चहू न छाण ।। ६

इति श्री पीव पिछाण को अग

★

---

२ जास का – जिसका । ३ अणघड्ड – निराकार, निरूप ।
६ पाठभेद —बाण – आदत ।

अथ सारग्राही को अंग

साखी

सब घट मांही रामदास रह्या राम भरपूर ।
जिणां राम नहिं आणियो ज्यां सेती हरि दूर ॥ १

सब घट मांही एक है माहा भरम अनेक ।
भरम करम सब दूर कर, राम एक का एक ॥ २

ऊंच नीच दुविध्या नहीं सब घट व्यापक ब्रह्म ।
रामा बिना पिछाणिया सोई मनसा क्रम ॥ ३

हरि सरिया सूभर भरया वार पार नहिं कोय ।
सो प्राणी प्यासा रह्या रामा खाली सोय ॥ ४

रामदास सब हरसिया क्या पुरखा क्या नार ।
राम कहै सो रामजन सांई हृदा यार ॥ ५

जन रामा सतगुरु मिल्या तातैं भई पिछांण ।
सब घट एको ब्रह्म है तू यों ही सत जांण ॥ ६

इति श्री सारग्राही को अंग

*

---

३ पिछांणिया — पहचान लेना साक्षात्कार होना ।

४ सूभर भरया — पूर्ण रूप से भरे हुवे ।

५. हरसिया — प्रसन्न हुए ।

चद्रायण

करणहार है राम, सरब आछी करै ।
जहा तहा रहै विराज, पेट आपे भरै ॥
रोग दोष सब दूर, गमावै राम रै ।
हर हा यू कह रामादास, उलट मिल धाम रै ॥ ११
दैंण हार सम्रथ, सच है साइया ।
तजौ आस ससार, उलट लिव लाइया ॥
निराकार है एक, निकेवल राम रे ।
हर हा यू कह रामादास, भज्या तज काम रे ॥ १२

सोरठा

सबको करता राम तीन लोक कू पूरवै ।
अनत सुधारण काम, रामा हरि सा को नही ॥ १३

साखी

हरि ऐसा है रामदास, चित्या सबही मेट ।
सरणै आया सुख घणा, लगै न किसकी फेट ॥ १४
पखी जाती दूध बिन, पालै प्रीत लगाय ।
साईं ऐसा सावधान, सब कू चूण चुगाय ॥ १५
जल थल सुरग पताल मै, नर सुर नागा लोय ।
रामा साई सावधान, सब कू देत समोय ॥ १६
तीन लोक बिच रामदास, सबकी पूरै आस ।
जाकै सरणै आय कै, क्यू दुख पावे दास ॥ १७

---

१२ निकेवल – एक मात्र, मायारहित कूटस्थ । १३ पूरवै – पोषण करता है ।
१४ चित्या – चिन्ता । फेट – असर, छाया पडना । १५ चूण – आटा ।
१६ लोय – लोक । समोय – समाहित होना । १७ पूरै आस – आशा पूर्ण करता है ।

अथ विश्वास को अंग

साखी

साँइ सो कल वृक्ष है पूरै मन की आस ।
रामदास निज नाम सूं जो रता रहै दास ॥ १

साँई सबकूं देत है लख चौरासी जूण ।
सरण तुमारी रामदास तुम बिन देगा कूण ॥ २

साँई मेरे सीस पर, जहं तहं रिच्छक राम ।
रामदास के तुम बिना, कूण सुधारे काम ॥ ३

रूम रूम में रामजी मेरे तन के माँहि ।
रामदास साहिब बिना दूजा दीसै नाँहि ॥ ४

मेरा घट में रामजी रूम-रूम भरपूर ।
रामा तोहि निवाजसी दालद करसी दूर ॥ ५

दाणा पाणी रिजक सब है करता के हाथ ।
रामदास अब कया कमी, सो करता तुम साथ ॥ ६

करता मेरे तन्न में नित पाऊं दीदार ।
रामदास अब कया कमी रिध सिध बाँधी लार ॥ ७

तीन लोक चवदह भवन सब का पोषण प्राण ।
रामा एसा राम है धिन दाता दीवाण ॥ ८

दाता के सब थोक है रिध सिध भर्‌या भण्डार ।
रामदास सिरिया मिस इयमी नहीं सिगार ॥ ९

हमतो मर्‌या सग सूं अन्तर मिल्या अलख ।
रामदास सिमिया पछ पाया पटा अनक ॥ १०

---

१ कल वृक्ष – कल्पवृक्ष । ३ रिच्छक – रक्षक । ६ रिजक – आजीविका ।
८ [illegible] – [illegible] ।

जाके पूरव भगति है, खाली जाय न कोय ।
रामदास सहजा मिलै, नदी समद गत जोय ।। २९

जन रामा सतगुरु मिल्या, जिना दिया विसवास ।
दुख दालद सब मिट गया, पूरी मन की आस ।। ३०

इति श्री विश्वास को अंग

*

[४७]

अथ धीरज को अंग

साखी

रामदास कुजर चढ्या, हुइ अजरायल वात ।
निरभै हुय निहचल भया, कहु कूकर किम खात ।। १

कूकर रूपी करम है, सब ही जग कै माय ।
रामदास पहुचै नही, यूहि भूक मर जाय ।। २

तैरे सम्रथ राम है, कदै न भाडी होय ।
रामदास डरपौ मती, किया राम का जोय ।। ३

रामदास धीरज धरो, राम पधार्या माहि ।
तीन लोक ता बीच मे, तो कू गजै नाहि ।। ४

रामदास चढ नाव पर, डरपै काय गवार ।
तारणहारा राम है, सहजा पार उतार ।। ५

---

२९ पूरव भगति – पूर्व जन्म की भक्ति ।
१ अजरायल – विचित्र, विलक्षण । निहचल – निश्चल ।
४ गजै – विनाश, पराभव ।

सरणा ऐसा रामदास किस का लगै न डाय ।
नर सुर नागा देवता, रामा लाग पाव ॥ १८

रामा साधू जानियै मांग नहीं अकाज ।
जो मागे दुनियान कूं सब गुण जाय अकाज ॥ १९

प्रीत रीत सुध-बुध सब, ज्ञान ध्यान मतवांन ।
रामदास जद मांगियौ सब ही गये अमान ॥ २०

मांगण सबही रामदास डूम भांड को काम ।
हरिजन कद न मांगसी रत्ता एको राम ॥ २१

परमारथ के कारणै रामा पाछा नांहि ।
आपा स्वारथ कारण मांगण कद न आंहि ॥ २२

परमारथ क कारण करलीज उपगार ।
रामदास महणी नहीं फिर मांगो घर बार. ॥ २३

रामदास कछु ना किया, मोपे कछू न होय ।
करथ वाला राम है जाका कीया जोय ॥ २४

जिन यो तोकू तन दिया दोनी सागी सूज ।
रामा सांई एक है तू वाही कूं पूज ॥ २५

रामा चित्या क्यू कर चित्या करसी राम ।
जिन यो तोकू तन दिया सकल सुधारण काम ॥ २६

राम नाम हिरदे बसे, जाकै तोटो नांहि ।
अनत मनोरथ पूरसी रामा हरपै काहि ॥ २७

मिनखादेही पाय कर साधन लाया थार ।
रामा सो खाली रह्या हूवा पसू गिवार ॥ २८

---

१९ अकाज – अकारथ । २१ डूम भांड – राजस्थान की पेशेवर जातियां जो संगीत नृत्य हास्य एवं याचना के द्वारा आजीविका उपार्जित करती हैं ।
२३ महणी – लज्जाजनक कार्य सोचना । २४ करथ वाला – कर्ता ।
२५ सूझ – सूक्ष्म बुद्धि । २८ मिनखा देही – मनुष्य देह ।

जाके पूरब भगति है, खाली जाय न कोय ।
रामदास सहजा मिलै, नदी समद गत जोय ।। २९

जन रामा सतगुरु मिल्या, जिना दिया विसवास ।
दुख दालद सब मिट गया, पूरी मन की आस ।। ३०

इति श्री विश्वास को अंग

*

[४७]

अथ धीरज को अंग

साखी

रामदास कुजर चढ्या, हुइ अजरायल वात ।
निरभै हुय निहचल भया, कहु कूकर किम खात ।। १

कूकर रूपी करम है, सब ही जग कै माय ।
रामदास पहुचै नही, यूहि भूक मर जाय ।। २

तेरे समथ राम है, कदै न भाडी होय ।
रामदास डरपौ मती, किया राम का जोय ।। ३

रामदास धीरज धरो, राम पधार्या माहि ।
तीन लोक ता बीच मे, तो कू गजै नाहि ।। ४

रामदास चढ नाव पर, डरपै काय गवार ।
तारणहारा राम है, सहजा पार उतार ।। ५

---

२९ पूरब भगति – पूर्व जन्म की भक्ति ।
१ अजरायल – विचित्र, विलक्षण । निहचल – निश्चल ।
४ गजै – विनाश, पराभव ।

विरकत सोई रामदास, तन-मन दोनू त्याग ।
आठ पहर चौसठ घडी, रहै राम लिव लाग ।। ६

दूध फाट काजी हुआ, पाछा मिले न कोय ।
रामदास तन भीतरै, या विरकत गत जोय ।। ७

षट-रस भोजन पाविया, जिभ्या नही चिकास ।
रामदास यू जगत मे, सब सू रहे उदास ।। ८

बालपणा की प्रीतडी, बहू सजनता थाय ।
रामदास तन भीतरै, पडगी काय दुराय ।। ९

मन की दुबिधा ना मिटै, जैसे पत्थर राय ।
मोती फूटा रामदास, बहुर न साजा थाय ।। १०

रामदास कूजाब सू, पडगी अतर काण ।
सज्जन था मन ऊतर्या, फेर न मिलसी आण ।। ११

रामदास सज्जन मिल्या, गलियारा के माहि ।
निजर टाल न्यारा हुवा, दीठा आख बलाहि ।। १२

कनक कामिनी दोय सू, ऐसे विरकत थाय ।
रामदास हरिजन सही, ऐसी मन के माय ।। १३

रामदास सरवर भर्यौ, किसकू कहिये जाय ।
जो तिरषावत होयगा, सोइ पिवैगा आय ।। १४

रामदास सब छाड दे, किस कू कहै न काय ।
और जगत की क्या पडी, तेरी लेह निभाय ।। १५

रामदास चेतन रहो, अपना मन परचाय ।
और माड बहुती भरी, वहै आपनै भाय ।। १६

---

९ जिभ्या – जिह्वा । चिकास – चिकनापन ।
११ कूजाव सू – कटु भाषण के कारण । काण – भेद । १२ गलियारा – गली ।
१४ तिरषावत – तृषित । १६ परचाय – समझा कर ।

सोरठा

जिनसूं लागी प्रीत, सो ले निरवाहये[1] ।
रामा छाड न रीत सुख-दुख सो भुगताइये ॥ ६

जन रामा सतगुरु मिल्या धीरज ध्यान बताय ।
डर छाडो निडर हुवो रहो राम लिव लाय ॥ ७

इति श्री धीरज को अंग

*

[४८]

अथ धृकताई* को अंग

साखी

रामदास नटणी[2] रमैं करै अधर का खेल ।
विरक्त सोई जानिय इस विध पवडां मेल ॥ १

विरकत ऐसा रामदास जग सेती रह दूर ।
अणी धार को खेलवो पांव धरै चकचूर ॥ २

दुनिया सूं पूठा फिरै उलटा खेलै डाव ।
विरकत ऐसा रामदास अधर चाल धं पाव ॥ ३

हरष सोक दोनूं तज दुख-सुख विरकत थाय ।
रामदास रीती भरी सब कूं एक रहाय ॥ ४

सब ही सूं विरकत रहै एक राम सूं प्रीत ।
जग सूं न्यारा रामदास, या विरकत की रीत ॥ ५

---

१ निरवाहये – निभाइये ।
*धृकताई – निर्लिप्त ।
२ नटणी – नट जाति की स्त्री जो बांस पर शारीरिक क्रीड़ा-प्रदर्शन करती है । रमैं – खेलती है । पवडां मेल – चरण रखता है ।

रामा समरथ राम है, जाका सूज अपार ।
बाकी एकण छिनक मे, वुहौ जाय संसार ॥ २

छिन माही राजा करै, करै राव कू रक ।
रामा समरथ राम है, किण की गिणै न सक ॥ ३

रात जहा तो दिन करै, दिन जहा रात कराय ।
रामा समरथ साइया, मरता लेह जिवाय ॥ ४

जीवत सो मरतग करै, डूबा कू ले तार ।
रामदास साई वडा, विगडी वात सुधार ॥ ५

रामदास पाताल कू, सुरग लोक ले जाय ।
सुरग दिवे पाताल मै, ऐसा समरथ राय ॥ ६

नरपुर सुरपुर नागपुर, या सू न्यारी रीत ।
रामदास साई वडा, सबकै सिर अघ जीत ॥ ७

सबका कीया झूठ है, साई करै सो साच ।
रामदास क्या जानिये, काई नचावै नाच ॥ ८

मन का कीया ना हुवै, साई करै सो होय ।
रामा समरथ राम है, जाका कीया जोय ॥ ९

ऊचा कू नीचा करै, नीचा ऊचा थाय ।
रामा समरथ राम है, पल माडै पल ढाय ॥ १०

रामदास अब क्या डरौ, तेरे समरथ पीव ।
समरथ मिल समरथ हुआ, उलट समाणा सीव ॥ ११

गिगन मडल मे रामदास, अनहद वाजै तूर ।
ऐसा समरथ साइया, सब घट ऐको नूर ॥ १२

---

२ सूज – सृष्टि-रचना की सामर्थ्य । छिनक – क्षण ।
३ सक – शका, सकोच । ७ अघ – पाप ।
१० पल माडै पल ढाय – क्षण मे सृष्टि और क्षण मे विनाश ।
११ उलट समाणा सीव – जीव और ब्रह्म का भेद मिटने पर एकता, द्वैत का अभाव ।

आतां सेती रामदास, प्रीत करो मत कोय ।
जग हटवाड़ जगत ज्यूं बहुत मिलेगा लोय ॥ १७

रत्ता रह रहमान सूं दिया जगत कूं पूठ ।
रामदास पुष्यारथी गिणै इन्द्र सुख झूठ ॥ १८

अन्तर में विरकत दसा निरदावे संसार ।
रामा ऐसे संत कूं झूठ ह्द व्योहार ॥ १९

साधू सोई जानियै, आपौ रहै ठगाय ।
आप ठगायां हरि मिलै और ठग्यां हरि जाय ॥ २०

विरकत सो विरच्यार है गिरसत दासा धार ।
रामदास दोनूं नही जा कूं वार न पार ॥ २१

जन रामा सतगुरु मिल्या एको कह्या विवेक ।
हरि सिवरण छाडो मती या संतन की टेक ॥ २२

इति श्री विरकताई को अंग

★

[४९]

अथ समृथाई को अंग

साखी

रामदास सांई बड़ा करे सो भाव दाय ।
जम है जह तो थल कर थल जहं जल हि वुहाय ॥ १

---

१७ हटवाडै – बाजार । १८. पुष्यारथी – पुनार्थी । १९ निरदावे – दावा (मतलब) ।
२१ विरच्यार – व्यापार । गिरसत दासा धार – दास-भाव-धारण युक्त गृहस्थ
१ दाय – पसन्द आना । वुहाय – बहा देता है ।

रामदास सुन समद मे, जल अम्मर जगदीस ।
मन मीन तामे मिल्या, सुख पाया हद ईस ।। ५

सुन्य सरोवर राम जल, भर्‌या अखड भरपूर ।
रामदास सो जल पिया, दुख गया सब दूर ।। ६

दुख भरम सासा गया, सुन सागर मिल जीव ।
रामदास निरभै भया, मिल्या सीव मे सीव ।। ७

मीन समाणा सुन समद, पाया अमर विलास ।
रामदास सुख मे सदा, छुटी जगत की आस ।। ८

साहिब समदर रामदास, पणहारी सब मड ।
पहुच प्रमाणै पी गया, सायर भर्‌या अखड ।। ९

जन रामा सतगुरु मिल्या, सायर दिया बताय ।
रामदास सुन समद मै, आठू पहर झुलाय ।। १०

इति श्री सुन्य (शून्य) सरोवर को अग

*

[५१]

अथ प्रेम को अंग

साखी

प्रेम कठिन है रामदास, विरला को धारत ।
तन-मन सूपै सीस कू, सोई है पारत ।। १

तन-मन माथो सूप दै, एक प्रेम कै काज ।
रामा प्रेम न छाडियै, ज्या त्या रहो विराज ।। २

---

७ सीव – ब्रह्म । ८ समाणा – समा गई ।
९ प्रमाणै – परिमाण । सायर – सागर ।
१ धारत धारण करते हैं । पारत – पारगत, सफल ।

बाहिर भीतर क्या कहू मोपे कह्या न जाय ।
रामा समरथ राम है, कीमत लखै न काय ॥ १३

साई अगम अपार है, सब सू बड़ा जु होय ।
तेरा जन तुझ सू मिल्या, तुमसा और न कोय ॥ १४

जन रामा सतगुरु मिल्या समरथ दिया बताय ।
समरथ माही मिल रह्या न्यारा कछू न भाय ॥ १५

इति श्री समृथाई को अंग

★

[५]

अथ सुन्य (शून्य) सरोवर को अंग

साखी

रामदास सुन मै मिल्या सांसा गया बिलाय ।
जीव मिलाणा पीव में सो सुख कह्या न जाय ॥ १

सुख पाया सुन सहर मे, आमण मरण मिटाय ।
जिण घर सू जिव बीछड्या उणमें मिलिया आय ॥ २

पांच तत का पूतला सुन सू आया चाल ।
रामदास सुन सहर मैं हंस गया अह हाल ॥ ३

रामदास तत पाविया धर्‍या निराला ध्यान ।
उलट मिलाणां सुंन्य मै उपज्या ब्रह्म गिनान ॥ ४

---

१५ पाठभेद — कछु न भाय ।

१ मिलाणा — मिलन हो गया । २ जिण घर सूं — जिस घर से [यहां शरीर] बीछड़्या — बिछड़ गया । ३ हंस — जीव ।

[illegible]

रामदास सुन समद मे, जल अम्मर जगदीस ।
मन मीन तामे मिल्या, सुख पाया हद ईस ।। ५

सुन्य सरोवर राम जल, भर्‌या अखड भरपूर ।
रामदास सो जल पिया, दुख गया सब दूर ।। ६

दुख भरम सासा गया, सुन सागर मिल जीव ।
रामदास निरभै भया, मिल्या सीव मे सीव ।। ७

मीन समाणा सुन समद, पाया अमर विलास ।
रामदास सुख मे सदा, छुटी जगत की आस ।। ८

साहिब समदर रामदास, पणहारी सब मड ।
पहुच प्रमाणै पी गया, सायर भर्‌या अखड ।। ९

जन रामा सतगुरु मिल्या, सायर दिया बताय ।
रामदास सुन समद मै, आठू पहर झुलाय ।। १०

इति श्री सुन्य (शून्य) सरोवर को अग

*

[५१]

अथ प्रेम को अंग

साखी

प्रेम कठिन है रामदास, विरला को धारत ।
तन-मन सूपे सीस कू, सोई है पारत ।। १

तन-मन माथो सूप दै, एक प्रेम कै काज ।
रामा प्रेम न छाडियै, ज्या त्या रहो विराज ।। २

---

७ सीव – ब्रह्म । ८ समाणा – समा गई ।
९ प्रमाणै – परिमाण । सायर – सागर ।
१ धारत धारण करते हैं । पारत – पारगत, सफल ।

जहं तहं बैठा रामदास रहो प्रेम के पैठ ।
सब सूं न्यारा उलट के तजो जगत की ऐंठ ॥ ३

और सरब कूं छाड़ दे प्रेम प्रीति लिव लाय ।
तन-मन अरपो सीस कूं, रामा नेह निभाय ॥ ४

नेह जिनावां जानिये सुख-दुख एको अंग ।
प्रेम न छाडे रामदास जे कोइ मिले कुसंग ॥ ५

प्रेम सकल में रामदास प्रेम बिना कुछ नाहिं ।
प्रेम जिनावां जानिये, मिल राम पद माहिं ॥ ६

प्रेम न बिकता देखिया हाट पटण बाजार ।
रामदास जिनही पिया दीया सीस उतार ॥ ७

प्रेम पिया जब जानिये, जग तें न्यारा थाय ।
रामदास छाना नहीं तीन-लोक के माय ॥ ८

जा घट प्रेम प्रकासिया छाना रहे न नूर ।
अंस उजाला प्रेम का ज्यूं जग ऊगा सूर ॥ ९

प्रेम प्रकास्या पिंड में सो घायल तन होय ।
रामदास झूमत फिरे ज्यूं मद हाथी जोय ॥ १०

प्रेम भगति की रामदास बहुत कठिन है चाल ।
सूरवीर सो ल निभे उलटा पड़े कगाल ॥ ११

प्रेम पियाला रामदास पीवेंगा निज दास ।
जीवत मरतक हो रहै छोडे तन की आस ॥ १२

रामा नेह निभाइय दूजी दिसा न धार ।
एक दिसा लागा रहै सो साईं का यार ॥ १३

---

३ ऐंठ – अकड़न । ४ अरपो – अर्पण करो । ५ जिनावां – जिनका ।
७ पटण – नगर । ८ छाना – छिपा हुआ ।
९ नूर – तेज सौन्दर्य ।

प्रेम-नेम अति कठिन है, कठिन विरह-वैराग ।
रामदास अति कठिन है, अत माहिला त्याग ॥ १४

अन्तर माही रामदास, प्रेम प्रगटिया आय ।
रूम-रूम मे रस चवै, नाडि-नाडि धुन लाय ॥ १५

प्रेम पियाला प्रेम का, पीयेगा जन कोय ।
रामदास सो पीवसी, विरह-विकलता होय ॥ १६

रामदास पी प्रेम कू, दीजै सीस कटाय ।
सिर साटे साई मिलै, वैगो विलम न लाय ॥ १७

प्रेम तणा घर रांमदास, ऊचा है आकास ।
सीस काट पग तल धरै, सो पहुचे निज दास । १८

सीस काट पग तल धरे, उलटा खेलै डाव ।
रामदास सो पीवसी, अघट प्रेम का साव ॥ १९

अघट प्रेम आठो पहर, साईं प्रेम कहाय ।
रामदास पल ऊतरै, सो तो प्रेम न थाय ॥ २०

प्रेम जिनादा जानियै, आठू पहर अभग ।
रामदास लागौ रहे, उर अतर विच अग ॥ २१

प्रेम प्रीति की भगति बिन, कारज सरै न एक ।
रामदास यू पच मुवा, धर-धर भेष अनेक ॥ २२

प्रेम भगति अति कठिन है, बिरला निरभै कोय ।
रामदास सो निरभसी, सीस उतारै सोय ॥ २३

सीस उतारण सहल है, कठिन प्रेम वैराग ।
रामदास सो निरभसी, उर भीतर अण राग ॥ २४

---

१४ अत माहिला – भीतर का । १५ चवै – चूता है, स्रवित होता है ।
१६ कोय – कोई । १७ साटै – बदले में । वैगो – शीघ्र । विलम – विलम्ब ।
१९ डाव – दाव, मौका । साव – आसव । २२. मुवा – मरा ।
२३ निरभसी – निर्भेगा ।

उर बिच बादल बरसिया चल्या प्रेम का खाल ।
रामा मोती नीपना हीरां की टकसाल ॥ २५

हीरां की नपै भई घट में खुली खाण ।
गुरु किरपा तें रामदास, प्रेम प्रगटिया प्राण ॥ २६

प्रेम प्रगटिया रामदास जाका वार न पार ।
आठ पहर चौसठ घड़ी उतर नहीं खुमार ॥ २७

और प्रेम चढ़ ऊतर पल में फीका थाय ।
राम प्रेम सो रामदास सदा एक ही भाय ॥ २८

प्रेम तणी विरखा वणी, सुन में छूटा सूर ।
रामा हरि जल बरसिया, ऊठे प्रेम हिलूर ॥ २९

जन रामा सतगुरु मिल्या प्रेम पियाला मांण ।
उलट समाणा प्रेम में, सदा एक सुख मांण ॥ ३०

इति श्री प्रेम को अंग

*

[१२]

अथ कुसबद को अंग

संग्रामपण

साधू सहै कुवाच घरा सह खूंद रे ।
बाढ़ सहै बनराय समंद सहै बूंद रे ॥
सूरा भेलै बाण खड़ग की धार रे ।
हर हां यूं कह रामादास एहै निज सार रे ॥

२५ नीपना – उत्पन्न होना । टकसाल – मुद्रा निर्माण-गृह । २६ नपै – निपज उत्पादन खाण – खान । २८ भाय – भाव । २९ सूर – पानी की फंवारें । हिलूर – हिलोर ।
३ माण – मान कर, भोग कर । पाठभेद – उलट समाणा ब्रह्म में ।
१ कुवाच – कुवचन । खूंद – कुचलना रौंदना । सूरा – शूरवीर । एहै – यही ।

साखी

सार सवद मे गरक हुय, निवरे [illegible] ।
रामदास कुजाव सहै, ताहि नमां [illegible] ॥

गाल काढिया रामदास, आणं नहीं [illegible] ।
ऐसा साधु जगत मे, धिन [illegible] ॥

पूरा सतगुरु पाविया, अन्तर [illegible] ।
रामदास सवकू कहै, कुवचन मीठा ज्ञान ॥

रामदास सीतल भया, सतगुरु दीना ज्ञान ।
जिण मारग मे जग चलै, तहा न मेलै ध्यान ॥ ५

बुरी भली मानै नही, सब सू एकै भाय ।
रामदास निरपख रहै, पख की दिसा न जाय ॥ ६

गाल काढिया रामदास, तन आगे नहि रीस ।
सब सेती समता रहै, जिण परस्या जगदीस ॥ ७

जन रामा सतगुरु मिल्या, जिनकी ऐसी रीत ।
[illegible] राख्या सरण मैं, एक राम की प्रीत ॥ ८

[११]

अथ सबद को अंग

साखी

रामदास सत सबद का, भीतर लाग्या भेद ।
बाहिर घाव न दीसही रूम-रूम बिच छेद ॥ १

छेद पड्या सत सबद का भेद गया तन माहि ।
रामदास लागी इसी करक कलजा माहि ॥ २

लगी सबद की रामदास अरध ऊध बिच चोट ।
रूम-रूम ररकार की सब घट ऐको दोट ॥ ३

दोट लगी सत सबद की ब्रह्मड निकसी जाय ।
रामदास ब्रह्मण्ड में सबद रह्यो गुंजाय ॥ ४

सोरठा

सबद तणी सब मार सारांईज सरीर में ।
रामा हणी न धार रूम रूम बिच बह गई ॥ ५

साखी

सबद बाण सूं मारिया सब ही मन का खोट ।
रामदास आकास में लगी अखण्ड इक चोट ॥ ६

धर अम्बर बिच रामदास एक सबद गुंजार ।
वासूं माया उलट के निकसी दसवें द्वार ॥ ७

---

१ छेद – छिद्र । २ करक – ठेस चोट चुभन । ३ अरध ऊर्ध – अर्ध ऊर्ध्व समस्त शरीर । दोट – चोट । ५ हणी – इसकी । ७ वासूं – उनके । दसवें द्वार – ब्रह्मरंध्र (योगियों की मान्यतानुसार मुक्ति-प्रापक अंतिम मार्ग)

सबद गाज ब्रह्मण्ड मे, जाण भणक्की वीण ।
रामदास सुर सभलै, महा भीण सू भीण ।। ८

रामदास घायल भया, सत्त सबद की मार ।
आठ पहर घूमत रहै, साई हदा यार ।। ९

सबद मार करडी घणी, विरला झेलै कोय ।
रामदास सो झेलसी, विरह विकलता होय ।। १०

सोरठा

रामा सबद सभाय, सतगुरु वाह्या तन्न मे ।
आठू पहर घुमाय, घाव लग्या सो जानसी ।। ११

दोहा

जन रामा सतगुरु मिल्या, सबद जु वाह्या तार ।
उर-अतर नख-सिख विचै, सारै भिद्या सरीर ।। १२

इति श्री सबद को अग

*

[५४]

अथ करम को अंग

साखी

करमा की बेडी बणी, सबही जग कै माय ।
रामदास झाडी सजड, मोह कि झाट लगाय ।। १

---

८ गाज – ध्वनि, गर्जना । भणक्की – सुणाई पडी, भकृत हुई ।
१० करडी – कठिन । ११ वाह्या – चलाया । १२ भिद्या – भेदन हुआ ।
१ बेडी – हथकडी, बन्धन । सजड़ – घनी । झाट – कटीली झाडी का दरवाजा ।

अनत जनम तक पुंन करै, तो ही करम न जाय ।
रामदास रच नाम लै, छिन मांही कट जाय ।। १२

करम कुटी मे मैं हुता, जलता था जग साथ ।
जन रामा सतगुरु मिल्या, काढ लिया गह हाथ ।। १३

इति श्री करम को अंग

卐

[५५]

अथ काल को अंग

साखी

मोलत सबही मड मे, धरमराय का मड ।
रामदास छूटै नही, सप्त दीप नव खड ।। १

तीन लोक बस काल कै, सब ही कू जम खाय ।
रामदास सो ऊबरे, सत का सबद सभाय ।। २

सत्त सबद सो राम है, दूजा सब जजाल ।
रामदास या राम बिन, सब कू खाया काल ।। ३

क्या बालक क्या वृद्ध है, क्या नाना क्या मोट ।
रामदास सब ऊपरै, लगै सबद की चोट ।। ४

क्या ऊचा क्या नीच है, क्या रक'रु का राव ।
रामदास सब ऊपरै, लगै काल का डाव ।। ५

क्या सुरगादिक देवता, क्या मध्य'रु पाताल ।
रामदास तिहु-लोक मे, सबै काल का जाल ।। ६

---

१३ हुता – मौजूद था, रहते हुये ।
१ धरमराय – धर्मराज । ४ नाना – छोटा । ६ सुरगादिक – स्वर्ग आदि ।

करम कुटी मे जग जल्या, चहु दिस लागी लाय ।
रामदास से नीसर्या सत का सबद समाय ॥ २

चार चवक चवद भवन एक राम विस्तार ।
रामदास बिन जानिया डूबा पसू गिवार ॥ ३

रामा राम न जानियो, रह्या करम में फस ।
करम कुटी म जग जल्या काल गया सब हस ॥ ४

सोरठा

करमां का घर बार माया परदा भरम का ।
तामें बध्या गिवार रामा हरि भज ऊबर्या ॥ ५

साखी

करम कूप में जग पड्या डूबा सब ससार ।
रामदास स नीसरया, सतगुरु सबद विचार ॥ ६
रामा माया खेत में करसा एको मग्न ।
पाप पुन मे बध रह्या, भरया करम सू तन्न ॥ ७
करम जाल में रामदास बध्या सब ही जीव ।
आसपास में पच मुवा विसर गया निज पीव ॥ ८
बीज खाय आयो नहीं जोवै हरजस साख ।
रामदास खाली रह्या, राम न आयो आख ॥ ९
करम लपेटया जीव कू भाव ज्यू समझाय ।
रामदास आंकूर बिन कारी लग न काय ॥ १०
करम कमाया रामदास है करमां में पूर ।
रच नाम जो सचरै करम करै सब दूर ॥ ११

---

१ पसु गिवार – मूर्ख । ५ बंध्या – बन्धी बंधे हुये । ऊबर्या – मुक्त हुवे ।
७ करसा – कृषक । ८. विसर – भूल गया । ९ आख – अक्षर ।
१ [illegible] – [illegible] । आंकूर – [illegible]–अंकुर ।

रामदास सब देखिया, जीव बचै किस ठौड ।
ऐसा जग मे को नही, ताकी रहियै ओड ।। १५

मृत्यु-लोक पाताल क्या, क्या देवासुर जाण ।
रामदास सब काल बस, मारै तक-तक बाण ।। १६

ब्रह्मा धूजै काल सू, थरकै विष्णु महेस ।
रामदास से निडर है, मिल्या मुगत के देस ।। १७

मुगत देस मे रामदास, अबिनासी को राज ।
ज्या पहुचा निरभै हुवै, ऐसा है महाराज ।। १८

ता सरणै सू रामदास, काल डरै रह बैठ ।
धिन साधू निरभै भया, रह्या राम मे पैठ ।। १९

राम बिना सब धर्म है, सोइ काल के नाव ।
रामदास से जीवडा, जाय जमा के गाव ।। २०

रामा पासी काल की, तीन लोक के माहि ।
जीव बाध आगै लिया, भाज बचै कोई नाहिं ।। २१

रामदास डरपत रहौ, भूलो मती गिवार ।
चेतन ह्वा से ऊबर्या, और काल के द्वार ।। २२

काल तुमारै सिर खडौ, तू क्यू सोय नचीत ।
रामा सोती नीद मे, कर जाय काई कुपीत ।। २३

रामदास सूवौ मती, सूना सब-रस जाय ।
सूता ते नर डूबग्या, काल मारिया आय ।। २४

रामदास जागत रहौ, जाग्या सब कुछ होय ।
जाग्या ज्याका धन रह्या, चौर न लागा कोय ।। २५

---

१५ ओड – ओट ।
१६ देवासुर – देव और राक्षस । १७ थरकै – कांपते हैं, थिरकते हैं ।
२०. जीवडा – जीव । २१ भाज बचै – भाग कर बचना । २३ नचीत – निश्चित ।
कुपीत – उपद्रव । २४ सब-रस – सवस्व ।

चन्द्रायण

मात पिता कुल बन्धु, सगा नही जीव का,
विपिया वाद निवार भजन कर पीव का।
पीव बिना सब झूठ पड़गा गदगी,
हर हाँ यूं कह रामादास करो तन बंदगी ॥ ७

दिष्टकूट आकार जुग सबही मर
ब्रह्मा विष्णु महेश काल सू वे डर।
चवद भवनां माहिं काल की चोट रे
हरि हाँ यूं कह रामादास बचो हरि ओट रे ॥ ८

साखी

रामदास सो थिर नहीं ताहि न करिये पीत।
काची काया कारवी या की झूठी रीत ॥ ९

रामदास अब की घड़ी दूजी कैसी होय।
करणा ह्व सो कर लिवो काल पास सब सोय ॥ १०

काल पास सब जीव है नांख मुख के माय।
रामदास सो उबर सतगुरु सरणै आय ॥ ११

काल-गोद मे रामदास, ले बैठो संसार।
सब ही नाम्या मुख में खाय'र किया खवार ॥ १२

रामदास अजगर गिलै सकल सपूछो खाय।
ऐसा सब सिर काल है, खाया बच न काय ॥ १३

अजगर आछो रामदास मुख मे पड़िया लेह।
काल झपट ऐसी कर किस कूं आण न देह ॥ १४

---

७ पड़ना बंदगी – गर्भाशय में पड़ना (नरक)।
९ पीत – प्रतीति विश्वास। कारवी – मिट्टी का कच्चा बरतन (करवा)।
१० काल पास – मृत्यु का बन्धन। ११ सपूछो – पूंछसहित।

रात-दिवस छाडै नही, कहा देस-परदेस ।
घर वन मे छाडै नही, भावै पलटो वेस ।। ३७

एक सरण हरि नाम बिन, कब हू छूटै नाहि ।
रामदास हरि नाम बिन, काल गिरासै माहि ।। ३८

पछी एक और पच मुख, चच पचीस कहाय ।
रामदास आकास सू, घर पर बैठे आय ।। ३९

रामदास पछी चुगै, मन मे निधडक बात ।
बिली चिडी के ऊपरै, ता घर घाली घात ।। ४०

पछी मन चेतन भया, चहु दिस देखो न्हाल ।
रामदास किम छूटिये, ऊपर आयौ काल ।। ४१

छान भीत अरु बाड बिच, क्या मिदर घर माहिं
रामदास सब बीच मे, काल पकड ले जाहि ।। ४२

रामा पछी ऊडियो, चल्यौ अगम के देस ।
अगम देस मे वृक्ष है, तही कियो परवेस ।। ४३

ब्रह्म वृक्ष है रामदास, पछी बैठा जाय ।
केल करै नित मुगतफल, काल न पहुचे आय ।। ४४

हरि बिन दूजो आसरो, फास-फूस सी बात ।
रामदास ताकी सरन, टलै न जम की घात ।। ४५

रामदास सत राम है, सो अणघडिया देव ।
घडिया तो जम छूकसी, याकी झूठी सेव ।। ४६

---

३८ **गिरासै** – ग्रस लेता है। ३९. **पक्षी** – जीवात्मा। **पच** – पाच तत्व।
पचीस – पचीस प्रकृति। **आकास सू** – परब्रह्म। **घर** – काया।
४१ **देखो न्हाल** – सतर्क होकर देखना। ४२ **भींत** – दीवार।
४३ **अगम के देस** – परब्रह्म के लोक को। **परवेस** – प्रवेश। ४४ **केल** – केलियां।
४५ **आसरो** – आश्रय। ४६ **अणघडिया** – निरूप, अनिर्मित (नाम-रूप से रहित)।
घडिया – नाम-रूप-युक्त।

क्या बेटा क्या बाप है क्या बड बूढा होय ।
रामदास इक राम बिन काल खायगा सोय ॥ २६

रामा सूर्ता क्यू सरै ऊठ'र चेत गिंवार ।
राम भज्या से ऊबर्‌या, सतगुरु के आधार ॥ २७

काल पास मैं सब बध्या, क्या बिरधा क्या बाल ।
रामदास सब घेरिया, ज्यूं मकडी का जाल ॥ २८

मकडी जाल पसारिया सबही बंध्या जीव ।
रामदास से ऊबरया सिंवर्‌या समय पीव ॥ २९

रामदास सांसो तजो सांसे खाय काल ।
सो नर सांस बीच में ता सिर जम का जाल ॥ ३०

रामा बैरी दोय है, एक काल एक नींद ।
दोनूं तेरै पांहुणा ज्यूं तोरण का बींद ॥ ३१

रामा दोनूं बीच में, आज किसी लग आय ।
बुरा किया तन ओजरा काल झपट ले जाय ॥ ३२

रामदास दीसै इता सब हि काल मुख माहि ।
नर सुर नागा देवता किस कूं छोडै नाहि ॥ ३३

रामा सबके ऊपरै, काल खरै तो सीस ।
धरिया कू छोडै नहीं मारै बिसवा बीस ॥ ३४

धरिया तो सब काल बस सब काहू कू खाय ।
रामदास छूटै नहीं ज्हां त्हां मिर्त बुलाय ॥ ३५

रामदास सब कूं कहै सुणो हमारी बात ।
काल सकल कूं मारसी क्या दिन में क्या रात ॥ ३६

---

३१ पांहुणा – मेहमान । तोरण का बींद – विवाह के लिये तोरण द्वार पर आया हुआ वर ।
३२ ओजरा – खोखला ।
३४ धरिया – देहधारी (परब्रह्म को छोड कर सभी देव मानव आदि योनि) ।
बिसवा बीस – निश्चित रूप से ।

रामदास मच्छी बिकै, भीवर हदी पोल ।
काल कूट छूनण किया, ऐसी घाली रोल ।। ५

मच्छी सुण चेती नही, भीवर हदै बोल ।
रामदास जाली वधी, कहु कुण लावै खोल ।। ६

रामदास मच्छी रमै, भीवर नाख्यौ जाल ।
चेतन हुय चेती नही, आण पहुतो काल ।। ७

छीलर मे राती रही, चेती नही लिगार ।
रामदास ता कारणे, भीवर के दरबार ।। ८

ओछो समदर सेवियो, उपजी नाही बुद्ध ।
भीवर लेग्यौ बध कर, रामदास बिन सुद्ध ।। ९

मच्छी भूली बुध बिना, छीलर कीनो वास ।
रामदास ता कारणे, गल भीवर की पास ।। १०

भीवर लेग्यौ बाध कर, सारो इ परिवार ।
सबही खाई राध कर, पलक न लाई वार ।। ११

भीवर हाथा जाल है, सब्रही बध्या जीव ।
रामदास सुध बाहिरा, छोड्या समरथ पीव ।। १२

जन रामा सतगुरु मिल्या, समदर दिया बताय ।
अथाग जल मै मिल रह्या, भीवर काल न जाय ।। १३

इति श्री मच्छी को अग

★

५ छूनण – टुकडे-टुकडे, चूरा । ८ भीवर – धीवर, मछली पकडने वाला ।
१२. सुध बाहिरा – मूर्ख, चेतनाहीन । १३ पाठभेद – भीवर जाल न जाय ।

काल सबल है रामदास बडा बडा कूं खाय ।
चेतन हुआ सो ऊबरया, सतगुरु सरण आय ॥ ४७

सतां की सरणी प्रबल चरण रहू लपटाय ।
रामदास डर को नही निरभ नौबत बाय ॥ ४८

निरभै पाया बैसणा अमर निरंजण देव ।
रामदास सह मिल रह्या आठ पहर नित सेव ॥ ४९

साधू साहिब एक है न्यारा कछू न थाय ।
रामा मिलिया राम सूं काल कुणी को खाय ॥ ५०

जन रामा सतगुरु मिल्या पलट किया निज ब्रह्म ।
एक मेक हुय मिल रह्या काल न पहुचे क्रम ॥ ५१

इति श्री काल को अंग

★

[११]

अथ मच्छी को अंग

साखी

स्नेही है सो मच्छली जाका साचा नेह ।
रामदास जल बीछड्यां तुरत त्याग दे देह ॥ १

मीन मुवा तो क्या हुवा रामा प्रीत न जाण ।
प्रीत जिनाकी जानियै साथे त्याग प्राण ॥ २

मीन'रु जल की प्रीतडी या तो कही न जाय ।
रामा ऐसी नाम हूं परापरी ठहराय ॥ ३

रामा रोवै कीरणी कीर न आयो द्वार ।
मच्छी झुरणो ना किया केती नांखी मार ॥ ४

---

४८ नौबत बाय – नगाड़ बजाकर मौज करो।

४ कीरणी – मादा तोता।

जन रामा सतगुरु मिल्या, औषध दिया बताय ।
खाया सू अम्मर हुवा, मिल्या अमर पद माय ।। १०

इति श्री सजीवन को अंग

★

[५८]

अथ चित कपटी को अंग

साखी

निवण देख धीजौ मती, निवणे घणौ विचार ।
रामदास चीतो निवै, मारै मिरग पछार ।। १

पारधियो बन मे चल्यो, निंव कर घालै घात ।
रामा निवण न धीजिये, अन्तर खोटी बात ।। २

मुख सेती मीठी कहै, अन्तर माहि कपट्ट ।
रामा ताहि न धीजिये, ताही करै झपट्ट ।। ३

आया कू आदर नही, दीठा मोडै मुक्ख ।
रामा तहा न जाइये, जे कोइ उपजै सुक्ख ।। ४

अतर दुविधा रामदास, मुख सू मीठा बोल ।
जह चल परत न जाइयै, पीछै काढै पोल ।। ५

भगति छाड पूठा पडै, भाव नही मन माहि ।
रामदास ता नुगण के, हरिजन कदे न जाहि ।। ६

आवत मन हुलस्यौ नही, ना को नेम न प्रेम ।
रामा जहा न जाइये, जे को चाढे हेम ।। ७

---

१ निवण – नम्रता । २ पारधियो – शिकारी । निंव कर – झुक कर, नम्रता से ।
४ दीठा – दिखाने पर, देख कर । ६ नुगण – नुगरा, कृतघ्न ।
७ चाढे हेम – स्वर्ण भी चढाये ।

[१७]

अथ संजीवन को अंग

साखी

रामदास सब जग मुवा औषध पाया नांहि ।
जिग औषध तें ऊबरे, सो औषध घट मांहि ॥ १

जुगत न जाणी जोगिया वेद न नाडी हाथ ।
रामदास यूं पच मुवा खिण खिण बूटी सास ॥ २

वैद बुलाया रामदास, पकड दिखायो हाथ ।
वेदन की कीमत नहीं, पीड सरब ही गात ॥ ३

वद जाहु घर आपण तुझ कूं कीमत नांहि ।
रामदास दुखिया घणा, करक कलजे मांहि ॥ ४

वैद गुरू है रामदास जडी सजीवन नाम ।
जो खाई सो ऊबरया, मिल्या अमर-पद धाम ॥ ५

रामदास उण देस में, मरबो कदे न थाय ।
दुख-सुख जो व्याप नहीं, जामण-मरण मिटाय ॥ ६

इण औषध से ऊबर्‍या, आगे अनता साध ।
रामदास अम्मर भया, अम्मर सबद अराध ॥ ७

सतगुरु पूरण वद है औषध है हरि नाम ।
रोग मिट सब रामदास जीव जाय सुन-गाम ॥ ८

इण औषध ते सब मिटै जामण-मरण सनेह ।
औषध पाय रामदास फेर न धारै देह ॥ ९

---

२ खिण – क्षण ।

७ अनता – अनन्त ।

८ सुन-गाम – सून्य-गाम—ब्रह्मरंध्र का नगर ।

ग्र. गो. नौरंग

पख छाडै निरपख रहै, दै अपणा घर जाल ।
रामा ऐसा ना मिलै, आठ पहर मतवाल ॥ ६

रामा ऐसा ना मिलै, ताकू दू उपदेस ।
तन मन दोनू सूप दे, करै सीस कू पेस ॥ ७

रामा ऐसा ना मिलै, ताकू कहु समझाय ।
भव-सागर कू पूठ दै, रहे राम लिव लाय ॥ ८

रामा ऐसा ना मिलै, चित चौथे का मित ।
हम सेती उपदेस दै, करैं हमारी चित ॥ ९

रामा सब जग जाय है, जबरा के दरबार ।
ऐसा कोई ना मिलै, हम कू लेह उबार ॥ १०

रामा घायल ना मिलै, सारा बहुत मिलाय ।
घायल कू घायल मिलै, जदही भगति दिढाय ॥ ११

प्रेमी कू प्रेमी मिलै, प्रेम रहे लिव लाय ।
रामदास प्रेमी बिना, भक्ति न उपजै काय ॥ १२

जन रामा सतगुरु मिल्या, चरण रह्या लपटाय ।
सिष सतगुरु अब एक हुय, न्यारा कछू न थाय ॥ १३

इति श्री गुरु सिष को अंग

*

---

९ चित चौथे का मित – तुरीयावस्था का मित्र (सिद्ध योगी)
१० जबरा – शक्तिशाली, (यमराज) ।
११ दिढाय – दृढ होती है ।

[१]

अथ हेत प्रीत को अंग

साखी

प्रीत जिनांदी जानिये चंद कमोदिनि जाण ।
उ आकास वा जल महीं न्यारा कछू न ठाण ॥ १

गुरु सिष बहुता अंतरा, बसे समदां पार ।
रामदास गुरु शिष्य के उर भीतर दीदार ॥ २

तन सूं न्यारा रामदास, सुरत सतगुरु पास ।
आठ पहर गुरु में बस, ऐसा हेत प्रकास ॥ ३

हितकारी अलगा बस, तो ही अंतर मांहि ।
बिन हितकारी रामदास निकट हि दूरा थांहि ॥ ४

तन सती दूरा बसे, अलग किया अस्थान ।
नणा सभी अंतरा मन में सदा मलान ॥ ५

जागन्ता सूं प्रीतड़ी सूता सुपन मांहि ।
रामा एसा राम है कब हू त्यागे नांहि ॥ ६

जन रामा सतगुरु मिल्या जातैं उपज्या हेत ।
साधु पिछाणा प्रीतड़ी, सा मुग पड़गी रेत ॥ ७

इति श्री हेत प्रीत को अंग

---

१ [illegible]

अथ सूरा तन को अंग

साखी

सूरवीर सो रामदास, रिण मै रोपे पाव ।
निरभै व्है सन्मुख लडै, सामा झेलै घाव ॥ १

रामदास सो सूरवा, खेत छाड नहि जाय ।
दोउ दला के बीच मे, रहे पाव रोपाय ॥ २

आसा जीवण-मरण की, अन्तर जाणे नाहि ।
रामदास निरपख लडै, सुरत ब्रह्म के माहि ॥ ३

रामदास सन्मुख लडै, तन सूरा तन माय ।
कायर हुआ न छूटसी, मन मे जूझ मडाय ॥ ४

रामा मन सू झूझबौ, पाच करै चकचूर ।
पच्चीसा कू पेल कर, जदी कहावे सूर ॥ ५

इक दिन लडिया रामदास, सूर न कहसी कोय ।
सूरा सोई जानियै, तन लग जूझै सोय ॥ ६

तन-मन का त्यागन करै, आदि-अंत लग एक ।
रामदास सो सूरवा, कछू न छाडै टेक ॥ ७

रामा साई कारणै, जूझै रात'रु दिन्न ।
रहसी सदा हजूर मे, साई कहसी धिन्न ॥ ८

घुरै दमामा गगन मे, सुण-सुण चढिया नूर ।
रामदास सनमुख लडै, ऐसा है निज सूर ॥ ९

---

१ रिण – युद्ध । ४ जूझ – सघर्ष, लडाई ।
५ चकचूर – चकनाचूर । पेल कर – धकेल कर, नष्ट कर ।
६. तन लग जूझै – शरीर की आहुति देकर भी लडता रहे । ८ हजूर में – सेवा में ।

कायर सुण पूठा फिरै, रामा पड़ भगाण ।
सूरा पग छाडै नहीं तन-मन अरपै प्राण ॥ १०

खेत बुहारे सूरवा सुण अनहद की घोर ।
रामा मन कूं जीत कर पकड़ पांचूं चोर ॥ ११

सूरवीर भाग नहीं भागा ठौड़ न काम ।
रामा सन्मुख भड़ रहै सब भ्राव लख आय ॥ १२

कायर भागा बापड़ा, आकी गिणत न होय ।
रामदास सो सूरवा, भाज न जावै कोय ॥ १३

सूरा भाज रामदास तो कल ऊथल होय ।
जग अंधियारो हुय रहै सूर न ऊगै कोय ॥ १४

रामदास सूरा भर्या भाण तण गजराज ।
मढिया जांका जग मे मुजरो है महाराज ॥ १५

मढिया जाका जग में, दोऊ दला विचाल ।
कायर भाज रामदास सुण सूरां की हाल ॥ १६

सूरवीर मन सूं लड़ै कर पांच सूं जूझ ।
रामदास सांइ विना दूजा और न सूझ ॥ १७

दूजा को सूझ नहीं एक राम सूं हेत ।
रामा सांइ कारणे छाड न जाय खेत ॥ १८

रामदास सांसा मिट्या लागी हरि सूं प्रीत ।
काम क्रोध तृष्णा तजो या सूरा की रीत ॥ १९

रामदास भ्रम छाडिया मन सेती सम कीन ।
उलट मिल्या परब्रह्म सूं हुवा मीन सूं मीन ॥ २०

---

१ भगाण – भगदड़ । १३ बापड़ा – बेचारे ।
१४ कल ऊथल – संसार का उथल पुथल हो जाना ।
सूर – सूर्य ।
१५ जांभा जग में – [illegible] । मुजरो – नमस्कार ।

कायर बहुत पोमाविया, सूर न काढै जाब ।
रामदास पारख किया, किसकै मुहडै आब ।। २१

सूरा श्रवणा साभलै, साहिब हदा बैण ।
ज्यू-ज्यू भिदै सरीर मै, रामा निरमल नैण ।। २२

सूरवीर के रामदास, साम्हा लागै घाव ।
लागै पण भागै नही, लडवा ही को चाव ।। २३

रामदास दीदार मै, कायर पहुचै नाहि ।
सूरवीर साचै मते, सो चल मुजरै जाहि ।। २४

रामदास बहु दुलभ है, सूरा तन को काम ।
कोट्या माही एक जन, ताहि मिलेगा राम ।। २५

भगति दुहेली रामदास, कायर करै न कोय ।
सूरवीर साचै मतै, राम रटेगा सोय ।। २६

भगति दुहेली रामदास, करै कोटि मै एक ।
कायर भागा सीत का, पच-पच मुवा अनेक ।। २७

भगति दुहेली रामदास, कायर भागा जाय ।
सूरवीर सामा मडै, मन सू जूझ कराय ।। २८

मन कू मार्‌या रामदास, मार'रु किया खवार ।
रूम-रूम बिच एक ही, ऊठी सबद पुकार ।। २९

मन मेवासी बस किया, पाचू पकड पछाड ।
सूरवीर सो रामदास, जीता जम सू राड ।। ३०

सूरवीर सो रामदास, एकल मल्ल अभग ।
सूरवीर ऐसे मडै, जाणै विरच्यौ सिंग ।। ३१

रामदास वैरी घणा, जाका आदि न अत ।
बहु दुख मे छाडै नही, सोइ सूरवा सत ।। ३२

---

२१ पोमाविया – व्यर्थ बकवाद करना । जाब – जुवान । २६ दुहेली – कठिन ।
३१ अभग – अखण्ड । सिंग – सिंह ।

रामदास संत सूर का अणि ऊपरला खेल ।
ज्यूं बादीगर बास चढ़, बरत पांवणा मेल ॥ ३३

साधु सती अरु सूर का आ का उलटा डाव ।
अगम पंथ ऊंचा चढ़ै पूठा धरै न पांव ॥ ३४

रामदास सूरा मड्या अणी दलां के बीच ।
कायर भागा बापड़ा सुण-सुण सिधू नीच ॥ ३५

सूरवीर एको भला खग बाहै तरवार ।
कायर भागा रामदास सुण सूरा हलकार ॥ ३६

रामदास सनमुख खड़ सांइ मिलवा काज ।
सूरा मरणो आसरा जा सां रहे बिराज ॥ ३७

सूरां कै आसा नहीं तन जोबन को त्याग ।
रामदास धणिया पछ परत न जाव भाग ॥ ३८

कहा देस परदेस में भया घर बारै होय ।
रामदास मंडिया पछै सूर न भागै कोय ॥ ३९

सूरा तो एको भला, कायर भला न कोट ।
सूरवीर सो रामदास रहै राम की ओट ॥ ४०

राम ओट छाडै नहीं जब लगि पिंजर जीव ।
रामदास मस्तक पड्या जूझ मिलै निज पीव ॥ ४१

सूरवीर सिर सूं लड़ै सिर पड़ियां कमधज्ज ।
रामदास माथे बिना लड़ै शान चढ़ गज्ज ॥ ४२

रामदास कमधज लड़ै गिणे न घोवा घाव ।
तान लोक जीता सही सुर नर मांगै पाव ॥ ४३

तीन लोक ताम पर चढ़ बाही तरवार ।
रामदास मुजरा किया सांम तणा दरबार ॥ ४४

---

३३ बादीगर – बाजीगर । बरत – चमड़े की रस्सी ।
३६ हलकार – ललकार । ३७ आसरो – पक्का भरोसा है ।

मुहडा आगे साम कै, हरिजन खेलै डाव ।
रामदास कमधज सही, नेजा घालै घाव ॥ ४५

सूरा मडिया रामदास, कायर पडै न ठौड ।
उलटा खेलै खेत मे, माथै बाघ'रु मोड ॥ ४६

जीवण की आसा तजै, हुय जाय मरण समान ।
रामदास जब जानियै, मन मार्‍या परवान ॥ ४७

मन मार्‍या ते सब मुवा, काम क्रोध अभिमान ।
सासो सोक सताप सब, दिया पगा तल जाण ॥ ४८

लोभ बडाई रामदास, मार्‍या मान गुमान ।
आसा तृष्णा कल्पना, और दुवध्या जान ॥ ४९

पाच पचीसू रामदास, मार'रु दिया गुडाय ।
तीन लोक कू बस किया, गगन रह्या गणणाय ॥ ५०

पिसण सबै ही मारिया, मार'रु कीया छार ।
रूम-रूम बिच रामदास, ऊठी एक पुकार ॥ ५१

सोरठा

रामा एक पुकार, उर-अतर नख-सिख विचै ।
सही सत सिरदार, मन मेवासी मारिया ॥ ५२

साखी

कायर भागा रामदास, गया रसातल बीच ।
राम छाड भाडी करी, पड्या नरक के बीच ॥ ५३

सूरा मरणौ आसगै, छाडै तन की आस ।
रामा सिवरै राम कू, जब लग पिंजर सास ॥ ५४

---

४५. नेजा – भाले । ४७ परवान – प्रमाण । ५० गणणाय – गुंजित होना ।

जग सेती पूठा फिर, पलक न चाल साथ ।
रामदास सत सूरवा छाड सब ही भाथ ॥ ५५

अरध-उरध बिच मढ रहे, अनहद घुरे निसाण ।
रामदास सत सूर के लगै न जम का बाण ॥ ५६

जम्म बांण लाग नहीं काल तणों डर नांहि ।
रामदास सत सूरवा मिल्या ब्रह्म के मांहि ॥ ५७

रामदास भडिया पछ, पूठा भाग'र जाय ।
मौर कटाया भाजतां जागीरी सब जाय ॥ ५८

रामदास भाजी हुई जब छाडया रण खेत ।
तीन लोक में ठौड नहि तूटा हरि सूं हेत ॥ ५९

गगन दमामा बाजिया कलहलिया केकाण ।
कायर सुण-सुण भाजग्या जमने मारया बाण ॥ ६०

सूरवीर का एक मग एक आस विश्वास ।
रामदास हरि नाम बिन खाली जाय न सास ॥ ६१

तन जोबन झूठा गिण झूठा सब ससार ।
रामदास सत सूरवा रखै एक इकतार ॥ ६२

एक बिना काचा सब सब कायर की फौज ।
सूरवीर हुय रामदास निस दिन पावै मौज ॥ ६३

रामदास बिन सूरवा साह आगे जूझ ।
धणी विहूणो जूझसी कौन करैगो बूझ ॥ ६४

धणी बिना जूझ घणा मर-मर जाय अकाज ।
रामदास मर क्या किया परत न पावै राज ॥ ६५

सूरवीर साचै मतै साहिब आगे खेल ।
रामदास सा संत की राम न छाडै बेल ॥ ६६

---

५८. मौर – पीठ। ६० कलहलिया – हिनहिनाये। केकाण – घोड़ा।

राम हेत निसदिन लडै, दूजी आसा नाहिं ।
रामदास सो सूरवा, सिर साहिब की छाहि ॥ ६७

साहिब की छाया सदा, आठू पहर अखूट ।
रामदास सो सूरवा, लडै अपूठी मूठ ॥ ६८

आगे मेरा सतगुरू, पूठै राम सहाय ।
रामदास दोन्या बिचै, काल कहा ते खाय ॥ ६९

अनत कोट के सग रमू, सब सतन को दास ।
रामदास सतगुरु मिल्या, जीत्या जम की पास ॥ ७०

तन-मन अरपै रामदास, सो कहिये निज सूर ।
उलट मेरु ऊचा चढै, अखड बजावै तूर ॥ ७१

पाछा पाव जु पाप का, खडा रहे रणखेत ।
सिखर चढै सत रामदास, नौबत डका देत ॥ ७२

सूरा सत के रामदास, तन की सार न काय ।
लोही मास जु ना चढै, पीव मिलन की चाय ॥ ७३

सूरा साधू रामदास, विरला जग मे कोय ।
मन मेवासी बस किया, किस विध जीतण होय ॥ ७४

सतगुरु धारै सीस पर, सत्त सबद तरवार ।
सूरवीर आघा धसै मन मगजी सिरमार ॥ ७५

मन जालम जौरै घणौ, कायर बैसे हार ।
सूरा साधू रामदास, रूम-रूम बिच मार ॥ ७६

सूरा साधू रामदास, तन-मन अरपै सीस ।
उलटा पडै पतग ज्यू, तो परसै जगदीस ॥ ७७

---

७१ उलट मेरु ऊचा चढै – वकनाल द्वारा मेरुदडकी इक्कीस मेणियो को छेदन कर शब्द-गति का ऊचा प्रवेश करना ।

७५ आघा– आगे । मगजी – घमण्डी । ७६ जौरै – शक्तिशाली ।

अगम कोट आघा वसै, सूरवीर गढ़ माँहि ।
मन मवासी जीत कर अनहद अखड बजाहि ॥ ७८

मन जीता मगल हुआ अगम मिल्या अस्थान ।
वटी बधाई रामदास पायो पिव को मान ॥ ७९

चन्द्रायण

सूरवीर सिरदार'क, सिर बिन जूझिया ।
मूठि वगल जु माहि अगम घर बूझिया ॥
सूरा हुय अस जाय धरणी के काम रे ।
हरि हाँ यूं कह रामादास लहै निज धाम रे ॥ ८०
सूरवीर बहु बीन बजावै सार रे ।
अरध उरध के बीच लगै ततकार रे ॥
उलट-पुलट हुयि जाय मान गढ़ ढाहिये ।
हरि हाँ यूं कह रामादास अनहद बाहिये ॥ ८१

साखी

सूरवीर सो जानिये सदा धणी सूं हेत ।
तन-मन अरपे रामदास छाड़ न जावै खेत ॥ ८२
साध सती अरु सूरवा या का मता अजीत ।
रामदास छाडै नहीं तीनूं अपनी रीत ॥ ८३
सती अगन में सत करे सूर मडै सग्राम ।
रामदास सो सतजन रट एक ही नाम ॥ ८४
सती जाय सत लोक मै सूरपुरी घर वास ।
रामनाम सो सतजन करै ब्रह्म मे वास ॥ ८५

सिरदार'क – सरदार ।
८३ अजीत – अजेय ।

पैंडे मांही रामदास पग कर करी पिछाण ।
मरतक रूपी हुय रह्या, उलट गया निज ध्यान ॥ ४

जग सब चाल्या रामदास, जम की घाटी माहि ।
सबही का धन लूटिया, कीमत भाई नाहि ॥ ५

रामदास कीमत बिना, मूवा सब ससार ।
मरजीवा हुय ऊबर्‌या भाके राम अधार ॥ ६

वद पंडित रोगी मुवा, औषध मिल्या न एक ।
रामदास सब जग मुवा पच-पच मुवा अनेक ॥ ७

रामदास जन ऊबरया अम्मर बूटी पाय ।
जीवत-मरतक हुय रह्या साईं सरण सभाय ॥ ८

रामदास बूटी तणी, कीमत लहै न कोय ।
जीवत मरतक ऊपरे पावगा जन सोय ॥ ९

बूटी खाया रामदास गया सकल ही रोग ।
अहं भाग ममता गई जोगी पायो जोग ॥ १०

सब ही औगुण जालिया जान किया सब छार ।
रामदास भसमी पड़ी जोगी ग्या हरिद्वार ॥ ११

जोगी जाण जगत कूं जग तें न्यारा थाय ।
रामदास मर जानिया बहुरि मर नहि आय ॥ १२

रामदास कमणी खरी खोटा टिके न कोय ।
मरतग रूपी हुय रहै, जाय मिलगा सोय ॥ १३

आपो मर्‌या बाहिरो राम न पावे कोय ।
रामदास आपो तजो ज्यूं ज्यूं परसण होय ॥ १४

राम कहै सो सब यहा गव कूं गुरु कर आगा ।
रामा सब का दास हुय पगी राग पिछाण ॥ १५

---

* जीवत-मरतक — जीवन्मुक्त। १ [illegible]
११ जालिया — जला दिया। १३ कमणी — कसौटी।

[illegible]

निवण भली है रामदास, निम्या भलौ हुय जाय ।
निवण करै सो आपकू, आपहि भारी थाय ।। १६

रामदास सब सोभिया, बुरा ढुढण जग माहि ।
अंतर माही सोभिया, हमसा भूडा नाहि ।। १७

रामदास ऐसा हुवौ, ज्यू मारग पाषाण ।
ठोकर मारै सब दुनो, तोड न अन्तर कोण ।। १८

पत्थर ह्वा तौ गुण नही, लागै सो दुख पाय ।
रामदास हरिजन इसा, खाख जिसा हुय जाय ।। १९

खाक हुआ सू रामदास, भलौ न कोई थाय ।
जाकै अंग उड लागसी, लागत मैला थाय ।। २०

साधू ऐसा चाहिये, जैसा निरमल नीर ।
रामदास न्हाया पछै, निरमल करै सरीर ।। २१

ऊपर सू निरमल करै, जाल्या ताता होय ।
रामदास पाणी हुवा, कारज सरै न कोय ।। २२

जल सेती पलटाय कै, हरिजन हरी समानि ।
रामदास ऐसा हुवौ, जैसा है रहमानि ।। २३

रहमान हुआ तो क्या हुआ, भाजै घडै ससार ।
रामदास हरिजन इसा, हरि भज उतरै पार ।। २४

इति श्री जीवत-मृतक को अंग

*

---

१९ खाख – राख । २२ ताता – गर्म ।

अथ मास-आहारी को अंग

साखी

मांस ाय सो मानवी जाका मूंह म दीठ ।
रामदास सगत मियां जम दरगा में पीठ ॥ १

मांस खाय सो रामदास, राक्स छेह समान ।
सूकर कूकर सार सा, सग किया हुं हान ॥ २

भांग अमल दारु पिय, जीव मारक खाय ।
रामदास से मानवी जडामूल सूं जाय ॥ ३

मांस कुता को खाण है भ राकस के भूत ।
रामदास सगत कियां मारगा जमदूत ॥ ४

 ास सकल का एक है सोच'र करो विचार ।
रामदास याकूं भख जाकूं मार न पार ॥ ५

चोरी जारी मांहि मन मांस मद पी खाय ।
रामदास हाभा मिये सोइ समूला जाय ॥ ६

मैस्या मूं रत्ता रहै जूवा खेलण चित्त ।
रामदास या मिनख सूं बद न कीजे मित्त ॥ ७

इति श्री मांस आहारी को अंग

*

---

१ [illegible] – [illegible] । दीठ–दिखना । २ राक्स–राक्षस । ६ हाभा [illegible] ।
७ बैस्या – बेश्या ।

अथ अपारख को अंग

साखी

रामदास हीरो मिल्यौ, अपारखू के हाथ ।
कबडी बदलै यू गयौ, कबडी चली न साथ ॥ १

हीरा को कछु ना घट्यौ, बूडौं पसू गिवार ।
रामदास खाली रह्या, कवडी का व्यौपार ॥ २

रामदास हसा उड्या, बैठा छीलर तीर ।
अनजाणा पानै पड्यौ, बुगलौ कहै सरीर ॥ ३

रामा सवै अपारखू, हस बुगला ठहराय ।
हीर अमोलख परख बिन, धाणी साटै जाय ॥ ४

हस उड्या महराण सू, बुगला कै घर जाय ।
बुगलो मन मे गरवियौ, बैठो पाख फुलाय ॥ ५

बुगला हस सू प्रीत कर, मन की गुरडी छोड ।
जह बैठा सोभा वधै, जाकी कैसी होड ॥ ६

पद्दारथ कू बेच कर, ककर बदले लेह ।
हसा की सगत तजी, कर बुगला सू नेह ॥ ७

रामदास बाजार मे, एक देखिया ख्याल ।
कबडी वदलै हीर कू, देकर चल्या दलाल ॥ ८

रामदास मन परखिया, सब ही मोल बिकाय ।
सबद अमोलख ब्रह्म है, घट-घट रह्या समाय ॥ ९

इति श्री अपारख को अग

---

१ अपारख – जो परीक्षा नही कर सकता । २ बूडौ – डूब गया ।
४ धाणी – ज्वार की फूली, सेके हुये जौ के दाने ।
५ महराण – मानसरोवर (महार्णव) ६ गुरडी – गांठ ।

[१२]

अथ पारख* को अंग

साखी

रामदास पारख करो पसो अंदर माहि ।
अन्दर में पठा बिना पारख आवै नाहि ॥ १

रामा बोल्या जानिये यो दुरजन यो सैण ।
ऐसी अंदर प्रीतडी जसा काढ़े बैण ॥ २

ज्ञान तराजू घालके, सब रस देख्या तोल ।
रामदास पारख करी बैण अमोलख मोल ॥ ३

राम रतन निज हीर है या फूं राख दुराय ।
रामदास पारख बिना काढ़'र मतो बताय ॥ ४

वस्तु अमोलख रामदास राख हिरदा सूं पोय ।
पारख बिना न दीजिये मूरख सेती खोय ॥ ५

नैणां सेती नण मिल बणां सेती बण ।
रामदास पारख कियां ए दुरजन ए सण ॥ ६

रामदास पारख बिना गुरु की नहीं पिछाण ।
परखण हारे बाहिरो क्यडी मदसे जाण ॥ ७

इति श्री पारख को अंग

*

---

*पारख – परीक्षा ।

[६६]

अथ आन-देव को अंग

साखी

आन देव कू रामदास, दुनिया पूजण जाय ।
भूल गई हरि भगति कू, जम के आई दाय ।। १
आन देव सू रामदास, दुनिया सब आधीन ।
लागी आल जजाल सू, दुरस भूलगी दीन ।। २
रात जगावै कामणी, गावै आल जजाल ।
रामदास साहिब विना, सब कू खासी काल ।। ३
राम चित्त आणै नही, गावै अल-पल गीत ।
खावै लूदा लापसी, करै आन कू मीत ।। ४
भगति विहूणी रामदास, नार सरपणी होय ।
बचिया जिण उण कू भखै, ऐसा अचरज जोय ।। ५
खसम विसार्यौ रामदास, औरा सू भखमार ।
वेस्या ज्यू बाभड रही, खाली गई गिवार ।। ६
करता एक हि राम है, दूजा सब ही आन ।
आन पूज खाली रह्या, ज्यू तेगै बिन म्यान ।। ७
आन धरम आधीन हुय, राम नाम सू बैर ।
खसम विहूणी रामदास, खाली रह गई बैर ।। ८
वेस्या बालक जनमियौ, पिता विहूणा पूत ।
रामदास साईं बिना, ऐसा जग का सूत ।। ६

इति श्री आन देव को अग

---

१ आन देव – अन्य देवता (परब्रह्म को छोडकर सभी देव) ।
४ अल-पल – व्यर्थ के । लूदा लापसी – लापसी (गेहूँ का मिष्ठान्न) के लूंदे ।
५ सरपणी – सर्पिणी । ६ विसार्यौ – विस्मृत किया ।
६ भख मार – दूसरो के पास भटकते फिरना । ८ बैर – स्त्री ।

[१७]

अथ निंदा को अंग

साखी

औरां की निंद्या कियां ताके ज्ञान न कोय ।
रामा सिंवरो राम कूं ज्ञान गरीबी जाय ॥ १

आन देव भाव नहीं, सिंवरता निज नाम ।
रामदास निंदा तजो चल संतां के गाम ॥ २

रामदास पर दुख कूं देख'र राजी होय ।
से नर ऐसा डूबसी जाकूं ठौर न कोय ॥ ३

रामा नीच न निंदियै सब सूं निरसा होय ।
किणी क औसर आय पर, दुख देवेगा तोय ॥ ४

रामदास सब कूं कहै, सब सुण लीजो और ।
औरां की निंद्या कियां आपा दुख सरीर ॥ ५

निंद्या त्यागो हरि भजो करो राम सूं प्रीत ।
रामदास निंद्या तजो या संतां की रीत ॥ ६

इति श्री निंदा को अंग

*

[६८]

अथ दया निरवैरता* को अंग

साखी

रामदास दरियाव मै, अगनी लागी जोय ।
हीर रतन सबही वलै, ऐसा अचरज जोय ।। १

अगन वादली रामदास, वध कीनौ विस्तार ।
झाल देख दुखिया भया, दाझत है ससार ।। २

कै दुखिया धन कारणै, कै तिरिया के काज ।
मात पिता परिवार कू, कै कुल करनी लाज ।। ३

दुखिया सब ससार है, चहै देह का स्वाद ।
रामदास दुखिया सबै, कर-कर वाद विवाद ।। ४

रामदास हरि नाम बिन, सुखी न दीसै कोय ।
सुखिया सोई जानियै, राम निजर भर जोय ।। ५

रामदास ससार कूं, झुर अरु करू विचार ।
मोकू कोइ न झूरही, ऊ वाहो की लार ।। ६

मोकू झूरै रामदास, राम रटैगा सोय ।
रामसनेही बाहिरौ, और न झूरै कोय ।। ७

इति श्री दया निरवैरता को अग

★

*निरवैरता – किसी से शत्रुता न होना । १ वलै – जलते हैं ।
६ झुर – प्रेमाकुल होना । लार – पीछे ।

अथ निंदा को अंग

साखी

औरां की निंदा कियां ताकूं ज्ञान न कोय ।
रामा सिवरो राम कूं मान गरीबी जाय ॥ १

आन देव भाव नहीं, सिवरता निज नाम ।
रामदास निंदा तजो चल संतां के गाम ॥ २

रामदास पर दुख कूं देख'र राजी होय ।
वे नर ऐसा डूबसी जाकूं ठौर न कोय ॥ ३

रामा नीच न निंदिये सब सूं निरमा होय ।
किणा क औसर आय पर दुख देयगा तोय ॥ ४

रामदास सब कूं कहै सब सुण लीजो वीर ।
औरां की निंदा कियां आपा दुख सरीर ॥ ५

निंदा त्यागो हरि भजो करो राम सूं प्रेम ।
रामदास निंदा तजो, या संतां की रीम ॥ ६

इति श्री निंदा को अंग

रामदास संसार सू, मेरे आया ज्ञान ।
जाय मिल्या परब्रह्म सू, अंदर लागा ध्यान ।। ३

इंद्र-लोक मे रामदास, हुआ अचंभा जोर ।
ब्रह्माजी सू ख्याल हुय, हरि सू लागी डोर ।। ४

रामदास हरि सू मिल्या, कौतुकहार अनेक ।
आठ पहर सुख मे सदा, देव रह्या सब देख ।। ५

रामदास पाताल का, पीवो निरमल नीर ।
वासी पी-पी पच मुवा, ज्या दुख सह्या सरीर ।। ६

रामदास हिरदै बसै, राम निरंजण राय ।
ता सेती डरपू खरो, ऊना अन्न न खाय ।। ७

रामदास साईं तणौ, गुना न लाधू पार ।
आठ पहर डरपत रहू, मेरै उर इक तार ।। ८

डरपत पाणी ना पिऊ, रहै राम धुप जाय ।
रामदास मै राम सू, तातै खरौ डराय ।। ९

रामदास हरि अलख है, धुपै न धोया जाय ।
पहले माहि मलीन था, तातै खरौ डराय ।। १०

रामदास आछी बनी, पाया निरमल नाम ।
पहले तो मै क्या कहू, फिरता ठामोठाम ।। ११

रामदास संसार मै, नवका पाया नाम ।
ता सेती चढ ऊतर्‌या, जाय मिल्या सुन-गाम ।। १२

रामदास साईं मिल्या, सब ही सुधर्‌या काज ।
जे दिन सिंवरण बिन गया, सो दिन जाण अकाज ।। १३

इति श्री उपजण को अंग •

---

४ डोर – लगन । ५. कौतुकहार – कौतुकी देव ।
७ डरपू खरो – बहुत डरता हूँ । ऊना – गर्म । ११. ठामोठाम – जगह-जगह ।

[६९]

अथ सुन्दर को अंग

साखी

रामदास सुन्दर कहै सुणो पियारा पीव ।
किरपा कर वेगा मिलो नीतर[1] त्यागूं जीव ॥ १

रामदास सुन्दर कहै प्रीतम सुणिये वैण ।
किरपा कर पधारज्यो आदि भव का सेण ॥ २

जल बिन मच्छी क्यूं जिवे सुरत त्याग दे प्राण ।
रामा सुन्दर तुम बिना जीवे नहिं रहमान ॥ ३

रामदास कह सुन्दरी आवो पीव दयाल ।
तुम मिलिया बिन मैं दुखी मिलिया होय सुकाल[4] ॥ ४

इति श्री सुन्दर को अंग

[७]

अथ उपजण* को अंग

साखी

रामदास जाणूं नहीं गांव तणी मैं वाट ।
मारग मैं कांटा घणा सा सेती पग फाट ॥ १

रामदास उण गांव का, नाम न जाणूं कोय ।
पीछे कांटा भागसी[2] पहली समझो सोय ॥ २

---

१ नीतर – नहीं तो । ४ सुकाल – सुख ।
*उपजण – उत्पत्ति । २ भागसी – घुसेंगे ।

रामदास घट मै धणी, गुरु बिन पावै नाहिं ।
सतगुरु मिल किरपा करी, उलट समाणा माहिं ।। ११

रामदास सब घटन मै, साहिब रह्या समाय ।
खोजी सू नैडा रहै, अनखोजी अलगाय ।। १२

अनखोजी के रामदास, राम न होय निकट्ट ।
खोजी सू भीतर मिलै, अन्तर खोलै पट्ट ।। १३

रामदास सतगुरु मिल्या, घट मै दिया बताय ।
उलट समाणा राम मै, मन का भ्रम्म मिटाय ।। १४

इति श्री मृग किस्तूरचा को अंग

*

[७२]

अथ निगुरां को अंग

साखी

रामा मूरख मिनख की, दुरमत कदे न जाय ।
कोटिक जो ज्ञानी मिलै, शठ के समझ न काय ।। १

रामदास विरखा हुई, धरती कोमल थाय ।
पत्थर टुकियन भेदिया, ऐसा शट्ठ कहाय ।। २

रूखराय हरिया हुआ, पाणी हदै पोख ।
रामा सूकै काठ कू, आवै नही सतोख ।। ३

कुत्ता हदौ पूछडो, पुरली चाल्यो मेल ।
बाहिर काढ्यो रामदास, उण ऐसो ही खेल ।। ४

---

११. धणी – परब्रह्म । १२ अनखोजी – जो खोजता नही है ।
१ दुरमत – दुर्मति । २ टुकियन – किंचित मात्र भी ।
३ रूखराय – वनस्पति । पोख – पोषण । ४ पुरली – भूंगली ।

[७१]

अथ किस्तूरया मृग को अंग

साखी

किस्तूरी मृग में बसे, मृग सेती गम नांहि ।
रामदास यूं ब्रह्म है सब जीवन के मांहि ॥ १

रामदास कीमत बिना मृग फिर सूंघे घास ।
आपण मांही रम रह्या गुरु बिन फिरै उदास ॥ २

आपण मांही आपही आपो सोझै नांहि ।
आपा सोझ्यां बाहिरो दूर दिसतर जांहि ॥ ३

रामदास किस्तूरडी मृग के कुण्डल मांहि ।
यूं घट घट में राम है मूरख जाण नांहि ॥ ४

रामदास भटकत फिरै आहि न आवै हाथ ।
जिण ऐ पांचूं बस किया, याकै साहिब साथ ॥ ५

पांच पयादा पाल कर उलट मिल्या घर मांहि ।
रामदास उलटयां बिना साहिब सूझै नांहि ॥ ६

घास आप में रामदास मिरगा फिरै उदास ।
कीमत बिन पाम नहीं फिर सूंघै बन घास ॥ ७

रामदास खोजी भया राम मिलण के काज ।
देस दिसतर सब फिरया घट मांही महाराज ॥ ८

राम निकट नेडा रह्या, मैं फिरिया परदेस ।
रामदास घट में मिल्या सतगुरु के उपदेस ॥ ९

पांच पचीसूं बस करै सो पावै दीदार ।
रामदास बिन बस कियां हरि सूं अलग अपार ॥ १०

---

३ सोझै नांहि – ढूंढता नहीं है । ४ कुण्डल मांहि – नाभिकुण्ड में ।
६ पांच पयादा – पंच कर्मेन्द्रियां । ९ नेडा – निकट ।

चुगली गारो चोरटो, मै अपती हू जीव ।
रामदास की वीनती, तुम समरथ हो पीव ॥ २

मै आधा मैं अकरमी, मै करमा का पूर ।
तुम हौ ऐसी कीजियो, राम न कीजौ दूर ॥ ३

पात हीण कुल हीण हू, हीण हमारी जात ।
हीण चलैवो रामदास, उज्जल कर रघुनाथ ॥ ४

मै गोबर का गीडला, चौरासी का जीव ।
जम की ताती वाधिया, छोडण वाला पीव ॥ ५

तुम सतगुरु मै शिष्य हू, मेरा किया न होय ।
सधर देख शरणौ लियौ, भव डर डारी खोय ॥ ६

मै नरका मे जाय था, पूरै दोजग माहि ।
किरपा कीजै रामदास, पकड हमारी वाहि ॥ ७

सव जग उज्जल रामदास, मै मैला मन माहि ।
मन कामी वहु कामना, दया दीनता नाहि ॥ ८

सव गुनवता रामदास, मैं औगुण भरियाह ।
सतगुरु मिलिया सहज मे, सब कारज सरियाह ॥ ९

रामदास वहु लोभिया, लागा इद्री स्वाद ।
अपनै स्वारथ कारणै, कीयो विषै विवाद ॥ १०

हम अपती कू रामदास, शरणै राखै कूण ।
हम सा पापी को नही, फिर देखी सब जूण ॥ ११

हम अपती कू रामदास, तीन लोक नहि ठौड ।
सब पाप्या को रामदास, माथै बाध्यौ मोड ॥ १२

---

२ **चोरटो** – चोर । ४ **पात हीण** – वर्ग रहित ।
५ **गींडला** – गोबर मे उत्पन्न होने वाला विशेष जीव ।
६ **सधर** – सबल । ७ **पूरं दो जग माहि** – पूर्ण नरक मे ।
९. भरियाह – भरा हुआ । सरियाह – पूर्ण हुय ।
११ कूण – कौन । १२ पाप्या – पतित । **माथै बाध्यौ मोड़** – शिरमोर होना, शिरोमणि ।

पाणी माही रामदास, पत्थर मेल्यो भाण ।
बाहिर काढ टांकी दिवी ऊ कौरो परवाण ॥ ५

रामा हरिजन वोलिया अमृत सबद रसाल ।
शठ कीमत लाधी नहीं हीरां की टकसाल ॥ ६

हीरा पड़िया रामदास गांव गली के माय ।
आंधा नर सूझे नही यूं हि उलाध्या जाय ॥ ७

काल र बूठा मेहड़ा बीज गमायो साय ।
रामा परस न ऊगाही, कोटक करो उपाय ॥ ८

सरपां दूध पिलाविया पीयां होसी जहर ।
रामा ऐसा ना मिल मट विष की लहर ॥ ९

रामा वास बरसाइया, झीणा परबत हाय ।
पाणी पुड न भेदही, शठ समझै नहि सोय ॥ १०

एम शठ समझै नहीं कोटिक मिल सुजाण ।
रामा सुबरण भाल थी माहि गमाया बाण ॥ ११

इति श्री निगुरा को अंग

*

[७१]

अथ विनती को अंग

साखी

रामराम औगुण किया जाका अंत न पार ।
तुम समरथ हो गाइयो भेंट उतारो पार ॥ १

६ लाधी नहीं – मिली नहीं। ७ उलाध्या – उल्लंघन कर।
८ काल र बूठा मेहड़ा – ऊसर की भूमि पर बर्षा हुई। साय – बाहर। परस – प्रत्यक्ष
९ झीणा – ऊंचे। पुड – पर्तों का पानी।
११ भाल – बाण के माथे की नोक। माहि – बना कर।

चुगली गारो चोरटो, मै अपती हू जीव ।
रामदास की वीनती, तुम समरथ हो पीव ॥ २

मै आधा मै अकरमी, मै करमा का पूर ।
तुम हौ ऐसी कीजियौ, राम न कीजौ दूर ॥ ३

पात हीण कुल हीण हू, हीण हमारी जात ।
हीण चलैवो रामदास, उज्जल कर रघुनाथ ॥ ४

मै गोवर का गीडला, चौरासी का जीव ।
जम की ताती वाथिया, छोडण वाला पीव ॥ ५

तुम सतगुरु मै शिष्य हू, मेरा किया न होय ।
सध्रर देख शरणौ लियौ, भव डर डारौ खोय ॥ ६

मै नरका मे जाय था, पूरै दोजग माहि ।
किरपा कीजै रामदास, पकड हमारी वाहि ॥ ७

सव जग उज्जल रामदास, मै मैला मन माहि ।
मन कामी बहु कामना, दया दीनता नाहि ॥ ८

सब गुनवता रामदास, मै औगुण भरियाह ।
सतगुरु मिलिया सहज मे, सब कारज सरियाह ॥ ९

रामदास बहु लोभिया, लागा इद्री स्वाद ।
अपनै स्वारथ कारणै, कीयो विषै विवाद ॥ १०

हम अपती कू रामदास, शरणै राखै कूण ।
हम सा पापी को नही, फिर देखौ सब जूण ॥ ११

हम अपती कू रामदास, तीन लोक नहि ठौड ।
सब पाप्या को रामदास, माथै बाध्यौ मोड ॥ १२

---

२ **चौरटो** – चोर । ४ **पात हीण** – वर्ग रहित ।
५ **गींडला** – गोबर मे उत्पन्न होने वाला विशेष जीव ।
६ **सध्रर** – सबल । ७ **पूरं दो जग माहि** – पूर्ण नरक मे ।
९ **भरियाह** – भरा हुआ । **सरियाह** – पूण हुये ।
११ **कूण** – कौन । १२ **पाप्यां** – पतित । **माथै बाध्यौ मोड** – शिरमोर होना, शिरोमणि ।

जहं जाऊं धुर धुर कर हम सूं भागे दूर ।
तुम सा दूजा को नही राखो राम हजूर ॥ १३

तुम समरथ शरणां लिया तुम सा दूजा नांहि ।
रामदास की वीनती, राखो तुम्हारी छांहि ॥ १४

हम दूवा का डर नहीं, सिर पर तुम्हारो जांहि ।
तुम हो ऐसी कीजिया पकड़ हमारी बांहि ॥ १५

तुम हो ऐसी कीजिये सुण हो राम दयाल ।
रामदास की वीनती मेटो जम का जाल ॥ १६

तुमरे शरण राखिये मेरा औगुण मेट ।
रामदास की वीनती मैं मांगू या भेट ॥ १७

रामदास की वीनती सुण हो मेरा बाप ।
चरणां राखो रामजी मेटो त्रिविध ताप ॥ १८

रामदास की वीनती शरण दीजे दीन ।
आठ पहर मोहि राखिये दरगा में आधीन ॥ १९

मेरे मन की तुम सुणो सुणो निरञ्जण राय ।
तुम हो ऐसी कीजिये जामण-मरण मिटाय ॥ २०

इति श्री वीनती को अंग

---

१३ [illegible]
१८ त्रिविध ताप — दैहिक दैविक भौतिक ।

अथ तन-मन माला को अंग

साखी

हिन्दू मुसलमान सू, सब सू न्यारा थाय ।
रामा मिलिया राम सू, केवल माहि समाय ।। १

षट-दरसण क्या भेष सब, क्या हिन्दू मुसलमान ।
रामदास सब एक है, पाचतत्त परवान ।। २

रामदास पख छाड दे, निरपख हो लिव लाय ।
पाचतत्त का प्राण है, दूजा कह्या न जाय ।। ३

गैबी खैले रामदास, मेरे अन्तर माहि ।
उलट समाणा ब्रह्म मे, दूजा कोऊ नाहि ।। ४

राम-रतन है रामदास, मेरे अन्तर माहि ।
अमर अमोलक हीर की, खाण खुली घट माहि ।। ५

रामदास ढूढत फिर्या, घर हीरा की हाट ।
ऐसा कोई ना मिलै, समझ बनावै साट ।। ६

हीरा घट मे नीपणा, निकसी निरभै खाण ।
रामदास पारख बिना, ग्राहक कोइ न जाण ।। ७

पदारथ पाणै पड्यौ, रामा राख दुराय ।
परखण हारै बाहिरौ, काढ'रु मती बताय ।। ८

रामा सब जग रक है, निरधन निपट कगाल ।
धनवता सो जानियै, हरि हीरा सा माल ।। ९

---

२ षट-दरसण–योग, साख्य, मीमासा, वेदान्त, न्याय और वैशेषिक आदि सभी मतावलबी ।
४ गैबी – रहस्यमय (परब्रह्म) ६ साट – आभूषण । ८ पाणै – हिस्से मे ।
९ धनवता – धनवान ।

धन मिलिया धोखा मिट्या पाया राम-दयाल ।
रामदास धनवंत भया भाज गया भय काल ॥ १०

रामदास चिंतामनी है मेरे घट माँहि ।
चाहै सो पल में कटै धोखो कोऊ नाँहि ॥ ११

रामदास सब कूं कह्यो सुणज्यो सब ससार ।
परख बिहूणा भादमी कौडी हृदा यार ॥ १२

इति श्री तन मन माला को अंग

[७१]

अथ माला को अ ग

साखी

मूरख माला रामदास फेरै हाथां माँहि ।
मुख सेती वार्ता करै ताकी गम कुछ नाँहि ॥ १

मुख सेती वार्ता करै भाखै आल-जजाल ।
माला फेर्‌यां रामदास परत न छाडै काल ॥ २

माला फेरै हाथ सूं मनवा चारै वाट ।
रामदास सिवरण बिना, सर्प न भौघट घाट ॥ ३

मन माला कूं फेर ले अंतर भीतर आण ।
रामदास सब मन धुपै, पावै पद निरवाण ॥ ४

माला फरै हाथ सूं मन की भ्रांति न जाय ।
रामा मूरख मानवी फर्‌यां कछू न थाय ॥ ५

माला फर्‌यां हाथ सूं ममता बहुत मचंत ।
रामदास मन समभ बिन लगे न हरि सूं हेत ॥ ६

मिणिया घडिया काठ का, धागै पोया सूत ।
इणी भरोसै रामदास, छोडै नहि जमदूत ।। ७

मन माला कू फेर लै, आठू पहर अराध ।
रामदास साई मिलै, तुरत कहावै साध ।। ८

माला कठी रामदास, तन ऊपर लपटाय ।
या बाता सू क्या हुवै, मिटै न मन की चाय ।। ९

रामा माला काठ की, पोय'रु दीनी गाठ ।
इण फेर्या सू क्या हुवै, मिटै न मन की बाठ ।। १०

भेष पहर हरिजन हुवा, कर सू माला फेर ।
मन फेर्या बिन रामदास, जवरौ लेसी घेर ।। ११

रामदास सतगुरु मिल्या, माला दई बताय ।
बिन हाथा निसदिन फिरै, आठू पहर अघाय ।। १२

मन माला कू फेर ले, सिवरो सास-उसास ।
रामदास इण फेरिया, करै ब्रह्म मे वास ।। १३

माला उलटी सुरति कर, तिलक किया हरि नाम ।
रामदास फेरै सदा, जह सता का गाम ।। १४

माला की निज नाम की, चेतन सिवरण लाय ।
तिलक दिया मोहि सत्तगुरू, दूजा दूर गमाय ।। १५

दूजा सब तन ऊपरै, देखण का व्यौहार ।
रामदास भीतर बिना, मिलै न सिरजणहार ।। १६

माला फेर्या क्या हुवै, हिरदा मैला थाय ।
रामदास उज्जल किया, मिलै निरजण-राय ।। १७

---

७ **घडिया** – निर्मित किये । **इणी** – इसी ।
१० **मन की बांठ** – मन मे पडी गाठ ।

उज्जल हू मन फरिया और दिष्ट का भेस ।
रामदास सिवरण बिना, मिल न अमर अलेख ।। १८

मूंड मुडावै रामदास केस कर सब दूर ।
केस कटाया क्या हुवा, हरि सूं रहग्या दूर ।। १९

रामदास मन मूंड ले इण मूंड्यां सिध होय ।
मन कूं मूंड्यां बाहिरो, कारज सर न कोय ।। २०

सब भेस बहुता करे भीतर धर न कोय ।
रामदास भीतर बिना राम न परसण होय ।। २१

भष जु धरिया रामदास फिरिया देस विदेस ।
सतगुरु मिलियां बाहिरो मिट न मन का क्लेस ।। २२

इति श्री साधा को अंग

[७६]

अथ कड़वी बेली को अंग

साखी

रामदास संसार सब कड़वी बेल कहाय ।
इणका फल सो इण जिसा कड़वा ही ठहराय ।। १

सिध बेलि सूं बीछड्या ऊसर थामी वास ।
रामदास न्यारा हुवा बहुरन ऊगण आस ।। २

रामदास बेली भली सो सींचै हरिनाम ।
जाय मिले परब्रह्म मे बहुर न ऊग ठाम ।। ३

---

२ सिध बेलि सूं बीछड्या – बेल के तन्तुओं से टूटने के पश्चात ।

जौ ऊगै तो रामदास, पलट कछू नहि जाय ।
जब तब मिलसी ब्रह्म मै, ऊगा सत कहाय ।। ४

इति श्री कडवी बोली को अग

*

[७७]

अथ बेली को अंग

साखी

रामा लाया लाकडी, जालण हदै काम ।
उदै ऊग बैठी हुई, बेल न तूबी नाम ।। १
रामा आगै दव बलै, पाछै गहरा थाय ।
धिन ऐसा वै रूख है, काट मूल फल खाय ।। २
काट्या तै गरजै घणी, सीच्या बिलखी थाय ।
रामा ऐसी बेल का, मो गुण कह्या न जाय ।। ३
धरती ऊपर बेलडी, फल लागा आकास ।
बाझड बालक जनमियौ, रामा बडौ विलास ।। ४

इति श्री बेली को अग

*

[७८]

अथ वेहद* को अंग

साखी

आप आप की हद्द मे, राम कहत सब लोय ।
वेहद लागा रामदास, सत कहीजै सोय ।। १

१ लाकडी – लकडी । ३ बिलखी – बिलखती है । वेहद – असीम, परब्रह्म ।

हद में जम दौला भया तीन-लोक गलपास ।
बेहद लागा रामदास सो महिय निज दास ॥ २

रामा हद का मानवी चौरासी का जीव ।
बेहद लागा सत है, पाया समरथ पीव ॥ ३

रामा हद का मिनख सूं प्रीत करो मत कोय ।
बेहद में आघा घस ता सूं असर खोय ॥ ४

हद का किला उठाय कर बेहद कीना वास ।
बेहद सूं राता रहै सो रामा निज दास ॥ ५

रामदास हद का घणा, काया कू लै घेर ।
सूरवीर बेहद गया, जनम न धारै फेर ॥ ६

हद में बैठा रामदास, कथणी कथै अपार ।
जब उलटा बेहद चढ़, बोलै नहीं लिगार ॥ ७

हद मे राम न पाइया कैसा पच-पच जाय ।
रामदास बेहद गया मिल्या निरञ्जन राय ॥ ८

रामदास बेहद गया तजिया विषै विलास ।
आठ पहर मैं रामजी एक सुमारी आस ॥ ९

रामदास बेहद गया मिलिया राम दयाल ।
आठ पहर चौसठ घडी ऐको सदा सुकाल ॥ १०

बेहद मांही रामदास रह्या राम भरपूर ।
आठ पहर चौसठ घडी एक-मेक निज नूर ॥ ११

सतगुरु के परताप सूं बेहद पहुच्या जाय ।
रामदास निरभ भया जामण-मरण मिटाय ॥ १२

इति श्री बेहद को अंग

*

---

१ हद – ससीम माया जगत। दौला – घेर लिया। ८ कैसा – कितने ही।

[७६]

अथ सुरत विचार को अंग

साखी

बुद्ध मिलै गुरुदेव सू, बुद्ध पिछाणै राम ।
जब तन-मन अरपण करै, सरै सकल ही काम ।। १

मन्न अराधै राम कू, निजमन माहि समाय ।
निज मन आगै रामदास, कूण मिलावै जाय ।। २

निज मन आगै रामदास, सुरत सबद अणरूप ।
तिरगुण रगी बिसतरी, तातै सुरत सरूप ।। ३

तिरगुण रगी सुरत है, बिवरा देउ बताय ।
रामदास बिवरा बिना, कैसे मन पतिआय ।। ४

पगा ललाई रामदास, धड हि सुरत का श्याम ।
सीस सुरत का सेत है, ताहि परै पद धाम ।। ५

पाव सुरत का किधर कू, कह धड रह्या समाय ।
सीस सुरत का किधर है, ताकी बिधी बताय ।। ६

पाव सुरत का मन्न है, धड निज मन आकास ।
सीस सुरत का सुन्य मे, को जाणै निज दास ।। ७

पाव उलट धड मे मिलै, धड हि सीस मे जाय ।
तिरगुण रगी मिट गई, सुरत ब्रह्म के माय ।। ८

---

१ सरै – पूरण होते हैं, बनते हैं । २ मन्न – राजसिक मन । निजमन – सात्विक मन ।
३ अणरूप – निर्गुण । तिरगुण रगी बिसतरी – सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण द्वारा सरूपी एव विस्तृत । ४ बिवरा – विवरण ।
५ पगां ललाई – चरणो मे लाली (अर्थात सुरत के रजोगुण रूपी चरण है)
धड हि सुरत का श्याम – सुरत का तमोगुण रूपी धड है ।
सीस सुरत का सेत – सुरत का सतोगुण रूपी सिर है ।
८ तमोगुण का रजोगुण मे, रजोगुण का सतोगुण मे एव सतोगुण का मूल प्रकृति मे विलय होकर प्रकृति का ब्रह्म मे लीन होना (गुणातीतावस्था) ।

सुरत निरत मिल एकठी रहे अधर घर छाय ।
रामदास जह सुरत है मनवा सकै न जाय ॥ ९

मन जह लग पहुचे नही निज-मन भी नहि जाय ।
सुरत सबद भी पलटग्या रामा ब्रह्म समाय ॥ १०

इति श्री सुरत विचार को अंग

★

[८]

अथ उभै को अंग

साखी

उत्तर दक्षिण त्याग कर मडै पूरब देस ।
पश्चिम पहुता रामदास सतगुरु के उपदेस ॥ १

बकनाल झरणा झरै चलै चहू दिस खाल ।
रामदास जिनही पिया लगै न जम का जाल ॥ २

मरु उलंघै रामदास सुणै अनाहद नाद ।
सुरत सबद परचा भया मिलै पूर्व घर आद ॥ ३

इला पिंगला सुषमना मिलै त्रिगुट्टी घाट ।
रामदास जह सू पड्या मुनिजन लहै न बाट ॥ ४

अन्तर प्रेम प्रकासिया अदर जागी जोत ।
रामदास जह मिल रह्या पाप पुन नहि छोत ॥ ५

---

९. एकठी – एकत्र ।

१ उत्तर दक्षिण त्याग कर – रसना कंठ एवं हृदय को छोड़ कर।
मडै पूरब देस – नाभि कमल मे साधना । पश्चिम पहुता – मेरुदंड की भेद कर पश्चिम मार्ग से त्रिगुटी मे पहुचना । २ खाल – नाले ।

३ पूर्व घर आद – आदि ब्रह्म का निवास । ५ पाप पुन – पाप-पुण्य से रहित होना (जीवन्मुक्तावस्था में पाप-पुण्य कर्मों का स्पर्श नही होता) ।

हद वेहद की सिंध मे, मिलै अष्ट ही कूट ।
रासदास ता ऊपरै, विष्णु देव बैकूठ ॥ ६

बाजा बाजै गैब का, अनहद घुरै निसाण ।
रामदास तहा परसिया, सकल ज्ञान दीवाण ॥ ७

कूट लोप आघा गया, बेहद पहुता जाय ।
महमाया के रामदास, चरण रह्या लपटाय ॥ ८

महमाया की गोद मे, बालक रया खिलाय ।
अमर खेलणौ रामदास, मिटै न मेट्यौ जाय ॥ ९

रामदास माता कहै, सुनिये पूत सपूत ।
तिहू लोक कू मै जिण्या, हम सू हुवा कपूत ॥ १०

रामदास माता कहै, साभलियै मुझ बाल ।
तुमहि आय हमसू मिल्या, और वध्या जम जाल ॥ ११

रामदास माता कहै, धिन तू मिलिया मोय ।
तिहू लोक कू मै जिण्या, हम कू लखै न कोय ॥ १२

रामदास माता कहै, साभलिये तुम सुत्त ।
तो सू कछू न राख हू, तान-लोक को वित्त ॥ १३

मेरे तो टोटो नही, रिध-सिध भर्या भडार ।
रामदास माता कहै, जो मागै सो त्यार ॥ १४

बालक हदी वीनती, साभलियै महमाय ।
और कछू मागू नही, देवो पिता बताय ॥ १५

रामदास माता कहै, साभलियै सुत बात ।
मो ऊपर खड सात मे, वहा तुमारा तात ॥ १६

---

६ अष्ट ही कूट – अष्ट कोण (आठ लोक)
८ कूट लोप – आठो लोको का अतिक्रमण कर के । महमाया – माया (विद्या रूप)
९ रया – रहा है । १० जिण्या – पैदा किया । १३ वित्त – धन ।
१४ त्यार – तैयार । टोटो – हानि ।

मैं भोलो समझू नहीं, मेर समझ न काय ।
बालक हंदी बीनती पिता जहां पहुचाय ॥ १७

बालक कू कड़िया लिया ले चाली महमाय ।
रामदास जोती मिल्या, जोती परकत मांय ॥ १८

परकत मिलगी सुन्य में सुन आतम के माइ ।
आतम मिल इच्छ्या मिली ता पर भाव कहाइ ॥ १९

भाव मिल्या परभाव में तापर केवल ब्रह्म ।
रामदास तासूं मिल्या, छूट गया सब भ्रम ॥ २०

बालक मिलिया बाप सू अंतर रही न कांण ।
रामदास जहां मिल रह्या समरथ पद निरबाण ॥ २१

पिता पकड़िया हाथ सू बाल रह्या लपटाय ।
अमर अधर-पद रामदास तिहु लोक के मांय ॥ २२

तीन लोक को पातसा समरथ दीन-दयाल ।
रामदास तासूं मिल्या लगै न जम का जाल ॥ २३

जम जाल लाग नहीं है अणभगी देस ।
रामदास जह मिल रह्या सतगुरु के उपदेस ॥ २४

तीन-लोक चवदै भवन उपजे अरु खप जाय ।
रामदास जहं मिल रह्या अमर अभगीराय ॥ २५

अमर पिता माता अमर अम्मर पूत कहाय ।
अमर देस में रामदास मरै न मार्यो जाय ॥ २६

हद बेहद तार्क परे ब्रह्म प्रगटया नूर ।
रामदास जह मिल रह्या निसा न ऊगै सूर ॥ २७

---

१८ कड़ियां – गोद । बीनति – निपुण ।

१९ परकत – प्रकृति की विषमावस्था । सुन्य – प्रकृति की साम्यावस्था ।
आतम – जीवात्मा । इच्छ्या – वासना ।

२० भाव – प्रेमभाव परभाव – ऐश्वर्य (सगुण रूप) केवल ब्रह्म – शुद्ध चैतन्य ब्रह्म ।

अरध-उरध का बीच मै, बहुता रह्या जु थाक ।
रामा केवल ब्रह्म मै, सत गया जह हाक ॥ २८

अरध-उरध के बीच मै, बहुता रह्या अलूझ ।
रामदास केवल मिल्या, मन का सूत सलूझ ॥ २९

हद बेहद का बीच मै, बहुता रह्या थकाय ।
रामा केवल ब्रह्म मै, कोई विरला जाय ॥ ३०

हद बेहद का बीच मै, बहुता हूवा साध ।
रामदास जहा चल गया, केवल ब्रह्म समाध ॥ ३१

उभै मिले एको भया, अतर रही न रेख ।
रामदास जहा मिल रह्या, जाका नाम अलेख ॥ ३२

इति श्री उभै को अग

*

[८१]

अथ माया ब्रह्म निर्णय को अंग

साखी

निराकार आकार का, रामा करो विचार ।
सबही एको ब्रह्म है, दुविधा धरै गिवार ॥ १

रामा ऐसा ब्रह्म है, ज्यूई वृक्ष कर जाण ।
छाया नीचे वृक्ष की, यू माया परवाण ॥ २

रामा छाया वृक्ष की, वृक्ष बिना नही होय ।
छाया बैठा मानवी, वृक्ष न जानै कोय ॥ ३

---

२८ हाक – चल कर । २९ अलूझ – उलझना । सलूझ – सुलझना ।
३२ उभै – उभय (जीव और ब्रह्म)
२ ज्यूई – जिसे, जैसे ।

वृक्ष ज्यूंई सो ब्रह्म है छाया माया होय ।
सतगुरु मिलिया बाहिरो कीमत लखै न कोय ॥ ४

छाया तो घट बध हुवे ज्यूं माया को भाय ।
रामा केवल ब्रह्म मैं घट बध कछू न थाय ॥ ५

ब्रह्म मिल्या सो ब्रह्म मै, माया मिल्या स'जीव ।
माया भासै रामदास कदै न पावै पीव ॥ ६

सुरगुण माया रामदास निरगुण ब्रह्म कहाय ।
पुरुष त्रिया को भाव है ऐसे रहे समाय ॥ ७

सुरगुण राता रामदास निरगुण की गम नाहिं ।
जब ही निरगुण सांभले, तब दुखिया मन माहिं ॥ ८

इति श्री माया ब्रह्म निर्णय को अंग

[८१]

अथ वृक्ष को अंग

साखी

बीज माँहि ज्यूं वृक्ष है वृक्ष माँहि विस्तार ।
रामदास विस्तार में सब उत्पत संसार ॥ १

वृक्ष बध्यो विस्तार कर, अनंत लगत है पात ।
पात-पात की रामदास न्यारी-न्यारी जात ॥ २

पात माँहि कलियां खुली कलियां रही फुलाय ।
रामदास फलियो सफल प्रम बीच फ पाय ॥ ३

---

६ भासै – भासित । ७ सुरगुण – सगुण । पुरुष त्रिया – पुरुष प्रकृति ।
१ उत्पत – उत्पन्न होना है ।

प्रेम सींचिया रामदास, पीवत डाली पान ।
राम कह्या तें सब सधैं, केती विध का ध्यान ॥ ४

पेड गुपत है रामदास, परगट सब विस्तार ।
दुनिया भूली छाह मे, सब माया की चार ॥ ५

जोग जिग जप तप सबै, तीरथ व्रत वैराग ।
राम कह्या ते सब सझै, जन रामा बडभाग ॥ ६

पडित सैणा जोतसी, विलम्या डाली पान ।
जग भरमायौ रामदास, उलट लगाया आन ॥ ७

तीन-लोक चवदै भवन, रह्या छाह कै माहि ।
रामदास छूटै नही, काल पकड ले जाहि ॥ ८

वृक्ष चढ्या सो ब्रह्म है, छाया रह्या सु जीव ।
रामदास पावै नही, सुपनै ही मे पीव ॥ ९

पेड पकड ऊचा चढ्या, सुख मे रह्या समाय ।
रामदास से सतजन, महा मोष फल खाय ॥ १०

बीज माहि ज्यू वृक्ष है, बीज वृक्ष के माहि ।
रामा सगत साध की, दुनिया जानै नाहि ॥ ११

बीज सुछम है रामदास, वायौ धरती माहि ।
सपत पयालू छेद कर, रह्या थेट ठहराय ॥ १२

चाली जडा पाताल कू, वृक्ष चढ्यो आकास ।
रामदास वा वृक्ष कू, कोइ जाणै निज दास ॥ १३

सुरत मरत पाताल मे, वृक्ष वध्यौ असराल ।
रामदास डाल्या चल्या, अनत लगत है टाल ॥ १४

---

५ माया की चार – माया का विस्तार । पेड़ – अव्यक्त ब्रह्म ।
७ विलम्या – भटक गये, बहक गये । १२ सपत पयालू – योग के अनुसार सात पताल । थेट – निर्दिष्ट स्थान पर ।

वृक्ष ज्यूंई तो ब्रह्म है छाया माया होय ।
सतगुरु मिलिया बाहिरो कीमत लखै न कोय ॥ ४

छाया सो घट बध हुवै ज्यूं माया को भाय ।
रामा केवल ब्रह्म में घट बध कछू न थाय ॥ ५

ब्रह्म मिल्या सो ब्रह्म में, माया मिल्या स जीव ।
माया भासै रामदास कदे न पावै पीव ॥ ६

सुरगुण माया रामदास, निरगुण ब्रह्म कहाय ।
पुरुष त्रिया को भाव है ऐसे रहे समाय ॥ ७

सुरगुण राता रामदास, निरगुण की गम नांहि ।
जब ही निरगुण साभलै, तब दुखिया मन मांहि ॥ ८

इति श्री माया ब्रह्म निर्णय को अंग

[८१]

अथ वृक्ष को अंग

साखी

बीज मांहि ज्यूं वृक्ष है वृक्ष मांहि विस्तार ।
रामदास विस्तार मैं सब उत्पत संसार ॥ १

वृक्ष बध्यो विस्तार कर, अनंत सगत है पात ।
पात पात की रामदास न्यारी-न्यारी जात ॥ २

पात मांहि कलियां खुली कलियां रही फुलाय ।
रामनाम फलियो सफल प्रेम सींच कै पाय ॥ ३

---

६ भासै – भासित । ७ सुरगुण – सगुण । पुरुष त्रिया – पुरुष प्रकृति ।
१ उत्पत – उत्पन्न होना है ।

जीव मिलाणा सीव मै, पलट हुवा निज ब्रह्म ।
हरिजन हरि तो एक है, रामा कहा है क्रम ।। ४

एक ब्रह्म सब बीच मै, ताका वार न पार ।
रामदास तासू मिल्या, दुवध्या दूर निवार ।। ५

इति श्री ब्रह्म एकता को अंग

[८४]

अथ ब्रह्म समाधि को अंग

साखी

मन पलट्या निज मन भया, लग्या त्रगुट्टी ध्यान ।
जो वासू उलटा पडै, उर उपजै अज्ञान ।। १

रामदास त्रगुटी चढ्या, मन का निज मन थाय ।
उलट पडै भव-सिंधु मै, विषय हलाहल खाय ।। २

त्रगुटी मे अनभै घणी, सिष शाखा जग मान ।
रामदास उनसू मिल्या, हुय जाय उणी समान ।। ३

बहुत दुलभ है रामदास, लघणा त्रगुटी घाट ।
जह माया मारै सही, विच मे पाडै वाट ।। ४

त्रगुटी पहुता साध कू, माया पकडै आय ।
उलट अपूठो घेर के, जम द्वारै ले जाय ।। ५

त्रगुटी मे माया घणी, विलमे चारू ओड ।
पलक विसारै राम कू, उपजै विघन किरोड ।। ६

---

६ चारू ओड – चारो ओर ।

तीन-लोक चवद भवन वक्ष रह्यो गरजाय ।
रामदास फूल्यो बहुत, लग्यो अगम कूं जाय ॥ १५

आठ कूंट में फलियो, अगम निगम विस्तार ।
रामदास चढ़ देखियो, वृक्ष वार नहीं पार ॥ १६

वार पार दीसे नहीं देख अचभा होय ।
रामदास ता वक्ष पर सतगुरु चाढ्या मोय ॥ १७

सिष शाखा बहुता लग्या बहुत लगत है साख ।
बहुत हंस निरभ भया, एक राम कूं भाख ॥ १८

पेड राम है रामदास वृक्ष बहुत विस्तार ।
अनंत कोट ऊंचा चढ्या, गुरु मुख ज्ञान विचार ॥ १९

इति श्री वृक्ष को अंग

*

[७२]

अथ ब्रह्म एकता को अंग

साखी

सुरगुण निरगुण रामदास सूं एको कर जाण ।
एक ब्रह्म सब बीच में समरथ पद निरवाण ॥ १

सुरगुण माया रामदास निरगुण मांहि समाय ।
एक ब्रह्म विस्तार है दूजा कह्या न जाय ॥ २

पाला गल पाणी हुआ जीव पलट हुय ब्रह्म ।
निरगुण सुरगुण एक हुय रामा छूटा भ्रम ॥ ३

---

१५. गरजाय – फैल रहा है। १७ मोय – मुझे।
१८ हंस – आत्मा।

मिली पियारी पीव सू, रही ब्रह्म सू रत्त ।
लागी सुरत समाधि मे, रामा नाम निरत्त ।। १६

सैजो छूटो गिगन मे, चल्या प्रेम का खाल ।
रामदास बिरखा लगी, बारै मास सुकाल ।। २०

ररकार दरियाब है, जाय मिलै निज दास ।
सलिल समाणी सिधु मे, छूटी तन की आस ।। २१

ररकार गुरुदेव है, चेला सुरत कहाय ।
अरस परस हुय हिल मिलं, नीरो नीर मिलाय ।। २२

सुरत मिली जहा ब्रह्म है, रही अधर घर छाय ।
मनछा वाछा करमना, तीनू सके न जाय ।। २३

सुरत मिली जहा ब्रह्म है, मिटिया आल-जजाल ।
नीद भूख तिरषा नही करम काम नहिं काल ।। २४

सुरत निरत मिल एक घर, बनी अपरबल बात ।
रामदास जह ब्रह्म है, तहा नही दिन-रात ।। २५

रात दिवस की गम नही, दुख सुख सासा नाहिं ।
सुरत मिली जहा ब्रह्म है, वार पार पद माहिं ।। २६

मन पवना नहि तेज पुज, नही चद अरु सूर ।
रामदास जहा बदगी, रहे ब्रह्म भरपूर ।। २७

सुरत मिली जहा ब्रह्म है, आद आपणा सैण ।
कथणी दीसे रामदास, ज्यू बालक मुख बैण ।। २८

कथनी बकणी रामदास, ज्यूं धूवा का लूर ।
परम जोत परसण भई, एकमेक निज नूर ।। २९

---

२२ नीरो नीर – पानी में पानी ।

२३ मनछा वाछा करमना – मनसा, वाचा, कर्मणा ।

काम क्रोध मद लोभ वहु, चित बुध मन अहंकार ।
त्रगुटी पहुता साधु सू सब झालें तरवार ॥ ७

पिंड ब्रह्मंड कू जीत कर, मडै त्रगुटी जाय ।
सूरवीर से रामदास त्रगुटी जूझ मचाय ॥ ८

त्रगुटी रण संग्राम में, कायर खसे हार ।
सूरवीर से रामदास सुन्य मिलै सिरदार ॥ ९

त्रगुटी पहुचे रामदास, कोइक विरला सूर ।
जाय मिलै सुन सहज मैं, ता मुख सेती नूर ॥ १०

इला पिंगला सुषमणा मिलै त्रगुटी माँहि ।
सुरत मिली जहाँ ब्रह्म है जहा मैं तीनू नाँहि ॥ ११

इला पिंगला सुषमणा रहै आपणी ठौर ।
सुरत मिली जह ब्रह्म है जहाँ अमर घर और ॥ १२

पूरब मिलै पश्चिम मैं उत्तर दखिन मिलाय ।
त्रगुटी में सब ही मिलै, जहाँ लग हद कहाय ॥ १३

हद वेहद की सिंध मैं सब काहू का मेल ।
सुरत मिली वेहद मैं जहाँ न दूजा भेल ॥ १४

त्रगुटी लग आकार है ताहि परै निरकार ।
रामदास महा कीण हुय लगी सुरत निरधार ॥ १५

सब गुण पाया रामदास त्रगुटी सिंध मझार ।
सुरत मिली जहाँ ब्रह्म है अरस परस दीदार ॥ १६

रामदास त्रगुटी पर, रणकार का राज ।
सुरत मिली जहाँ ब्रह्म है एक ब्रह्म महाराज ॥ १७

सुरत मिली जहाँ ब्रह्म है, रही निरासा मंड ।
रामदास लिवलीन हुय आठू पहर अखंड ॥ १८

---

८. मंडै – ठहरे हैं। १४ भेल – मिश्रण।

त्रगुटी पहुता साधु कू, वा घर को गम नाहि ।
रामदास सो जानसी, मिल्या ताहि घर माहि ।। ४२

त्रगुटी पहुता साधु कू, है वो मारग दूर ।
रामदास बीती कहै, पहुचैगा निज सूर ।। ४३

त्रगुटी चढ फूलै मती, आगै मारग झीण ।
रामदास सो पहुचसी, हुय लागै लिवलीण ।। ४४

त्रगुटी चढ गरवै मती, आगे पथ अपार ।
रामदास सो परससी, हुय लागै निरधार । ४५

निरधारा आधार है, ररकार करतार ।
सता परसै रामदास, मिल्या ब्रह्म दीदार ।। ४६

रामदास उन देस की, कोइक जाणै साध ।
स्वामी सेवग एक हुय, कहिये सत्त समाध ।। ४७

इति श्री ब्रह्म समाधि को अग

श्री आचार्य कृत अग सम्पूर्ण

दोय अक्षर आराध कर जाय मिले दरगाह ।
जह अण अक्षर रामदास नहीं दोय का राह ॥ ३०

दोयां सूं एकै भया, एकै मिल्या अलेख ।
सुरत निरत बिच रामदास, अन्तर रही न रेख ॥ ३१

सुरत समाणी निरत में आगे सुन का देस ।
रामदास आतम इच्छा, भाव किया परवेस ॥ ३२

सुरत निरत कहुतब नहीं नहीं गिगन घर रूप ।
लखणा में आव नहीं ऐसा तत अनूप ॥ ३३

बुद्धि जहां पहुच नहीं सुरत न सक्क जाय ।
रामदास धिन सतजन, तहां रहे लिव लाय ॥ ३४

पछी खोज जल मीन गत मारग दीसै नांय ।
रामा सुन्य समाधि में ऐसी भीरा कहाय ॥ ३५

भाव मिल्या परभाव मे, लागी सुन्य समाधि ।
पिंड न्यारा दीसै नही देखे ब्रह्म अगाध ॥ ३६

बिना देह जहां देव है बिन जिभ्या को जाप ।
बिना दिष्ट जहा देखबो रामा आपो आप ॥ ३७

दिष्ट मुष्ट आवै नहीं नही रूप रग रेख ।
पहोपवास सू पतला ऐसा अमर अलेख ॥ ३८

परभाव परमाव मिल मिले निरजण राय ।
रामदास मिल ब्रह्म कूं आवागवण मिटाय ॥ ३९

एक-एक सूं मिल रह्या एक-एक की साम ।
रामदास मिल ब्रह्म में ऐसो ब्रह्म अजास ॥ ४०

महिमा सुन्य समाधि की कहियै कहा बनाय ।
महिमा का मान नहीं दीठां ही पतयाय ॥ ४१

---

३३ लखणा में – देखन में । ३८ पहोपवास – पुष्प की सुगन्ध ।

त्रगुटी पहुता साधु कू, वा घर को गम नाहि ।
रामदास सो जानसो, मिल्या ताहि घर माहि ॥ ४२

त्रगुटी पहुता साधु कू, है वो मारग दूर ।
रामदास बीती कहै, पहुचैगा निज सूर ॥ ४३

त्रगुटी चढ फूलै मती, आगै मारग भीण ।
रामदास सो पहुचसी, हुय लागै लिवलीण ॥ ४४

त्रगुटी चढ गरवै मती, आगे पथ अपार ।
रामदास सो परससी, हुय लागै निरधार । ४५

निरधारा आधार है, ररकार करतार ।
सता परसै रामदास, मिल्या ब्रह्म दीदार ॥ ४६

रामदास उन देस की, कोइक जाणै साध ।
स्वामी सेवग एक हुय, कहिये सत्त समाध ॥ ४७

इति श्री ब्रह्म समाधि को अग

श्री आचार्य कृत अग सम्पूर्ण

दोय अक्षर आराध कर, जाय मिलै दरगाह ।
जहं अण अक्षर रामदास नही दोय का राह ॥ ३०

दोयां सूं एकै भया, एकै मिल्या अलेख ।
सुरत निरत बिच रामदास अन्तर रही न रेख ॥ ३१

सुरत समाणी निरत में आगे सुन का देस ।
रामदास आतम इच्छा, आय किया परवेस ॥ ३२

सुरत निरत कहुतब नहीं, नहीं गिगन अर रूप ।
लखणा में आय नहीं ऐसा तत्त अनूप ॥ ३३

बुद्धि जहां पहुचे नही सुरत न सक्कै जाय ।
रामदास बिन सतजन तहां रहे लिव लाय ॥ ३४

पक्षी खोज जल मीन गत मारग दीसै नांम ।
रामा सुन्य समाधि में ऐसी भीरा कहाय ॥ ३५

भाव मिल्या परभाव में लागी सुन्य समाधि ।
पिंड न्यारा दीसै नहीं देखे ब्रह्म अगाध ॥ ३६

बिना देह जहां देव है बिन जिभ्या को जाप ।
बिना दिष्ट जहां देखबो रामा आपो आप ॥ ३७

दिष्ट मुष्ट आवै नही नहीं रूप रग रेख ।
पहोपवास सूं पत्तला ऐसा अमर अलेख ॥ ३८

परभाव परभाव मिल मिले निरंजण राय ।
रामदास मिल ब्रह्म कूं आवागवण मिटाय ॥ ३९

एक-एक सूं मिल रह्या एक-एक की आत ।
रामदास मिल ब्रह्म में ऐको ब्रह्म अजात ॥ ४०

महिमा सुन्य समाधि की कहियै कहा बनाय ।
कहियां को आमै नही दीठां ही पतआय ॥ ४१

---

३३ लखणा में – देखने में । ३८ पहोपवास – पुष्प की सुगन्ध ।

[२]

अथ चाह* को प्रसंग

साखी

चाह चूहडी रामदास, सब कू भीट्या आय ।
या सू जो न्यारा रह्या, उत्तम सोइ कहाय ।। १

सिप सापा वहुता करै, अतर राखै आस ।
रामदास सिवरण बिना, गल मै पडसी फास ।। २

रामसनेही सीस पर, सब सता का दास ।
रामदास मिल राम सू, आडा फद न फास ।। ३

पाचू इद्री बस करी, अतर प्रगट्या राम ।
रामदास सुन सहज मै, मन पाया विसराम ।। ४

इति श्री चाह को प्रसग

*

[३]

अथ तकिया को प्रसंग

साखी

रामदास आकास मै, आसण कीया जाय ।
जह जोगी अजपा जपै, उनमुन-मुद्रा लाय ।। १

तकिया मडिया सुन्य मै, जह जा पढी निवाज ।
रामदास जिदो करै, निस दिन एक अवाज ।। २

---

*चाह – इच्छा (कामना) १. चूहडी – भगिन । भींट्या – छू लिया ।
२ जिंदो – मौलवी ।

अथ प्रसंग लिखते

अथ घर अंबर को प्रसंग

साखी

रामदास रामत करै, घर अंबर के बीच ।
पांच पचीसां ऊपरै सदा रहौ अघ जीत ॥ १

पांच पचीसू जीत कर, जाय नुवाए सीस ।
रामदास आदर दियां आण मिल्या जगदीस ॥ २

गुना सून सब बगसिया, भगति पटा भरपूर ।
सदा हजूरी रामदास निमष न जावै दूर ॥ ३

तीन-लोक चवदै भवन दिया पांव के हेठ ।
रामदास हरि सूं मिल्या, दरगै पहुता धठ ॥ ४

अरस परस दरगाह मैं, निरख असादा नूर ।
रामा चाकर ब्रह्म का, आठू पहर हजूर ॥ ५

रिध-सिध दासी रामदास साम करी बगसीस ।
खावौ अरु विलसौ सदा रता रहौ जगदीस ॥ ६

भूठो देही रामदास या सूं कसी प्रीत ।
देही में दाता बसै ताकौ कर लौ मीत ॥ ७

मीत किया तें रामदास देह करै बगसीस ।
अमर लोक मैं अमर हुय अरस परस जगदीस ॥ ८

जीव मिलै जगदीस मैं होय आप करतार ।
रामदास अम्मर हुया मरै न दूजी बार ॥ ९

इति श्री घर अंबर को प्रसंग

---

१ रामत – खेल । ३ गुना – गुनाह । बगसिया – क्षमा कर दिये । निमष – क्षण ।
४ हेठ – नीचे । ५ असादा – अस्साह का (परब्रह्म)
६ साम – परमात्मा । बगसीस – भेंट ।

अथ छुटकर* साखी लिखते

साखी

सूरज ऊगा मड मै, तारा सब छाया ।
रात गमाई रामदास, सतगुरु सत पाया ।। १

कमर बधाई सत्तगुरू, रामदास हुय सूर ।
काया गढ कायम किया, घुरै अनाहद तूर ।। २

तखत विराज्या रामदास, हुवा भोमिया रद्द ।
आठ पहर चौसठ घडी, सदा एक ही मद्द ।। ३

राम कह्या सबही सझ्या, सबहि राम के माहि ।
रामदास इक राम बिन, दूजा कोऊ नाहि ।। ४

गाव खेडापै जावता, जाभी छाछ'रु घाट ।
दूध दही घृत मोकला, भरिया रहसी माट ।। ५

खेडापै मे खीर, दूध दही घृत मोकला ।
नाम नरायण नीर, अमृत सो पीजै सदा ।। ६

अम्बर दूजै भूत कमावै, कह्या वचन गुरुदेव ।
रामदास सासो तजौ, करौ सता की सेव ।। ७

पाचू सुवटा उलट कर, पढै एक नित नाम ।
रामदास आतुर घणी, मना नही विसराम ।। ८

---

*छुटकर – स्फुट । ३ भोमिया – जागीरदार विशेष ।

५ जाभी – खूब । माट – मटके ।

७ अम्मर दूजै – हरि इच्छा से धन-प्राप्ति । भूत कमावै – आचार्य धाम मे, पहले जहा श्री रामदासजी महाराज ने पदार्पण किया था, वहा पहिले एक भैरव निवास करता था। महाराज के तेज को सहन न कर के वह महाराज की शरण मे आ गया एव महाराज ने उसे दीक्षित कर के श्री खेडापा की सीमा मे प्रेतों को न आने की आज्ञा प्रदान करदी तब ही से श्री खेडापा धाम की सीमा मे प्रवेश होते ही प्रेत वाधा दूर हो जाती है, अत प्रेत वाधा-ग्रसित हजारो दुखी मानव वहा आकर शाति प्राप्त करते हैं ।

मन मुल्ला मसजीद में निस दिन देवे बांग ।
रामदास रब रग लग्या, दूजा और न सांग ॥ ३

रामदास माया पर, मठ बधाया जाय ।
जह तपसी तपस्या कर राज ब्रह्म को पाय ॥ ४

आसा तज अस्थल किया, हरिजन भये निरास ।
बिन रसना सिवरण हुवे जन रामा निज दास ॥ ५

जह जोगी जिवा नहीं ना स्वामी वराग ।
रामदास जहां ब्रह्म है जाके ग्रह न त्याग ॥ ६

जह आसण तकिया नहीं मठ अस्थल भी नांहि ।
रामदास जहां ब्रह्म है, जीव मिलाणा मांहि ॥ ७

जीव सीव मिल एकता कहबो सुणबो नांहि ।
रामदास ऐसा मिले, पाणी-पाणी मांहि ॥ ८

प्राण हमारा रामदास चल्या पयालां जाय ।
सपत पयालूं छेद कर, रहे पेट ठहराय ॥ ९

उलट प्राण पश्चिम दिसा मढे मेरु निज सूर ।
रामदास बाजा बज घुरे अनाहद तूर ॥ १०

मेरु जीण आकास हुय चढ्या त्रगुटी जाय ।
रामदास जहां ध्यान धर तीन मिलाणा माय ॥ ११

चली सुरत असमान कूं गिगन रह्या ठहराय ।
रामदास सुन सेज में, रह्या एक लिव लाय ॥ १२

होठ कंठ रसना नहीं नहि ब्रह्मांड बैराट ।
रामदास लिव जहं लगी, नर सुर लहै न बाट ॥ १३

गिगन गुफा में रामदास आसण कीया जाय ।
ओअंकार अजपा नहीं जहां रहे लिव लाय ॥ १४

इति श्री तकिया को प्रसंग

---

९ आसन – साधु का आसन ।
११ तीन – त्रिगुण । १३ बैराट – विराट ।

मन्द तो पोद्दार

अथ छुटकर* साखी लिखते

साखी

सूरज ऊगा मड मै, तारा सब छाया ।
रात गमाई रामदास, सतगुरु सत पाया ।। १

कमर बधाई सत्तगुरू, रामदास हुय सूर ।
काया गढ कायम किया, घुरै अनाहद तूर ।। २

तखत विराज्या रामदास, हुवा भोमिया रद्द ।
आठ पहर चौसठ घडी, सदा एक ही मद्द ।। ३

राम कह्या सबही सझ्या, सबहि राम के माहि ।
रामदास इक राम बिन, दूजा कोऊ नाहि ।। ४

गाव खेडापै जावता, जाभी छाछ'रु घाट ।
दूध दही घृत मोकला, भरिया रहसी माट ।। ५

खेडापै मे खीर, दूध दही घृत मोकला ।
नाम नरायण नीर, अमृत सो पीजै सदा ।। ६

अम्बर दूजै भूत कमावै, कह्या वचन गुरुदेव ।
रामदास सासो तजौ, करौ सता की सेव ।। ७

पाचू सुवटा उलट कर, पढै एक नित नाम ।
रामदास आतुर घणी, मना नही विसराम ।। ८

---

*छुटकर – स्फुट । ३ भोमिया – जागीरदार विशेष ।

५ जाभी – खूब । माट – मटके ।

७ अम्मर दूजै – हरि इच्छा से धन-प्राप्ति । भूत कमावै – आचार्य धाम में, पहले जहां श्री रामदासजी महाराज ने पदार्पण किया था, वहा पहिले एक भैरव निवास करता था। महाराज के तेज को सहन न कर के वह महाराज की शरण मे आ गया एव महाराज ने उसे दीक्षित कर के श्री खेडापा की सीमा में प्रेतों को न आने की आज्ञा प्रदान करदी तब ही से श्री खेडापा धाम की सीमा मे प्रवेश होते ही प्रेत वाधा दूर हो जाती है, अत प्रेत वाधा-ग्रसित हजारों दु खी मानव वहा आकर शाति प्राप्त करते हैं।

मन मुल्ला मसजीद में निस दिन देवे बांग ।
रामदास रब रग लग्या, दूजा और न सांग ॥ ३

रामदास माया पर, मठ्ठ बधायो जाय ।
जह तपसी तपस्या कर, राज ब्रह्म को पाय ॥ ४

आसा तज अस्थल किया, हरिजन भये निरास ।
बिन रसना सिवरण हुवै जन रामा निज दास ॥ ५

जहं जोगी जिंदा नहीं ना स्वामी वैराग ।
रामदास जहां ब्रह्म है जाके ग्रेह न त्याग ॥ ६

जह आसण तकिया नहीं मठ अस्थल भी नांहि ।
रामदास जहां ब्रह्म है, जीव मिलाणा मांहि ॥ ७

जीव सीव मिल एकता, कहबो सुणबो नांहि ।
रामदास ऐसा मिले पाणी-पाणी मांहि ॥ ८

प्राण हमारा रामदास चल्या पयालां जाय ।
सपत पयालूं छेद कर रहे पेट ठहराय ॥ ९

उलट प्राण पश्चिम दिसा अबे मेरु निज सूर ।
रामदास बाजा बज घुर अनाहद तूर ॥ १०

मेरु बीन आकास हुय चढ्या त्रगुटी जाय ।
रामदास जहां ध्यान धर तीन मिलाणा माय ॥ ११

चली सुरत असमान कूं गिगन रह्या ठहराय ।
रामदास सुन सेज में रह्या एक लिव लाय ॥ १२

होठ कंठ रसना नहीं महि ब्रह्मांड वैराट ।
रामदास लिव जहं लगी नर सुर लहै न माट ॥ १३

गिगन गुफा में रामदास आसण कीया जाय ।
ओंकार अजपा नहीं, जहां रहे लिव लाय ॥ १४

इति श्री तकिया को प्रसंग

---

५ आसण – साधु का आसन ।
११ तीन – त्रिगुण । १३ वैराट – विराट ।

अथ छुटकर* साखी लिखते

साखी

सूरज ऊगा मड मै, तारा सब छाया ।
रात गमाई रामदास, सतगुरु सत पाया ।। १

कमर बधाई सत्तगुरू, रामदास हुय सूर ।
काया गढ कायम किया, घुरै अनाहद तूर ।। २

तखत विराज्या रामदास, हुवा भोमिया रद्द ।
आठ पहर चौसठ घडी, सदा एक ही मद्द ।। ३

राम कह्या सबही सझ्या, सबहि राम के माहि ।
रामदास इक राम बिन, दूजा कोऊ नाहि ।। ४

गाव खेडापै जावता, जाभी छाछ'रु घाट ।
दूध दही घृत मोकला, भरिया रहसी माट ।। ५

खेडापै मे खीर, दूध दही घृत मोकला ।
नाम नरायण नीर, अमृत सो पीजै सदा ।। ६

अम्बर दूजै भूत कमावै, कह्या वचन गुरुदेव ।
रामदास सासो तजौ, करौ सता की सेव ।। ७

पाचू सुवटा उलट कर, पढै एक नित नाम ।
रामदास आतुर घणी, मना नही विसराम ।। ८

---

*छुटकर – स्फुट । ३ भोमिया – जागीरदार विशेष ।

५ जाभी – खूब । माट – मटके ।

७ अम्बर दूजै – हरि इच्छा से धन-प्राप्ति । भूत कमावै – आचार्य धाम में, पहले जहा श्री रामदासजी महाराज ने पदार्पण किया था, वहा पहिले एक भैरव निवास करता था। महाराज के तेज को सहन न कर के वह महाराज की शरण मे आ गया एव महाराज ने उसे दीक्षित कर के श्री खेडापा की सीमा मे प्रेतो को न आने की आज्ञा प्रदान करदी तब ही से श्री खेडापा धाम की सीमा मे प्रवेश होते ही प्रेत बाधा दूर हो जाती है, अत प्रेत बाधा-ग्रसित हजारो दुःखी मानव वहा आकर शाति प्राप्त करते हैं ।

मन मुल्ला मसजीद में, निस दिन देवे बांग ।
रामदास रच रग लग्या, दूजा और न सांग ॥ ३

रामदास माया पर, मट्ठ बधायो आय ।
जह तपसी तपस्या करे राज ब्रह्म को पाय ॥ ४

आसा तज अस्थल किया हरिजन भये निरास ।
बिन रसना सिवरण हुवै जन रामा निज दास ॥ ५

जह जोगी जिंदा नहीं ना स्वामी वैराग ।
रामदास जहां ब्रह्म है, जाकै ग्रह न त्याग ॥ ६

जह आसण तकिया नहीं मठ अस्थल भी नांहि ।
रामदास जहा ब्रह्म है, जीव मिलाणां मांहि ॥ ७

जीव साव मिल एकता, कहबो सुणबो नांहि ।
रामदास ऐसा मिलै, पाणी-पाणी मांहि ॥ ८

प्राण हमारा रामदास चल्या पयालां जाय ।
सपत पयालूं छेद कर, रहे पेट ठहराय ॥ ९

उलट प्राण पश्चिम दिसा मढे मेरु निज सूर ।
रामदास बाजा बज धुरे अनाहद तूर ॥ १०

मेरु डीन आकास हुय चढ्या त्रगुट्टी जाय ।
रामदास जहा ध्यान घर तीन मिलाणा माय ॥ ११

चली सुरत असमान कूं गिगन रह्या ठहराय ।
रामदास सुन सेष में रह्या एक लिव लाय ॥ १२

होठ कंठ रसना नही नहि ब्रह्मांड वैराट ।
रामदास लिव जह लगी नर सुर लहै न वाट ॥ १३

गिगन गुफा में रामदास आसण कीया धाम ।
ओउंकार अजपा नहीं जहां रहे लिव लाय ॥ १४

इति श्री तकिया को प्रसंग

---

५ अस्थल – साधु का आश्रम ।
११ तीन – त्रिगुण । १३ वैराट – विराट ।

अथ छुटकर* साखी लिखते

साखी

सूरज ऊगा मड मै, तारा सब छाया ।
रात गमाई रामदास, सतगुरु सत पाया ।। १

कमर बधाई सत्तगुरू, रामदास हुय सूर ।
काया गढ कायम किया, घुरै अनाहद तूर ।। २

तखत विराज्या रामदास, हुवा भोमिया रद्द ।
आठ पहर चौसठ घडी, सदा एक ही मद्द ।। ३

राम कह्या सबही सझ्या, सबहि राम के माहि ।
रामदास इक राम बिन, दूजा कोऊ नाहि ।। ४

गाव खेडापै जावता, जाभी छाछ'रु घाट ।
दूध दही घृत मोकला, भरिया रहसी माट ।। ५

खेडापै मे खीर, दूध दही घृत मोकला ।
नाम नरायण नीर, अमृत सो पीजै सदा ।। ६

अम्बर दूजै भूत कमावै, कह्या वचन गुरुदेव ।
रामदास सासो तजो, करो सता की सेव ।। ७

पाचू सुवटा उलट कर, पढै एक नित नाम ।
रामदास आतुर घणी, मना नही विसराम ।। ८

---

*छुटकर – स्फुट । ३ भोमिया – जागीरदार विशेष ।
५ जाभी – खूब । माट – मटके ।
७ अम्मर दूजै – हरि इच्छा से धन-प्राप्ति । भूत कमावै – आचार्य धाम में, पहले जहां श्री रामदासजी महाराज ने पदार्पण किया था, वहा पहिले एक भैरव निवास करता था। महाराज के तेज को सहन न कर के वह महाराज की शरण मे आ गया एव महाराज ने उसे दीक्षित कर के श्री खेडापा की सीमा मे प्रेतों को न आने की आज्ञा प्रदान करदी तब ही से श्री खेडापा धाम की सीमा मे प्रवेश होते ही प्रेत वाधा दूर हो जाती है, अत प्रेत वाधा-ग्रसित हजारो दु खी मानव वहा आकर शाति प्राप्त करते हैं ।

मन मुल्ला मसजीद में निस दिन देवे बांग ।
रामदास रस रग लग्या, दूजा और न सांग ॥ ३

रामदास माया पर, मठु बधाया आय ।
जहं तपसी तपस्या करै राज ब्रह्म को पाय ॥ ४

आसा तज अस्थल किया हरिजन भये निरास ।
बिन रसना सिमरण हुय जन रामा निज दास ॥ ५

जह जोगी जिंदा नहीं ना स्वामी बैराग ।
रामदास जहां ब्रह्म है जाक ग्रेह न त्याग ॥ ६

जह आसण तकिया नहीं मठ अस्थल भी नांहि ।
रामदास जहां ब्रह्म है, जीव मिलाणा मांहि ॥ ७

जीव सीव मिल एकता, कहबो सुणबो नांहि ।
रामदास ऐसा मिलै पाणी-पाणी मांहि ॥ ८

प्राण हमारा रामदास चल्या पयालां जाय ।
सपत पयालूं छेद कर, रहे घेट ठहराय ॥ ९

उलट प्राण पश्चिम दिसा मडे मेरु निज सूर ।
रामदास बाजा बज धुर अनाहद सूर ॥ १०

मेरु बीण आकास हुय चढ्या त्रगुट्टी जाय ।
रामदास जहां ध्यान धर तीन मिलाणा माय ॥ ११

चली सुरत असमान कूं गिगन रह्या ठहराय ।
रामदास सुन सेज में रह्या एक लिव लाय ॥ १२

होठ कठ रसना नही नहि ब्रह्मांड बराट ।
रामदास लिव जह लगी नर सुर लहै न बाट ॥ १३

गिगन गुफा में रामदास आसण कीया आय ।
ओउंकार अजपा नहीं जहां रहे लिव लाय ॥ १४

इति श्री तकिया को अंग

९ अस्थल – साधु का आश्रम ।
११ तीन – त्रिगुण । १३ बैराट – विराट ।

अथ छुटकर* साखी लिखते

साखी

सूरज ऊगा मड मै, तारा सब छाया ।
रात गमाई रामदास, सतगुरु सत पाया ॥ १

कमर बधाई सत्तगुरू, रामदास हुय सूर ।
काया गढ कायम किया, घुरै अनाहद तूर ॥ २

तखत विराज्या रामदास, हुवा भोमिया रद्द ।
आठ पहर चौसठ घडी, सदा एक ही मद्द ॥ ३

राम कह्या सबही सझ्या, सबहि राम के माहि ।
रामदास इक राम बिन, दूजा कोऊ नाहि ॥ ४

गाव खेडापै जावता, जाभी छाछ'रु घाट ।
दूध दही घृत मोकला, भरिया रहसी माट ॥ ५

खेडापै मे खीर, दूध दही घृत मोकला ।
नाम नरायण नीर, अमृत सो पीजै सदा ॥ ६

अम्बर दूजै भूत कमावै, कह्या वचन गुरुदेव ।
रामदास सासो तजौ, करौ सता की सेव ॥ ७

पाचू सुवटा उलट कर, पढै एक नित नाम ।
रामदास आतुर घणी, मना नही विसराम ॥ ८

---

*छुटकर – स्फुट । ३ भोमिया – जागीरदार विशेष ।

५ जाभी – खूब । माट – मटके ।

७ अम्मर दूजै – हरि इच्छा से धन-प्राप्ति । भूत कमावै – आचार्य धाम में, पहले जहा श्री रामदासजी महाराज ने पदार्पण किया था, वहा पहिले एक भैरव निवास करता था। महाराज के तेज को सहन न कर के वह महाराज की शरण मे आ गया एव महाराज ने उसे दीक्षित कर के श्री खेडापा की सीमा मे प्रेतो को न आने की आज्ञा प्रदान करदी तब ही से श्री खेडापा धाम की सीमा मे प्रवेश होते ही प्रेत वाधा दूर हो जाती है, अत प्रेत वाधा-ग्रसित हजारो दुखी मानव वहा आकर शाति प्राप्त करते हैं ।

शुभ अशुभ जाणू नही, पाप पुन्न मै नाहि ।
रामा बालक ब्रह्म का, सदा ब्रह्म के माहि ॥ २०

ब्रह्म हमारै तन्न मै, रूम-रूम भरपूर ।
रामदास मिल रम रह्या, अरस परस निज नूर ॥ २१

राम पधार्या मुज्झ मै, मुझहि राम के माहि ।
रामदास रामै मिल्या, दूजा कोई नाहि ॥ २२

सिर ऊपर साहिब खडा, समरथ रामदयाल ।
रामदास सासो तजौ, कदै न व्यापै काल ॥ २३

काल जाल व्यापै नही, अटल राम का राज ।
रूम-रूम बिच रम रह्या, रामदास महाराज ॥ २४

दरसण दीसै रासदास, देखत जाय विलाय ।
या सेती क्या पूजियै, पूज्या खोटा थाय ॥ २५

दिष्ट-मुष्ट आवै नही, मुष्टी गह्या न जायं ।
रामा ऐसा ब्रह्म हैं, ताहि रहो लिव लाय ॥ २६

जाकै हिरदै हरि बसै, ताकै तोटो नाहि ।
रामदास सिवरण करौ, रिध-सिध याकै माहि ॥ २७

जाकै हिरदै राम है, तिहू लोक को नाथ ।
रामदास सिवरण करौ, दूजी किसी अनाथ ॥ २८

नाड-नाड सिवरण करै, रामो राम पुकार ।
रामदास अजपा हुवै, विरला जाणै सार ॥ २९

रामदास सिर ऊपरै, समरथ दीनदयाल ।
तीन-लोक मे सुख घणौ, कदै न व्यापै काल ॥ ३०

रिध-सिध चरणा साध के, साध राम के माहि ।
रामदास तौटो नही, जहा हरीजन जाहि ॥ ३१

२७ तोटो – हानि।

रामदास मना पढ़, चढ़ कर दसवें द्वार।
अंतर में आतुर घणी निस-दिन एक पुकार ॥ ९

मात पिता बिच रामदास निरभै ऐसे बाल।
आठ पहर सुख में सदा, लग न जम का आल ॥ १०

अनत हाथ मुझ बाप के, जाका अंत न पार।
रामदास समरथ धणी सब सुख का दातार ॥ ११

घट दरसण मे रम रह्या, अन्तरजामी आप।
रामदास दुवध्या तजो, सबमें समरथ बाप ॥ १२

रमैं पियारी पीव सूं प्रेम डोलियो काल।
रामदास सुन सेज में, मंडी सहज महवाल ॥ १३

निंदक म्हांरी रामदास घास बोझ उठाय।
संतां कूं निरमल करै आप नरक में जाय ॥ १४

निंदक ऐसो रामदास थांभ साथ भराय।
सातूं पीढ्यां ले चल, पड़ सूहं मे जाय ॥ १५

सब में मेरा सांइयां दूजा और न काय।
रामदास समदिष्ट हुय, दुवध्या राखो खाय ॥ १६

दुवध्या में बहा गया काढ़ सब नर नार।
रामदास समदिष्ट बिन बूड़ा पसू गिंवार ॥ १७

समदिष्टी सो जाणिये सब घट देखे एक।
रामदास रटयो करै सदा नाम अलेख ॥ १८

रसना सूं रटबो करै, आठूं पहर अभंग।
रामदास उन संत को राम न छाडै संग ॥ १९

---

१३ रमैं पियारी पीव सूं — जीवात्मा अपने प्रियतम परमात्मा के साथ रमण कर रही है। डोलियो — रमण।

१५ थांभ भराय — [illegible]। सातूं पीढ्यां — सातों पीढ़ियां।
[illegible]

शुभ अशुभ जाणू नही, पाप पुन्न मै नाहि ।
रामा बालक ब्रह्म का, सदा ब्रह्म के माहि ॥ २०

ब्रह्म हमारै तन्न मै, रूम-रूम भरपूर ।
रामदास मिल रम रह्या, अरस परस निज नूर ॥ २१

राम पधार्‌या मुज्झ मै, मुझहि राम के माहि ।
रामदास रामै मिल्या, दूजा कोई नाहि ॥ २२

सिर ऊपर साहिब खडा, समरथ रामदयाल ।
रामदास सासो तजो, कदै न व्यापै काल ॥ २३

काल जाल व्यापै नही, अटल राम का राज ।
रूम-रूम बिच रम रह्या, रामदास महाराज ॥ २४

दरसण दीसै रासदास, देखत जाय विलाय ।
या सेती क्या पूजियै, पूज्या खोटा थाय ॥ २५

दिष्ट-मुष्ट आवै नही, मुर्ष्टी गह्या न जायं ।
रामा ऐसा ब्रह्म हैं, ताहि रहो लिव लाय ॥ २६

जाकै हिरदै हरि बसै, ताकै तोटो नाहि ।
रामदास सिवरण करौ, रिध-सिध याकै माहि ॥ २७

जाकै हिरदै राम है, तिहू लोक को नाथ ।
रामदास सिंवरण करौ, दूजी किसी अनाथ ॥ २८

नाड-नाड सिवरण करै, रामो राम पुकार ।
रामदास अजपा हुवै, विरला जाणै सार ॥ २९

रामदास सिर ऊपरै, समरथ दीनदयाल ।
तीन-लोक मे सुख घणौ, कदै न व्यापै काल ॥ ३०

रिध-सिध चरणा साध के, साध राम के माहि ।
रामदास तौटो नही, जहा हरीजन जाहि ॥ ३१

---

२७ तोटो – हानि।

जहा हरीजन सचर दुख दालद सब दूर ।
रामा मिलिया राम सू आठू पहर हजूर ।। ३२

रिध सिध दासी साध की चरण रही लपटाय ।
रामा त्यागी ज्ञान कर, रहे राम लिव लाय ।। ३३

राम पधारया मुझ मैं तिहू-लोक का नाथ ।
रामदास अब क्या डरो समरथ तेरे साथ ।। ३४

समरथ मिल समरथ हुवा दुबध्या रही न काय ।
हरिजन हरि तो एक है रामा एक कहाय ।। ३५

तीन-लोक चवदे भवन, रामै मेल्या सोज ।
राम सरीसा राम है विरला पावे खोज ।। ३६

समत काल बारोतरे रह्या सत कोइ सूर ।
मूढ़ भाग्या रामदास हरि सू पड़ग्या दूर ।। ३७

मेह बरसावो बापजी दुनिया पावे दुख ।
रामदास की बीनती जनां ऊपजे सुख ।। ३८

मेह वूठा हरिया हुवा भाज गया अब काल ।
रामदास सुख ऊपज्या जहं तहं भया सुकाल ।। ३९

रामा डाकी संत है चौरासी डाकी ।
आमण मरण मेटिया रया न कुछ बाकी ।। ४०

रामदास चल मालवे राम पिता के पास ।
सुख संपत रोजी घणी, अनत पूरवे आस ।। ४१

---

३७ समत काल बारोतरे – संवत् १८१९ मे भयंकर काल पड़ा था ।
मूढ़ – मूर्ख ।

३८ बापजी – स्वामी परब्रह्म ।

३९ — ये दोनों साखियां सं. १८४९ के बीकानेर चातुर्मास में वहां के नरेश महाराज सूरतसिंह की प्रार्थना पर वर्षा के अभाव में श्रीजी महाराज के मुख से आविर्भूत हुई थीं ।
मेह वूठा – वर्षा हुई ।

४० डाकी – कूदने वाला ।

ऊपर कीजै बापजी, सेवग को दुख देख ।
रामदास मै दुख वर्णा, बाहर चढा अलेख ।। ४२

काहू के तो राज बल, काहू के बल देव ।
रामदास के राम बल, एक तुमारी सेव ।। ४३

हाथा मेलै ऊखणं, सो साहिब नहि थाय ।
साहिब कहिये रामदास, सब घट रह्या समाय ।। ४४

सब घट माहो रम रह्या, सब सू न्यारा होय ।
साहिब कहिये रामदास, वार पार नहि कोय ।। ४५

रिध सिध दासी रामदास, चरण रही लपटाय ।
आवे जावे सहज मैं, रहो राम लिव लाय ।। ४६

लिव लागी आकास मे, सुन्य समाणा जीव ।
रामदास दुवध्या मिटी, हुवा जीव का सीव ।। ४७

नाहर न मारै रामदास, मूरत तारे नाहि ।
सत बडा ससार मै, ह्म बतावै माहि ।। ४८

साधू सरवर एक है, सब कोइ परसै आय ।
ऊच नीच विवरी नही, प्यासा सो पी जाय ।। ४९

प्यासा कू पावै नही, मन माया मे जाय ।
हरि वेराजी रामदास, साधू खोटा थाय ।। ५०

रामा हाथी कान ज्यू, मुख मै रसना हाल ।
रूम-रूम बिच साधु के, मड्या अजप्पा ख्याल ।। ५१

ज्यू परजापति चाक कू, फेर देत छिटकाय ।
रामदास रसना फिरै, आपे यू मुख माय ।। ५२

---

४४ ऊखणं – उठाना आदि । ४८ नाहर – चित्रांकित सिंह ।
५० वेराजी – नाराज । ५१ हाथी कान ज्यू–हाथी के कान के समान सदैव हिलते रहना ।
५२ परजापति – प्रजापति, कुम्हार ।

रामदास जल बुदबुदा देखत जाय बिलाय ।
यूं जग सुपनो रैण को जागे ज्यूं उठ जाय ॥ ५३

सपनो सब संसार है, नर सुण जागा सोय ।
जागा कहिये रामदास सतगुरु मिलिया सोय ॥ ५४

जागा सोई जानिये, सदा भजन भरपूर ।
चार अवस्था जीत कर, सता मिल निज सूर ॥ ५५

चित बुध मन अहंकार में, मिले अवस्था चार ।
सुरत मिले जा ब्रह्म में, जहां सत दीदार ॥ ५६

मता कर गुरुदेवजी सब कूं लिया बुलाय ।
दरसण दे पावन किया, मिल्या ब्रह्म में जाय ॥ ५७

अनत कोट जन में मिल्या सभी बीच में वास ।
अहुता हंस उधारिया काट काल की पास ॥ ५८

संमत अठार-पतीसवै हरिये छाडी जिव ।
जाय मिल्या परब्रह्म में अटल अमर गोविंद ॥ ५९

चत महीने सुद पख सातु सुकरवार ।
हरिया तज आकार कूं जाय मिल निरकार ॥ ६०

देह तजी मिल दीन सूं निरभै कीना वास ।
रामदास गुरुदेवजी सदा एक सुख रास ॥ ६१

राम मांहि अकूठ है जो समझे मन मांहि ।
रामदास दुबध्या तजो दूजा कोऊ नांहि ॥ ६२

रामदास रट राम कूं पहुंता चौथे धाम ।
अरस परस मिल देगिया ऐसा अवल राम ॥ ६३

---

५६ मता — ब्रह्म-भक्ता । ५७. ऐसो — ऐसा । गुरुदेवजी — श्री हरिरामदासजी महाराज ।
५८ उधारिया — उद्धार किया । ५९ श्री जी महाराज के परम गुरु श्री हरिरामदासजी महाराज के परम-निर्वाण-प्रयाण का काल ।
६० आकार — देह ।

ऐको केवल राम है, दूजा और न कोय ।
चार चक चवदै भवन, व्यापक सब मे होय ॥ ६४

ररो ममो आखर अखी, रट पहुता वैकूठ ।
रामदास चढ देखिया, दिष्ट परै सो झूठ ॥ ६५

दीसै मोई झूठ है, विनसै सो आकार ।
रामदास रट राम कू, जाय मिलै निरकार ॥ ६६

बालक रोवै रामदास, मात पिता के काज ।
रोवत-रोवत मिल गया, पुत्र पिता महाराज ॥ ६७

अनत जौत अनती कला, सतगुरु के घट माहि ।
सतगुरु साई एक है, रामा दुवध्या नाहि ॥ ६८

दुवध्या सू दो जग पडै, ऐके सेती एक ।
रामदास दुवध्या तजी, ताकू मिल्या अलेख ॥ ६९

पूठै समरथ सतगुरु, आगै राम सिहाय ।
अनत कोट सत सीस पर, रामा विघन न काय ॥ ७०

उर अतर मे प्रगटिया, तिहू एक सुख रास ।
रामदास मन उलट के, किया ब्रह्म मे वास ॥ ७१

ब्रह्म मिलाणा ब्रह्म मै, जींव सीव के माहि ।
रामदास दुवध्या मिटी, दूजा कोऊ नाहि ॥ ७२

देही मै साहिब बसै, तिरवेणी के घाट ।
रामदास सतगुरु मिल्या, जिना बताई बाट ॥ ७३

बाट बताई सत्तगुरु, पहुता दसवे द्वार ।
रामदास मिल ब्रह्म मे, अरस परस दीदार ॥ ७४

चद्रायण

अरस परस दीदार, किया हम जाय रे,
सुन सागर के बीच, रह्या लिव लाय रे ।

मां कू त्यागै रामदास, रहै पिता की ओट ।
ऐसा साधू जगत मै, लगै न जम की चोट ॥ ८४

बडा बडेरा मड का, ब्रह्मा विष्णु महेस ।
रामदास उन भी कह्यो, राम सरब उपदेस ॥ ८५

चली पूतली लूण की, गली समद के माहि ।
थाग न आवै रामदास, बूद पडी जल माहि ॥ ८६

बूद समद सू मिल गई, मिल्यौ नीर सू नीर ।
रामदास सहजा कियौ, पूरण ब्रह्म सु सीर ॥ ८७

सीर मिल्यौ सत सग मै, सतगुरु के उपदेस ।
हद का होता मानवी, वेहद पायो देस ॥ ८८

मारग सत का, सूरवीर का खेल ।
उलट समावै ब्रह्म मै, निरगुण माया पेल ॥ ८९

तिरगुण माया ब्रह्म की, या कू परी विडार ।
अरध सबद मिल रामदास, कुल को मोह निवार ॥ ९०

काची माया कारबी, ज्यू आवै ज्यू जाय ।
'राम भजो सत रामदास', नहचै सुरत लगाय ॥ ९१

पिता मेलिया रामदास, मातलोक के माहि ।
मन माया सग मिल रह्या, चौरासी कू जाय ॥ ९२

ररो पिता माता ममो, है दोनू का जीव ।
रामदास कर बदगी, सहज मिलावै सीव ॥ ९३

इति छुटकर साखी सम्पूर्णम्

*

८४ पिता की ओट – माया का त्याग कर परब्रह्म की शरण ।
८६ पूतली लूण की – जीवात्मा । समद – परब्रह्म । थाग – अन्त ।
८९ पेल – नष्ट कर । ९०. विडार – त्याग दे ।
९२. मातलोक – यह ससार (भोग योनिया)

मां कू त्यागै रामदास, रहै पिता की ओट ।
ऐसा साधू जगत मै, लगै न जम की चोट ।। ८४

बडा बडेरा मड का, ब्रह्मा विष्णु महेस ।
रामदास उन भी कह्यो, राम सरब उपदेस ।। ८५

चली पूतली लूण की, गली समद के माहि ।
थाग न आवै रामदास, बूद पडी जल माहि ।। ८६

बूद समद सू मिल गई, मिल्यौ नीर सू नीर ।
रामदास सहजा कियौ, पूरण ब्रह्म सु सीर ।। ८७

सीर मिल्यौ सत सग मै, सतगुरु के उपदेस ।
हद का होता मानवी, वेहद पायो देस ।। ८८

मारग सत का, सूरवीर का खेल ।
उलट समावै ब्रह्म मै, निरगुण माया पेल ।। ८९

तिरगुण माया ब्रह्म की, या कू परी विडार ।
अरध सबद मिल रामदास, कुल को मोह निवार ।। ९०

काची माया कारबी, ज्यू आवे ज्यू जाय ।
'राम भजौ सत रामदास', नहचै सुरत लगाय ।। ९१

पिता मेलिया रामदास, मातलोक के माहि ।
मन माया सग मिल रह्या, चौरासी कू जाय ।। ९२

ररो पिता मात्ता ममो, है दोनू का जीव ।
रामदास कर बदगी, सहज मिलावै सीव ।। ९३

इति छुटकर साखी सम्पूर्णम्

★

---

८४ पिता की ओट – माया का त्याग कर परब्रह्म की शरण ।
८६ पूतली लूण की – जीवात्मा । समद – परब्रह्म । थाग – अन्त ।
८९ पेल – नष्ट कर । ९०. विडार – त्याग दे ।
९२. मातलोक – यह ससार (भोग योनिया)

अथ ग्रंथ गुरु-महिमा

कवित्त

आए संत सधीर, लिये जग में अवतारा।
खोले भगति भंडार, मिटया है तिमर अंधारा॥ १

अमर लोक सूं आय, सिंहथल माहिं विराजे।
तेज पुंज परकास, वज अनहद के बाजे॥ २

सदा समाधि अगम जहां आसण सुखमण सहज समाधि।
आय रामियो चरणां लागो सिष है आदि अनादि॥ ३

हरिरामा हरि है अवतारा, अंतर कला कबीरू।
नामदेव सा दिष्ट देखतां सूरा संत सधीरू॥ ४

पत प्रह्लाद धाम सनकादिक ग्यान सहत सुकदेऊ।
धूसा ध्यान अटल अणरागी गोरख जैसा भेऊ॥ ५

दादू सा दीदार दुरस कोई दरसण पावै।
काल जाल सब जाय भरम भय दूर गमावै॥ ६

दीरघ सी दिकपाल मेरु सा अविचल कहियै।
सूरज सा परकास समद ज्यूं थाह न लहियै॥ ७

समद संख्या में होय सतगुरु असंख्य कहाय।
गोविंद स दीरघ चंद तैं सीतल थाये॥ ८

ब्रह्म विलासी संत ब्रह्म का है व्योपारो।
ग्यान ध्यान मसतान देखतां दरसन भारो॥ ९

---

१ सधीर — धैर्ययुक्त। २ सिंहथल — श्री आचार्य पुण्यधाम। ४ कबीरू — कबीर।
५ पत — विश्वास। धूसा — ध्रुव जैसे।
अणरागी — विरक्त। गोरख — गोरखनाथ। भेऊ — वेषधारी।
८ समद संख्या में होय — समुद्र भी देश काल से परिच्छिन्न है (परंतु सद्गुरु उससे भी विशाल हैं अपरिच्छिन्न हैं।) ९ मसतान — लवलीन।

मुरधर के मझ माहि, प्रगट्या सच्चा साई ।
देख्या जगत'रु भेष, और ऐसा कछु नाही ।। १०

ऐसा है कोइ सत, सूरवा कहिये साधू ।
हरिरामा गुरुदेव, मिल्या पूरब पुन आदू ।। ११

जो पावै दीदार, दुरस हुय चरणा लागै ।
भरम करम सब जाय, काल अघ दूरा भागै ।। १२

सिष को ज्ञान बताय, ब्रह्म के माहि मिलावै ।
ऐसी औषध लाय, जनम का रोग मिटावै ।। १३

सुणिया था सुरलोक, देवता वायक पूगा ।
अधिक जोत परकास, अनत जहा सूरज ऊगा ।। १४

मिटिया तिमर अनेक, तेज परकास्या माही ।
रामा कू गुरुदेव, मिल्या इक सच्चा साई ।। १५

ऐसा है गुरुदेव, हमारै सीस विराजै ।
जेती महिमा होय, गुरा कू तेती छाजै ।। १६

साखी

गुरु महिमा सीखै सुणै, आपो लेह विचार ।
भजन करै गुरुदेव को, सो जन उतरै पार ।। १७

गुरु की महिमा रामदास, करता है दिन-रात ।
सतगुरु सा दूजा नही, सत भाखत हू बात ।। १८

---

१० मुरधर – मारवाड । १४ वायक – वचन द्वारा ।
१६ छाजै – शोभा देती है ।
१८ भाखत हू – कहता हू ।

अथ ग्रंथ गुरु-महिमा

कवित्त

आए सत सबीर, लिये जग में अवतारा ।
खोले भगति भंडार, मिटया है तिमर अंधारा ॥ १

अमर लोक सूं आय, सिंहथल माहि बिराजे ।
तेज पुंज परकास, बज अनहद के बाजे ॥ २

सता समाधि अगम जहा आसण सुखमण सहज समाधि ।
आय रामिओ चरणां लागो सिष है आदि अनादि ॥ ३

हरिरामा हरि है अवतारा, अखर कला कबीरू ।
नामदेव सा दिष्ट देखता सूरा सत सधीरू ॥ ४

धन प्रहलाद चाल सनकादिक ग्यान सहत सुकदेऊ ।
धूसा ध्यान अटल अणरागी गोरख जैसा भेऊ ॥ ५

दादू सा दीदार कुरस कोई दरसण पावै ।
काल जाल सब जाय भरम अघ दूर गमावै ॥ ६

दीरघ सी दिकपाल मेरु सा अचिचल कहियै ।
सूरज सा परकास समद ज्यूं थाह न लहियै ॥ ७

अमद सब्या में होय सतगुरु असख्य कहाय ।
गोविंद स दीरघ चंद से सीतल थाये ॥ ८

ब्रह्म बिलासी सत ब्रह्म का है ब्यौपारो ।
ग्यान ध्यान गलतान देखतां दरसन भारी ॥ ९

---

१ सबीर – धैर्ययुक्त । २ सिंहथल – श्री आचार्य गुरुधाम । ४ कबीरू – कबीर । ५ सत – विस्तार । धूसा – ध्रुव जैसे । अणरागी – विरक्त । गोरख – गोरखनाथ । भेऊ – भेषधारी । ८ समद सब्या में होय – समुद्र भी देश काल से परिच्छिन्न है (परंतु सद्गुरु उससे भी विशाल है अपरिच्छिन्न है ।) ९ गलतान – तल्लीन ।

मुरधर के मझ माहि, प्रगट्या सच्चा साईं ।
देख्या जगत'रु भेष, और ऐसा कछू नाही ॥ १०

ऐसा है कोइ संत, सूरवा कहिये साधू ।
हरिरामा गुरुदेव, मिल्या पूरब पुन आदू ॥ ११

जो पावै दीदार, दुरस हुय चरणा लागै ।
भरम करम सब जाय, काल अघ दूरा भागै ॥ १२

सिष को ज्ञान बताय, ब्रह्म के माहि मिलावै ।
ऐसी औषध लाय, जनम का रोग मिटावै ॥ १३

सुणिया था सुरलोक, देवता वायक पूगा ।
अधिक जोत परकास, अनत जहा सूरज ऊगा ॥ १४

मिटिया तिमर अनेक, तेज परकास्या माही ।
रामा कू गुरुदेव, मिल्या इक सच्चा साईं ॥ १५

ऐसा है गुरुदेव, हमारै सीस विराजै ।
जेती महिमा होय, गुरा कू तेती छाजै ॥ १६

साखी

गुरु महिमा सीखै सुणै, आपो लेह विचार ।
भजन करै गुरुदेव को, सो जन उतरै पार ॥ १७

गुरु की महिमा रामदास, करता है दिन-रात ।
सतगुरु सा दूजा नही, सत भाखत हू बात ॥ १८

---

१० मुरधर – मारवाड़ । १४ वायक – वचन द्वारा ।
१६ छाजै – शोभा देती है ।
१८ भाखत हू – कहता हू ।

अथ ग्रंथ गुरु-महिमा

कवित्त

आए सत सधीर, लिये जग में अवतारा ।
खोले भगति भंडार मिटया है तिमर अंधारा ।। १

अमर लोक सू आय सिंहथल माहि विराजे ।
तेज पुंज परकास, बजे अनहद के बाजे ।। २

सता समाधि अगम जहां आसण सुखमण सहज समाधि ।
आय रामियो चरणा लागो सिष है आदि अनादि ।। ३

हरिरामा हरि है अवतारा, अतर कला कबीरू ।
नामदेव सा दिष्ट देखसां सूरा सत सधीरू ।। ४

पन प्रहलाद बाल सनकादिक ग्यान सहस सुकदेऊ ।
धूसा ध्यान अटल अणरागी गोरख जसा भेऊ ।। ५

दादू सा दीदार दुरस कोई दरसण पावै ।
काल जाल मध जाय भरम अघ दूर गमावै ।। ६

दीरघ सी दिकपाल मेरु सा अविचल कहियै ।
सूरज सा परकास समद ज्यूं थाह न लहियै ।। ७

समद सख्या में होय सतगुरु असख्य कहाय ।
गोविंद तें दीरघ चंद सं सीतल थाय ।। ८

ब्रह्म विलासी सत ब्रह्म का है ब्योपारो ।
ग्यान ध्यान गलतान देखसां दरसन भारो ।। ९

---

१ सधीर – धैर्ययुक्त । २ सिंहथल – श्री आचार्य गुरुधाम । ४ कबीरू – कबीर ।
५ पन – [illegible] । धूसा – ध्रुव जैसे ।
अणरागी – विरक्त । गोरख – गोरखनाथ । भेऊ – भेदपारी ।
८ समद सख्या में होय – समुद्र भी सीमा में परिच्छिन्न है (परंतु सद्गुरु उनसे भी विशाल है अपरिच्छिन्न है ।) ९ गलतान – तल्लीन ।

मुरधर के मझ माहि, प्रगट्या सच्चा साईं ।
देख्या जगत'रु भेष, और ऐसा कछू नाही ।। १०

ऐसा है कोइ संत, सूरवा कहिये साधू ।
हरिरामा गुरुदेव, मिल्या पूरब पुन आदू ।। ११

जो पावै दीदार, दुरस हुय चरणा लागै ।
भरम करम सब जाय, काल अघ दूरा भागै ।। १२

सिष को ज्ञान बताय, ब्रह्म के माहि मिलावै ।
ऐसी औषध लाय, जनम का रोग मिटावै ।। १३

सुणिया था सुरलोक, देवता वायक पूगा ।
अधिक जोत परकास, अनत जहा सूरज ऊगा ।। १४

मिटिया तिमर अनेक, तेज परकास्या माही ।
रामा कू गुरुदेव, मिल्या इक सच्चा साईं ।। १५

ऐसा है गुरुदेव, हमारै सीस विराजै ।
जेती महिमा होय, गुरा कू तेती छाजै ।। १६

साखी

गुरु महिमा सीखै सुणै, आपो लेह विचार ।
भजन करै गुरुदेव को, सो जन उतरै पार ।। १७

गुरु की महिमा रामदास, करता है दिन-रात ।
सतगुरु सा दूजा नही, सत भाखत हू बात ।। १८

---

१० मुरधर – मारवाड़ । १४ वायक – वचन द्वारा ।
१६ छाजै – शोभा देती है ।
१८ भाखत हू – कहता हू ।

अथ ग्रंथ गुरु-महिमा

कवित्त

आए सत सधीर, लिये जग में अवतारा ।
खोले भगति भंडार, मिटया है तिमर अंधारा ॥ १

अमर लोक सूं आय, सिंहुथल माहि विराजे ।
तेज पुंज परकास, वज अनहद के बाजे ॥ २

सता समाधि अगम जहां आसण सुखमण सहज समाधि ।
आय रामियो चरणां लागो, सिष है आदि अनादि ॥ ३

हरिरामा हरि है अवतारा, अखर कला कबीरू ।
नामदेव सा दिष्ट देखतां सूरा सत सधीरू ॥ ४

पन प्रहलाद धास सनकादिक ज्ञान सहत सुकदेऊं ।
धूसा ध्यान अटल अणरागी, गोरख जसा भऊ ॥ ५

दादू सा दीदार, दुरस कोई दरसण पावै ।
काल जाल सब जाय भरम अघ दूर गमावै ॥ ६

धीरध सो दिकपाल मेरु सा अविचल कहिये ।
सूरज सा परकास समद ज्यूं थाह न लहिये ॥ ७

समद सन्ध्या में होय सतगुरु अमरथ कहायै ।
गोविंद तें दीरघ पद तें सीतल थाये ॥ ८

ब्रह्म विसासी सत ब्रह्म का है ब्योपारो ।
ज्ञान ध्यान गलतान देखतां दरसन भारो ॥ ९

---

१ सधीर – धैर्ययुक्त । २ सिंहुथल – श्री आचार्य गुरुधाम । ४ कबीरू – कबीर ।
५ पन – फिरवान । धूसा – ध्रुव जैसे ।
अणरागी – विराग । गोरख – गोरखनाथ । भेऊं – वैरागी ।
८ समद संध्या में होय – समुद्र भी देश काल से परिच्छिन्न है (परंतु सद्गुरु जनों की सिद्धि है अपरिच्छिन्न है ।) ९ गलतान – तल्लीन ।

मुरधर के मझ माहि, प्रगट्या मच्छा माई ।
देख्या जगत'रु भेप, और ऐसा कछु नाही ॥ १०

ऐसा है कोइ संत, मूरखा कहिये साधू ।
हरिरामा गुरुदेव, मिल्या पूरब पुन आदू ॥ ११

जो पावै दीदार, दुरस हुय चरणा लागै ।
भरम करम सब जाय, काल अघ दूरा भागै ॥ १२

सिष को ज्ञान बताय, ब्रह्म के माहि मिलावै ।
ऐसी औषध लाय, जनम का रोग मिटावै ॥ १३

सुणिया था सुरलोक, देवता वायक पूगा ।
अधिक जोत परकास, अनंत जहा सूरज ऊगा ॥ १४

मिटिया तिमर अनेक, तेज परकास्या माही ।
रामा कू गुरुदेव, मिल्या इक सच्चा साई ॥ १५

ऐसा है गुरुदेव, हमारै सीस विराजै ।
जेती महिमा होय, गुरा कू तेती छाजै ॥ १६

साखी

गुरु महिमा सीखै सुणै, आपो [illegible] विचार ।
भजन करै गुरुदेव को, सो [illegible] पार ॥ १७

गुरु की महिमा रामदास, करता [illegible] रात ।
सतगुरु सा दूजा नही, [illegible] बात ॥ १८

॥ ३७
[illegible]वै ।
[illegible]गावै ॥ ३८

१० मुरधर – मारवाड । १४ वायक – [illegible]
१६ छाजै – शोभा देती है ।
१८ भाखत हू – कहता हू ।

[illegible] बावै – बजते हैं ।
[illegible]रदिखना – प्रदक्षिणा ।
[illegible]रण देकर ।

चौपई

सतगुरु समी नहीं परदिखणा सतगुरु समा प्रेम नहीं चखणा।
सतगुरु समा तीरथ नहीं तिरणा सतगुरु समा और नहीं सरणा ॥ १९

सतगुरु समा धूप नहीं रूप सतगुरु सम नहीं तत्त अनूप।
सतगुरु समा पुन्य नहीं दाना, सतगुरु समा ज्ञान नहीं ध्याना ॥ २०

सतगुरु समा जोग नहीं जिग्गा, सतगुरु समा और नहीं सग्गा।
सतगुरु समी कहत नहीं कहणी सतगुरु समी रहत नहीं रहणी ॥ २१

सतगुरु समा उडता नहीं गडता सतगुरु समा पढ़्या नहीं पढ़ता।
सतगुरु समा पिता नही माता सतगुरु सा नही तत्त बिधाता ॥ २२

सतगुरु समा वीर नहीं बंधू, सतगुरु बिना और नहीं सधू।
सतगुरु बिना नरक में जावे सतगुरु बिन कहो कूण छुडावे ॥ २३

सतगुरु बिन कबहू नहीं छूटे जहां जावे जहां जबरो लूटे।
सतगुरु बिना बहुत फिर भटके जहां जावे जहां जमरो पटके ॥ २४

सतगुरु बिना सरब कूं ध्यावे गोगा पाबू मात सरावे।
सतगुरु बिना सरब कूं जाणे क्षत्रपाल बहु भूत वखाणे ॥ २५

सतगुरु बिना सरब कूं सेवे धूप झप सूं बहु दिन खेवे।
सतगुरु बिना सरब कूं जोवे करामात रिध सिध कूं रोवे ॥ २६

सतगुरु बिना एक नहीं सूझे अनत देव को फिर फिर पूजे।
सतगुरु बिन बहु देव वखाणे हद की बात सफल कर जाणे ॥ २७

सतगुरु बिना राम नहीं पावे रसना कंठ बिम प्रम मिलावे।
सतगुरु बिन हिरदा नहीं सूधा निज्ज नाम बिन कमल जूं ऊंधा ॥ २८

सतगुरु बिना नाभि नहीं भावे सासोसास कहो बिम लावे।
सतगुरु बिन रग रग नहीं वासे मन्तर ध्यान कहो बिम खोले ॥ २९

---

१९ समी – समान। २१ कहत नहीं कहणा – कहना और कर्मों में छिप जाना।
२५. सेव – आराधना करता है। २७ ऊंधा – उल्टा

सतगुरु बिन अजपा नही जाणै , रूम-रूम रस किस विध माणै ।
सतगुरु बिना वक नही पीवै , कैसे मिल कर जुग-जुग जीवै ।। ३०
सतगुरु बिना पच नही उलटै , कागवस कहो किस विध पलटै ।
सतगुरु विना अरध नही जाणै , उरध-कमल कहो किस विध माणै ।। ३१
सतगुरु बिना मेरु नही छेदे , आकस-कमल कहो किस विध भेदै ।
सतगुरु बिन अनहद नही वावै , तिरवेणी तट कैसे न्हावै ।। ३२
सतगुरु बिना लिव्व नही लागै , ब्रह्म जोत कहो किस विध जागै ।
सतगुरु बिन दसवौ नही जाणै सहज समाधि किसी विध माणै ।। ३३

साखी

सतगुरु बिन सुध ना लहै, कोटिक करो उपाय ।
रामदास सतगुरु बिना, सब जग जमपुर जाय ।। ३४

चौपाई

कोटि-कोटि वहु ज्ञान दिढावे , कोटि-कोटि धुन ध्यान लगावै ।
कोटि-कोटि बहु देव अराधै , कोटि कोटि किरिया जो साधे ।। ३५
(तोहि)गुरु गोबिन्द बिन मुक्ति न जावै, सतगुरु विना काल सब खावै ।। टेर
कोटि-कोटि तीरथ फिर आवै , कोटि-कोटि असनान करावै ।
कोटिक दै पृथ्वी परदिखना , निज नाम बिन प्रेम न चखना ।। ३६
कोटि-कोटि बहु तुला वसावै , सोना रूपा दान दिरावै ।
और द्रव्य बहुतेरा देवै , सहस नाम निसी दिन लेवै ।। ३७
कोटि-कोटि जिग होम करावै , कोटियक ब्रामण नूत जिमावै ।
कोटिक गउवा दान दिरावै , कोटि-कोटि बहु हेत लगावै ।। ३८

---

३० कागवस – कुडलिनी । ३१ आकस कमल – सहस्रार चक्र । वावै – बजते है ।
३५ किरिया जो साधे – तान्त्रिक क्रियाओ की साधना । ३६ परदिखना – प्रदक्षिणा ।
३७ तुला वसावै – तुला दान करते हैं । ३८ नूत – निमन्त्रण देकर ।

चौपाई

सतगुरु समी नहीं परदिखणा सतगुरु समा प्रेम नहीं पखणा ।
सतगुरु समा तीरथ नहीं तिरणा , सतगुरु समा और नहीं सरणा ॥ १९

सतगुरु समा धूप नहीं रूप सतगुरु सम नही तत्त अनूप ।
सतगुरु समा पुन्य नहीं दाना सतगुरु समा ज्ञान नहीं ध्याना ॥ २०

सतगुरु समा जोग नहीं जिग्गा सतगुरु समा और नहीं सग्गा ।
सतगुरु समी कहत नही कहणी सतगुरु समी रहत नहीं रहणी ॥ २१

सतगुरु समा उडता नहीं गडता , सतगुरु समा पढता नही पढता ।
सतगुरु समा पिता नहीं माता सतगुरु सा नही तत्त विधाता ॥ २२

सतगुरु समा और नहीं बधू सतगुरु बिना और नही सधू ।
सतगुरु बिना नरक में जावे सतगुरु बिन कहो कूण छुडावे ॥ २३

सतगुरु बिन कबहू नही छूटे जहां जावे जहां जमरो लूट ।
सतगुरु बिना बहुत फिर भटके , जहां जावे जहां जमरो पटके ॥ २४

सतगुरु बिना सरब कू ध्यावे गोगा पाबू भात सरावे ।
सतगुरु बिना सरब कूं जाण क्षत्रपाल बहु भूत बखाण ॥ २५

सतगुरु बिना सरब कू सेव धूप रूप सूं बहु दिन सेवे ।
सतगुरु बिना सरब कूं जोवे करामात रिध सिध कू रोवे ॥ २६

सतगुरु बिना एक नहीं सूझ अनन्त देव को फिर फिर पूज ।
सतगुरु बिन बहु देव बखाणें हद की बात सफल कर जाणें ॥ २७

सतगुरु बिना राम नहीं पावे रसना कंठ किम प्रम मिलावे ।
सतगुरु बिन हिरदा नहीं सूधा , निज नाम बिन कमल जू ऊंधा ॥ २८

सतगुरु बिना नाभि नहीं आवे सासोसास कहो किम लावे ।
सतगुर बिन रग रग नहीं बोल अन्तर ध्यान कहो किम खोल ॥ २९

---

१९ समी – समान । २२ उडता नहीं गडता – उडना और जमीन में छिप जाना ।
२५ सरावे – आराधना करता है । २७ ऊंधा – उल्टा

सतगुरु बिन अजपा नही जाणै , रूम-रूम रस किस विध माणै ।
सतगुरु बिना वक नही पीवै , कैसे मिल कर जुग-जुग जीवै ॥ ३०
सतगुरु बिना पच नही उलटै , कागवस कहो किस विध पलटै ।
सतगुरु विना अरध नही जाणै , उरध-कमल कहो किस विध माणै ॥ ३१
सतगुरु बिना मेरु नही छेदे , आकस-कमल कहो किस विध भेदै ।
सतगुरु बिन अनहद नही वावै , तिरवेणी तट कैसे न्हावै ॥ ३२
सतगुरु विना लिव्व नही लागै , ब्रह्म जोत कहो किस विध जागै ।
सतगुरु विन दसवौ नही जाणै , सहज समाधि किसी विध माणै ॥ ३३

साखी

सतगुरु बिन सुध ना लहै, कोटिक करो उपाय ।
रामदास सतगुरु बिना, सब जग जमपुर जाय ॥ ३४

चौपाई

कोटि-कोटि वहु ज्ञान दिढावे , कोटि-कोटि धुन ध्यान लगावै ।
कोटि-कोटि बहु देव अराधै , कोटि कोटि किरिया जो साधे ॥ ३५
(तोहि)गुरु गोबिन्द बिन मुक्ति न जावै, सतगुरु विना काल सब खावै ॥ टेर
कोटि-कोटि तीरथ फिर आवे , कोटि-कोटि असनान करावै ।
कोटिक दै पृथ्वी परदिखना , निज नाम बिन प्रेम न चखना ॥ ३६
कोटि-कोटि बहु तुला वसावै , सोना रूपा दान दिरावै ।
और द्रव्य बहुतेरा देवै , सहस नाम निसी दिन लेवै ॥ ३७
कोटि-कोटि जिग होम करावै , कोटियक ब्रामण नूत जिमावै ।
कोटिक गउवा दान दिरावै , कोटि-कोटि बहु हेत लगावै ॥ ३८

---

३० कागवस – कुंडलिनी । ३१ आकस कमल – सहस्रार चक्र । वावै – बजते हैं ।
३५ किरिया जो साधे – तान्त्रिक क्रियाओ की साधना । ३६ परदिखना – प्रदक्षिणा ।
३७ तुला वसावै – तुला दान करते हैं । ३८ नूत – निमन्त्रण देकर ।

चौपाई

सतगुरु समी नहीं परदिखणा सतगुरु समा प्रेम नहीं चखणा ।
सतगुरु समा तीरथ नहीं तिरणा , सतगुरु समा और नहीं सरणा ॥ १९

सतगुरु समा धूप नहीं रूप सतगुरु सम नहीं तत्त अनूप ।
सतगुरु समा पुन्य नहीं दाना , सतगुरु समा ज्ञान नहीं ध्याना ॥ २०

सतगुरु समा जोग नहीं जिग्गा , सतगुरु समा और नहीं सग्गा ।
सतगुरु समी कहुंस नहीं कहणी सतगुरु समी रहुंस नहीं रहणी ॥ २१

सतगुरु समा उडता नहीं गडता , सतगुरु समा पढधा नहीं पढता ।
सतगुरु समा पिता नहीं माता सतगुरु सा नही तत्त विधाता ॥ २२

सतगुरु समा और नहीं बधू सतगुरु बिना और नहीं सधू ।
सतगुरु बिना नरक में जावे सतगुरु बिन कहो कूण छुडावे ॥ २३

सतगुरु बिन कबहू नहीं छूटे जहां जावे जहां जबरो लूटे ।
सतगुरु बिना बहुत फिर भटके जहां जावे जहां जबरो पटके ॥ २४

सतगुरु बिना सरब कू ध्यावे गागा पाबू मात सरावे ।
सतगुरु बिना सरब कूं जाणे क्षत्रपाल महु भूत मसाणे ॥ २५

सतगुरु बिना सरब मूं सेवे धूप रूप सूं बहु दिन सेवे ।
सतगुरु बिना सरब कूं जोवे करामात रिध सिध कू रोवे ॥ २६

सतगुरु बिना एक नहीं सूझे अनत देव को फिर फिर पूजे ।
सतगुरु बिन बहु देव मनाणे हृद की बात सफल कर जाणे ॥ २७

सतगुरु बिना राम नहीं पावे रसना कंठ किम प्रेम मिलावे ।
सतगुरु बिन हिरदा नहीं सूधा निज नाम बिन कमल यूं ऊंधा ॥ २८

सतगुरु बिना नाभि नहीं आवे सासोसास कहो किम सावे ।
सतगुरु बिन रग रग नहीं बोले अन्तर ध्यान कहो किम खोले ॥ २९

---

१९ समी – समान । २२ उडता नहीं गडता – उडना और जमीन में छिप जाना ।
२६. जोवे – याचना करता है । २८ ऊंधा – उल्टा

सतगुरु बिन अजपा नही जाणै, रूम-रूम रस किस विध माणै।
सतगुरु बिना वक नही पीवै, कैसे मिल कर जुग-जुग जीवै ॥ ३०
सतगुरु बिना पच नही उलटै, कागवस कहो किस विध पलटै।
सतगुरु विना अरध नही जाणै, उरध-कमल कहो किस विध माणै॥ ३१
सतगुरु बिना मेरु नही छेदे, आकस-कमल कहो किस विध भेदै।
सतगुरु बिन अनहद नही वावै, तिरवेणी तट कैसे न्हावै ॥ ३२
सतगुरु बिना लिव्व नही लागै, ब्रह्म जोत कहो किस विध जागै।
सतगुरु बिन दसवौ नही जाणै, सहज समाधि किसी विध माणै ॥ ३३

साखी

सतगुरु बिन सुध ना लहै, कोटिक करो उपाय।
रामदास सतगुरु बिना, सब जग जमपुर जाय ॥ ३४

चौपाई

कोटि-कोटि वहु ज्ञान दिढावे, कोटि-कोटि धुन ध्यान लगावै।
कोटि-कोटि बहु देव अराधै, कोटि कोटि किरिया जो साधे ॥ ३५
(तोहि)गुरु गोबिन्द बिन मुक्ति न जावै, सतगुरु विना काल सब खावै ॥ टेर
कोटि-कोटि तीरथ फिर आवै, कोटि-कोटि असनान करावै।
कोटिक दै पृथ्वी परदिखना, निज नाम बिन प्रेम न चखना ॥ ३६
कोटि-कोटि बहु तुला वसावै, सोना रूपा दान दिरावै।
और द्रव्य बहुतेरा देवै, सहस नाम निसी दिन लेवै ॥ ३७
कोटि-कोटि जिग होम करावै, कोटियक ब्रामण नूत जिमावै।
कोटिक गउवा दान दिरावै, कोटि-कोटि बहु हेत लगावै ॥ ३८

---

३० कागवस – कुडलिनी। ३१ आकस कमल – सहस्रार चक्र। वावै – बजते हैं।
३५ किरिया जो साधे – तान्त्रिक क्रियाओ की साधना। ३६ परदिखना – प्रदक्षिणा।
३७ तुला वसावै – तुला दान करते हैं। ३८ नूत – निमन्त्रण देकर।

चौपई

सतगुरु समी नहीं परदिक्षणा सतगुरु समा प्रेम नहीं चखणा ।
सतगुरु समा तीरथ नहीं तिरणा सतगुरु समा और नही सरणा ।। १९

सतगुरु समा धूप नहीं रूप सतगुरु सम नही तत्त अनूप ।
सतगुरु समा पुन्य नहीं दाना , सतगुरु समा ज्ञान नहीं ध्याना ।। २०

सतगुरु समा जाग नहीं जिग्गा , सतगुरु समा और नहीं सग्गा ।
सतगुरु समी कहत नहीं कहणी , सतगुरु समी रहत नहीं रहणी ।। २१

सतगुरु समा उडता नही गडता , सतगुरु समा पढया नही पढता ।
सतगुरु समा पिता नही माता सतगुरु सा नहीं तत्त विधाता ।। २२

सतगुरु समा और नहीं बधू सतगुरु बिना और नहीं सधू ।
सतगुरु बिना नरक में जावे सतगुरु बिन कहो कूण छुडावे ।। २३

सतगुरु बिन कबहू नही छूटे जहां जावे जहां जमरो कूटे ।
सतगुरु बिना बहुत फिर भटके , जहां जावे जहां जमरो पटके ।। २४

सतगुरु बिना सरब कूं ध्यावे गोगा पाबू मात सराव ।
सतगुरु बिना सरब कू जाणे क्षत्रपाल बहु भूत बखाणे ।। २५

सतगुरु बिना सरब कू सेवे धूप रूप सू बहु दिन सेवे ।
सतगुरु बिना सरब कूं जोवे करामात रिध सिध कू रोवे ।। २६

सतगुरु बिना एक नहीं सूझे अनंत देव को फिर फिर पूजे ।
सतगुरु बिन बहु देव बखाणे हद की बात सफल कर जाणे ।। २७

सतगुरु बिना राम नहीं पावे रसना कंठ किम प्रेम मिलावे ।
सतगुरु बिन हिरदा नहीं सूझा निज नाम बिन कमल ज्यूं ऊंधा ।। २८

सतगुरु बिना नाभि नहीं आवे सासोसास कहो किम लावे ।
सतगुरु बिन रग रग नहीं बोले अन्तर ध्यान कहो किम खोले ।। २९

---

१९ समी – समान । २२ उडता नहीं गडता – उडना और जमीन में छिप जाना ।
२२ बध – दाराधना करता है । २७ ऊंधा – उल्टा

सतगुरु बिन अजपा नही जाणै , रूम-रूम रस किस विध माणै ।
सतगुरु बिना वक नही पीवै , कैसे मिल कर जुग-जुग जीवै ।। ३०
सतगुरु बिना पच नही उलटै , कागवस कहो किस विध पलटै ।
सतगुरु विना अरध नही जाणै , उरध-कमल कहो किस विध माणै ।। ३१
सतगुरु बिना मेरु नही छेदे , आकस-कमल कहो किस विध भेदै ।
सतगुरु बिन अनहद नही वावै , तिरवेणी तट कैसे न्हावै ।। ३२
सतगुरु विना लिव्व नही लागै , ब्रह्म जोत कहो किस विध जागै ।
सतगुरु विन दसवौ नही जाणै सहज समाधि किसी विध माणै ।। ३३

साखी

सतगुरु बिन सुध ना लहै, कोटिक करो उपाय ।
रामदास सतगुरु बिना, सब जग जमपुर जाय ।। ३४

चौपाई

कोटि-कोटि वहु ज्ञान दिढावे , कोटि-कोटि धुन ध्यान लगावै ।
कोटि-कोटि बहु देव अराधै , कोटि कोटि किरिया जो साधे ।। ३५
(तोहि)गुरु गोबिन्द बिन मुक्ति न जावै, सतगुरु विना काल सब खावै ।। टेर
कोटि-कोटि तीरथ फिर आवे , कोटि-कोटि असनान करावै ।
कोटिक दे पृथ्वी परदिखना , निज नाम बिन प्रेम न चखना ।। ३६
कोटि-कोटि बहु तुला वसावै , सोना रूपा दान दिरावै ।
और द्रव्य बहुतेरा देवै , सहस नाम निसी दिन लेवै ।। ३७
कोटि-कोटि जिग होम करावै , कोटियक ब्रामण नूत जिमावै ।
कोटिक गउवा दान दिरावै , कोटि-कोटि बहु हेत लगावै ।। ३८

---

३० कागवस – कुडलिनी । ३१ आकस कमल – सहस्रार चक्र । वावै – बजते हैं ।
३५ किरिया जो साधे – तान्त्रिक क्रियाओं की साधना । ३६ परदिखना – प्रदक्षिणा ।
३७ तुला वसावै – तुला दान करते हैं । ३८ नूत – निमन्त्रण देकर ।

चोपाई

सतगुरु समी नही परदिक्षणा सतगुरु समा प्रेम नहीं भक्षणा ।
सतगुरु समा तीरथ नहीं तिरणा सतगुरु समा और नही सरणा ॥ १९

सतगुरु समा धूप नहीं रूप सतगुरु सम नही तत्त अनूप ।
सतगुरु समा पुन्य नहीं दाना, सतगुरु समा ज्ञान नहीं ध्याना ॥ २०

सतगुरु समा जोग नहीं जिग्गा, सतगुरु समा और नहीं सग्गा ।
सतगुरु समी कहत नही कहणी सतगुरु समी रहत नहीं रहणी ॥ २१

सतगुरु समा उडता नहीं गडता सतगुरु समा पढया नही पडता ।
सतगुरु समा पिता नहीं माता सतगुरु सा नही सत्त बिधाता ॥ २२

सतगुरु समा धीर नहीं मधू सतगुरु बिना और नहीं सधू ।
सतगुरु बिना नरक में जावे सतगुरु बिन कहो कूण छुडावे ॥ २३

सतगुरु बिन कबहू नही छूटे जहां जावे जहां जमरो लूटे ।
सतगुरु बिना बहुत फिर भटके जहां जावे जहां जमरो पटके ॥ २४

सतगुरु बिना सरब कू ध्यावे गागा पाबू मात सरावे ।
सतगुरु बिना सरब कू जाणे क्षत्रपाल बहु भूत मसाण ॥ २५

सतगुरु बिना सरब कू सेवे धूप रूप सू बहु दिन खेवे ।
सतगुरु बिना सरब कूं जोवे करामात रिध सिध कू रावे ॥ २६

सतगुरु बिना एक नहीं सूझे अनत देव को फिर फिर पूजे ।
सतगुरु बिन बहु देव मनावे हद की बात सफल कर जाणें ॥ २७

सतगुरु बिना राम नहीं पावे रसना कठ किम प्रेम मिलावे ।
सतगुरु बिन हिरदा नहीं सूधा निज नाम बिन कमल ज्यूं ऊंधा ॥ २८

सतगुरु बिना नाभि नहीं भावे सासोसास कहो किम लावे ।
सतगुरु बिन रग रग नहीं बोले अन्तर ध्यान कहो किम खोले ॥ २९

---

१९ समी – समान । २२ उडत नहीं गडता – उडना और जमीन में छिप जाना ।
२५. जोवे – आराधना करता है । २७ ऊंधा – उल्टा

सतगुरु बिन अजपा नही जाणै, रूम-रूम रस किस विध माणै ।
सतगुरु बिना वक नही पीवै, कैसे मिल कर जुग-जुग जीवै ।। ३०
सतगुरु बिना पच नही उलटै, कागवस कहो किस विध पलटै ।
सतगुरु विना अरध नही जाणै, उरध-कमल कहो किस विध माणै ।। ३१
सतगुरु बिना मेरु नही छेदे, आकस-कमल कहो किस विध भेदै ।
सतगुरु बिन अनहद नही वावै, तिरवेणी तट कैसे न्हावै ।। ३२
सतगुरु विना लिव्व नही लागै, ब्रह्म जोत कहो किस विध जागै ।
सतगुरु विन दसवौ नही जाणै सहज समाधि किसी विध माणै ।। ३३

साखी

सतगुरु बिन सुध ना लहै, कोटिक करो उपाय ।
रामदास सतगुरु बिना, सब जग जमपुर जाय ।। ३४

चौपाई

कोटि-कोटि वहु ज्ञान दिढावे, कोटि-कोटि धुन ध्यान लगावै ।
कोटि-कोटि बहु देव अराधै, कोटि कोटि किरिया जो साधे ।। ३५
(तोहि) गुरु गोबिन्द बिन मुक्ति न जावै, सतगुरु विना काल सब खावै ।। टेर
कोटि-कोटि तीरथ फिर आवै, कोटि-कोटि असनान करावै ।
कोटिक दै पृथ्वी परदिखना, निज नाम बिन प्रेम न चखना ।। ३६
कोटि-कोटि बहु तुला वसावै, सोना रूपा दान दिरावै ।
और द्रव्य बहुतेरा देवै, सहस नाम निसी दिन लेवै ।। ३७
कोटि-कोटि जिग होम करावै, कोटियक ब्रामण नूत जिमावै ।
कोटिक गउवा दान दिरावै, कोटि-कोटि बहु हेत लगावै ।। ३८

---

३० कागवस – कुडलिनी । ३१ आकस कमल – सहस्रार चक्र । वावै – बजते हैं ।
३५ किरिया जो साधे – तांत्रिक क्रियाओ की साधना । ३६ परदिखना – प्रदक्षिणा ।
३७ तुला वसावै – तुला दान करते हैं । ३८ नूत – निमन्त्रण देकर ।

धरम कर कन्या परनावे दत्त दायजो कोटि दिरावे ।
कोटि-कोटि कन्यावल लेवै, सरब भप को बहु धन देवै ॥ ३९

कोटि-कोटि जस सत्त कमावे कोटिक तपस्या तप्प करावे ।
कोटिक बरत कर बहुतेरा पोल पहर लूटावत डेरा ॥ ४०

कोटि-कोटि रिघ सिघ कमावे, कोटि-कोटि भंडार भरावै ।
सदावरत बहुतेरा देवै ग्यान-गुरु कू निस दिन सेवै ॥ ४१

कोटिक कहत कहन बहु कहणी, कोटिक रहत रहस बहु रहणी ।
रेचक कुंभक जोग जु साधै त्राटक ध्यान करे मन छाज ॥ ४२

कोटि-कोटि उडता बहु गडता, कोटिक पडपा होय जो पिंडता ।
कोटिक अगम निगम की सूझ, कोटि-कोटि सूरा हुय जूझ ॥ ४३

कोटि करै बार पतसाई नवा खंडा मैं नौबत घाई ।
उद मस्त लग मदल चलावे विधी लोक सुर लोकां जावे ॥ ४४

सप्त दीप सू भाग सवाई, एक चक्रवर्ती ठकराई ।
एको मुक्त बहू नहीं भाया फिर पाछा गर्भवासा आया ॥ ४५

कोटिक ब्रह्मा विष्णु धियावे सिव सगती सू ध्यान लगावे ।
भौर देव बहुतेरा सेवै धूप दीप सो निस दिन सेवै ॥ ४६

चयद भवन पान पर जावे ब्रह्मा विष्णु महेस डरावे ।
काल डर प्रणघट गूं भाई ता मूं रती मुरत लगाई ॥ ४७

साखी

ता सूरत पर रामदास वार वार बलि जाय ।
जिणज पर ता माम गो आ मू फाम न गाय ॥ ४८

---

३९ परनावे – विवाह करते हैं। दत्त दायजो – दहेज। कन्यावल – कन्यादान।
सरब भप – सभी प्रकार के भिखारी। ४० बरत – व्रत।
४१ ग्यान-गुरु – ज्ञान देने वाले गुरु। ४२ रेचक कुंभक – प्राणायाम के अंग।
४४ बारे पतसाई – बारह बादशाहत। मदल चलावे – [illegible]।
४६ सिव सगती – भैरव एवं महामाया की उपासना।

चौपाई

सुन्य सिखर मे हाट मडाया, विणजण कू वौपारी आया।
हरि हीरा की धडी लगाई, निज्ज नाम की गूण भराई ।। ४९

पास पचीस बलदिया लाया, गूण घात्त कर लाद चलाया।
सतगुरु के चेला तुम जावो, काया पाटण विणज हिलावो ।। ५०

चेला चल कर लारे आया, दिल भीतर वाजार मडाया।
चित्त चौहटै आण उतारी, फिर फिर जावै सब व्यौपारी ।। ५१

तत् की तराजू दिल की डाडी, उर भीतर हम हाट जु माडी।
कडदा करम परा कर पाखै, तत्त नाम इक हीर जु राखै ।। ५२

अरध उरध बिच रस्त चलाई, जमडाणी अब न्यारा भाई।
विणज करै विणजारो जागै, जमडाणी का जोर न लागै ।। ५३

हाट मडाई चौडै चौहटै, चोर न मुसै लाट नहि बाटै।
विणजण कू जग चल कर आवै, हीरा पारख कोइ न पावै ।। ५४

जोहरि ह्वै सो पारख पावै, तन-मन दे हीरा ले जावै।
हरि हीरा की नाव चलाई, जग भीतर मे धुरा बधाई ।। ५५

धुर बोरे अब मेल घणेरा, विणज करै अरु सुन मे डेरा।
आपहि धुर आपहि है बोरा, आपहि विणजै आप हि हीरा। ५६

हरि हीरा का भर्या भडारा, विणज करै है अगम अपारा।
विणज करै अरु सुन मे आया, सतगुरु सेती सीस नवाया ।। ५७

---

४९ **विणजण** – व्यापार करने के लिये। **गूण** – अनाज के बोरे जो बैलो और गधो पर ढोहे जाते हैं। **घडी** – पाच सेर का माप।
५० **बलदिया** – बैल। **हलावो** – चलावो ५१ **लारै** – पीछे। **चौहटै** – चौराहे पर।
५२ **कडदा** – अनाज मे निकलने वाला कचरा। ५३. **रस्त** – रास्ता। **जमडाणी**–यमराज।
५४ **चोर न मुसै लाट नहि बाटै** – न तो चोर चुरा सकता है और न लाट हिस्सा बटा सकते हैं। ५६ **धुर** – ऋणी। **बोरा** – ऋणदाता।

धरम करै कन्या परनावै दत्त दायजो कोटि दिरावै ।
कोटि-कोटि कन्यावल लेय, सरब भप को बहु धन देवै ॥ ३९

कोटि-कोटि जग्य सम्त कमाय, कोटिक तपस्या तप्प कराय ।
कोटिक वरत करे बहुतेरा पोस पहर लूटावत डेरा ॥ ४०

कोटि-कोटि रिध-सिध कमावै कोटि-कोटि भंडार भरावै ।
सदावरत बहुतेरा देवै कान-गुरू कूं निस दिन सेवै ॥ ४१

कोटिक कहत कहत बहु कहणी, कोटिक रहत रहत बहु रहणी ।
रेचक कुंभक जोग जु साधे त्राटक ध्यान करे मन बांध ॥ ४२

कोटि-कोटि उग्रता बहु गम्यता, कोटिक पढ़ता होय जो पिंडता ।
कोटिक अगम निगम की सूझ, कोटि-कोटि सूरा हुय झूझ ॥ ४३

कोटि कर बार पतसाई नवा खंड मै नौबत बाई ।
उद अस्त लग अदल चलाव विधी लोक सुर लोका पावै ॥ ४४

सप्त दीप नू भाण समाई, एक चक्रवर्ती ठकराई ।
एको सुख कहू नहीं भाया फिर पाछा गर्भवासा आया ॥ ४५

कोटिक ब्रह्मा विष्णु धियावे सिव सगती सू ध्यान लगावै ।
और देव बहुतेरा सेवै धूप रूप सो निस दिन सेव ॥ ४६

चवदै भवन काल घर जावै ब्रह्मा विष्णु महेश डरावै ।
काल डरे अणघड़ सूं भाई ता सू मता सुरत लगाई ॥ ४७

साखी

ता मूरत पर रामदास वार वार बलि जाय ।
विणज कर ता नाम को जा कू काल न खाय ॥ ४८

---

३९ परनावै – विवाह करते हैं । दत्त दायजो – दहेज । कन्यावल – कन्यादान ।
सरब भंप – सभी प्रकार के भेषधारी । ४० बरत – व्रत ।
४१ कान-गुरू – कान फूंकने वाले गुरु । ४२ रेचक कुंभक – प्राणायाम के अंग ।
४४ बारै पतसाई – बारह बादशाहत । अदल चलावै – धर्मनिष्ठ नीति ।
४६ सिव सगती – भैरव एवं महामाया की उपासना ।

चौपाई

सुन्य सिखर मे हाट मडाया, विणजण कू वौपारी आया।
हरि हीरा की धडी लगाई, निज्ज नाम की गूण भराई ।। ४६

पास पचीस बलदिया लाया, गूण घात्त कर लाद चलाया।
सतगुरु के चेला तुम जावौ, काया पाटण विणज हिलावौ ।। ५०

चेला चल कर लारै आया, दिल भीतर वाजार मडाया।
चित्त चौहटै आण उतारी, फिर फिर जावै सब व्यौपारी ।। ५१

तत् की तराजू दिल की डाडी, उर भीतर हम हाट जु माडी।
कडदा करम परा कर पाखै, तत्त नाम इक हीर जु राखै ।। ५२

अरध उरध बिच रस्त चलाई, जमडाणी अब न्यारा भाई।
विणज करै विणजारो जागै, जमडाणी का जोर न लागै ।। ५३

हाट मडाई चौडै चौहटै, चोर न मुसै लाट नहिं बाटै।
विणजण कू जग चल कर आवै, हीरा पारख कोइ न पावै ।। ५४

जोहरि ह्वै सो पारख पावै, तन-मन दे हीरा ले जावै।
हरि हीरा की नाव चलाई, जग भीतर मे धुरा बधाई ।। ५५

धुर बोरे अब मेल घणेरा, विणज करै अरु सुन मे डेरा।
आपहि धुर आपहि है बोरा, आपहि विणजै आप हि हीरा। ५६

हरि हीरा का भर्या भडारा, विणज करै है अगम अपारा।
विणज करै अरु सुन मे आया, सतगुरु सेती सीस नवाया ।। ५७

---

४६ **विणजण** – व्यापार करने के लिये। **गूण** – अनाज के बोरे जो बैलो और गधो पर ढोहे जाते हैं। **धडी** – पाच सेर का माप।

५० **बलदिया** – बैल। **हलावौ** – चलावो ५१ **लारै** – पीछे। **चौहटै** – चौराहे पर।

५२ **कडदा** – अनाज मे निकलने वाला कचरा। ५३ **रस्त** – रास्ता। **जमडाणी**–यमराज।

५४ **चोर न मुसै लाट नहिं बांटै** – न तो चोर चुरा सकता है और न लाट हिस्सा बटा सकते हैं। ५६ **धुर** – ऋणी। **बोरा** – ऋणदाता।

सुम सिखर में गुरु विराज, रात दिना नित नौबत बाजै ।
सिष सतगुरु एक मिल हूवा विणज कर भ्रम कवहु न जूवा ॥ ५८

साखी

सतगुरु समाजु को नहीं इण जुग ही के मांहि ।
रामदास सतगुरु बिना दूजा दीसै नांहि ॥ ५९

सूरत सुद्ध कबीर सी दादू सा दीदार ।
हरिरामा हरि सारसा भजन जोत इकसार ॥ ६०

हरिरामा गुरु सूरवा ग्यान ध्यान भरपूर ।
चौरासी सू काढ कर किया काल जम दूर ॥ ६१

ऐसा माघू नामदेव जसा है हरि राम ।
रामै कू सरणै लिया मेल निरंजण राम ॥ ६२

हरिरामा प्रहलाद सा जैसा रामानंद ।
चरण परस सिस चेतिया मन में भया अनंद ॥ ६३

सिध माया सब त्याग कर, हिरदै ध्यान लगाय ।
रामदास निरभ भया सतगुरु सरणा आय ॥ ६४

सतगुरु केवल रामदास मिल्या निकेवल मांहि ।
हरिरामा सत ब्रह्म है सिष भी निरभै थांहि ॥ ६५

चरणां चाकर रामियो सतगुरु है माराज ।
चार चक्क चवदै भवन ताहि परै सत राज ॥ ६६

सतगुरु को मुख देखतां पाप सरीरां जाय ।
साधु संगत सत रामदास अठसठ पदी सं जाय ॥ ६७

गुरु गोबिन्द की महर तैं रामा पढी पिछाण ।
सब सतां मे ऊपर, वारूं मेरा प्राण ॥ ६८

---

४ इकसार – एकसार । ६६ माराज – महाराज ।
१

— ठी मस्ते

दरसण दीठा रामिया, भाज जाय सब भ्रम ।
ऐसा गुरु हरिरामजी, परस्या काटै क्रम ।। ६९

पूरण ब्रह्म विराजिया, गाव सिंहथल माहि ।
रामदास जन जानसी, दूजा को गम नाहि ।। ७०

इति श्री गुरु महिमा सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ भक्तमाल

साखी

मै अबला हू रामदास, आधौ अती अचेत ।
तुम सतगुरु हो सीस पर, हम कू करो सचेत ।। १

रामदास की वीनती, तुम हो अगम अपार ।
भक्तमाल का भेव दौ, सतगुरु करू जुहार ।। २

चौपाई

सतगुरु मिल्या नाम निज पाया, सत्त सबद कू निस दिन ध्याया ।
हृदय-कमल घर लीया वासा, बीज भगति मोय उपजी आसा ।। ३

नाभ कमल मे राम मिलाया, रूम-रूम मै रग लगाया ।
उलटा सबद पिछम दिस फिरिया, अरधे-उरध प्रेम रस झरिया ।। ४

मनुवा उलट अगम घर आया, सब सतन का दरसन पाया ।
सब सत मेरे सीस विराजै, सत्त सबद सता मुख छाजे ।। ५

---

७० सिहथल – बीकानेर राज्यान्तगत आचार्य श्री का गुरुधाम ।
२ भेव – रहस्य । जुहार – नमस्कार ।

सुन्य सिखर में गुरू विराज राता दिना निस नौबत बाज ।
सिष सतगुरु एक मिल हूवा, विणज करै अब कबहु न जूवा ॥ ५८

साखी

सतगुरु समाजु को नही इण जुग ही के माँहि ।
रामदास सतगुरु बिना, दूजा दीसै नाँहि ॥ ५९

सूरत सुद कबीर सी दादू सा दीदार ।
हरिरामा हरि सारसा अनत जोत इधकार ॥ ६०

हरिरामा गुरु सूरवा ज्ञान ध्यान भरपूर ।
चौरासी सू काढ कर किया काल जम दूर ॥ ६१

ऐसा साधू नामदेव जसा है हरि राम ।
रामै कू सरणै लिया मेल निरंजण राम ॥ ६२

हरिरामा प्रहलाद सा जैसा रामानद ।
चरण परस चित चेतिया मन में भया अनद ॥ ६३

विष माया सब त्याग कर हिरदै ध्यान लगाय ।
रामदास निरभ भया सतगुरु सरणै आय ॥ ६४

सतगुरु केवल रामदास मिल्या निकेवल माँहि ।
हरिरामा सत ब्रह्म है सिष भी निरभ थाँहि ॥ ६५

चरणां चाकर रामियो सतगुरु है माराज ।
चार चक्क चवदै भवन ताहि परै सत राज ॥ ६६

सतगुरु का मुख देखतां पाप सरीरां जाय ।
साधु संगत सत रामदास अटल पदी स जाय ॥ ६७

गुरु गोविन्द की महर तैं, रामा पद्धी पिछाण ।
सब संतां क ऊपर वारू मरा प्राण ॥ ६८

---

१ इधकार – अधिकार । ६६ माराज – महाराज ।

पद की पारे

दरसण दीठा रामिया, भाज जाय सब भ्रम ।
ऐसा गुरु हरिरामजी, परस्या काटै क्रम ।। ६९

पूरण ब्रह्म विराजिया, गाव सिंहथल माहि ।
रामदास जन जानसी, दूजा को गम नाहि ।। ७०

इति श्री गुरु महिमा सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ भक्तमाल

साखी

मैं अबला हू रामदास, आधौ अती अचेत ।
तुम सतगुरु हो सीस पर, हम कू करो सचेत ।। १

रामदास की वीनती, तुम हो अगम अपार ।
भक्तमाल का भेव दौ, सतगुरु करू जुहार ।। २

चौपाई

सतगुरु मिल्या नाम निज पाया, सत्त सबद कू निस दिन ध्याया ।
हृदय-कमल घर लीया वासा, बीज भगति मोय उपजी आसा ।। ३

नाभ कमल मे राम मिलाया, रूम-रूम मै रग लगाया ।
उलटा सबद पिछम दिस फिरिया, अरधे-उरध प्रेम रस भरिया ।। ४

मनुवा उलट अगम घर आया, सब सतन का दरसन पाया ।
सब सत मेरे सीस बिराजै, सत्त सबद सता मुख छाजै ।। ५

---

७० सिंहथल – बीकानेर राज्यान्तगत आचार्च श्री का गुरुधाम ।
२ भेव – रहस्य । जुहार – नमस्कार ।

सब सतों कू राम पियारा, भक्तमाल का करू उचारा।
रामनाम सपत सुख दाई, सब सतों मिल साख बताई॥ ६

राम नाम ध्याव कुल माँई सो वषय मेरा है भाई।
राम नाम कू निस दिन ध्यावे आवागवण बहुरि नहीं आवे॥ ७

राम नाम कूं निस दिन ध्याव, अटल पदी अमरापुर पाव।
राम नाम कू निस-दिन ध्यावे दुख दालदर दूर गमावे॥ ८

राम नाम सूं वहुता तिरिया अनन कोटि अनेक उधरिया।
राम नाम की सुणिय साखा अजामल पुत्र जिन राखा॥ ९

राम नाम की कहू बडाई, अहिल्या कू बीमान चढ़ाई।
राम नाम का मता अपारा, भीवर कुटंब सहिता तार्‌या॥ १०

राम नाम गजराज उधारे सब सतो का काज सुधारे।
राम नाम सू सिला तिराई पाणी ऊपर पाज बधाई॥ ११

राम नाम ऐहा गुन गाऊ जुग-जुग भगति तुमारी पाऊं।
राम नाम की महिमा भारी, मो अबला कूं तार मुरारी॥ १२

तीन-लोक मैं राम धियाव, सो सत जु मरे मन भावे।
रामदास कू राम पियारा जो सिवरे सो प्राण हमारा॥ १३

साखी

हरि की महिमा रामदास कहिये कहा बनाय।
अनत कोटि नर उधरया राम नाम लिव लाय॥ १४

निसाणी

सतगुर स्वामी थी निज नामी निजही नाम धियावंदा।
गगम गरथा काने सरथा रिध सिध बुधि मिलावदा॥ १५

---

११ पाज – पुल। १३ धियाव – ध्यान करते है।

एक सौ पाच।

दस अवतारू ब्रह्म विचारू, ररकार मिल जावदा ।
पाणी पवन'रु धरती अबर, चद सूर गुण गावदा ।। २
नव भी नाथू बारै पथू, परमल परभू ध्यावदा ।
छउ भी जतिया सातू सतिया, चेन जाण जुग जीवदा ।। ३
एको अछर मडै मछर, ॐकार उपावदा ।
लख चौरासी है अविनासी, पूरण ब्रह्म समावदा ।। ४
है भी न्यारा प्रीतम प्यारा, जाहर जोगी जाणदा ।
कोटि अनतू मिले निरतू, रूम-रूम रस माणदा ।। ५
है जुग चारू सत अपारू, दास दीनता गावदा ।
हम कीडी कायर हरि सुख सायर, उलटा अभर भरावदा ।। ६
थाग न पाया ध्याय मिलायो, समदा बूद समावदा ।
रामादासू सतगुरु पासू, निव-निव सीस निवावदा ।। ७

साखी

सतगुरु सेती वीनती, मन का मछर मेट ।
रामदास कू दीजियै, भगत माल जस भेट ।। ८

चौपाई

परथम नाम सदा सिव लीया, पारबती कू निज तत दाया ।
सो सुण नाम सुवा ले भागा, उद्दर माहि राम लिव लागा ।। १
बाहिर आय बसै बन जाई, राम नाम सू प्रीत लगाई ।
माया जीत राम लिव लाए, परम हस पद आनंद पाए ।। २
वेदव्यास बहु ज्ञान उपाया, एक राम कह उलट समाया ।
ब्रह्मा विष्णु राम सू रत्ता, कुवेर जोगी राम सिंवरता ।। ३
सेसनाग गुरु ज्ञान विचार्या, सहस मुखा सूं राम उचार्या ।
राम रसायण नारद पीया, रिष सनकादिक हरि गुण लीया ।। ४

---

५ जाणदा – जानकार । माणदा – मौज करने वाला ।
८ मछर – मत्सर । ९ उद्दर – उदर ।

मारकंड लोमष ऋषि भाई राम नाम सूं प्रीत लगाई।
गारिग ऋषी राम सूं रत्ता गोतम कागभुसंड सिवरता ॥ ५

जैदेव ऋषि की प्रीत पियारी उद्धव हरि सूं लाई तारी।
ऋषि पिंगलायन हरि-हरि ध्याया ज्ञान पाय अज्ञान मिटाया ॥ ६

कुंभी ऋषि काम को जीता, काया गढ़ ले भया वदीता।
करणवध ऋषि राखी काया, नाद बिंद ल गांठ घुलाया ॥ ७

अगस्त ऋषि जुगे जुग जीया सात समद का पानी पीया।
भृगु ऋषि ब्रह्म को चीना, कृष्ण देव का परचा लीना ॥ ८

सेवा करी राम सूं लागा काल क्रोध भय अंतर भागा।
नासकेतु उद्दालक पूरा, प्राण मिल्या सुख सागर सूरा ॥ ९

ऋषि समीक भूमंडल गाया, राम नाम कूं निस-दिन ध्याया।
दालभ्य ऋषि एक धुन धारी, सत समद सू प्रीत पियारी ॥ १०

मुनी वशिष्ठ समाधी सूरा, निस दिन हरि की रहै हजूरा।
ऋषभदेव राम सू रत्ता परमहंस पद ज्ञान अनता ॥ ११

भरत सुरत अवध मन परच्या केवल भया नमो अण संच्या।
गुरु गंगेव राम गुण गाया, जिण माई कू भेद बताया ॥ १२

विश्वामित्र हि ब्रह्म विचार्‌या रुम रूम मैं राम उचार्‌या।
बाहुबल बलवता हूवा मन कू जीत सता मिल चूवा ॥ १३

राजा भरत महा पटरानी दोन्या भगत निवेयस जानी।
महावीर महा सत पाया केवल होय अटल मठ छाया ॥ १४

जगीश्वर कामदल चाल्या परदेसी सता मिल हाल्या।
चोबीस तिर्थंकर राम धियाया, केवल होय मोक्ष पद पाया ॥ १५

भगवत नाम निरजन भला, निज्ज नाम सूं कीया भला।
राम जाप जम का डर नाहीं भगवद् मिल्या उतहि घर माहीं ॥ १६

---

८ चीना – पहिचाना। १५. तिर्थंकर – तीर्थंकर।

सिरियादे प्रह्लाद उधरिया, राम नाम ले कबहु न डरिया।
भीड पडी सतां पख आया, हिरनाकुस कू मार गुडाया॥ १७

सिंह रूप अवतार धारिया, तिलक दिया प्रह्लाद तारिया।
कार्तिक स्वामी हनुमत सूरा, सीता लिछमन राम हजूरा॥ १८

त्यागा राज भरत बन लीया, राम रसायण निस-दिन पीया।
शत्रुघन राम गुन गाया, मदोदरी विभीषण पाया॥ १९

तुलसीदास राम का प्यारा, आठू पहर मगन मतवारा।
भूत मिल्या हरि भेद बताया, हनूमान हरि चरणा लाया॥ २०

राजा जनक राम का प्यासा, षट्दिलीप प्रेम परकासा।
परीक्षत प्रेम पियाला पीया, जनमेजय निज तत ले जीया॥ २१

पारायण सुनके पद पाया, आवागवण बहुर नहिं आया।
रुखमागद पुडरीक उधरिया, राजा सिवी सत्त सू तिरिया॥ २२

गुडराज गोविन्द गुण गाया, सुखसागर मै सहज समाया।
मोहमरद निरमोही राजा, दीठा जाय अगम का छाजा॥ २३

परजादीप परम तत पाया, हाकम सता चरण लगाया।
करिया करम् राम कू गाया, दिन पेंतीसा मोष मिलाया॥ २४

मोरधज्ज का मता करारा, त्यागी देह राम का प्यारा।
सदावरत दीया सुख पाया, सता कू बहु सीस निवाया॥ २५

प्रेम भगति सू प्रीत लगाई, बैंकुठा चढ नौबत बाई।
जन अम्बरीष राम गुन गाया, चरणामृत लेकर सुख पाया॥ २६

दुरवासा ऋषि श्रापन आया, उलटा दुख उनी कू ध्याया।
तपत लगी तन मै बहु भारी, साहिब सेती अरज गुदारी॥ २७

हरिजन हरि कू बहुत पियारा, भगत काज धरिया अवतारा।
उलटा ऋषी लगाये पाये, सतन का कारज सुधराये॥ २८

---

२७ गुदारी – गुजारिश, निवेदन। २८ पाये – चरण।

मारकंड लोमप ऋषि भाई, राम नाम सू प्रीत लगाई।
गारिग ऋषी राम सू रत्ता गोतम कागभुसंड सिवरता॥ ५

मैदव ऋषि की प्रीत पियारी उद्धव हरि सू लाई सारी।
ऋषि पिंगलायन हरि-हरि ध्याया ज्ञान पाय अज्ञान मिटाया॥ ६

कुंभी ऋषि काम को जीता काया गढ़ मे भया मदोता।
करणमध ऋषि राखी काया नाद बिंद से गांठ घुलाया॥ ७

अगस्त ऋषि जुगे जुग जीया, सात समद का पानी पीया।
भृगु ऋषि ब्रह्म को चीना, कृष्ण देव का परचा लीना॥ ८

सेवा करी राम सूं लागा, काल क्रोध मद मतर भागा।
नासकेतु उद्दालक पूरा, प्राण मिल्या सुख सागर सूरा॥ ९

ऋषि समीक भूमंडल गाया, राम नाम कू निस-दिन ध्याया।
दालभ्य ऋषि एक धुन धारी, सत्त सबद सू प्रीत पियारी॥ १०

मुनी वशिष्ठ समाधी सूरा, निस दिन हरि की रहै हजूरा।
ऋषभदेव राम सूं रत्ता परमहंस पद ज्ञान अनता॥ ११

मत्त सुरत अखध मन परख्या, केवल भया नमो मण मंछ्या।
गुरु गगेव राम गुण गाया, जिण माई कू भेद बताया॥ १२

विस्वामित्र हि ब्रह्म विचार्‌या रूंम-रूंम मैं राम उचार्‌या।
वाह्बल बलवता हूवा मन कू जीत संसा मिल मूवा॥ १३

राजा भरत महा पटरानी दोन्या भगत निकेवल जानी।
महावीर महा तत्त पाया केवल होय मटल मठ छाया॥ १४

कसोबवर वामदल पाल्या परदेसी सतां मिल हाल्या।
चोवीस तिर्थंकर राम धियाया केवल होय मोक्ष पद पाया॥ १५

भगवत नाम निरंजन भता, निज्ज नाम सूं कीया मता।
काल जाल जम का डर नाहीं भगवद् मिल्या ताहि घर माहीं॥ १६

---

* चीना—पहिचाना। १५. तिर्थंकर—तीर्थंकर।

पद सी चीतन?

नरसीदास राम का प्यासा, प्रेम-भगति पाई परकासा।
साई के सत हुवा हजूरी, कर माहेरौ आसा पूरी ॥ ४०

तिलोचद की भगति करारी, लेखण स्याही आप मुरारी।
सुदामा का दालद हरिया, राम नाम ऐसा गुन करिया ॥ ४१

प्रेम भीलणी भगति पियारी, वोर पाय कर सिखा वधारी।
सरिता नीर निर्मला कीना, सवरी रघुवर टीका दीना ॥ ४२

सर जह ऋपी सतगुरू पाया, ऋपि मिल हरि दरसन कू आया।
सवरी भक्त भलीपण कीनी, सब ऋपिया माही मिल लीनी ॥ ४३

ईसर बाप गधा कू कीया, पिता पुत्र खोला मे लीया।
नेमनाथ नारायण ध्याया, भेदी भेद ब्रह्म का पाया ॥ ४४

आदिनाथ मिलिया अविनासी, केवल हुवा एक सुख रासी।
गणिका गुरु सूवा कू पाया, सत्त सबद कू निस-दिन गाया ॥ ४५

रका बका नाम पियासा, नामा छीपा हरि का दासा।
देवल फेर'रु दूध पिलाया, स्वान रूप हुय भोजन पाया ॥ ४६

परचा पूगा परज पतीनी, दसध्या भक्ति नामदे कीनी।
दत्त दरस दिल भीतर पाया, गुरु चौवीसू ले गुन गाया ॥ ४७

निश्चय एक नाम की आसा, राम-राम कह ब्रह्म विलासा।
राघवानद राम का प्यारा, रूम-रूम मे लीया भारा ॥ ४८

विष्णु स्वामि माधवा प्यारा, सत्त सबद ले किया पसारा।
रामानद नीबानद भाई, कलजुग माहि भगति हलाई ॥ ४९

चार सम्प्रदा बावन द्वारा, हूवा सिष उजागर सारा।
भावानद अनतानद दासा, राम-नाम सू लाई आसा ॥ ५०

नरहरदास निकेवल लीया, सामगुलगुलै हरि रस पीया।
धनै सुरसुरै सुरत लगाई, राम नाम मीठो रे भाई ॥ ५१

---

४३ भलीपण – भलाई। ४७ दसध्या भक्ति – दसवी भक्ति साधना।

द्विज कन्या दिल माही दरस्या उलटी मिलो अगम घर परस्या ।
राजा हरिचंद सती कहाया सत्त न हार्या हाट विकाया ॥ २९

बलि जग मांही यज्ञ रचाया बावन रूप छलन कू आया ।
बलि नहि छलिया आप छलाया राज पयालां निश्चय पाया ॥ ३०

पांडव पांच राम का प्यारा कुंती माता अगम अपारा ।
पांडव जग में यज्ञ रचाया, चार कूंट का ऋषी बुलाया ॥ ३१

जाग जीमिया सख न बोला स्वामी कांहि न अंतर खोला ।
सामी भेद संत का दीया पडवां जाय वाल गुण लीया ॥ ३२

वालमीक की सोभा सारी कीनो जाग संपूरण भारी ।
दूजा वाल्मीकि इक हूवा, राम राम कह निरभै बूवा ॥ ३३

सौ क्रोड़ रामायण कीनी सुरग मरत पातालां दीनी ।
नहचै नाम एक की आसा राम राम अहै ब्रह्म विलासा ॥ ३४

द्रोपा प्रेम पियाला पीया, चीर वधार परम सुख लीया ।
विदुर भेद भगति का पाया नाम निकेवल निस दिन ध्याया ॥ ३५

बथवै हृदा साग बनाया साहिब कूं परसाद कराया ।
साहिब साधू प्रीत पियारी कैरू हार गया अहंकारी ॥ ३६

सूरदास भक्त सुखदाई राम नाम सूं प्रीत लगाई ।
नामू कीर राम का प्यारा रूम-रूम मे लीया भारा ॥ ३७

सत हरिदास सुरति उलटाई दऊनी भोम सातमी पाई ।
धूजो ध्यान धणी सूं लाया अटल पदी अमरापुर पाया ॥ ३८

भगत-बस म भत जु सूरा बैकूंठा मिल्यिा जन पूरा ।
रतनदास राम सूं रता रूम-रूम मे लागा सत्ता ॥ ३९

---

३२ सामी – स्वामी (कृष्ण)। वाल – वाल्मीकि।
३५ द्रोपा – द्रौपदी। वधार – बढ़ा कर। ३६ बथवै – बथवा। कैरू – कौरव।
३८ बैकूंठो – बैकुंठ। धूजो – भक्त ध्रुव।

गैबीराम गैब सू मिलिया, सब सता सुखदाई भिलिया।
गोबिन्दराम राम गुन गाया, दास निकेवल निज तत पाया ॥ ६४

अल्हैदास अगम की आसा, भगत पदी मे कीया वासा।
कोल गेस कुलसेखर सारा, मुकनदास मिलिया तत सारा ॥ ६५

मुरलीदास मलूका वेई, आण मिल्या सुख सागर सेई।
चदै चित चेतन कर जाण्या, सतरै रूम-रूम रस माण्या ॥ ६६

मख्खु भेड पीया रस बकी, चौडै चपट मड्या चित चौकी।
चित सू चित चेतन कर ध्याया, आतम माहि परातम पाया ॥ ६७

हरीदास हरि का हितकारी, सत्त सबद सू प्रीत पियारी।
कानडदास काम कू त्याग्या, राम नाम सू निस-दिन लाग्या ॥ ६८

मगनीराम मगन मे रहना, आठ पहर नित राम सिवरना।
जाधीराम जुगत कर जान्या, ब्रह्म चीन निज तत्त पिछाना ॥ ६९

बालकदास ब्रह्म व्यौपारी, उलटै आय लगाई यारी।
केसोदास काम किण काजी, राम नाम भजिया हुय राजी ॥ ७०

हरिचरणदास चरणा चित लाया, सतगुरु सेती प्रेम मिलाया।
चेतनदास चेत जुग जीया, आतम रामरसायण पीया ॥ ७१

मोहनदास मान गढ मार्‌या, रूम-रूम मे राम पुकार्‌या।
मानादास महारस पीया, उलटै आय अगम सुख लीया ॥ ७२

दास मुरारि मिल्या मन माही, तिरवेणी चढ ध्यान लगाही।
सत सिवदास साम सू सच्चा, सच्च सबद सू निस-दिन रच्चा ॥ ७३

वाणारसी राम सू लाग्या, उलटा मिल्या अगम घर आगा।
देईदास दिल माही दरस्या, रूम-रूम मे इमृत बरस्या ॥ ७४

---

६६ वेई – वही।

६७ चौडै चपट मड्या चित चौकी – मन के आसन पर बैठ कर प्रत्यक्ष रूप से योग-साधना की।

सता के मुख बीज बुहाया, खेती माँहि नाज निपजाया।
दास कबीर मगन मतवारा, सहज समाधि बनी इक धारा ॥ ५२

सब सतां में चखव हूवा, ब्रह्म विलास कबहु नहि जूवा।
हुय बिणजारा बालद ल्याया सदायरस दे सत सराया ॥ ५३

कमाल कमाली हरिगुण गाया, सुख सागर म सहज समाया।
कबीर कमाल जमाल जमल्ला, सेख फरीद सिवरिया अल्ला ॥ ५४

श्रीसहमर गुरु गम पाई, बहुतर सिखां पदस हलाई।
सुरसुरानंद गुरु धरम सधाया महापरसाद प्रताप दिखाया ॥ ५५

सनानाप सुखानद भाई, भाय मिल्या सुख सागर माँह।
सीता पीय प्रेम पियारा, राम नाम रटिया इक धारा ॥ ५६

गना माँहि भिया सिह चेला राम नाम सूं बांध्या बेला।
भापा पाउ समद म लीनी छापा भाण परगटी कीनी ॥ ५७

राघोदास प्रेम सिव लागा जुरा-मरण का भय डर भागा।
राम नाम रैदास उधरिया रूम-रूम में मीभर भरिया ॥ ५८

काढ जनेऊ विप्र निवाया, सालग स्वामी मुखां सुलाया।
विप लगा चरणामृत लाया साहिब महुर्जा इमृत कीया ॥ ५९

इमृत उलट मिल्या पट मांही रमाम चमारो सतगुरु पाही।
कुल मारग कूं पाने त्यागा मीरा चली गुरा की पाजा ॥ ६०

मीरा रतना परमा पाई भाम्नी प्रीत राम सूं लाई।
प्रेमी प्रेम पियाला पीया सतगुरु सूं मिल निज तत लीया ॥ ६१

धोभण मन सूं थिर कर राख्या, राम नाम भजिया गुण राखा।
परमातम ध्यान पर ध्याया अनहद नाद अगोचर पाया ॥ ६२

टागमगाग मगाय तरा माहूनाग गम सूं रत्ता।
ग्राी नान पीलिया निरगुण माया दूर करी गय गुरगुण ॥ ६३

---

११ [illegible] – [illegible] लगाई।

[illegible]

जो गोरख जोगी तुम आदू, उर भीतर मे है गुरु दादू।
लालदास लागा उर घाटी, कीन्ही दूर भरम की टाटी ।। ८६

नानू नाम निकेवल लीया, जन गोपाल जाण जुग जीया।
दास पिराग परम पद पाया, जैमलदास नितो-नित ध्याया ।। ८७

घड़सी टीलादास फकीरा, सतदास मिलिया सुख सीरा।
वखना वाजिंदा हरिदासा, सजनै राम भज्या इक सासा ।। ८८

सोभाराम राम गुण गाया, हरिव्यासी हरि माहि समाया।
परसाराम राम मतवारा, सब सता सू मिलिया प्यारा ।। ८९

ततवेता निज तत्त पिछाणा, घमडीदास राम कू जाणा।
वीरम त्यागी तन-मन त्यागा, राम नाम भजिया गुरु आग्या ।। ९०

हरीदास हरि सू हित लाया, राम नाम कू निस-दिन ध्याया।
खोजी खोज पकडिया सैठा, सब सता माहि मिल बैठा ।। ९१

केवल कूबा ब्रह्म विलासी, उलटा अलख मिल्या अविनासी।
खेमदास की आसा पूरी, निस-दिन राख्या राम हजूरी ।। ९२

सकर स्वामी सिवरण कीया, अजपा जाप रामरस पीया।
गोपीचद भरथरी पूरा, अनहद अखड बजाया तूरा ।। ९३

गोरखनाथ मछदर जोगी, रग-रग भेद लिया रसभोगी।
क्रोड निनाणू राजा हूवा, गाया राम अगम घर वूवा ।। ९४

हरीदास पूरा गुरु पाया, नाम निरजन पथ चलाया।
बावन सिष्य मिल्या सुख माई, पाढू माता चेली क्वाई ।। ९५

द्वादस पथ सत बडभागी, छाप निरजन माया त्यागी।
अजन छाड निरजन ध्याये, मन निरमल निश्चै कर पाये ।। ९६

---

९० ततवेता – तत्ववेत्ता। ९१ सैठा – मजबूत।

९४ वूवा – चले गये। ९५ क्वाई – कहलाई।

९६ द्वादस पथ – निरजनी सम्प्रदाय की बारह शाखायें। अजन – माया।
निरजन – परब्रह्म।

दास फुवारी परमल हूवा ब्रह्म विलास कवहु नहीं जूवा ।
किसनदास राम गुन गाया ये गलते का महत कहाया ॥ ७५

अगर कील हुवा उजियागर अनभै वाण मिल्या सुखसागर ।
बदर नाभा हरि गुन गाया भक्तमाल कर सत सराया ॥ ७६

समन सेऊ प्रम पियारा, राम नाम रटिया इक धारा ।
घाटमदास जात का मणा सतगुरु सेती मिलिया सेणा ॥ ७७

डाला भर गेहू का लाया संतों कूं परसाद कराया ।
कीता मिल्या राम सू राजी रूम रूम मैं झालर बाजी ॥ ७८

सापे तपस्या करी करारी जोधे जाय लगाई तारी ।
नानगदास नाम निज पाया चार कूंट में पथ चलाया ॥ ७९

ईश्वरदास राम का प्यारा हरिगुण कथिया अगम अपारा ।
आसोदास अगम की आसा किनक डंडोत करी बहु दासा ॥ ८०

परमानद आनद दोउ भाई राम नाम सू प्रीत लगाई ।
धरि अवतार बृष्ण हुय आया, दादू कूं निज नाम सुनाया ॥ ८१

दादूदास राम का प्यारा चार पथ से किया पसारा ।
वावन सिष हुवा उजियागर अनभै बान मिल्या सुखसागर ॥ ८२

दास गरीब गुरू घर आया भेदी भेद ब्रह्म का पाया ।
रज्जब पिया रामरस भारी सतगुरु सेती प्रीत पियारी ॥ ८३

प्रीत लगाय प्रेम रस पीया नाम निकेवल निस दिन लीया ।
सुन्दरदास मिल्या सुख मांई नाम निकेवल निस दिन ध्याई ॥ ८४

मुगत-पथ का पाया मारग दादूराम मिल्या गुरु तारग ।
पीये प्रेम पियाला पीया गोरख जोगी दरसन दीया ॥ ८५

---

७८ झालर बाजी – शब्दों की ध्वनि हुई ।
८० डंडोत – दण्डवत ।
८५ तारग – तारने वाले ।

जो गोरख जोगी तुम आदू, उर भीतर मे है गुरु दादू।
लालदास लागा उर घाटी, कीन्ही दूर भरम की टाटी ॥ ८६

नानू नाम निकेवल लीया, जन गोपाल जाण जुग जीया।
दास पिराग परम पद पाया, जैमलदास नितो-नित ध्याया ॥ ८७

घडसी टीलादास फकीरा, सतदास मिलिया सुख सीरा।
वखना वाजिंदा हरिदासा, सजनै राम भज्या इक सासा ॥ ८८

सोभाराम राम गुण गाया, हरिव्यासी हरि माहि समाया।
परसाराम राम मतवारा, सब सता सू मिलिया प्यारा ॥ ८९

ततवेता निज तत्त पिछाणा, घमडीदास राम कू जाणा।
वीरम त्यागी तन-मन त्यागा, राम नाम भजिया गुरु आग्या ॥ ९०

हरीदास हरि सू हित लाया, राम नाम कू निस-दिन ध्याया।
खोजी खोज पकडिया सैठा, सब सता माहि मिल बैठा ॥ ९१

केवल कूबा ब्रह्म विलासी, उलटा अलख मिल्या अविनासी।
खेमदास की आसा पूरी, निस-दिन राख्या राम हजूरी ॥ ९२

सकर स्वामी सिवरण कीया, अजपा जाप रामरस पीया।
गोपीचद भरथरी पूरा, अनहद अखड बजाया तूरा ॥ ९३

गोरखनाथ मछदर जोगी, रग-रग भेद लिया रसभोगी।
क्रोड निनाणू राजा हूवा, गाया राम अगम घर वूवा ॥ ९४

हरीदास पूरा गुरु पाया, नाम निरजन पथ चलाया।
बावन सिष्य मिल्या सुख माई, पाढू माता चेली क्वाई ॥ ९५

द्वादस पथ सत बडभागी, छाप निरजन माया त्यागी।
अजन छाड निरजन ध्याये, मन निरमल निश्चै कर पाये ॥ ९६

---

९० ततवेता – तत्ववेत्ता। ९१ सैठा – मजबूत।

९४ वूवा – चले गये। ९५ क्वाई – कहलाई।

९६ द्वादस पथ – निरजनी सम्प्रदाय की बारह शाखायें। अजन – माया।
निरजन – परब्रह्म।

जग जीवन तुरसी अरु सेवा राम रसायन पीया मेवा।
भाण भेद भगत का पाया खांड धार तरण सो खाया ॥ ९७

राजा जसु जुगत कर जाणा, ब्रह्म चीन निज तत्त पिछाणा।
जगतसिंह की प्रीत पियारी, राय पलट चरणामृत त्यारी ॥ ९८

दव पह प्रीत लगाई, पत्थर मूरत मूढ भणाई।
गूण्ड रूप होय हरि आया, सतदास सत दरसण पाया ॥ ९९

क्रिपा करी नाम निज दीया सास उसास एक धुन लीया।
सतदास मिलिया सुख मांई तिरवणी चढ ध्यान लगाई ॥ १००

अणभै सबद सत बहु बोल्या मुगत-पंथ का पड़दा खोल्या।
गांव दांतड़ का सत वासी चारू कूंट भगति परकासी ॥ १०१

बालकदास राम का प्यारा प्रेम परम तत किया पसारा।
गिरधरदास खेम रूमारी परमानंद लगाई यारी ॥ १०२

जाहर जोगी जग मे जीता सूरवीर सत भया वदीता।
दरिया सा रिल मांही दरस्या उलटा मिल्या अगम घर परस्या ॥ १०३

सहज समाधी मस्त कहाया प्रेम पियाला भर भर पाया।
पिरागदास राम सूं भटया उलटा चढ्या अगम घर मटया ॥ १०४

मध मम म मत जु मूरा दमये द्वार निज परसत नूरा।
मुररामदास सत सबद सभाया मनक से खुरसाण चढाया ॥ १०५

मरम पाट मद भान पीया गैठा जाय अगम का दीया।
मानगदास नाम निज पाया सासो-साम निसानिस ध्याया ॥ १०६

पूरणदास प्रेम रस पीया सतगुरु सरण मिल जुग-जुग जीया।
मोहणराम मिल्या गुरु मांही तिरवेणी चढ ध्यान लगाई ॥ १०७

---

९७ खांड धार तरण सो खाया – भक्ति की तलवार की धार पर अनुभव करें।
१०१ चारूं कूंट – चारों दिशाओं में १०३ वदीता – विदित प्रसिद्ध।
१०५ खुरसाण – तलवार पर धार लगाने का पत्थर।

सेवादास मिल्या सुख माही, वैकूठा चढ नौबत वाई।
सदा राम सून्य का वासी, परम जोत सहजा परकासी ॥ १०८

घमडीराम घमड मे रत्ता, रूम-रूम मे लागा तत्ता।
चरणदास चरणा चित लाया, सतगुरु सेती प्रेम मिलाया ॥ १०९

जैरामा जन मिलिया जाही, काल जाल जम का डर नाही।
खेतादास खरा हुय लागा, उलटा मिल्या अगम घर आगा ॥ ११०

हेमदास हरि का हितकारी, सत्त सबद सू प्रीत पियारी।
हरीदास मेघा बड भागी, उलटी सुरत निरतर लागी ॥ १११

सावलदास मिल्या सुख माई, पारब्रह्म परमानद पाई।
दास पचायण परिपक हूवा, हद कू त्याग बेहद मे बूवा ॥ ११२

टीकमदास राम का प्यारा, रूम-रूम बिच लीया झारा।
पिछम दिसा मुसापर आये, जैमलदास भनत बतलाये ॥ ११३

ता सेती जैमल जल पाया, जब बालाकू सग बुलाया।
सुण रे बाला बात हमारी, तो कू दाखू गुज हृदारी ॥ ११४

गैलै मे गुरु ज्ञान सुणाया, जोग सहित निज नाम बताया।
जैमलदास जाण जुग जीया, आतम रामरसायण पीया ॥ ११५

पचग्राही का महत कहाया, सब सता मे सहज समाया।
ब्रह्म ध्यान सुणियौ सुध पाई, एको राम सत्त है भाई ॥ ११६

जब तै रसना नाम धियाया, कठ-कवल मे प्रेम मिलाया।
हृदै-कवल धमकार सुणीजै, चालो सुरत सतगुरू कीजै ॥ ११७

जैमलदास सत्तगुरु पाया, जद मनवा मेरे बस आया।
हरिरामा हरि का हितकारी, सहज समाधि बनी अति भारी ॥ ११८

---

११० खरा हुय – सिद्ध हो कर। ११३ मुसापर – मुसाफिर। भनत – कहते है।
११४ दाखू गुज हृदारी – हृदय की गुजार कहू। ११७ धमकार – आवाज।

ब्रह्म विलासी हरि जन सूरा, सिप सापा मिल हूवा पूरा।
सत सबद ल किया पसारा, सप्त-दीप नव-खंड विस्तारा ॥ ११९

निज नाम की नाव चलाई गारग सत भगति प्रति भाई।
चांपी माता चित कर पीया, उलटी भाय अगम सुख लीया ॥ १२०

रूम रूम सहजा लिव लागी प्यारीदास मिल्या वडभागी।
रुक्मियाबाई राम पियारी अनहद अखंड लगाई तारी ॥ १२१

रासनारायण अमी धियाया आदूराम राम गुन गाया।
लछमनदास दास वडभाग ज्ञान विचार भया वैरागी ॥ १२२

दईदास गुरुज्ञान समाया, मन मूं ले गुरु-चरण चढ़ाया।
सब सिपां सपति सुखदाई सतगुरु सेती प्रीत लगाई ॥ १२३

गांव सिंहथल सतगुरु मिलिया, रामदास का अंतर मिलिया।
सतगुरु ब्रह्म एक है साधो, रामनाम निस दिन आराधो ॥ १२४

साखी

रामदास रग मूं मिल्या सुन्दर सुख क माय।
सतगुरु है हरिराम जो (चांपी) माता सहज समाय ॥ १२५

सहज मिल्या गुरु घाट में सुखसागर की तीर।
सब संतों म मिल रह्या चुग्या नाम निज हीर ॥ १२६

छंद अधभुजगी

हंस हीर पाया निती सहज ध्याया।
गदा पंठ मागी चली धुंन्न आगी ॥ १

हृद जाय हिल्मिया मनोदेव मिल्मिया।
लगी प्रीत प्यारी चास गग भारी ॥ २

---

१२१ अमी धियाया – अमृत (रामनाम) की साधना की।
१ [illegible] – [illegible]।

नाभी घर आया, सतो पद्द पाया ।
रोमा लिव लागा, 'सोउ हस आगा ।। ३

ररो रग राता, मगन मन्न माता ।
पूरब फेर भाया, पताले लगाया ।। ४

उलट मंन्न आगा, अगम-देस लागा ।
वाकी रस पीया, जुगे जुग्ग जीया ।। ५

तीनू गड्ढ जीता, चौथे मन्न मीता ।
सुरै चद मेला, एके घर भेला ।। ६

पाचू एक वाटी, मिल्या गुरु घाटी ।
पाचू घर आया, मुक्ति द्वार पाया ।। ७

अखड तूर वाजै, गिगन अब गाजै ।
बनी प्रेम विरखा, मिल्या आदि पुरखा ।। ८

मिल्या अविनासी, टली काल पासी ।
अलख एक पाया, टली काल छाया ।। ९

रमै सत सारा, चलै सहृस धारा ।
पिया नीर मीठा, अगम सुख्ख दीठा ।। १०

लिया पीव फेरा, किया सहज डेरा ।
लगी प्रीत प्यारी, सुखम सहज यारी ।। ११

ब्रह्म-भेद पाया, अटल मठ छाया ।
हुवा जीव जोगी, लिया रस्स भोगी ।। १२

पखा बिन्न हसा, उडे मिल्ल असा ।
बिना चचु मोती, चुगै ओत पौती ।। १३

बिना पेड तरवर, बिना पात छाया ।
बिना चचु सूवे, अगम फल्ल खाया ।। १४

---

७ घाटी – एक ही साधना मार्ग । १३ असा – परब्रह्म । ओत पौती – परस्पर ।
१४. पेड – वृक्ष का तना ।

विना पाज सरवर विना नीर भरिया ।
विना मेघ बिरखा अखंड इंद्र झरिया ॥ १५

विना बाग बाडी फुल्या अभ सारा ।
विना घाट नदियाँ पिवे क्षार भारा ॥ १६

विना दोस देवा, करी जाय सेवा ।
विना नींव देवल, पूज्या एक देवा ॥ १७

विना तेल वाती, जग महल दीया ।
विना हाथ वाजा अखंड लग रहिया ॥ १८

विना नार पुरुषा, मिल्या गेह वासा ।
विना माग सहजां, अभी जाय भासा ॥ १९

विना मात पिता एको राम राया ।
अनत कोटि साधू सबै मांहि आया ॥ २०

कहू बात ऐसी सुणो पुरुष नारी ।
सहजे मिलाय हुवा ब्रह्मचारी ॥ २१

अनत कोट साधू मिल्या सब्ब भाई ।
एको नाम निशो निर्मेमल्स ध्याई ॥ २२

साखी

अनत काट नर उधर्‍या राम नाम लिव लाय ।
भगत पदी मे रामदास सहजां रह्या समाय ॥ १

ॐकार त ऊपना दिष्ट कूट आकार ।
वाफ ऊपर रामदास ररंकार तत सार ॥ २

ओउंकार उतपत्त भई धर अंबर कलास ।
वाप ऊपर रामदास, अलग पुरस का वास ॥ ३

---

१ उतपत – उत्पत्ति । अलग पुरस – परब्रह्म ।

अधर अखडी अलख है, रूप रेख नहिं रग ।
रामदास जहा मिल रहा, सतगुरु हदे सग ।। ४

अजब झरोखे अगम के, निरत ब्रह्म का वास ।
जह ओउकार अजपा नही, नाद-विंद नहि सास ।। ५

चद सूर नही सचरै, पाणी पवन न जाय ।
धर-अवर भी वा नही, रामा जिस घर माहि ।। ६

इति श्री ग्रथ भगतमाल सम्पूर्णम्

अथ ग्रंथ चेतावनी

छद उधोर

गर्भ चेतावनी सुन लोय, भज लो राम केसे सोय ।
राखो एक को इकतार, जिण यो उपायौ ससार ।। १

मेल्यो तोहि निज पति नाथ, नख-सिख बनाया सब गात ।
जीव नव मास ग्रभ के माहि, दिन अब जौर दूभर जाई ।। २

दुखियो बहुत विसवावीस, उद्दर माहि उधै सीस ।
लागौ नित्त ही पुकार, यो दुख मेट सिरजणहार ।। ३

जप सू तुमारो मै जाप, तुम हो पिता मेरे बाप ।
लेसू तुमारो मै नाम, हिरदै राख सू नित राम ।। ४

करसूं सत की मै सेव, राखू भगति सू नित भेव ।
तन मन तुमारा है जीव, बोहिर काढ मुझको पीव ।। ५

बाहिर काढियो करतार, लागो मोह माया प्यार ।
बोल्यो तुरत मीठी बाण, दाई करत है बखाण ।। ६

---

१ केसे – किसी प्रकार । उपायौ – उत्पन्न किया । ३ उधै – उल्टा ।
६ बखाण–वर्णन ।

विना पाज सरवर, विना नीर भरिया ।
विना मेघ बिरखा अखंड इंद्र झरिया ॥ १५

विना बाग वाड़ी फूल्या वृक्ष सारा ।
विना घाट नदियाँ पिवै ढार भारा ॥ १६

विना दोस देवा करी जाय सेवा ।
विना नींव देवल, पूज्या एक देवा ॥ १७

विना तेल बाती जग महल दीया ।
विना हाथ वाजा अखंड लग रहिया ॥ १८

विना नार पुरुषा, मिल्या गेह वासा ।
विना भोग सहजां, वधी आय आसा ॥ १९

विना मात पिता एको राम राया ।
अनंत कोटि साधू सब मांहि आया ॥ २०

महू बात ऐसी सुणो पुरुष नारी ।
सहजे मिलाय हुआ ब्रह्मचारी ॥ २१

अनंत कोट साधू मिल्या सब्ब भाई ।
एको नाम निस्तो निकेवल्ल ध्याई ॥ २२

साखी

अनंत कोट नर उधर्‌या राम नाम लिव लाय ।
भगत पदी म रामदास सहजां रह्या समाय ॥ १

ऊँकार ते ऊपना दिष्ट कूंट आकार ।
याके ऊपर रामदास रंकार तत सार ॥ २

ओअंकार उतपत भई धर अंबर कैलास ।
याके ऊपर रामदास, अलख पुरस का वास ॥ ३

---

१ उतपत – उत्पन्न । अलख पुरस – परब्रह्म ।

अधर अखडी अलख है, रूप रेख नहि रंग ।
रामदास जहा मिल रहा, सतगुरु हृदे सग ।। ४

अजब झरोखे अगम के, निरत ब्रह्म का वास ।
जह ओउंकार अजपा नही, नाद-विद नहि सास ।। ५

चद सूर नही सचरै, पाणी पवन न जाय ।
धर-अबर भी वा नही, रामा जिस घर माहि ।। ६

इति श्री ग्रथ भगतमाल सम्पूर्णम्

अथ ग्रंथ चेतावनी

छंद उधोर

गर्भ चेतावनी सुन लोय, भज लो राम केसे सोय ।
राखो एक को इकतार, जिण यो उपायौ ससार ।। १

मेल्यो तोहि निज पति नाथ, नख-सिख बनाया सब गात ।
जीव नव मास ग्रभ के माहि, दिन अब जौर दूभर जाई ।। २

दुखियो बहुत विसवावीस, उद्दर माहि उधै सीस ।
लागौ नित्त ही पुकार, यो दुख मेट सिरजणहार ।। ३

जप सू तुमारो मै जाप, तुम हो पिता मेरे बाप ।
लेसू तुमारो मै नाम, हिरदै राख सू नित राम ।। ४

करसूं सत की मै सेव, राखू भगति सू नित भेव ।
तन मन तुमारा है जीव, बोहिर काढ मुझको पीव ।। ५

बाहिर काढियो करतार, लागो मोह माया प्यार ।
बोल्यो तुरत मीठी बाण, दाई करत है बखाण ।। ६

---

१ केसे – किसी प्रकार । उपायौ – उत्पन्न किया । ३ उधै – उल्टा ।
६ बखाण–वर्णन ।

मूरख भज्यौ नी कछु राम, बूढौ हुय गयो वेकाम ।
आख्या अधारो अब थाय, पेंडे केम चाल्यौ जाय ।। १८

वैठो रहे नित खाट, सूजें नही गैला घाट ।
बीता बरस दस पच्चास, अवखो लैत अब तन सास ।। १९

दुखियो वहुत घर के माहि, बूजें लोक आवें जाय ।
लावें वैद देखें हाथ, वेदिल सरब घर को साथ ।। २०

औषद घस लावें अग, जवरें माडिया घट जग ।
लागै नही जडी का जोर, घट मे काल पैठा चोर ।। २१

जबरें रोकिया सव घाट, धरती मेल छोडी खाट ।
जवरो काढ लेग्यो जीव, तिरिया सती होसू पीव ।। २२

जवरो जिद लेगो तोड, वैठा हाथ सबही मोड ।
लेग्या एकलो उचग, नही कोइ साथ तेरें सग ।। २३

लागी धाह बहु पुकार, काढो अबी घर के बार ।
लेग्या वनसती के माय, देही दीवी है जलाय ।। २४

काया बाल कीनो नास, नातौ जोय कुल को सास ।
लेग्या जमपुरी के माय, लेखा मागिया धर्मराय ।। २५

तोकू मेलियौ ससार, किया काम सो चित्तार ।
नावें जमपुरी मे जाब, कूटें जम पाडें आब ।। २६

दोला किया है जमदूत, वाहै लात मूकी घूत ।
जमा जोर दीनी रीठ, लागै गुरुज की बहु पीठ ।। २७

दीनो लाल थभें लाय, ऊधें सीस सरपा खाय ।
काया बाल काढ्यो सास, मूरख भज्यौ नही निज दास ।। २८

---

१९ गैला – रास्ता । अवखो – कठिनाई से ।
२० वैद – वैद्य । २३ उचग – उचका कर । २४. धाह – हाहाकार । वनसती – जगल ।
२५ कीनो – किया । २६ नावें – नही आयेगा । जाब – उत्तर । २७ दोला – पीछे लगा दिये । रीठ – खूब ।

नाख्यो नरक कुंड के मांहि कूटै काग कोवा खांहि ।
दोरा बहुत हंरा जीव मूरख भज्यो नहीं निज पीव ॥ २९

भबखो बहुत कुंड में तख लखा मांगिया कर भिख ।
लखा मांगिया तिल भार तोहि सुरत न आवै पार ॥ ३०

साखी

किया स्वाद संसार में अवै पहुता आय ।
नरक कुंड में न्हाखियो बहु दिन गोता खाय ॥ १

किया करम छूटै नहीं बहुत दुखी है जीव ।
दोष कुणी कूं रामदास भज्यो नहीं निज पीव ॥ २

नरक कुंड भुगताय कर पूठा लिया बुलाय ।
चौरासी मे रामदास बहुता दिया चलाय ॥ ३

चौपाई

परथम जल का जीव पठाया नव लाख के मांहि मिलाया ।
जल निठिया तड़तड़ जिम मूवा उलटा फेर उसी मे हूवा । १

जीव जीय आहार कराया राम बिना बहुता दुख पाया ।
जल-जीव का थाह न कोई जनम जनम ऐसा दुख होई ॥ २

जल का जीव सभी भुगताया दस लाख के मांहि मिलाया ।
दस लाख पखी परिवारा तामें जीव किया विस्तारा ॥ ३

बागल कर ऊंध सिर टेर्‌या जिस मुख खाय उसी मुख गेर्‌या ।
चोरी करी राम कूं भूला ता कारण बागल हुय झूला ॥ ४

---

२९ दोरी – दुखी । १ भबखो – भवलोक में । ३ पूठा – वापिस । १ नव लाख – प[illegible]
के नौ लाख जीव । निठिया – समाप्त हुआ । तड़तड़ – तड़फ कर ।
३ दस लाख – पखी परिवार के दस लाख जीव । ४ बागल – चमगादड़ ।

चिडी कमेडी तीतर लउवा, सहस बरस कउवा हुय मूवा।
मोरा हस कबूतर सूवा, आड ढीक सिकरा हुय वूवा ॥ ५
उलका पुन स चमचडा कीया, कोचर जूण बहुत दुख दीया।
और पखि का अत न पारा, भटक-भटक दुख सह्या करारा ॥ ६
पखी जात सबही भुगताया, करम कीट के माहि मिलाया।
लाख इग्यारह करम कीटिया, पैदा कर पल पल पीटिया ॥ ७
क्रोड वरस किरकाट कहाया, राम बिना बहुता दुख पाया।
वारवार पतगा कीया, मार-मार पैदा कर लीया ॥ ८
मद्द मास का स्वाद बनाया, ता कारण पतग पठाया।
इद्री स्वाद अनत घर कीया, परला मे परमेसर दीया ॥ ९
माछर माख माकडी माई, कीडी जूण बहुत दिन ताई।
बरस हजार सरप हुय आया, पेट घिसाल बहुत दुख पाया ॥ १०
यो दुख कछू न जावै जीया, मिनख जमारे राम न लीया।
चार मास इदर बरसाया, भात भात का जीव उपाया ॥ ११
जीव जीव ले चूण चुगाई, लख चौरासी दौरी भाई।
करम कीट सबही भुगताया, बीस लाख के माहि मिलाया ॥ १२
बीस लाख बन भार अठारा, तामै जीव किया विसतारा।
तरवर कर ऊधै सिर दीया, फल लागा सो तोड'र लीया ॥ १३
लाठी भाठै निस-दिन कूटै, कीया करम कहो किम छूटै।
तोड-ताड सबही ले खावै, राम बिना कहो कूण छुडावै ॥ १४
वन कवाडी जम्म पठाया, काट्या रूख जडा सू ढाया।
काट-कूट अरु पुरजा कीया, पल-पल माहि बहुत दुख दीया ॥ १५

---

५ लउवा – लावा पक्षी। आड – पानी का पक्षी। ढीक – जल के किनारे पर रहने वाला पक्षी। सिकरा – बाज पक्षी। ६ उलका – उलूक। करारा – कठिन।
७. लाख इग्यारह – कीटाणुओ की ग्यारह लाख योनिया। करम कीटिया – कर्म-योनिया।
८ किरकाट – गिरगिट। ९ परला – प्रलय काल। १० घिसाल – घिस कर।
१२ चूण – आटा। १४ भाठै – पत्थर। १५. कवाडी – कुल्हाडी।

नाम्यो नरक कुड के मांहि कूटे काग कोवा सांहि ।
दोरो बहुत तेरो जीव मूरख भज्यो नहीं निज पीव ॥ २६

भखसो बहुत कुड में तप्र लेखा मांगिया कर भिम्र ।
लखा मांगिया तिल भार, सोहि तुरत न भावे पार ॥ ३०

साखी

किया न्याव ससार में भवे पहुता भाय ।
नरक कुड में न्हाखियो बहु दिन गोता खाय ॥ १

किया करम छूटे नहीं बहुत दुखी है जीव ।
दोप कुणी कूं रामदास भज्यो नही निज पीव ॥ २

नरक कुड भुगताय कर पूठा लिया बुलाय ।
चौरासी में रामदास बहुता दिया चलाय ॥ ३

चौपई

परथम जल का जीव पठाया नव लाख के मांहि मिलाया ।
जल निठिया तडतड जिव मूवा उलटा फेर उसी में हूवा । १

जीव जीव आहार कराया, राम बिना बहुता दुख पाया ।
जल-जीव का थाह न कोई जनम जनम ऐसा दुख होई ॥ २

जल का जीव सभी भुगताया दस लाख के मांहि मिलाया ।
दस लाख पखी परिवारा तामें जीव किया विस्तारा ॥ ३

धागल कर ऊंध सिर टेरया जिस मुख खाय उसी मुख गेर्‌या ।
चोरी करी राम कूं भूला, ता कारण बागल हुम झूला ॥ ४

---

२६. दोरो – दुखी। ३० भखसो – तकलीफ में। ३ पूठा – वापिस। १ नव लाख – पानी के भी लाख जीव। निठिया – समाप्त हुआ। तडतड – तडफ कर।
३ दस लाख – पक्षी परिवार के दस लाख जीव। ४ बागल – चमगादड।

रो मी दस

-किया अरु बोझ घलाया, बालद साथे लाद चलाया।
-भटक बहुता दुख पावै, कीया करम कहौ कह जावै ॥ २७

-ी जोत'रु आख बधाई, बेल जूण बहु दौरी भाई।
किया अरु बहुत गुजाया, देस विदेसां लाद चलाया ॥ २८

लै भार'रु बहुत करूकै, चादी पडी मोर बहु दूखै।
-ोडा माहि कागला कूटै, राम बिना जिव जवरो लूटै ॥ २९

-ाथो पटक बहुत दुख पावै, राम बिना कहु कूण छुडावै।
-ैसा किया बहुत मगनाई, दिन दसरावै पकड मगाई। ३०

घोडा आगल घाल चलाया, बरछ्या का धमरोल लगाया।
लागै घाव बहुत दुख पावै, राम बिना कहु कूण छुडावै ॥ ३१

हस्ती कीया पौल घुमाया, पावा मे जझीर झडाया।
घोडा किया निवल घर आया, दाणा घास कछू नहि पाया ॥ ३२

झुरक-झुरक दुखिया हुय मूवा, जनम-जनम ऐसा दुख वूवा।
ऊदर किया मिनकडी मार्या, स्यावज हुय भख काज पुकार्या ॥ ३३

रोही माही वाग दिरावै, राम बिना कहो कूण छुडावै।
चीता नार बघेरा हिरना, सीह सावर रोजा बहु फिरना ॥ ३४

और जीव का अत न पारा, भटक-भटक दुख सह्या करारा।
तीस लाख सबही भुगताया, चार लाख के माहि मिलाया ॥ ३५

चार लाख मानव मे आया, सुरग मरत पाताल पठाया।
जह जावै जह कबहु न छूटै, चवदै भवन काल सब लूटै ॥ ३६

ब्रह्मा आदि कीट परजता, राम बिना दुख भरम अनता।
देखी कहू सुणौ सब कोई, राम बिना चौरासी होई ॥ ३७

---

२९ करूकै – दुखना है। कागला कूटै – कौवे चोंचें लगाते हैं।
३० मगनाई – मस्त। दिन दसरावै – दशहरे के दिन। ३१ आगल – आगे।
धमरोल – शस्त्रों का अपरिमित प्रहार। ३३ ऊदर – चूहा। मिनकडी – बिल्ली।
स्यावज – शृगाल। ३४ रोही – वन। वांग – आवाज। रोजा – नील गायें।
३७ परजता – पर्यन्त।

ऐसा माठा करम कमाया हरि मंदर में पाटण आया।
उलटा कर उसी में दीया ऊंधे सिर से तरवर कीया ॥ १६

भार अठार थाह नहिं कोई, जनम-जनम ऐसा दुख होई।
धरती ऊपर घास उगाया तोड़-ताड़ दाता सू खाया ॥ १७

साग बनाया बहु दिन खाई, ले चाकूयो चूला सिर मांई।
नीचे लकर अगन जलाई भाजी रांध'र सबही खाई ॥ १८

धान किया अरु खोस कुटाया, सांवला सूं जीव लुटाया।
दुखियो जीव नीकलै नांही ले चाकूयो चूला सिर मांही ॥ १९

नीचे लकर मिस्न जलाया, तड़बड़ तड़बड़ जीव कढ़ाया।
निजरां देख जीव तमासा, राम बिना दुख पावै सांसा ॥ २०

घास फूस बन भार अठारा, भटक भटक दुख सह्या करारा।
बीस लाख सबही भुगताया तीस लाख के मांहि मिलाया ॥ २१

तीस लाख पसू परिवारा तामें जीव किया बिस्तारा।
कुत्ता किया घरो घर जाय भूखा मर टूक नहिं पाय ॥ २२

घर में पेस'र हांडा फोड़े, पहुचे लाक हाड़का तोड़े।
चांदो पड़ो बहुत दुख पावै कीड़ा मांहि ताड़'र खावै ॥ २३

तड़फड़ न दुखिया हुय मूवा जनम-जनम ऐसा दुख जूवा।
मरकट रूप बांदरा कीया गल सूं बांध लार कर लीया ॥ २४

गांव गांव महुता भटकावे, जिन जिन के ल पांय पड़ावे।
राम नाम कूं जाण्या नाहीं ता कारण मरकट के मांही ॥ २५

गधिया किया घोड़ घर आया दिन ऊग नित लाद चलाया।
मनषा मन म बहु दुख पावै राम बिना कहो कूण छुड़ाय ॥ २६

---

१६ माठा करम — निकृष्ट कर्म। १९ सांवला — मूसल। २ [illegible] — अग्नि।
२४ मरकट — लाल मुंह बानर। बांदरा — [illegible] बानर। २६ घोड़ — जाति विशेष जो गधों पर मिट्टी चूना और पत्थर लाद कर अपनी आजीविका उपार्जित करती है।

वेल किया अरु बोझ चलाया, वालद साथे लाद चलाया।
भटक-भटक वहुता दुख पावै, कीया करम कहो कह जावै ॥ २७

घाणी जोत'रु आख वधाई, वेल जूण वहु दौरी भाई।
ऊट किया अरु बहुत गुजाया, देस विदेसां लाद चलाया ॥ २८

घालै भार'रु वहुत करूकै, चादी पडी मोर बहु दूखै।
कीडा माहि कागला कूटै, राम विना जिव जवरो लूटै ॥ २९

माथो पटक वहुत दुख पावै, राम बिना कहु कूण छुडावै।
भैसा किया वहुत मगनाई, दिन दसरावै पकड मगाई। ३०

घोडा आगल घाल चलाया, वरछ्या का धमरोल लगाया।
लागे घाव बहुत दुख पावै, राम विना कहु कूण छुडावै ॥ ३१

हस्ती कीया पौल घुमाया, पावा मे जभीर भडाया।
घोडा किया निवल घर आया, दाणा घास कछू नहि पाया ॥ ३२

झुरक-झुरक दुखिया हुय मूवा, जनम-जनम ऐसा दुख वूवा।
ऊदर किया मिनकडी मार्‍या, स्यावज हुय भख काज पुकार्‍या ॥ ३३

रोही माहो वाग दिरावै, राम बिना कहो कूण छुडावै।
चीता नार बघेरा हिरना, सीह सावर रोजा बहु फिरना ॥ ३४

और जीव का अत न पारा, भटक-भटक दुख सह्या करारा।
तीस लाख सबही भुगताया, चार लाख के माहि मिलाया ॥ ३५

चार लाख मानव मे आया, सुरग मरत पाताल पठाया।
जह जावै जह कबहु न छूटै, चवदै भवन काल सब लूटै ॥ ३६

ब्रह्मा आदि कीट परजता, राम बिना दुख भरम अनता।
देखी कहू सुणो सब कोई, राम बिना चौरासी होई ॥ ३७

---

२९ करूकै — दुखता है। कागला कूटै — कौवे चोंचें लगाते हैं।
३० मगनाई — मस्त। दिन दसरावै — दशहरे के दिन। ३१ आगल — आगे।
धमरोल — शस्त्रो का अपरिमित प्रहार। ३३ ऊदर — चूहा। मिनकडी — बिल्ली।
स्यावज — शृगाल। ३४ रोही — वन। वांग — आवाज। रोजा — नील गायें।
३७ परजता — पर्यन्त।

सहजा मिल्या सतगुरु आय, सिष हुय चरणा लागो जाय ।
फिर कर आठ कूठा जोइ, मैंमत पाल दरसन होइ ॥ २

नहचै नाव सू लिव लाइ, इक मन रामजी कू गाइ ।
विषिया त्याग सब जजार, राखौ एक रो इकतार ॥ ३

दीसै कारवा सब काम, रसना सिवर तो इक राम ।
साहो सत्त की समसेर, जोधा जोर है बहु भेर ॥ ४

मान गुम्मान ही अहकार, लालच लोभ अति ससार ।
काल किरोध ही बहु काम, मूरख पच मरै बेकाम ॥ ५

माया तिरगुणी बहु रग, निरगुग भूलग्यो कर संग ।
निरगुण गुणा ते न्याराह, भूलो काहि रे प्याराह ॥ ६

चलणो तोहि विषमी बाट, किस विध लाघैगो जमघाट ।
पाच पच्चीस ही जूझार, हरि बिन पहोचसी किम पार ॥ ७

कायर बधसी नही धीर, पावै केम सुख की सीर ।
कायर बैस रहसी हार, सूरा सबद ले तलवार ॥ ८

गुण की कर गहौ कबाण, साधो सुरत का सत-बाण ।
सील सतोष कू कर सग, मन कू मार जीतो जग ॥ ९

रसना सिवर लो इकधार, जोधा सरब वैसे हार ।
पाचू उलट घर मे आण, परसो देहि मे दीवाण ॥ १०

मै तै मेटिया अज्ञान, आकस लग्या है गुरु-ज्ञान ।
परसो जोत कू घट माहि, दुख दारिद्र दूरै जाहि ॥ ११

प्रेम परतीत कर विसवास, निरभै भये हरि का दास ।
नहचै अलख सू लिव लाय, उण बिन सरब डोल्या जाय ॥ १२

डौलै माया ॐ कार, जिव गुण तीन ही विस्तार ।
डौलै राव राणा रक, चवदै भवन चारू चक ॥ १३

मैंमत पाल – आत्मदर्शन । ४. कारवा – कृत्रिम । ५ किरोध – क्रोध ।

डोले धरती आसमान डोले तेज ससि हरि आन ।
डोले पवन पाणी सेस डोल विष्णु ब्रह्म महेस ॥ १४

डोले सुरग अरस पाताल, तीनू-लोक कूटै काल ।
नहचे असम रहसी एम उग विन अरथ काचा नेम ॥ १५

काचा तप तीरथ भ्रम काचा और ही षट क्रम ।
काचा पाप पुन परतीत हरि बिन आहिग वे जीत ॥ १६

काचा नर्क विष का नेह काचा अत का सनेह ।
काची हद की सब रीत काचे जाण प्यारे मींत ॥ १७

काचो सरब ही ससार काचा कुटब कुल परिवार ।
काचा पांच तत्त गुण तीन काचा मान का आधीन ॥ १८

काची पथर की सब सेव काचा दुनी घड़िया देव ।
सत है एक अणघड़ नाथ थाको सिवरलो दिन-रात ॥ १९

उण बिन सरब परले जाय पड़सी जम के फद मांय ।
माया आंहिगे विस्तार जासी देह को आकार ॥ २०

थिर रहे एक सिरजणहार राखो उसी सूं चित धार ।
लागी सुरत चरणां आय परस्या आप अवगत राय ॥ २१

सत का सबद की कर आस निरभै भये हरि के दास ।
बैठा सहज आसण ठाय मिलिया परम ज्योती माय ॥ २२

दसवां द्वार तो सभार तामें आप सिरजणहार ।
जेता निरखलो सुम लोय निरगुण आप करता होय ॥ २३

सतगुरु मिलिया पावै गम आतम मिलै परमातम ।
सहजां संत मिलिया आय बैठा निगम के घर माय ॥ २४

धुरिया गैब का नीसाण सहजां मटिया रहमाण ।
जहां नहीं काल का फेरा जहां नहीं जम्म का हेरा ॥ २५

साखी

सतगुरु सबदा गढ चढ्या, मिली जोत सू जोत ।
साधा सरणे रामदास, रती न व्यापै छोत ।। १

अमर जोत सू मिल गया, नहचौ भयो नजीक ।
सत भाखत है रामदास, सतगुरु हदी सीख ।। २

राम नाम सत सबद है, और सबै जजार ।
रामदास सत सबद सू, उधरे सत अपार ।। ३

रामा सिवरो राम कू, रात दिना इक सास ।
तीन-लोक तारण तरण, धर वाकौ विसवास ।। ४

तीन-लोक के ऊपरै, राम-नाम सत सार ।
वाकू सिवरै रामदास, धिन वाकौ दीदार ।। ५

रामदास सत सबद कू, सतगुरु दिया बताय ।
रात-दिवस रत्ता रहै, तिहू ताप मिट जाय ।। ६

इति श्री ग्रंथ चेतावनी सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ बालबोध

साखी

रामदास की वीनती, सुनिये मेरा बाप ।
बालक चरणां राखिये, मेटो तिरविध ताप ।। १

तिहू ताप कू मेटिये, सुण हो राम-दयाल ।
रामदास की वीनती, मेटो जम का जाल ।। २

मेरे तुमरा आसरा, दूजा और न कोय ।
रामदास की वीनती, चरणा राखो मोय ।। ३

डोले धरती आसमान डोलै तेज ससि हरि जान ।
डोले पवन पाणी सेस डोलै विष्णु ब्रह्म महेस ।। १४

डोले सुरग मरत पाताल, तीनू-लोक कूटै काल ।
नहचै अलख रहसी एम उण बिन सरब काचा नेम ।। १५

काचा तप तीरथ भ्रम काचा और ही षट कर्म ।
काचा पाप पुन परतीत हरि बिन जांहिगे वे जीत ।। १६

काचा नऊं विध का नेह काचा व्रत का सनेह ।
काची हद्द की सब रीत काचे जाण प्यारे मींत ।। १७

काचो सरब ही संसार काचा कुटंब कुल परिवार ।
काचा पांच तत्त गुण तीन काचा मान का आधीन ।। १८

काची पथर की सब सेव काचा चुनी घडिया देव ।
सत है एक अणघड नाथ वाको सिवरसो दिन रात ।। १९

उण बिन सरब परलै जाय पडसी जम के फंद मांय ।
माया जांहिगे विस्तार जासी देह को आकार ।। २०

थिर रहै एक सिरजणहार, राखी उसी सूं चित धार ।
लागी सुरत चरणां जाय परस्या आप अवगत राय ।। २१

सत का सबद की कर आस निरभै भये हरि के दास ।
बैठा सहज आसण ठाय मिलिया परम ज्योती मांय ।। २२

दसवां द्वार तो संभार तामें आप सिरजणहार ।
जैसा निरखसो तुम लोय निरगुण आप करता होय ।। २३

सतगुरु मिलिया पाया गम आतम मिली परमातम ।
सहजां गत मिलिया जाय बैठा गिगन के घर मांय ।। २४

पूरिया गम का मीसाण सहजां भटिया रहमाण ।
जहां नहीं वास का फेरा, जहां नहीं जम्म का डेरा ।। २५

सतगुरु रामदयाल है तीजा समरथ संत ।
रामदास तिहु एकरस, सीस बिराज तत ।। ४

चन्द्रायण

सतगुरु रामदयाल सीस पर एक रे ।
मनसा बैरी होय तजूं नहिं टेक रे ।
रूम-रूम ररकार, एक सुख रास रे ।
हर हां यूं कहै रामादास, किया सुन वास रे ।। ५

साखी

रामदास सुन में मिल्या अनत कोटि के मांय ।
छड़ीदार गुरुदेव का चरण रह्या लपटाय ।। ६
छड़ीदार गुरुदेव का आठूं पहर हजूर ।
रामदास इक राम बिन और भरम सब दूर ।। ७
छड़ी बिराई सतगुरू तिहु-लोक सिरताज ।
सदा हजूरी रामिया अटल ब्रह्म का राज ।। ८

चन्द्रायण

अटल ब्रह्म का राज सदा थिर होय रे ।
करे चाकरी सत सूरवां सोय रे ।
अमरापुर में वास आवि घर आविया ।
हर हां यूं कहै रामादास अमर पद पाविया ।। ९

साखी

अमर देस अमरापुरी जहं जम मिलिया जाय ।
रामदास उण देस में मरणो कबहु न थाय ।। १०

---

१ छड़ीदार – प्रतिहारी ।

जनम-मरण व्यापै नही, सुख दुख ससा नाहि ।
रामदास जहा मिल रह्या, रामपुरा के माहि ।। ११

चद्रायण

रामपुरा का राव, हमै सिरदार रे ।
अमर पटा कर भाव, दिया करतार रे ।
चढै ऊतरै नाहि, सदा रस एक रे ।
हर हा यू कह रामादास, मिल्या अलेख रे ।। १२

सोरठा

अलख निरजन देव, ता सेती जन मिल रह्या ।
अमर अमर की सेव, सदा हजरी रामियो ।। १३

चद्रायण

सदा रहे हजूर, दूर नहि जाय रे ।
तीन-लोक को माल, गैब को खाय रे ।
रिध-सिध चरणा माहि, सदा रहे साध के ।
हरि हा यू कह रामादास, साख जन आद के ।। १४

साखी

अनत कोट सायद भरै, वेद पुराण कह साख ।
रामदास निरभै भया, एक राम कू आख ।। १५

चंद्रायण

आख्या है हम राम, लिया मुख ध्याय रे ।
हिरदै हिल-मिल होय, नाभ पद पाय रे ।

रामपुरा – सालोक्य मुक्ति । १५ सायद – साक्षी । आख – उच्चारण कर ।

सतगुरु रामदयाल है, तीजा समरथ संत ।
रामदास तिहु एकरस सीस विराजत तंत ॥ ४

चन्द्रायण

सतगुरु रामदयाल सीस पर एक रे ।
अनता धरी होय तजूं नहिं टेक रे ।
रूम-रूम ररकार, एक सुख रास रे ।
हर हां यूं कहै रामादास किया सुन वास रे ॥ ५

साखी

रामदास सुन मैं मिल्या अनत कोटि के मांय ।
छडीदार[1] गुरुदेव का चरण रह्या लपटाय ॥ ६
छडीदार गुरुदेव का आठं पहर हजूर ।
रामदास इक राम बिन और भरम सब दूर ॥ ७
छडी दिराई सतगुरू तिहु-लोक सिरताज ।
सदा हजूरी रामिया अटल ब्रह्म का राज ॥ ८

चन्द्रायण

अटल ब्रह्म का राज सदा थिर होय रे ।
करै चाकरी सत सूरवां सोय रे ।
अमरापुर मै वास, आदि घर आविया ।
हर हां यूं कहै रामादास अमर पद पाविया ॥ ९

साखी

अमर देस अमरापुरी जहं जन मिलिया जाय ।
रामदास उण देस मे मरयो कबहु न थाय ॥ १०

---

१ छडीदार – प्रतिहारी ।

जनम-मरण व्यापै नही, सुख दुख ससा नाहि ।
रामदास जहा मिल रह्या, रामपुरा के माहि ।। ११

चद्रायण

रामपुरा का राव, हमै सिरदार रे ।
अमर पटा कर भाव, दिया करतार रे ।
चढै ऊतरै नाहि, सदा रस एक रे ।
हर हा यू कह रामादास, मिल्या अलेख रे ।। १२

सोरठा

अलख निरजन देव, ता सेती जन मिल रह्या ।
अमर अमर की सेव, सदा हजरी रामियो ।। १३

चद्रायण

सदा रहे हजूर, दूर नहिं जाय रे ।
तीन-लोक को माल, गैंब को खाय रे ।
रिध-सिध चरणा माहि, सदा रहे साध के ।
हरि हा यू कह रामादास, साख जन आद के ।। १४

साखी

अनत कोट सायद भरै, वेद पुराण कह साख ।
रामदास निरभै भया, एक राम कू आख ।। १५

चंद्रायण

आख्या है हम राम, लिया मुख ध्याय रे ।
हिरदै हिल-मिल होय, नाभ पद पाय रे ।

---

११ रामपुरा – सालोक्य मुक्ति । १५ सायद – साक्षी । आख – उच्चारण कर ।

सतगुरु रामदयाल है तीजा समरथ संत ।
रामदास तिहु एकरस सीस विराज तंत ॥ ४

चन्द्रायण

सतगुरु रामदयाल सीस पर एक रे ।
अनता वैरी होय तजू नहि टेक रे ।
रूम-रूम ररकार, एक सुख रास रे ।
हर हां यू कहै रामादास, किया सुन वास रे ॥ ५

साखी

रामदास सुन मैं मिल्या अनत कोटि के मांय ।
छडीदार[1] गुरुदेव का चरण रह्या लपटाय ॥ ६
छडीदार गुरुदेव का, आठू पहर हजूर ।
रामदास इक राम बिन और भरम सब दूर ॥ ७
छडी दिराई सतगुरू तिहूं-लोक सिरताज ।
सदा हजूरी रामिया अटल ब्रह्म का राज ॥ ८

चन्द्रायण

अटल ब्रह्म का राज सदा थिर होय रे ।
करे चाकरी संत सूरवां सोय रे ।
अमरापुर मैं वास, आदि घर आविया ।
हर हां यूं कहै रामादास, अमर पद पाविया ॥ ९

साखी

अमर देस अमरापुरी जहं मन मिलिया जाय ।
रामदास उण देस मे मरबो कबहु न थाय ॥ १०

---

१ छडीदार – प्रतिहारी ।

तीन लोक को सुख सबै, मेरे नरक समान ।
रामदास के रामजी, तुम बिन सब हैरान ।। २३

चन्द्रायण

तुम बिन सब हैरान, दिष्ट सब जाय रे ।
जेता धरिया रूप, काल सब खाय रे ।
अधर देस आकास, जकौ घर पाविया ।
हरि हा यू कह रामादास, त्रिगुटी आविया ।। २४

साखी

महिमाया ज्योति प्रकृति, चहू मिली इक आय ।
रामदास चहु उलट के, सुन मे रहे समाय ।। २५
सुन उलटी आतम मिली, आतम इछ्या माहि ।
इछ्या मिलगी भाव सू, जहा रहे लिव लाय ।। २६
भाव मिल्या परभाव मे, ता पर केवल राम ।
रामदास जह मिल रह्या, सरे सकल सिध काम ।। २७
केवल मेरा सतगुरु, भगवत के अवतार ।
ताकी किरपा रामदास, जाय मिले निरकार । २८
पिता पुत्र अब एक हुय, चरण रहे लपटाय ।
रामदास पिता कहै, तुम जावौ जग माय ।। २९
रामदास पिता कहै, सुणो हमारी बात ।
तुम जावो ससार मे, भगति पटा दू हाथ ।। ३०
लाख पटा लिख मोकलू, भगति पटा भरपूर ।
अनत हस कू सग ले, आण'रु मिलो हजूर ।। ३१

---

३१. मोकल् – भेजना ।

उलट पिछम की बाट, मेरु कूं छेदिया ।
हर हां यूं कह रामादास ब्रह्म कूं भेदिया ॥ १६

साखी

ब्रह्म मांहि जन मिल रह्या परस-परस दीदार ।
रामदास जहं रम रह्या, अमर सबद ररकार ॥ १७

चन्द्रायण

अमर निरंजण राय, एक ही राम रे ।
उपज खपै चल जाय, ताहि नहि काम रे ।
तिहूं-लोक सिर ताज, तहां मिल खेलिया ।
हर हां यूं कह रामादास, पांच कूं पेलिया ॥ १८

साखी

पांच पचीसूं पेल कर रहे अधर घर छाय ।
रामदास जह मिल रह्या अमर निरंजण राम ॥ १९
अमर एक ही राम है दूजा सब मर जाय ।
रामदास आसा तजो, रहत रहो लिव लाय ॥ २०

चन्द्रायण

राम बिना बेकाम, राज का पाट रे ।
रिध सिध मांगूं नांहि मुगत की बाट रे ।
अंतर में दीदार मोहि कूं दीजिये ।
हरि हां यूं कह रामादास आप में लीजिये ॥ २१

साखी

आप उलट आपे मिल्या सुख में रह्या समाय ।
रामदास वा सुक्ख की महिमा कही न जाय ॥ २२

१ कथा – जाने वाले ।

तीन लोक को सुख सबै, मेरे नरक समान ।
रामदास के रामजी, तुम बिन सब हैरान ।। २३

चन्द्रायरग

तुम बिन सब हैरान, दिष्ट सब जाय रे ।
जेता धरिया रूप, काल सब खाय रे ।
अधर देस आकास, जको घर पाविया ।
हरि हा यू कह रामादास, त्रिगुटी आविया ।। २४

साखी

महिमाया ज्योति प्रकृति, चहू मिली इक आय ।
रामदास चहु उलट के, सुन मे रहे समाय ।। २५
सुन उलटी आतम मिली, आतम इछ्या माहि ।
इछ्या मिलगी भाव सू, जहा रहे लिव लाय ।। २६
भाव मिल्या परभाव मे, ता पर केवल राम ।
रामदास जह मिल रह्या, सरे सकल सिध काम ।। २७
केवल मेरा सतगुरु, भगवत के अवतार ।
ताकी किरपा रामदास, जाय मिले निरकार । २८
पिता पुत्र अब एक हुय, चरण रहे लपटाय ।
रामदास पिता कहै, तुम जावो जग माय ।। २९
रामदास पिता कहै, सुणो हमारी बात ।
तुम जावो ससार मे, भगति पटा दू हाथ ।। ३०
लाख पटा लिख मोकलू, भगति पटा भरपूर ।
अनत हस कू सग ले, आण'रु मिलो हजूर ।। ३१

तुम जावो ससार में देउं ब्रह्म का राज ।
हंसां कूं परचाय कर, जीवां तिरण जहाज ॥ ३२

जीव जाय सब जमपुरी जाकूं दो उपदेस ।
अनत हंस कूं सग ले, आन मिलो पुन-देस ॥ ३३

तुम जावो ससार में जनम धरो घर जाय ।
अनत हंस कूं सग ले आन मिलो मो मांय ॥ ३४

पिता वचन सिर पर धर्‌या आज्ञा लिवी उठाय ।
मृत्यु लोक में मोकला कीज्यौ पिता सहाय ॥ ३५

मृत्यु लोक कलजुग बहै, काम क्रोध अहंकार ।
तामे मोको मोकलो पिता तुमी आधार ॥ ३६

तुम जावो ससार में मैं हू तुमरे साथ ।
परवाना लिख भगति का देउ तुमारे हाथ ॥ ३७

कूंची तुमरे हाथ दू खोलो भगति भडार ।
अनत हंस को सग ले, मिलो मुक्ति के द्वार ॥ ३८

जग कूं झूठा जानजो सतगुरु कीज्यो जाय ।
सतगुरु मरा रूप है मैं सतगुरु के मांय ॥ ३९

चौपाई

अमर पटा दे पिता पठाया जीवां हेतु जगत मे आया ।
तीन शक्ति स आरे कीनी केवल भगति आपकी दीनी ॥ ४०

इच्छा क्रिया ज्ञान पठाय ले सामग्री जग मैं आये ।
जग म आण लिया अवतारा अनता हंस उधारण हार[illegible] ।

रिध सिध दासी सार कीनी बंदगी आप
बंदगी करा जगत में आई आठू पहर रा

---

१२ तिरण—तैरना । ४ तीन शक्ति—

दा सी शक्ति

प्रथम सीस पिता के आये, दुतियै मा के गर्भ समाये।
अतर माहि पिता धियावै, उदर माय राम लिव लावैं॥ ४३

ऐसा समरथ दीनदयाला, उदर माहि करै प्रतिपाला।
नवम मास उदर मे लीया, पिता जतन पल-पल मे कीया॥ ४४

दसवै जागे बाहिर आया, मात पिता कुटम मन भाया।
मास माहिले खीर उपाये, बालक पीवै पेट अघाये॥ ४५

निस-दिन तर-तर हूवा मोटा, थडिया करै मत्त निज भोटा।
पाच बरस के साधै आया, बाला सग खेलत सुख पाया॥ ४६

मोटा हुवा बुद्धि जब आये, मात पिता ले पथ बैसाये।
पथ मे बैस'रु करै विचारा, बूझै जगत भेपससारा॥ ४७

पट-दरसण कू बूझै जाई, आप आपको पथ बताई।
आप-आप के मत की ठाणै, तत्त नाम कोई नहिं जाणै॥ ४८

फिर-फिर बूझ्या सब ही भेपा, कोई न जाणै अमर अलेखा।
सब ही बात हद्द की दाखै, बेहद सबद कोइ नहि आखै॥ ४९

अतर माही भया उदासा, कौन बतावै हरि का दासा।
ऐते बात सुणण मे आये, सिंहथल मे गुरुदेव बताये॥ ५०

सुनता थका ढील नहिं कीनी, बूझी वाट गाम की कीनी।
नगरी सिहथल पहूता जाये, गुरु गोविन्द का दरसण पाये॥ ५१

दरसण किया बहुत सुख पाया, सतगुरु पूरण ब्रह्म लखाया।
सतगुरु मेरे किरपा कीजै, राम भजन की आज्ञा दीजै॥ ५२

जनम-जनम मै तुमरा चेरा, निसदिन रहू चरन सूं नेरा।
जुग-जुग सतगुरु तुमरा दासा, मो कू एक तुमारी आसा॥ ५३

ताते मो पर किरपा कीजै, अपणौ जाण शरण अब लीजै।
सतगुरु मेरे किरपा कीनी, राम भजन की आज्ञा दीनी॥ ५४

---

४४ प्रतिपाला – पोषण। ४५ खीर उपाये – दूध उत्पन्न किया। ४६ तर-तर – जैसे-जैसे। भोटा – बालक। ५० सुणण – सनने मे। ५३ नेरा – निकट।

तुम आयो संसार में देउ ब्रह्म का राज ।
हंसां क परचाय कर, जीवां तिरण जहाज ॥ ३२

जीव जाय सब जमपुरी जाकू दो उपदेस ।
अनंत हंस कूं संग ले आन मिलो सुन-देस ॥ ३३

तुम जावो संसार मे जनम धरो घर जाय ।
अनंत हंस कू संग ले, आन मिलो मो मांय ॥ ३४

पिता वचन सिर पर धर्‌या, आज्ञा लिवी उठाय ।
मृत्यु लोक मे मोकलो कीज्यो पिता सहाय ॥ २५

मत्यु लोक कलजुग बहै, काम क्रोध अहंकार ।
तामे मोको मोकलो पिता तुमी आधार ॥ ३६

तुम आवो संसार में मैं हू तुमरे साथ ।
परवाना लिख भगति का देउं तुमारे हाथ ॥ ३७

कूंची तुमरे हाथ धू खोलो भगति भंडार ।
अनंत हंस को संग ले मिलो मुक्ति के द्वार ॥ ३८

जग कूं झूठा जानजो सतगुरु कीज्यो जाय ।
सतगुरु मेरा रूप है मैं सतगुरु के मांय ॥ ३९

चौपाई

अमर पटा दे पिता पठाया, जीवां हेतु जगत में आया ।
तीन शक्ति ल सारे कीनी केवल भगति आपकी दीनी ॥ ४०

इच्छा किरिया ज्ञान पठाये, ले सामग्री जग मे आये ।
जग में आण लिया अवतारा अनंता हंस उधारण हारा ॥ ४१

रिध सिध दासी सार कीनी बंदगी आप आपकी दीनी ।
बंदगी मेरा जगत में आई आठू पहर रहो लिव लाई ॥ ४२

१२ तिरण—तैरना । ४ तीन शक्ति—क्रिया विशेष

प्रथम सीस पिता के आये, दुतियै मा के गर्भ समाये।
अंतर माहि पिता धियावै, उदर माय राम लिव लावै॥ ४३

ऐसा समरथ दीनदयाला, उदर माहि करै प्रतिपाला।
नवम मास उदर मे लीया, पिता जतन पल-पल मे कीया॥ ४४

दसवै जागे बाहिर आया, मात पिता कुटम मन भाया।
मास माहिले खीर उपाये, बालक पीवै पेट अघाये॥ ४५

निस-दिन तर-तर हूवा मोटा, थडिया करै मत्त निज मोटा।
पाच बरस के साधै आया, बाला सग खेलत सुख पाया॥ ४६

मोटा हुवा बुद्धि जब आये, मात पिता ले पथ लगाये।
पथ मे बैस'रु करै विचारा, बूझै जगत भेद मझारा॥ ४७

षट-दरसण कू बूझै जाई, आप आपको पथ बताई।
आप-आप के मत की ठाणै, तत्त नाम कोई नहि जाणै॥ ४८

फिर-फिर बूझ्या सब ही भेषा, कोई न जाणै अमर अलेखा।
सब ही बात हद्द की दाखै, वेहद सबद कोइ नहि आखै॥ ४९

अतर माही भया उदासा, कौन बतावै हरि का वासा।
ऐते बात सुणण मे आये, सिंहथल मे गुरुदेव कहाये॥ ५०

सुनता थका ढील नहि कीनी, बूझी वाट गाम की लीनी।
नगरी सिंहथल पहूता जाये, गुरु गोविन्द का दरसन पाये॥ ५१

दरसण किया बहुत सुख पाया, सतगुर पूरण ब्रह्म लखाया।
सतगुरु मेरे किरपा कीजै, राम भजन की आज्ञा दीजै॥ ५२

जनम-जनम मै तुमरा चेरा, निसदिन रहू चरन मे नेरा।
जुग-जुग सतगुरु तुमरा दासा, मो कू एक तुमारी आसा॥ ५३

ताते मो पर किरपा कीजै, अपणो जाण सरण मे लीजै।
सतगुरु मेरे किरपा कीनी, राम भजन की आज्ञा दीनी॥ ५४

---

४४ प्रतिपाला – पोषण। ४५. खीर उपाये – दूध उत्पन्न किया। ४ [illegible] मोटा – बालक। ५० सुणण – सुनने मे। ५३. नेरा – निकट।

सतगुरु सबद ले तुरत बुलाया ज्ञान-ध्यान दे सिष समझाया ।
परदिखणा द चरणां लागा, भरम-करम सब ही उठ भागा ॥ ५५

आसण ध्यान करे थिर बैठा तन-मन अरप भया सत सैंठा ।
परथम रसना नाम धियाया, कंठ-कंवल में जीव मिलाया ॥ ५६

दोय मास मुख माही लागा पीछे चल्या सबद सब आगा ।
गलै गिलगिली गदगद होई, जैसे भवर मणमणै सोई ॥ ५७

जाणै मुख मिष्ठान्न भराया, मिसरी जैसा स्वाद सवाया ।
कंवली बरसै अमृत धारा अन्तर भीजै प्राण हमारा ॥ ५८

चलिया सब्द हृदै घर आया सरवन मुरली टेर सुनाया ।
धम धमकार छिया बिच होई फुरका चलै सरब तन सोई ॥ ५९

हिल-मिल रटण सहज में लागी हृदा कंवल में विरहन जागी ।
जागी बिरह प्रेम निध बूठा हृदा कंवल में अमृत छूटा ॥ ६०

रूम-रूम में सबद प्रकासा उठे कुमकुमी सास उसासा ।
सास उसासा सिवरण होई ता कूं लखै सत जन सोई ॥ ६१

रसना बिना रटण अब लागी बार हजार नाड़ियां जागी ।
नाभ-कंवल में दहर भराया, नवसे नदियां नीर हलाया ॥ ६२

मन पवना दोउ मेल मिलाया सब तन मांही नाद नचाया ।
रूम-रूम में अजपा होई नाद नाद चेतन भई सोई ॥ ६३

गाजै भवर बरसै मेहा भीज धरा लगत अब तेहा ।
पूरब दिस जालंधर बंधा मन पवना मिल एको संधा ॥ ६४

दोय बरस नाभि में रहिया पीछे सबद पतालां गहिया ।
सप्त पतालां फिरी दुहाई उलटा सबद पिछम दिस आई ॥ ६५

---

५६ सेंठा – मजबूत । ५७ गिलगिली – गुदगुदी । ५८. कंवली – कमल ।
५९. फुरका – कम्पन । ६१ कुमकुमी कम्पन । ६२ दहर – छोटा तालाब ।
नवसे नदियां – नौ सौ नदियां । ६४ तेहा – गहरा । जालंधर बंधा – हठयोग का प्रसिद्ध आसन ।

पाच पचीस उलट घर आया, बक-नाल मे अभर भराया ।
अनती नदी अफूटी आई, एक भई जब गग कहाई ।। ६६

बक नाल की खूली वाटी, चढिया सबद मेरु की घाटी ।
सुरग इकीस जीत कर आया, वैराटी सब सिवरण लाया ।। ६७

दुरलभ बहुत मेरु की घाटी, सूरा सत मड्या वैराटी ।
केता दिवस मेरु मे लागा, चढिया सबद मेरु हुय आगा ।। ६८

आकासा मे आण समाया, अनहद सब्द अखडत वाया ।
बाजै नौबत अनत अपारा, गिणती माहि न आवै सारा ।। ६९

अनत कोट जहा बाजा बाजै, हरिजन चढ्या अकासा छाजै ।
बध उतान उरध मे लाये, सुरत सबद की गाठ घुलाये ।। ७०

इला पिंगला सुषमण मेला, सुख-सागर मे हूवा मेला ।
पिंड ब्रह्मड जीत कर आया, तीन-लोक मे राज जमाया ।। ७१

याके ऊपर तखत विराजै, हरिजन चढ्या अगम के छाजै ।
(मह) माया दोउ मेल मिलाया, जोति उलट परकत मे आया ।। ७२

परकत मिली सुन्य के माही, उलटी सुरत आतम मै आही ।
आतम उलट इच्छा सू मेला, इच्छा किया भाव सू भेला ।। ७३

भाव मिल्या परभावा माही, ता ऊपर केवलपद याही ।
केवल ब्रह्म अलख अविनासी, ता सू मिल्या कटै जमपासी ।। ७४

केवल ब्रह्म निरजन राया, रामदास ता माहि समाया ।
केवल ब्रह्म अगम गम नाही, रामदास मिलिया ता माही ।। ७५

सबके माहि सकल सू न्यारा, वाहिर भीतर वार न पारा ।
रामदास ता माहि समाया, अरस-परस दीदार कराया ।। ७६

---

६७ वाटी – मार्ग ।
७४ केवलपद – मोक्ष ।

साखी

अनत हंस कू संग ले आण निवाये सीस ।
तुमें कह्या सो में किया सुणो पिता जगदीस ॥ ७७

पुत्र पिता की गोद में लीया कंठ लगाय ।
रामदास हिल मिल मिल्या, पिता पुत्र इक भाय ॥ ७८

पिता पुत्र अब एक हुय, अंतर रही न रेख ।
रामदास जहं मिल रह्या, पूरण ब्रह्म अलेख ॥ ७९

ब्रह्म मांहि सूं बीछड्या, मिला ब्रह्म मे आय ।
रामदास दुबध्या मिटी सिंधो सिंध मिलाय ॥ ८०

पाला गल पानी हुवा भया नीर का नीर ।
रामदास यूं मिल रह्या ज्यूं सुख सागर सीर ॥ ८१

लूण गले पाणी हुवो, जीव पलट भया ब्रह्म ।
जैसा था तैसा भया, रामा काल न क्रम्म ॥ ८२

जीव सीव अब एक हुय, दुबध्या रही न काय ।
रामदास केवल मिल्या सुख में रह्या समाय ॥ ८३

इति श्री ग्रंथ बालबोध सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ जम फारगति

साखी

नवोतड़े बैसाख में सुदि इग्यारस जाण ।
रामा कूं सतगुरु मिल्या भागी तन की काण ॥ १

---

७९ रेख – भेद । ८० सिंधो-सिंध – समुद्र में समुद्र ।
१ नवोतड़े बैसाख में – वैसाख शुक्ला ११ सं १८ ९ में आचार्य श्री ने पूज्य चरण श्री हरिरामदासजी म से दीक्षा ग्रहण की थी ।

समत अठार निवोतडे, लगी नाम सू प्रीत ।
पचष्ट वर्ष तीन मे, सुणी सून्य की रीत ।। २

दोय मास रसना कह्या, कठ किया परकास ।
वरस एक अरु पच दिन, हृदै लिया निज वास ।। ३

दोय बरस भी नाभ मे, सहजा रह्या समाय ।
रूम-रूम मे सचर्या, उलट अगम कू ध्याय ।। ४

उलट मिल्या गुरु घाट मे, परम जोत परकास ।
इला पिंगला सुषमणा, तिरवेणी मे वास ।। ५

निश्चय नेजा रोपिया, सुरत मिली निज धाम ।
अजब झरोखे रम रह्या, एक अखडी राम ।। ६

गिगन नाद गरजै सदा, भगति द्वार निज नूर ।
सतगुरु के परताप सू, साई मिल्या हजूर ।। ७

चौपाई

सतगुरु सबदा सहज मिलाया, चरण लगाय राम रस पाया ।
परथम कर सतगुरु की आसा, रसना राम सिंवर इक सासा ।। ८

विष माया कू दूर गमाई, सतगुरु सेती प्रीत लगाई ।
गद-गद होय कठ परकासा, प्रेम-भगति मोय उपजी आसा ।। ९

हृदय नाम निज बैठा आई, धम-धमकार होत धुन माई ।
नाभ कमल मे लीया वासा, सासो सास भया परकासा ।। १०

ओऊ सोऊ सहज मिलाया, माया मेट 'ररै' चित लाया ।
रूम-रूम मे राम पुकारा, भीज रह्या सब अग हमारा ।। ११

नाड-नाड मे नौबत वागी, रूम-रूम बिच ताली लागी ।
एकण रसना भई अनेका, पूरब छोड पिछम दिस देखा ।। १२

---

२ पचष्ट वर्ष तीन मे – स० १८१६ मे आचार्य श्री को समाधि अवस्था प्राप्त हुई ।

साखी

अनत हंस कू संग ले आण निवाये सीस ।
तुमें कह्या सो मैं किया सुणो पिता जगदीस ॥ ७७

पुत्र पिता की गोद में लीया कंठ लगाय ।
रामदास हिल मिल मिल्या पिता पुत्र इक भाय ॥ ७८

पिता पुत्र अब एक हुय, अंतर रही न रेख ।
रामदास जहं मिल रह्या, पूरण ब्रह्म अलेख ॥ ७९

ब्रह्म मांहि सूं बीछड्या मिला ब्रह्म मे आय ।
रामदास दुबध्या मिटी सिंधो सिंध मिलाय ॥ ८०

पाला गल पानी हुवा भया नीर का नीर ।
रामदास यूं मिल रह्या ज्यूं सुख सागर सीर ॥ ८१

लूण गले पाणी हुवो जीव पलट भया ब्रह्म ।
जैसा था तैसा भया, रामा काल न कर्म्म ॥ ८२

जीव सीव अब एक हुय, दुबध्या रही न काय ।
रामदास केवल मिल्या सुख में रह्या समाय ॥ ८३

इति श्री ग्रंथ बालबोध सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ जम फारगति

साखी

नयोतड़े बैसाख मे सुदि इग्यारस आण ।
रामा यूं सतगुरु मिल्या भागी तन की काण ॥ १

---

७९ रेख – भेद । ८० सिंधो सिंध – समुद्र में समुद्र ।
१ नवोतड़ ग्राम में – बैसाख शुक्ला ११ सं १८ ९ में आचार्य श्री ने पूज्य चरण श्री हरिरामदासजी म० से दीक्षा ग्रहण की थी ।

नाभि माहि नाम निज पैठा, सतगुरु सबद भया सत सैंठा।
तामस रजो सतो सू मिलिया, मनवा जाय पवन सू भिलिया ॥ २४
सूर चद मे आण समाया, तीन-लोक धक धूण हिलाया।
सहसर नाड़ चार सै जागी, रूम-रूम मे झालर वागी ॥ २५
उडियाणी बध वाय समाया, बहोतर कोठा प्रेम भराया।
मन पवना पिछम दिस फिरिया, अरधे उरध प्रेम रस झरिया ॥ २६
उलटी गग अफूटी आई, तिरवेणी तट सुरत समाई।
पाच पचीस उलट घर आया, आद अलख का दरसण पाया ॥ २७
आठ कूट मे भया उजाला, मुगति पथ का उडिया ताला।
हसा जाय परमहस मिलिया, लख चौरासी फेरा टलिया ॥ २८
जीव सीव मे आय समाणा, भवर गुफा मे भवर गुजाणा।
झालर ताल मृदग धुन बाजै, अनहद नाद अखड घन गाजै ॥ २९
धूधूकार होत धुन माई, परस्या आप निरजण साई।
विरखा प्रेम गिगन घन घोरा, मुधरी वाण बोल सत मोरा ॥ ३०
चमकण बीज चहू दिस लागी, गुरु परताप आतमा जागी।
प्रेम नीर का खाल चलाया, रूम-रूम मे रग लगाया ॥ ३१
ब्रह्म बाग हूवा बन हरिया, रूम-रूम मे अमृत झरिया।
नवसै नदिया नीर खलक्या, सातू सागर गाज गडक्या ॥ ३२
नाद-बिंद हुवा रग रेला, अनभै जोगी रमै अकेला।
अणघड अलख मिल्या अविनासी, आवागवण बहुरि नहिं आसी ॥ ३३
निज नाम कू नित-प्रति ध्याया, मुगत-पथ का मारग पाया।
सहजा किया अगम घर डेरा, हम साहिब का साहिब मेरा ॥ ३४

---

२४ **सैंठा** – मजबूत। **भिलिया** – भेंट हो गई, मिल गया। २६ **उडियाणी बध** – हठयोग प्रसिद्ध उड्डियान-बन्ध (आसन विशेष)। २७ **अफूटी** – वापिस, लौट कर।
२८ **उडिया ताला**–खुल गये। २९ **भवर गुफा**–त्रिगुटी के भीतर। **भवर**–जीवात्मा।
३० **धूधूकार** – धू धू की ध्वनि। **मुधरी वाण** – मधुर वाणी। ३१ **चमकण**–चमकने लगी। ३२ **खलक्या** – पानी बहने लगा। (शब्द-प्रकाश हुआ)
सातू सागर – सप्त पाताल। **गाज गडक्या** – गर्जना होने लगी।

इला पिंगला उलटी भाई सुखमण नाडी प्राण जगाई ।
बंक नाल भर पिया पियाला, मनवा मगन भया मतवाला ॥ १३

उलटी धरन गिगन घन गाज मनवा वठा भ्रगुटी छाज ।
त्रिवेणी घर प्रीतम पाया ससि घर भाण एक थिर भाया ॥ १४

सत्त सबद में सुरत समाई, भनता सुख मिल्या घर मांही ।
पूरणबर पूरा गुण गाया राम राम सत सबद बताया ॥ १५

राम रसायण निसदिन चाख्या सतगुरु एक सीस पट राख्या ।
राम रसायण पीयो प्यारा, सब कू कहू सुणो ससारा ॥ १६

सिव सकर उमिया कू दीया, सो निज नाम हृदय में लीया ।
निज नाम बिन मुगत न होई तीन गुणा मत भूलो कोई ॥ १७

तीन गुणा की काची माया, सत है एक निरजन गाया ।
सतगुरु बिना किनी नहि पाया तीन लोक भ्रम पट लिखाया ॥ १८

हम तो सतगुरु सग कर लीया, राम रसायण निस दिन पीया ।
जम का पथ किया निरवाला, मुक्त पथ का मारग भाला ॥ १९

रसना नाम किया परकासा भान देव की मिटगी भासा ।
भरम करम सब दूर गमाया नहचै नाम हृदा घर भाया ॥ २०

सुरत लगाय'र किया विचारा रसना कठ उठ इक धारो ।
प्रीत लगी पिया सू प्यारी ऐसी उठै लहर हुदारी ॥ २१

हृदै कवल हस की बुध भाई माया ब्रह्म दोय है भाई ।
दोय भछर का लहै विचारा सो साधू है प्रीतम प्यारा ॥ २२

हृदा कवल मे मन का वासा जीतेगा कोइ हरि का दासा ।
मन कू जीत चल्या गढ मांही साम्ही लहर प्रेम की भाई ॥ २३

---

१५ पूरणबर – परब्रह्म का वरण । १७ उमिया – उमा ।
१९ निरवाला – अलग । भासा – वेशा ।
२३ साम्ही – सामने ।

नाभि माहि नाम निज पैठा, सतगुरु सबद भया सत सैठा।
तामस रजो सतो सू मिलिया, मनवा जाय पवन सू भिलिया ।। २४
सूर चद मे प्राण समाया, तीन-लोक धक धूण हिलाया।
सहसर नाड चार सै जागी, रूम-रूम मे झालर वागी ।। २५
उडियाणी बध वाय समाया, वहोतर कोठा प्रेम भराया।
मन पवना पिछम दिस फिरिया, अरधे उरध प्रेम रस झरिया ।। २६
उलटी गग अफूटी आई, तिरवेणी तट सुरत समाई।
पाच पचीस उलट घर आया, आद अलख का दरसण पाया ।। २७
आठ कूट मे भया उजाला, मुगति पथ का उडिया ताला।
हसा जाय परमहस मिलिया, लख चौरासी फेरा टलिया ।। २८
जीव सीव मे आय समाणा, भवर गुफा मे भवर गुजाणा।
झालर ताल मृदग धुन बाजै, अनहद नाद अखड घन गाजै ।। २९
धूधूकार होत धुन माई, परस्या आप निरजण साई।
विरखा प्रेम गिगन घन घोरा, मुधरी बाण बोल सत मोरा ।। ३०
चमकण बीज चहू दिस लागी, गुरु परताप आतमा जागी।
प्रेम नीर का खाल चलाया, रूम-रूम मे रग लगाया ।। ३१
ब्रह्म बाग हूवा बन हरिया, रूम-रूम मे अमृत झरिया।
नवसै नदिया नीर खलक्या, सातू सागर गाज गडक्या ।। ३२
नाद-बिंद हुवा रग रेला, अनभै जोगी रमै अकेला।
अणघड अलख मिल्या अविनासी, आवागवण बहुरि नहिं आसी ।। ३३
निज नाम कू नित-प्रति ध्याया, मुगत-पथ का मारग पाया।
सहजा किया अगम घर डेरा, हम साहिब का साहिब मेरा ।। ३४

---

२४ सेठा – मजबूत। भिलिया – भेंट हो गई, मिल गया। २६ उडियाणी बध – हठयोग प्रसिद्ध उड्डियान-बन्ध (आसन विशेष)। २७ अफूटी – वापिस, लौट कर।
२८ उडिया ताला – खुल गये। २९ भवर गुफा – त्रिगुटो के भीतर। भवर – जीवात्मा।
३० धूधूकार – धू धू की ध्वनि। मुधरी बाण – मधुर वाणी। ३१ चमकण – चमकने लगी। ३२ खलक्या – पानी बहने लगा। (शब्द-प्रकाश हुआ)
सातू सागर – सप्त पाताल। गाज गडक्या – गर्जना होने लगी।

इला पिंगला उलटी आई सुखमण नाडी प्राण जगाई।
बंक नाल भर पिया पियाला, मनवा मगन भया मतवाला ॥ १३

उलटी पवन गिगन घन गाज, मनवा बैठा भ्रगुटी छाज।
त्रिवेणी घर प्रीतम पाया ससि घर भाण एक थिर आया ॥ १४

सत्त सबद में सुरत समाई अनता सुख मिल्या घर मांही।
पूरणवर पूरा गुण गाया, राम राम सत सबद बताया ॥ १५

राम रसायण निसदिन चाख्या सतगुरु एक सीस पट राख्या।
राम रसायण पीयो प्यारा, सब कूं कहूं सुणो संसारा ॥ १६

सिव संकर उमिया कूं दीया, सो निज नाम हृदय में लीया।
निज नाम बिन मुगत न होई तीन गुणां मत भूलो कोई ॥ १७

तीन गुणा की काची माया, सत है एक निरंजन राया।
सतगुरु बिना किनी नहि पाया तीन लोक जम पट लिखाया ॥ १८

हम तो सतगुरु संग कर लीया राम रसायण निस दिन पीया।
जम का पंथ किया निरखाला, मुक्त पंथ का मारग भाला ॥ १९

रसना नाम किया परकासा आन देव की मिटगी आसा।
भरम करम सब दूर गमाया नहचै नाम हृदा घर आया ॥ २०

सुरत जगाय'र किया विचारा रसना कंठ उठ इक धारा।
प्रीत लगी पिया सूं प्यारी ऐसी उठै लहर हुलारी ॥ २१

हृदै कंवल हंस की बुध आई माया ब्रह्म दोय है भाई।
दोय अख्यर का लहै विचारा सो साधू है प्रीतम प्यारा ॥ २२

हृदा कंवल में मन का वासा जीतगा कोइ हरि का दासा।
मन कूं जीत चल्या गढ मांही साम्ही लहर प्रेम की आई ॥ २३

---

१५ पूरणवर – परब्रह्म का वरण। १७ उमिया – उमा।
१९ निरखाला – अलग। भाला – देखा।
२१ साम्ही – सामने।

हरिरामा गुरु सूरवा, मिलिया पूरब भाग ।
जाकै सरणै ऊबर्‌या, राम भजन सू लाग ॥ ४६

हरिरामा हरि सू मिल्या, अगम किया अस्थान ।
सहज समाधी रम रह्या, आठ पहर गलतान ॥ ४७

सतगुरु मेरे सिर तपै, मै चरणा की रज्ज ।
सरणै आयो रामियो, लख चोरासी तज्ज ॥ ४८

चौरासो का जीव था, सरणै लिया सभाय ।
औगुण मेट्या रामदास, सतगुरु करी सहाय ॥ ४६

इति श्री ग्रथ जमफारगति सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ मनराड़

चरण

सतगुरु समरथ साहिब स्वामी, राम निरजण राया ।
जन हरिराम गुरू है मेरा, मै सतगुरु का जाया ॥ १

सतगुरु दीनदयाल कहीजै, सनमुख करसू सेवा ।
पार अपपर पावै नाही, किस विध लहिये भेवा ॥ २

मनुवा बहुत विषे-रस भरिया, औगरा बहु गुण नाही ।
सतगुरु का सत सबद न मानै, करै कुवध घर माही ॥ ३

मनवा जालम बडा ठगारा, तिहू-लोक का ठाकर ।
पाच पचीस तिहू गुण माही, ए मनवा का चाकर ॥ ४

मनवा काल निरजन कहिये, छिन दौडै छिन ध्यावै ।
सतगुरु का सत सबद न माने, खोस खूद नित खावै ॥ ५

---

२ करसू – करूगा । अपपर – अपरम्पार । ३ कुवध – ऊधम, उपद्रव ।
४ ठगारा – ठग ।

सत्त सबद में सुरत समाई आदि ठिकाणे में बैठाई ।
नाम निकेवल निरभ लीया, तन-मन सीस गुरां कूं दीया ॥ ३५

पखा-पखी का पथ निवारया एका-एकी पथ विचार्‌या ।
एको राम सकल घट मांही, जगत भेख कोइ जाण नांही ॥ ३६

भूला फिरै भरमना लागा सब ही जाय जमपुरी भागा ।
कर-कर जोर जमपुरी जाव, सतगुरु बिना मुगति नहिं पावै ॥ ३७

चवद भवन काल का फेरा, तिहूं-लोक जम लूटै डेरा ।
तीन-लोक जबरा घर जाय सतगुरु बिना मुगत नहिं पावै ॥ ३८

सत ही सबद सकल सूं न्यारा, जो जाण सो गुरू हमारा ।
राम-नाम निस दिन हम ध्याया जमडांणी का डांण चुकाया ॥ ३९

काल जाल का लेखा दीया माया त्याग रामरस पीया ।
मां की आस कछु नहिं राखूं पिता पास रस निसदिन चाखूं ॥ ४०

छकिया वकिया जोगी पूरा जम कूं जीत भया संत पूरा ।
पूरण ब्रह्म मिल्या अविनासी गुरु-परसाद टली जम पासी ॥ ४१

रामदास गुरुज्ञान विचार्‌या सतगुरु एक सीस पर धारया ।
सतगुरु हम कूं प्राण छुड़ाया आदू घर अस्थान बताया ॥ ४२

जीव सीव घर जाय मिलाना ब्रह्मानंद साध गलताना ।
ब्रह्म विलास हरीजन कीया रामदास सतगुरु संग जीया ॥ ४३

साखी

जिण घर सूं मैं बीछड़्या जिण घर बैठा आय ।
सत्त सबद में रामदास सहजां रहे समाय ॥ ४४

सब संतां कूं वीनती मैं अबला अणपग ।
सतगुर सरण रामदास जीता जम सूं जग ॥ ४५

---

३५ मैं – मई । ३९ डांण – कर दण्ड । ४३ गलताना – तल्लीनता ।
४३ ब्रह्मानंद – ध्यान ।

हरिरामा गुरु सूरवा, मिलिया पूरब भाग ।
जाकै सरणै ऊबर्‌या, राम भजन सू लाग ॥ ४६

हरिरामा हरि सू मिल्या, अगम किया अस्थान ।
सहज समाधी रम रह्या, आठ पहर गलतान ॥ ४७

सतगुरु मेरे सिर तपै, मै चरणा की रज्ज ।
सरणै आयो रामियो, लख चोरासी तज्ज ॥ ४८

चौरासो का जीव था, सरणै लिया सभाय ।
औगुण मेट्या रामदास, सतगुरु करी सहाय ॥ ४९

इति श्री ग्रंथ जमफारगति सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ मनराड़

चरण

सतगुरु समरथ साहिब स्वामी, राम निरजण राया ।
जन हरिराम गुरू है मेरा, मै सतगुरु का जाया ॥ १

सतगुरु दीनदयाल कहीजै, सनमुख करसू सेवा ।
पार अपपर पावै नाही, किस विध लहिये भेवा ॥ २

मनुवा बहुत विषै-रस भरिया, औगण बहु गुण नाही ।
सतगुरु का सत सबद न मानै, करै कुवध घर माही ॥ ३

मनवा जालम बडा ठगारा, तिहू-लोक का ठाकर ।
पाच पचीस तिहू गुण माही, ए मनवा का चाकर ॥ ४

मनवा काल निरजन कहिये, छिन दौडै छिन ध्यावै ।
सतगुरु का सत सबद न माने, खोस खूद नित खावै ॥ ५

---

२ करसू – करूगा । अपपर – अपरम्पार । ३ कुवध – ऊधम, उपद्रव ।
४ ठगारा – ठग ।

सबद भवन मना के सार पिंड ब्रह्म बिच लूट ।
पीर पकंबर तपसी त्यागी, मन आगे नहिं छूटे ॥ ६

छिन में सुरग पताला जावै छिन घर छिन आकासा ।
छिन में लख चौरासी जावै जह तह मन की आसा ॥ ७

मन जोधा जमराण कहीजे मन हस्ती सिंह होई ।
तीन लोक सब ही बस कीया, अह मह बात विगोई ॥ ८

मनवा सरप एक जग मांही पांच मुखां सू खावै ।
नर सुर नाग देवता दाणू ता सेती बस आवै ॥ ६

तीन-लोक में मन की माया सब ही मन को पूजे ।
मन के परे निजा पद न्यारा ता सेती कुण सूजे ॥ १०

जे कोई बूज करे भरु जाय मनवा जाण न देव ।
पारब्रह्म बिच मन बट पाडा पकड आप में लेवै ॥ ११

मन की राडां बहुत करारी मेरा कह्या न मान ।
सतगुरु सूं साम्हा हुय बोलै करम भर फिर छान ॥ १२

सिष सतगुरु बिच मन बटपाडा जह तह भांता पाडै ।
ज्ञान विचार सबै हम देख्या, मन को बीस असाडै ॥ १३

मनवै मो सूं राड मडाई, हम मन सू डरपाणा ।
तीन-लोक मे मन की फौजां मन थाणा थरपाणा ॥ १४

मन सू हार चल्या हम पूठा सतगुरु आगे रूना ।
सतगुरु मेरा ऊपर कीजे मन कीया सब सूना ॥ १५

मनवा मेरे हाथ न आवै मन की मूठ करारी ।
तुम सतगुरु समरथ सुख-सागर किरपा करो मुरारी ॥ १६

---

६ पकंबर – पैगम्बर । ८ जमराण – यमराज । विगोई – खोदी । ६. दाणू – दानव ।
१२ राडां – लड़ाई । साम्हा – समक्ष । ११ बटपाडा – डाकू । भांता पाडै – भिन्नता उत्पन्न करता है । १४ डरपाणा – डर गये । थाणा – स्थान । थरपाणा – स्थापित किया । १५. रूना – रोया ।

सतगुरु मेरा सत सधीरु, सत समसेर सभाई।
मन कै ऊपर करी साखती, पडी निसाणा घाई ।। १७

मनवा सुणत समा डरपाणा, अब केती लग जावै।
मन कै डेरे पड्या भगाणा, फिर-फिर भेटी खावै ।। १८

मनवा ऊपर क्या चढ जावा, ज्ञान गरीवी मेली।
राढू प्रेम पड्या मन माथै, सहजा रामत खेली ।। १९

मन कू पकड आणियो आगै, अब कैसी विध कीजै।
धाडा पाड करी अन्याई, तिल-तिल लेखो लीजै ।। २०

मन कू पकड किया अब सैठा, दुख दोजग्ग दराया।
काट्या नाक कान सिर मूड्या, काला मुख्ख कराया ।। २१

मूछ मुडाई खुसाई दाढी, मन का दात तुडाया।
माथो पकड पाछणा भूर्यो, ऊपर आक दिराया ।। २२

हाथ कटाय पाव भी काट्या, मन कू चौरग कीया।
खाधा माल पराया खूनी, तातै यह दुख दीया ।। २३

गधै अज्ञान चढाया मन कू, उलट अफूटा बधा।
झूठ कमाय साच नहिं मान्या, मगन हुवा मन अधा ।। २४

चीणू नगर चौरासी चौहटा, गली-गली मन फेर्या।
मन का सोखी सब मुरझाना, उलट अफूटा घेर्या ।। २५

देखण लोक सबै चल आया, ऐसा काम न कीजो।
जे कोइ त्रास मिटाई चाहो, राम-रसायण पीजो ।। २६

मन कू पकड घेरिया पूठा, उलटा बध दिराया।
ज्ञान गिलोल दया कर झाली, सबद गिलोला वाया ।। २७

---

१७ सधीरु – धैर्यवान। साखती – सख्ती। १८ भेटी खावै – सर टकराते हैं।
१९ राढू – मोटा रस्सा। २०. धाडा पाड – डाका डाल कर। २२. खुसाई – उखडवाई। पाछण – उस्तरा। आंक दिराया - मुद्रित करना। २३ चौरग – हाथ पैरो से विकलांग। खाधा – खाया। २५ चीणू नगर चौरासी चौहटा – चौरासी लाख योनिया। सोखी – मित्र (इन्द्रियां) २७. गिलोल – पत्थर फेंकने का एक यत्र।

मन का सीस गिलोलो फोड्या मन दुखिया हुय रूना ।
तिकण दिनां का लेखा मागू खाय किया खंड सूना ॥ २८

सूली सुरत सून्य में रोपी अह मनवा कू दीया ।
मन क माथे फाड मराई, मर मरतग हुय जीया ॥ २९

ज्ञान विचार छुरी अब आनी, जीवत खाल कढावी ।
छून बनार करो अब पुरजा, भाटी गिगन चढावी ॥ ३०

काम क्रोध भाटी तल भूक्या, प्रेम पलीता लाया ।
मन को छून भटी में दीया मान गुमान बुलाया ॥ ३१

पाच पचीस तिहू-गुन मांही, माया मोह चढाई ।
सांसा सोग'र भभ्या भासा, दुरमत दुबध्या भाई ॥ ३२

लालच लोभ मदन-मत अघा गरब गुमान बुलाया ।
मैं तैं पकड भटी तल दीया, चांपा आण लगाया ॥ ३३

लागी लाय पिसण सब जरिया आल'र भसम कराई ।
निरभै हुवा निजा पद परस्या गढ चढ नौबत बाई ॥ ३४

तखत बस अरु हुकम चलाय अदल एक पतसाई ।
परजा सुखी विणज बहुतेरा, नव खंड फिरी दुहाई ॥ ३५

घर अंबर विच राज जमाया निरभै पटा हमारा ।
आद जुगाद अमर हम चाकर, केवल राम तुमारा ॥ ३६

चवद भवन पर सत साई, ताहि चरण हम चेरा ।
और सबी है सिष हमारा सतगुरु सत बडेरा ॥ ३७

साहिब संत सतगुरू सिषा, एक-भय सुरा रासी ।
साई सिवर हुवा अब सोई परम-आति परकासी ॥ ३८

---

२८ तिकण दिनां – उन दिनों का (पूर्वजन्म का) २९. फाड मराई – खंडित करना ।
३० छून – छोटे छोटे टुकड़े । भाटी – भट्टी । ३१ पलीता – आग लगाना ।
३३ भटी – भट्टी । ३६ आद जुगाद – चिरंतन काल से । ३७ बडेरा – पूर्वज पुरखा ।

जह का हुता तहा चल आया, ता विच काण न काई ।
मिलिया जीव सीव के माही, सिलता समद समाई ।। ३९

पालौ गल्यौ हुवौ अब पाणी, ज्यू घिव घीव मिलाया ।
मिलिया तेल तेल के माही, पाणी लूण गलाया ।। ४०

खाई नीर गग मे आया, भिन्न भेद नहि होई ।
रामदास यू केवल मिलिया, ताहि लखै जन कोई ।। ४१

वाकल पालर नीर मिलाया, एक-मेक सुखरासी ।
रामदास निरभै पद परस्या, पूरणवर अविनासी ।। ४२

सबके परे परानद पूरण, सबही के सिरताजा ।
रामदास ता माहि समाया, सो सब के महाराजा ।। ४३

साखी

रामा साईं सत मे, सत साईं के माहि ।
ऐक-मेक हुय मिल रह्या, दुनिया कू गम नाहि ।। ४४
दुनिया भूली दीन कू, साधू साहिब एक ।
रामदास ता मे मिल्या, जाका नाम अलेख ।। ४५

इति श्री मन राड सम्पूर्णम्

★

अथ ग्रंथ जग जन*

चरण

परथम लिया मूल हम रसना, ह्रिदा कमल घर आया ।
चलिया सबद नाभि घर माही, नाभ नाद गरणाया ।। १

---

३९ सिलता – सरिता । ४० पालौ – बर्फ । घीव – घृत ।
४२ वाकल – कुये का पानी (जीवात्मा) पालर – बरसात का पानी (परमात्मा) ।
४३ परानद पूरण – पूर्ण परमानन्द, परब्रह्म । *जग जन – ससार भक्त ।

उलट पयाल बंक रस पीया, खुले पछिम के द्वारूं ।
अरध-उरध बिच आसण कीया मठ सत निज सारूं ।। २

उलघ्या अरु चढ्या आकासा मिल्या त्रुगट्टी मांही ।
वा सूं पर परम-पद पूगा जहां निरंजन सांई ।। ३

जहां में जाय रु आय दुहेला सुणज्यो सब संसारा ।
बिना राम परला में आवो जीव नरक के द्वारा ।। ४

राव रंक राणा अरु राजा क्या दाणूं क्या देवा ।
साहिब बिना परत नहिं छूटे बिना बंदगी सेवा ।। ५

बिना बंदगी काल न छाडै करे कोट जो कामा ।
जोग जिग जप-तप असनाना सकल झूठ बिन रामा ।। ६

सब के सिरै मौत है भाई घर घर धाहु पुकारा ।
समझ नहीं अवन-मत-अंधा, मूरख मगन गिंवारा ।। ७

तीन-लोक में बावर मांडी फररा आन बंधाया ।
हाका करे सकल जग घेर्या मोह के जाल बंधाया ।। ८

मोह के जाल सकल जग बंध्या लख चौरासी जीवा ।
भवन चतरदस काल अधीना, छुप नहीं जम सीवा ।। ९

जम की सीव अलग लग भाई जहां तहां फिर मारे ।
राम बिना कोई वारस नाई बहु कुण जीव उबारे ।। १०

हासल सब जम जोरावर, देवै जीव सब डंडा ।
धरमराय के पटे लिखाणा सप्त-दीप नव-खंडा ।। ११

रैत ही रत राम कूं भूली जम के पटै लिखाणा ।
अगस अप दानूं पक्ष मंघा एकण सूत सधाणो ।। १२

---

४ दुहेला – कठिनता । परला – प्रलय । ५ दाणूं – दानव । ७ धाहु – हाहाकार ।
८ बावर – जाल । फररा – फंदा । ९ मूर्ख – मूर्ख होना । १० वारस – स्वामी ।
११ रैत – प्रजाजन । एकण सूत संधाणा – एक सूत में बंधना ।

जम का सूत जोर जोरावर, सब हा के गल पासी।
सब ही बध्या मत के मारग, अलग रह्या अविनासी ॥ १३

हिन्दू तुरक एक पख बध्या, षट-दरसण सब बाना।
वेद कतेब सकल गलरासा, रह्या तत्त निज छाना ॥ १४

मुस्सलमान भेख अरु हिंदू, आपा पथ उठावै।
पूरण-ब्रह्म सकल के भीतर, ता का मरम न पावै ॥ १५

मुसलमान ईद कर रोजा, हिन्दू ग्यारस वासा।
षट-दरसण तीरथ सू बधिया, सरब आन की आसा ॥ १६

तीनू पख बध्या तिरगुन सू, निरगुन रया नियारा।
साख जोग नवध्या सिध ज्ञानी, सरब देव अधिकारा ॥ १७

दाणू देव सुरग पाताला, काल पास नहिं छूटै।
चवदै क्रोड जमा का पायक, जहा तहा फिर लूटै ॥ १८

सब ही करै जम्म के हासल, जम कै दौड कमावै।
तीन लोक जवरा के सारै, जम ही पकड मगावै ॥ १९

चवदै जम्म जमा मे दीरघ, क्रोड चतरदस चाकर।
सब कै सिरै निजा पद नायक, धरमरायजी ठाकर ॥ २०

धरमराय निज न्याव विचारै, बध्या दोस न देवै।
प्राणी किया आपणा भुगतै, पाप पुन्न फल लेवै ॥ २१

पापी जीव बहुत दुख पावै, ता का अत न पारा।
कूटै मार पडै विललावै, कूण छुडावण हारा ॥ २२

कोई जीव थम सू बाधै, केई मुगदरा मारै।
केई जीव पातरा छेदै, केई नरक मे डारै ॥ २३

---

१४ बाना – भेष। कतेब – कुरान। गलरासा – व्यर्थ का प्रपच, वितण्डावाद।
१७ तीनू पख – तीनो पक्ष वाले। नियारा – पृथक। १८ जमा – यमराज।
पायक – दास। २३ पातरा – पत्ते।

धर्मो जीव धरम क गारग सुरग लोक ले देवै।
बैठ विमाण देवता होई देव तणा सुख लेवै ॥ २४

सुख भुगताय घेर ले पूठा पकड़ जम्म ले जावै।
साहिब बिना परत नहिं छूटे जीव जूण बहु पावै ॥ २५

पाप पुन सूं सब जग लागा नरक सुरग अधिकारी।
रामदास दोनूं है झूठा, हरि बिन बाजी हारी ॥ २६

साखी

पाप पुन्य का फल सबै जमपुर भुगतै जाय।
रामदास सब त्याग कर सतगुरु सरण सभाय ॥ २७

*

अथ सिमरण को अंग

चरण

हम तो सतगुरु सरण ऊबर्‌या पाप पुन्य सूं न्यारा।
महा मोष का खोज बताया सतगुरु कर उपगारा ॥ १

हम तो मड़्या मोष के मारग जह जम का डर नाहीं।
काल-जाल जम जोर न पहुचे निरभै हंस पठाही ॥ २

तन मन अरप लग्या हरि सेवा उलटी नेज चलाई।
उलटी नेज अगम जहां पहुची जह नहिं काल कसाई ॥ ३

हम तो चढ़्या नाम के नौके सकल मंड सिर मेरा।
चली जहाज अगम जहां पहुची अगम देस में डेरा ॥ ४

चवदे लोक जीत पद पाया, हरिजन अधर बिराजे।
निरभ रमै निसक निरदाव नाद अनाहद बाजे ॥ ५

---

२५ परत – कभी भी। ३ नेज – रीति।

घुरै निसाण राम की नौबत, कोट सूर परकासा।
मिटै अधार चोर सब भागा, हरिजन रहे खुलासा ॥ ६

एक हि राज राम का जमिया, गढ मे गस्त चलाई।
सिंह बकरी अब भेला खेलै, ऐसी वह अदलाई ॥ ७

सुन मे जाय रोपिया झडा, हरिजन तखत विराजा।
सता घरै अटल पतसाई, अटल राम महाराजा ॥ ८

तीन-लोक मे हुकम हमारा, चवदे-भवन दुहाई।
सुरग पयाल राज अब जमिया, सुन मे रस्त चलाई ॥ ९

चौकीदार चहू दिस चेतन, लगै न जम का हेरा।
सता राजगढा मे निसचल, सकल मड मे डेरा ॥ १०

रोम-रोम मे राम दुहाई, ठाम-ठाम विच थाणा।
आठू पहर आधीन बदगी, कहा करै जम राणा ॥ ११

जम जालम का जोर न लागै, जहा सत का वासा।
अटल देस अमरापुर माई, हरिजन रहत खुलासा ॥ १२

अमरापुर मे रहण हमारी, राजपाट हम पाया।
चरणा लगै देवता दाणू, कहा रक कहा राया ॥ १३

तीन-लोक का हासल लेवै, रिध-सिध भर्‌या भडारा।
राम खजीना कदै न खूटै, ऐसा समा हमारा ॥ १४

हरिजन जाय दरीबै बैठा, पडे हीर टकसालू।
बारै मास सदा निज नेपै, कदे न व्यापै कालू ॥ १५

जीवत मुगत सतजन कहियै, महा मोष पद पाया।
सिवर्‌या राम-राम हम हूवा, हमी निरजन राया ॥ १६

सतगुरु मिल्या हुवा हम सतगुरु, अनभै पटा हमारा।
अनभै सबद अगम घर बोलू, और न कू उपगारा ॥ १७

---

७ अदलाई – बिना किसी विरोध के। १३ रहण – निवास। १४ हासल – भूमि कर। समा – जमाना। १५. दरीबै – दरीखाना, सभा-भवन।

घर्मो जीव धरम क मारग सुरग लोक ले देवै ।
बैठ विमाण देवता होई देव तणा सुख लेवै ॥ २४
सुख भुगताय घेर ल पूठा पकड जम्म ले जाव ।
साहिब विना परत नहिं छूटे, जीव जूण बहु पावै ॥ २५
पाप पुन सू सब जग लागा नरक सुरग अधिकारी ।
रामदास दोनू है झूठा, हरि बिन बाजी हारी ॥ २६

साखी

पाप पुन्य का फल सबै, जमपुर भुगते जाय ।
रामदास सब त्याग कर सतगुरु सरण समाय ॥ २७

★

अथ सिमरण को अंग

चरण

हम तो सतगुरु सरण ऊबरया पाप पुन्य सूं न्यारा ।
महा मोष का खोज बताया, सतगुरु कर उपगारा ॥ १
हम तो मंडया मोष के मारग जहं जम का डर नाहीं ।
काल-जाल जम जार न पहुच निरभै हंस पठाही ॥ २
तन मन अरप लग्या हरि सेवा उलटी लज चलाई ।
उलटी सेज अगम जहां पहुती जह नहिं काल कसाई ॥ ३
हम तो चढ्या नाम के नौके समरथ मंड सिर मेरा ।
चली जहाज अगम जहां पहुंची, अगम देश में डेरा ॥ ४
नयन साध जीत पद पाया, हरिजन अधर विराजै ।
निरभै रम निराप निरन्तरे नाद अनाहद बाजै ॥ ५

---

२५. बाज – बर्बाद भी । १ लेज – रीति ।

आपा मज आपका ठाकर, सकल पिंड के माई ।
दूरै जाय भरम क्यू भटकौ, दसवे द्वार मज साई ।। २६

तासू विछर जीव सब विचरै, लगे स्वाद ससारू ।
त्यागी स्वाद आन की सेवा, उलट आदि मिल द्वारू ।। ३०

सभी जीव का एक पीव है, जुदा-जुदा मत जाणो ।
आपा उलट आप मे देखो, आपा ब्रह्म पिछाणो ।। ३१

चारू वरण आतमा भाई, एक बाप का जाया ।
रामदास एको कर जाण्या, एकण मज समाया ।। ३२

एक ही मुसलमान अरु हिंदू, षट-दरसण अरु भेषा ।
रामदास उलटै चढ देख्या, सबके माहि अलेखा ।। ३३

हम तो एक-एक कर जाण्या, एक-एक कर ध्याया ।
दुवध्या मिटी मिट्या अब दौजग, उलट आदि घर आया ।। ३४

एक हि मात पिता है भाई, एक हि पेट पखारू ।
रामदास एको कर जाण्या, दूजा कूण गिवारू ।। ३५

साखी

एक हि माता रामदास, एक हि पिता जु होय ।
दुवध्या मिटै न जीव की, ताते दीसे दोय ।। १

सुरगुण माता जीव को, निरगुण पिता अपार ।
सुरगुण निरगुण रामदास, मिल माड्यो व्यौहार ।। २

सुरगुण निरगुण एक है, एक हि रह्या समाय ।
एक हि साहिब रामदास, दूजा कह्या न जाय ।। ३

*

सतगुरु वृक्ष सुध में ऊगा गई डाल गिगनारू।
सिष फल लग्या भाव के बीटा नेप भई अपारू॥ १८

सतगुरु होय कहू गल साची सुणो रैत अरु राजा।
हमसूं मिल्या मिलाऊं सांई मिल्या सरै सब काजा॥ १९

हमर राम सबद इक साचा भज्यां होय भव पारू।
तासूं संत अनेक उधरिया मिल्या मुगत के द्वारू॥ २०

साधू वचन सत कर मानो सुणज्यो बात हमारी।
बिना राम परलो में जाय, कहा पुरख कहा नारी॥ २१

राम बिना सब ही है थोथा, आस कूट क्या पावो।
अमृत छाड जहर क्यूं पीवो, मिथ्या जनम गमावो॥ २२

ऐसो जनम बहुरि नहिं आवे सतगुरु के उपगारा।
सिवरण करो भजो इस सोई भज लो वारम वारा॥ २३

नौका नाम सकल जग तारन, चढ सो उतरे पारू।
चढियां बिना जीव सब डूबा जाय रसातल द्वारू॥ २४

हेला मार कहू सब सुणज्यो चार बरण का जीऊं।
बिना राम सबही डूबोगे, परस न पावो पीऊ॥ २५

एका जीव सकल का ठाकर जुदा-जुदा क्यूं धावो।
दाणा पाणी राम उपाया कहो क्यूं साथ गमावो॥ २६

सब ही माल जीव को खावे करे जार सूं यारी।
या तो बात पीव नहिं मान यूं भूडा खसागे॥ २७

यूंणी मती जार यूं त्यागो पीव परातम ध्यावो।
सोच विचार मझम हरि सिवरो आपा मज समावो॥ २८

---

१८. गिगनारू – आकाश को। २२ आस – गन्नास (पासादिक मूला)
२३ इस – इस समय। वारम वारा – बारम्बार। २५. हेला मार – पुकार कर।
जीऊ – जीव। पीऊ – पीव (पति) २८ परातम – परमात्मा। मझ – भीतर।

दा री पार्सात

सूर-विज्ञान साध घट ऊगा, कदे न भरमे भाई।
रात-दिवस दोनू नहिं व्यापै, एक अखण्ड रहाई ॥ १२

ज्ञानी ध्यानी जह नहिं पहुचै, केवल राम मिलावै।
केवल मिल्या निकेवल माही, आवागमण न आवै ॥ १३

पडित ज्ञानी जग मे बहुता, ताका वार न पारा।
जग भरमाय सकल कू बाध्या, मिल जावै जम द्वारा ॥ १४

जग-जन ज्ञान कहत हू भाई, सब ही कू उपदेसा।
सिंवरण किया होत है सजना, छूटत है जम-देसा ॥ १५

सिंवरण किया साच जब पूगा, सतगुरु भेद बताया।
रामदास जग मारग त्यागा, उलट'रु जन्न कहाया ॥ १६

साखी

जग-जन मारग रामदास, परगट दीसै दोय।
जन्न मिलै जगनाथ मे, जग परला मे होय ॥ १७

इति श्री ग्रथ जग जन सम्पूर्णम्

★

अथ ग्रंथ रण-जीत

चौपाई

राम बिना जग परलै जावै, लख चौरासी गोता खावै।
जनम-जनम मे औ दुख भारी, राम बिना किम कटे विकारी ॥ १

वाचै पुन सुविचारै नाही, ता कारण फिर पूठा आही।
साधू एक राम कू ध्यावै, राम-राम कह उलट समावै ॥ २

---

१२ ऊगा – उदय हुवा। रहाई – रहता है। १ विकारी – विकार।

अथ चाणक को अंग

चरण

साहिब एक सिष्ट का ठाकर, सकल पिंड मुझ मांई ।
परच्यां बिन पार नहिं पावै, जाय जमपुरी मांई ॥ १
जग सो बंध्यो जमां की सांती जन का मारग जवला ।
समझे नहीं जीव पखवादी तासे कहू जन अवला ॥ २
जग जन वाद भाद को भाई जिणका करो विचारा ।
जग सब भागो जाय जमपुरी जन का मारग न्यारा ॥ ३
जन का राह झीण है भाई जग सेती गम नांही ।
जन तो चल्या जमां सिर ऊपर, जग जम हाथ बंधाही ॥ ४
जग सो बंध्यो वेद के मारग, करता ज्ञान अज्ञाना ।
दिन मे रात रात में दिन है ऐसे भरम भुलाना ॥ ५
केता भूल्या ज्ञान कथे कथ, के भूल्या अज्ञाना ।
रामनाम निरपख निरखावै सिवरयां मिलै ठिकाना ॥ ६
साधक ज्ञानी ज्ञान दिढावै ठानत वाद विवादा ।
एको राम मोष का मारग, दोइ ध्याय हुय प्यादा ॥ ७
सिवरण करै सोई जन पहुंच सिवरण बिना न पावै ।
सिवरण बिना ज्ञान सब थोथा जम के हाथ बंधावै ॥ ८
ज्ञान सुणे सुण सब जग लागा तीरथ व्रत उपवासा ।
पाणी बिन प्यास नहिं भागे सरब ओस की आसा ॥ ९
सत को छाड मत्र सूं बंध्या पखा पखी के ज्ञाना ।
बांचे वेद कतेब कुराना थोथ पूज दे माना ॥ १०
सज अज्ञान ज्ञान पख वादी लगा आदि गुरु ज्ञाना ।
ज्ञान विचार सार हंस सिवरो, पावो ब्रह्म ठिकाना ॥ ११

---

१ सिष्ट – सृष्टि । २ जवला – सीधा । अवला – टेढ़ा । ६ केता – कितने ही ।
७ मोष – मोक्ष । ११ सार हंस – सारतत्व राम नाम ।

साखी

राम नाम तत-सार है, सब ही को आधार।
रामा सिवरी राम कू, मेटो विषै जजार ॥ १४

इति श्री ग्रंथ रण-जीत सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ ज्ञान-विवेक

चरण

कान-गुरू कलजुग मे बहुता, तासू मुगंत न जावै।
सतगुरु बिना सरब जग डोलै, सत्त सबद नहि पावै ॥ १

निज्ज नाम की खबर न पाई, भटक रह्या नर रीता।
मन चचल निश्चय नहि कीया, माया लाग विगीता ॥ २

निज्ज नाम बिन मुगत न होई, फिर दुनिया भरमावै।
जगत भेख दोउ जाय जमपुरी, परम-पद्द नहि पावै ॥ ३

विकरम करै विषै सू भरिया, वानौ पहर लजावै।
बूडा आप और कू बोवै, रसना नाम न गावै ॥ ४

जती होय जत्र नहि साधै, मन कू बस नहि कीया।
चार चक्क मे कबू न छूटै, राम नाम नहि लीया ॥ ५

सील सतोष साच नहि आया, प्रीतम नाम न पावै।
तीन-लोक मे काल कूटसी, नुगरो नरका जावै ॥ ६

जोगी होय जुगत नहि जाणै, कान फडा सिध ववावै।
मन मुद्रा का भेद न जाणै, आसण सहज न पावै ॥ ७

---

१४ जजार – जजाल। २ विगीता – नाश होना। ४ विकरम – कुकर्म।
वानौ पहर – साधु के कपडे पहन कर।

उलट मिल सो सत जु सूरा अनहद अखंड बजाय तूरा।
रण जीते रणजीत कहावै, कदल मार कामदल ढाय ॥ ३

मन कूं जीते अगम असाड़े, मोह राजा कूं पकड़ पछाड़े।
नाद बिंद एकै घर राखे, राम रसायण निस दिन चाखे ॥ ४

मूल चकर कूं अध चलावे उलटी घरन गगन दिस लावे।
इंद्री पांच विष रस मार, रूम-रूम में अजरा जार ॥ ५

अजर जर अजरामर अखाय प्रेम पियाला भर भर पाय।
मद पीवै ब्रह्मा मतवाला पी-पी मगन भया मन काला ॥ ६

मासा मारे धी घर मांही लोक लाज मरजादा नांही।
इला पिंगला सुषमण नारी सहजां उलट करी हम यारी ॥ ७

हमरी दादी हमही खाई दादा की हम मूंड मुडाई।
भाई को ले दूर गमाया काका का हम करम कुटाया ॥ ८

हमरा मामा हम ही मारया मरू चढ़ हम बहुत पुकार्या।
पाड़ोसी म पांचू पटक्या पच्चीसां के सिर पर झटक्या ॥ ९

तामस रजो नियारा भाई सतों में समसेर संभाई।
चवद-लोक जीत घर आया निरगुण सेती प्राण मिलाया ॥ १०

कुटुंब कडूवा अब ही खाया, जब हम पूत सपूत कहाया।
खेचर भूचर चाचर लाया अगोचर में अनहद पाया ॥ ११

उनमुन मुद्रा सहज समाधी, दूजी और न राखूं व्याधी।
एसा सत कहाय सोई तामूं आवागवण न होई ॥ १२

जा दासन क मै हुं दासा सतगुरु हंदी मोकूं आसा।
रामदास काया गढ़ जीता राम राम कह भया वदीता ॥ १३

---

३ कंदल – कंदर्प। ५ मूल-चकर – मूलाधार चक्र। अजरा – परब्रह्म।
६ काला – पागल। ७ धी – बुद्धि (पुत्री) ८ दादी – माया। दादा – मूल अज्ञान। भाई – अहंकार। काके – संचित प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म। ९ मामा – वासना संस्कार। पाड़ोसी – पांच विषय। ११ कुटुंब कडूवा – काम क्रोध मोह अहंकार आदि। खेचर भूचर चाचर – हठयोग की ५ खेचरी मे भूचरी आदि मुद्रायें।
१२ व्याधी – व्याधि। १३ जा दासन – उन भक्तों के।

साखी

राम नाम तत-सार है, सब ही को आधार।
रामा सिवरी राम कू, मेटो विषै जजार ।। १४

इति श्री ग्रंथ रण-जीत सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ ज्ञान-विवेक

चरण

कान-गुरू कलजुग मे बहुता, तासू मुगत न जावै।
सतगुरु बिना सरब जग डोलै, सत्त सबद नहि पावै ।। १

निज्ज नाम की खबर न पाई, भटक रह्या नर रीता।
मन चचल निश्चय नहि कीया, माया लाग विगीता ।। २

निज्ज नाम बिन मुगत न होई, फिर दुनिया भरमावै।
जगत भेख दोउ जाय जमपुरी, परम-पद्द नहि पावै ।। ३

विकरम करै विषै सू भरिया, वानौ पहर लजावै।
बूडा आप और कू बोवै, रसना नाम न गावै ।। ४

जती होय जत्र नहि साधै, मन कू बस नहि कीया।
चार चक्क मे कबू न छूटै, राम नाम नहि लीया ।। ५

सील सतोप साच नहि आया, प्रीतम नाम न पावै।
तीन-लोक मे काल कूटसी, नुगरो नरका जावै ।। ६

जोगी होय जुगत नहि जाणै, कान फडा सिध क्वावै।
मन मुद्रा का भेद न जाणै, आसण सहज न पावै ।। ७

---

१४ जजार – जजाल। २ विगीता – नाश होना। ४ विकरम - कुकर्म।
वानो पहर – साधु के कपडे पहन कर।

जंगम हुय कर भया दिगंबर शिव शकती कूं ध्यावै ।
जीव सीव की खबर न पाई घर घर जंग बजावै ॥ ८

जिंदा होय जिंद नहिं चीने कुरान पढ़े पढ़ भूला ।
एक अला का नाम न आणा अंतकाल भव डूला ॥ ९

सामी होय सुरत नहिं बंध भंवर गुफा नहिं पावै ।
अविनासी सू रह गया न्यारा, फिर फिर डम्भ जगावै ॥ १०

ब्राह्मण होय ब्रह्म नहिं चीने और भरमना लागा ।
पहर जनेऊ राम न जाण्या कुल मारग नहीं त्यागा ॥ ११

बैरागी हुय भेद न पाया, आतम राम न जाणे ।
बानो पहर दुनी डहकावै, सत्त सबद नहिं मानै ॥ १२

कांवड़िया हुय कांसी कूटे रुणझुण तार बजावै ।
राम नाम की खबर न पावै ठगा ठगी सूं खावै ॥ १३

साग पहर गुरुज्ञान न पावै फिरै दसूं दिस भूला ।
तप तीरथ कर खाली रहग्या, अणभै सबद न बोला ॥ १४

बानो पहर भरम मत भूलो इस बिध मुगत न होई ।
आपा चीन अगम घर आवै पार पहुंचसी सोई ॥ १५

षट-दरसण सिणगार देह का इनको एह विचारा ।
राम मिलै सो ब्रह्म जायगा और जाय जम द्वारा ॥ १६

भूली दुनी भूल को पूजे ब्रह्म ज्ञान नहिं पावै ।
प्रेम भगति सूं प्री न लागी लख चौरासी जावै ॥ १७

हिन्दू तुरक दोऊं घर भूला, मान देय सूं यारी ।
पख्खा-पख्खी कर पंथ हलाया हरि बिन बाजी हारी ॥ १८

पाहण कूं करता कर जाने फिर-फिर सीस निवावै ।
आपा मांहि अलख अविनासी ताका भेद न पावै ॥ १९

---

९ डूला – डूब गये । १० डम्भ – पाखण्ड । १२ डहकावै – भ्रमित करना ।
१३ कांवड़िया – रामदेव के उपासक । रुणझुण तार – एकतारा ।

तीन गुणा सग लाग विगूता, निरगुन हाथ न आया ।
खाली रह्या खलक सू यारी, खालक मुखा न गाया ।। २०

वेद कतेब पढ्या बहु वानी, घर-घर ज्ञान दिढावै ।
सतगुरु होय जगत परमोधे, दुइ अक्षर नहि ध्यावैं ।। २१

माया ब्रह्म किया सयोगा, ओउकार उपाया ।
तीन-लोक की करी थापना, तामे जग भरमाया ।। २२

सतगुरु बिना भरम नहि भागै, फिर माया सग आवै ।
पिता रह्या सकल सू न्यारा, ताका नाम न पावै ।। २३

माया के सग लाग विगूता, जोगी जती सन्यासी ।
सतगुरु सरणै आय ऊबरै, सो पावै अबिनासी ।। २४

'मै' 'तै' त्याग विषय रस त्याग्या, कुल-मारग नहि ध्याया ।
सतगुरु सेती करी वीनती, सत का सबद सभाया ।। २५

रसना सिवर रामरस पीया, मन माही मगनाई ।
रूम-रूम बिच तारी लागी, उलटी गग चलाई ।। २६

पाच पचीस पकड घर आन्या, जाहर जोग कमाया ।
नवसे नदी अफूटी चाली, बक-नाल रस पाया ।। २७

मन पवना मिल गाठ घुलाई, जाप अजप्पा होई ।
नख-सख विचै सहज लिव लागी, जाणेगा जन सोई ।। २८

सुरत सबद मिल चल्या पिछम दिस, अरध-उरध घर आया ।
अगम घाट हुय चढ्या अकासा, नाद अनाहद वाया ।। २९

घर असमान किया सत मेला, भार-अढार गुजाणा ।
चार चक मे भया उजाला, एको एक मिलाणा ।। ३०

---

२०. खलक – ससार । खालक – ईश्वर । २१ परमोधे – उपदेश देता है । दुई – दो ।
२३ पिता – परमात्मा । २६ मगनाई – मस्ती ।
३० भार-अढार – बनस्पति की सख्या ।

जगम हुय कर भया दिगबर, शिव शकती कूं ध्यावे ।
जीव सीव की खबर न पाई घर घर जग मजावै ।। ८

जिंदा होय जिंद नहिं चीने, कुरान पढ़े पढ़ भूला ।
एक मला का नाम न जाणा अंतकाल भव डूला ।। ९

सामी होय सुरत नहिं बंध भंवर गुफा नहिं पावे ।
अविनासी सूं रह गया न्यारा फिर फिर डम्म जगावै ।। १०

ब्राह्मण होय ब्रह्म नहिं चीने और भरमना लागा ।
पहर जनेऊ राम न आव्या कुल मारग नहीं त्यागा ।। ११

बैरागी हुय भेद न पाया आतम राम न जाणे ।
बानो पहर दुनी बहकावै सत्त सबद नहिं मानै ।। १२

कांवड़िया हुय कांसी कूटे रणझुण तार बजावे ।
राम नाम की खबर न पावे, ठगा ठगी सू खावे ।। १३

सांग पहर गुरुज्ञान न पावै फिरै दसू दिस भूला ।
तप तीरथ कर खाली रहग्या, अणभै सबद न बोला ।। १४

बानो पहर भरम मत भूलो इस विध मुगत न होई ।
आपा चीन अगम घर जावे, पार पहुंचसी सोई ।। १५

षट-दरसण सिणगार देह का इनको एह बिचारा ।
राम मिलै सो ब्रह्म जायगा और जाय जम द्वारा ।। १६

भूली दुनी भूत को पूज, ब्रह्म ज्ञान नहिं पावे ।
प्रेम भगति सूं प्री न लागी लख चौरासी जावै ।। १७

हिन्दू तुरक दोउं घर भूला आन देव सू यारी ।
पक्षा-पक्षी कर पंथ हलाया हरि बिन बाजी हारी ।। १८

पाहण कू करता कर जाने फिर फिर सीस निवावै ।
आपा मांहि अगम अविनासी, ताका भेद न पावे ।। १९

---

९ डूला – डूब मरे । १० डम्म – पाखण्ड । १२ बहकावै – भ्रमित करना ।
१३ कांवड़िया – रामदेव के उपासक । रणझुण तार – एकतारा ।

अथ ग्रंथ अमर बोध

चौपाई

अमर लोक सू अहधी आया, हसा कारण ब्रह्म पठाया ।
जग मे आण लिया अवतारा, विष्णु वरण मे जनम हमारा ।। १

हीणी देह शुद्ध घर माही, भजन करू कोइ जाणे नाही ।
भजण करू अरु सिवरू रामा, तजिया कुल मारग का कामा ।। २

परथम हम मुख सेती लीया, राम-राम मुख रसना कीया ।
राम-राम रसना सू रटिया, भागा भरम करम सब कटिया ।। ३

दोय मास मुख सेती ध्याया, गदगद स्वाद कठ मे आया ।
साठ दिना सू मुख गढ जीता, कठ कवल सू लाई प्रीता ।। ४

चलिया सबद ह्रिदे घर आया, सासो-सास नितो-नित ध्यायो ।
तन-मन अरप सत जन मडिया, काल क्रोध करमन कू छडिया ।। ५

वरस एक दिन पाच वदीता, एता मे हिरदा गढ जीता ।
मन कू हम आगे कर लीया, नाभि-कवल मे डेरा दीया ।। ६

नाभि-कवल में हरिजन आया, रूम-रूम मे नाच नचाया ।
नाडि-नाडि न्यारी अब बाजै, भवर गुजार नाद घन गाजै ।। ७

दोय वरस नाभि मे ध्याया, ता पीछै पाताल सिधाया ।
उलट पयाल पीठ कू बध्या, छेद्या चकर पिछम दिस सध्या ।। ८

उलटी नाल वक गढ डेरा, मेरु डड मे घलिया डेरा ।
जीता मेरु काल कू ढाया, सूरा सत त्रुगट्टी आया ।। ९

तिरवेणी के तखत विराजै, अनत कोट जह बाजा बाजै ।
पाच पचीस मिल्या ता माही, मन पवना चित बुद्धि मिलाही ।। १०

---

१ अहधी – सिपाही, सन्देश वाहक । हसा – जीवात्मा । विष्णु वरण – वैष्णव ।

तीनूं जीत जाय घर चौथे उनमुन तारी लाई।
हंसा चुग सहज सूं मोती मानसरोवर मांई ॥ ३१

अणघड एक अलख अविनासी जीव सीव सूं मेला।
ब्रह्म अथाह थाह कुण लाय, सुन्न सिखरगढ़ मेला ॥ ३२

हंसा जाय परमहंस मिलिया अजब तमासा होई।
देह विदेह हुवा अब अेसा, अखड महल में दोई ॥ ३३

ससि पर भाण मिल्या इक धारा इला पिंगला जागी।
सुषमण नार पिया संग खेलै, पद पाया वड़भागी ॥ ३४

सुरत सबद मिल सहज समाया जोगी जग में जीता।
रामदास सतगुरु सूं पारी राम हमारा मीता ॥ ३५

साखी

सतगुरु मेरे सिर तपै ज्यूं दुनियां पर भाण।
रामदास सत सबद सं परस्या पद निरबाण ॥ ३६

सब संतां सूं बीनती सब दासन को दास।
रामदास निज नाम बिन, धर्म न दूजा पास ॥ ३७

रामदास संत सूरवा सं जाता जग मांहि।
तीन-लोक यूं जीत कर मिल्या अगम घर मांहि ॥ ३८

इति श्री पंच नाम-विवेक सम्पूर्णम्

*

---

१८ भाण – भानु।

अमर-लोक सबहुन सू न्यारा, जह नहि लगै काल का सारा ।
तीन-लोक मे मर-मर जावे, पकडै जीव जम्म ले जावै ॥ २१

तीन-लोक मे काल पसारा, भवन चतुरदस केर अहारा ।
चवदै-भवन जमा की ताती, जहा जावे जहा मिटे न माती ॥ २२

इन सू न्यारा सबद पढाऊ, जम की ताती तुरत छुडाऊ ।
साची कहू मान रे भाई, भूठ नही है राम दुहाई ॥ २३

साची कहू मान रे भोरा, काची देह मरण है तोरा ।
साची कहू मान रे अधा, तुमरो जीव बध्यो जम फदा ॥ २४

सब ही सुणौ देत हू होका, बिना राम जम घालै भोका ।
आरे जीव सबल सरणाई, सतगुरु तो सू करै सहाई ॥ २५

भूलै मती देख ससारा, ऐ सब बध्या करम का भारा ।
चार दिना का स्वाद जु होई, या मे लूण-लखण नहिं कोई ॥ २६

साप खाय अरु मूडा थोथा, तू उठ जाय जीव जड मोथा ।
अपनो हीर हाथ क्यू खोवै, क्यू रे अधा जनम विगोवै ॥ २७

को काहू को जग मे नाही, हल हुसियार समभ भज साई ।
किसका मात तात सुत पूता, ऐ सब वध्या सूत कसूता ॥ २८

किसका कुटुब कडूबा भाई, स्वारथ की सब भूठ सगाई ।
अपनै अपन स्वारथ लागा, तू उठ जाय जीव चल नागा ॥ २९

ता कारण मै तो कू भाखू, अमर-लोक का आखर आखू ।
परमारथ के काज पुकारू, समभ-समभ भज सिरजनहारू ॥ ३०

सासो-सास भजन कर लीजै, तन मन धन सतन कू दीजै ।
अमरलोक का आखर दोई, समज भजै सो अम्मर होई ॥ ३१

अमर होइ अनभै पद पावै, जोनी सकट बहुरि न आवे ।
आखर दोय पढै जन प्यारा, सो है मेरे प्राण अधारा ॥ ३२

---

२२ माती – मृत्यु । २४ भोरा – भोले । २६ लूण-लखण – निस्सार ।
२७. मोथा – मूर्ख । विगोव – खोता है । २८ सूत कसूता – अहितकारी बन्धन ।

सब के माहि सत का बासा जूंझ कर निस रहत उदासा ।
हद-बेहद बिच जू झ मडाया, सब कू जीत शून्य में आया ॥ ११

तज आकार मिल्या निरकारा, जहां ब्रह्म एको निरधारा ।
एक हि ब्रह्म वार नहि पारा, ता मू मिलिया प्रान हमारा ॥ १२

मिलिया सत ब्रह्म के मांही, आदि अंत कबु बिछर नांही ।
रामदास अणघड कूं ध्याया, अमर-लोक अमरापुर आया ॥ १३

अनत कोट जह सत का वासा रामदास सबहुन का दासा ।
रामदास सतन का चेरा अमरलोक में लीया डेरा ॥ १४

साखी

अमर-लोक में रामदास, रहे अटल मठ छाय ।
परमारथ के कारण हंसा कूं परचाय ॥ १५

चौपाई

सुणज्यो हंसा हमरी वाणी अमरलोक की कहूं सहनाणी ।
अमर-लोक मे हमरा वासा देह का बस अगम में वासा ॥ १६

अमर-लोक सू हमरी यारी, मो कूं लखै नहीं ससारी ।
अमर-लोक सूं हम चल आया सतगुरु रूपी सत कहाया ॥ १७

हसा काज रम्यू जग मांही वो जाण को जाणे नांही ।
परमारथ कूं सबद उचारा, दिसा दिसी कूं किया पसारा ॥ १८

सतगुरु सबद दिसतर जावे, सुण हंसा चल दरसण पावे ।
अमरलोक का आसर भाखूं द आसर मम धरमा राखूं ॥ १९

मो कूं लख हाय जन मरा मसूं अमर-लोक कूं डरा ।
अमर-लोक में अम्मर होई जह नहि मीत मरै नहि कोई ॥ २०

---

१६ सहनाणी – चिन्ह । १८ दिसा-दिसी – दिग-दिगन्त ।

अमरापुर मे मै रहू, सुणो हस निज दास ।
अमरलोक पहुचाव सू, जो आवे मम पास ।। ४

रामदास अम्मर भया, अमर-लोक मे वास ।
अमर पिता सग रम रह्या, कदे न होय विनास ।। ५

बालक खेलै वाप सग, पिता झोलिया माहि ।
रामदास अम्मर भया, जह जामण-मरणा नाहि ।। ६

इति श्री ग्रन्थ अमर बोध सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ मूल पुराण

चौपाई

र जुगा की क्या कह गाऊ, असख जुगा की कथा सुनाऊ ।
ाख जुग सब परलै जाई, सदा रहै इक अणघड साई ।। १

ाख जुग्ग कहणा मे आवै, पारब्रह्म को पार न पावै ।
व न बादल पवन न पाणी, इला न आभो ना ब्रह्माणी ।। २

ऱ्य महासुन और न काई, जद इक मूरत अमर गुसाई ।
ाण ऐसा इक मता उपाया, इच्छा कर ओउकार रचाया ।। ३

ा सेती तिरगुन उपजाये, तीन गुणा का पच कहाये ।
ाज आकास ताहि ते वाया, वायु पुत्र सो तेज कहाया ।। ४

ज माहि तोय उपजाई, ताकी सकल पृथवी थाई ।
ाल की बूद भया इक इडा, इडा फूट रच्या ब्रह्मडा ।। ५

जनके माही विष्णु उपाया, विष्णु नाभि का कमल कहाया ।
कमल माहि ब्रह्मा परकासा, जाकी सारी सृष्टि उजासा ।। ६

---

२ इला – पृथ्वी । आभो – आकास ।
५ तोय – पानी ।

आखर पढ़े अमर-पद पावें, अमर-लोक के मांहि समावें ।
मैं हरिजन अमरापुर वासी जग सेती मैं रहू उदासी ॥ ३३
मेरी देह जगत के मांही, उलटी सुरत अगम घर जांही ।
अमरापुर मे वास हमारा, हम कूं लखे नहीं ससारा ॥ ३४
अमरापुर सू हम चल आया, अमर-लोक का कागद लाया ।
कागद बांच देत हू हेला, हेला सुणत होत जन पेला ॥ ३५
मैं पला ऊला में नांही वठा अमर-लोक के मांही ।
अमर-लोक का आटा खाऊ तीन-लोक सिर हुकम हलाऊ ॥ ३६
हमरा हुकम मान तुम लीजो, तन मन अरप बदगी कीजो ।
करै बदगी चढा होई अम्मर-लोक मिलेगा सोई ॥ ३७
रामदास अमरापुर आया अमर-लोक के मांहि समाया ।
रामदास अमरापुर वासा अमर-लोक सू लील विलासा ॥ ३८
रामदास अमरापुर मांही, अम्मर हुवा अमर भज सांइ ।
रामदास सतगुरु की सेवा, ता सू मिल्या निरजन देवा ॥ ३९
मिल्या निरजन निरभ दासा परम जोत मैं कीया वासा ।
आनन्द भया गुरु परतापा, रामदास मिल आपो आपा ॥ ४०

साखी

रामदास सतगुरु अमर अमर निरजन देव ।
अमरलोक म रम रह्या अमर हमारी सेव ॥ १
अमरापुर में घर किया, अमर लोक सू प्रीत ।
रामदास अम्मर भया जगत न जाण रीत ॥ २
रामदास अम्मर भया अमर-लोक के मांहि ।
जगत भेद जाणै नहीं तात मर-मर जाहि ॥ ३

जिण ऐसा इक मता उपाया, हस हमारे बहुरि न आया ।
धरमराय सबही बस कीया, हम ताई कोइ आण न दीया ॥ २

सत्त सबद ले जग मे जाऊ, हसा बदी छोड कहाऊं ।
सत रूप हुय साहिब आया, देह धार अरु सत कहाया ॥ ३

सब जग माही गुरू कहावै, ताका मरम और नहिं पावै ।
हसा कू निज नाम सुणावै, रूम-रूम मोता'ल चुगावै ॥ ४

अनभै सबद सत बहु बोल्या, मुगत पथ भडारा खोल्या ।
बारै पथ नियारा भाई, ऊपरवाडी हसा जाई ॥ ५

ऊपरवाडी हसा जावै, धरमराय भी खबर न पावै ।
सहज-सरूपी जग मे खेले, हसा कू निज पथ जु मेले ॥ ६

मिलिया हस परम हस माई, काल-जाल जम का डर नाही ।
रामदास आदू घर पाया, जह का हुता जहा चल आया ॥ ७

साखी

सतगुरु वध छुडाय कर, दिया निकेवल राम ।
रामदास जा रम रह्या, अनत कोटि के गाम ॥ ८

इति श्री ग्रथ मूल पुराण सम्पूर्णम्

★

अथ ग्रंथ उभय ज्ञान

चरण

बालक मात-पिता बिन विलख्या, दुख पावै मन माई ।
पिता निरजन है निज न्यारा, सुन्य सिखर मे साई ॥ १

---

५ ऊपरवाडी – ऊपर हो कर।
६ सहज-सरूपी – स्वभाविक रूप से।

ब्रह्मा की भृगुटी शिव जाया, यूं कर तीनू देव उपाया ।
तीन सगत इक और उपाई, लक्ष्मी उमा सावत्री बाई ॥ ७

पारवती संकर घर वासा, सावित्री ब्रह्मा संग दासा ।
लक्ष्मी विष्णु सतो गुण पाया रजो तमो मिल जग उपजाया ॥ ८

तीन देव मिल मांड उपाई, तामे मूला लोग लुगाई ।
षट-दरसण सब संकर उपाया जोग जिग्ग आचार बनाया ॥ ९

लख चौरासी ऋषि अठयासी वेद कतेब बध्या गलपासी ।
खाणी चार चार ही वाणी ऐती बात सुफल कर जाणी ॥ १०

भवन चवर दस लोक उपाया, बारै पंथा राह चलाया ।
पंथा पन्थी में सब जग लागा, कर-कर जोर जमपुरी आगा ॥ ११

सबके ऊपर जबरो राजा निस दिन काल बजाव बाजा ।
धरमराय सबका कुतवाला चवद भवन आप दिसवाला ॥ १२

आपहि थापे आप उथापे आपहि सब जग राह चलाव ।
धरमराय सबही का देवा सब जग कर धरम की सेवा ॥ १३

तुष्टमान हुय धनहि दिरावै विरचै जब सब पकड़ मगावै ।
नान्हा मोटा सब गुण साई येह निरंजण काल कसाई ॥ १४

साखी

धरमराज निज काल है सकल मंड का देव ।
रामदास गुण त्याग कर, लग्या अलख की सेव ॥ १५

चौपाई

अनंत जुगां तांइ पंथ अकेला राज करै धरमायण चेला ।
न्यारा आप निरंजण सांई यो कोइ दूजो माया मांही ॥ १

७ तीन सगत – तीन महा शक्तियां (लक्ष्मी उमा सावित्री)
१० खाणी चार – चार प्रकार की योनियां (स्वेदज उद्भिज अंडज जरायुज)
१० चार ही वाणी – चार वाणी (परा पश्यन्ति मध्यमा और बैखरी) ।
१२ कुतवाला – कोतवाल । १३ उथापे – मिटा देता है ।

एक हि मात पिता कू जाणै, सोई बाल सपूता ।
मात पिता बिन दोजग जावै, नरका पडै कपूता ।। १३

बालक मात पिता की सेवा, दूजा और न जाणै ।
सास उसास रटै निस-वासर, आदू प्रीत पिछाणै ।। १४

दूजा भरम सबै उठ भागा, रसना मे रस आया ।
मिसरी जैसा स्वाद लुभाणा, कठ हि जीव जगाया ।। १५

मन की रटण हृदा मे जागी, तजिया वाद-विवादू ।
मनवा अत चिषै नहि जावै, मारग पाया आदू ।। १६

हृदा-कवल घर किया विचारा, अनत कोट इण माई ।
अनत कोट इण मारग पहुता, या बिन दूजा नाही ।। १७

चौबीस तिथकर इणही मारग, केवल जाय समाना ।
मिलिया महा मोष के माही, आवागवण न आना ।। १८

ब्रह्मा विष्णु सेस सनकादिक, सिव-सकर इण माही ।
पारबती ऋषि नारद ध्याया, वै भी आण समाही ।। १९

ध्रू प्रहलाद जनक सुखदेवा, नत्र जोगेसर ध्याया ।
वसट मुनि रामचद्र सीता, सुन में आण समाया ।। २०

हनूमान लछमण इण मारग, कतरसाम इण माई ।
गोरख गोपीचद भरथरी, सुन मे नाद बजाई ।। २१

वालमित पाडू इण मारग, कुती द्रुपदा नारी ।
क्रोड निनाणू राजा हूवा, जिण या राह सवारी ।। २२

रका बका और नामदे, दत्त दिगबर देवा ।
अनत कोट इण मारग पहुता, आद अत या सेवा ।। २३

रामानद कबीर कमाला, सेना सजन कसाई ।
पीपा धना और रैदासा, मीरां माहि समाई ।। २४

---

२१ कतरसाम – कार्तिक स्वामी ।

मैं ही जीव जुरा मे पड़ियो, मेरे सुध्ध न काई ।
हाथ न पाव अपग मैं अघा पिता करो सहाई ॥ २

अल मल मांहि भर्या भिष्टा सूं नख-सख सबै बिकारा ।
दूजा सूग कर बालक सू मात पिता कूं प्यारा ॥ ३

भोलो बाल समझ नहिं काई, भिष्टा हाथ भरावै ।
दोड़े आय सरप कूं पकड़ मात पिता गहि लावै ॥ ४

बालक अघ सुध्ध भी नांही, शौच अशौच न आण ।
मूते हग पोतड़ा मांहि मात गोद मे साण ॥ ५

बालक अर मात को खोलो, तोहि मात नहिं मार ।
न्हाय धोय उज्जल कर सबे, निस दिन बाल सधारे ॥ ६

माता हेत कर बालक सूं बालक भांण नांही ।
लागे भूख आय जब रोवै, माता दूध पिलांही ॥ ७

गऊ चरणे कूं बन में चाली सुरत बछा सू लावै ।
अतर मास वीसरे नांही आयण आण मिलावै ॥ ८

ऐसो हेत करै बालक सूं मोटो करै सभालै ।
देव पोख अलख अविनासी मात पिता मिल पालै ॥ ९

बालक करम कुसगत लाग्या चेत अचेत नांही ।
माता पिता कर रुखवाली निजर बालका मांही ॥ १०

बाल अनीत करै अन्यायी औगण अनत कमाव ।
माता पिता रिझक नही मूल अपनो बिड़द निभावै ॥ ११

रमतो बाल आय जब रोवै मात पिता उर लेवै ।
राखै गोद बहुत पुचकारै मन मान्या सुख देवै ॥ १२

---

३ सूग – घृणा । ५ साण – घुमाना । ६ खोलो – गोद । ७ भांण नांहि – समझता नहीं । ८ आयण – सूर्यास्त के समय । १० रुखवाली – रक्षा । १२ पुचकारै – दुलार से समझाना ।

घुरै निसाण अनत जह बाजा, निरभै राज जमाया ।
विष्णुदेव सता सुखदाई, ता का दरसण पाया ।। ३७

विष्णुदेव सत राम अराधै, रूम-रूम सुखरासी ।
तासू मिल्या चल्या हम आघा, सुन्य देस का वासी ।। ३८

ऐसा सुख्ख सत नहि मानै, सुरत अगम कू धारी ।
महमाया मुझ मात विराजै, ता सू प्रीत पियारी ।। ३९

बालक लग्या मात के चरणा, मात गोद मे लीया ।
राजी हुई बालका ऊपर, मन मान्या सुख दीया ।। ४०

बालक रमै मात के खोलै, कहो ऐसा कुण मारै ।
माता बाल आप मे राखै, तुष्टमान हुय तारै ।। ४१

बालक कहै सुणो महमाया, अन्तर अरज सुनाऊ ।
तुमरा खावद पिता हमारा, ताका दरसण पाऊ ।। ४२

माता कहै सुण रै बालक, धिन मै तोकू जाया ।
मेरै उद्दर माहि ऊपना, अस पिता का आया ।। ४३

राजी हुई बालका ऊपर, पिता पास तुम जावो ।
ता सेती चल हम मे आया, ता मे जाय समावो ।। ४४

माता पुत्र पिता पै सूपा, पिता वधायर लीया ।
अनत कोटि जह सत विराजै, सबका दरसण कीया ।। ४५

मा का महल रह्या अब लारै, पुत्र पिता पै आया ।
अनत जुगा का हुता बीछड्या, अबकै आण समाया ।। ४६

बालक लग्या पिता की सेवा, चरण कमल के माही ।
पिता निरंजन है निज न्यारा, अणघड अमर गुसाई ।। ४७

रामदास पिता के चरणा, अधर एक लिव लावै ।-
ऐसी बात कहो कुण मानै, सतगुरु मिल्या लखावै ।। ४८

---

४५ वधायर – स्वागत कर के ।

नानग हरीदास अरु दादू सत दास जहाँ आया ।
अनत कोट इण मारग पहुता राम नाम निस ध्याया ॥ २५

आदि अनादी मारग लागा, सतगुरु मोहि बताया ।
आस पास का सबही झूठा हम निश्चय कर ध्याया ॥ २६

अनत कोटि इण मारग पहुता, मैं संतन का पागी ।
तन मन अरप नाभि में आया रूम-रूम लिव लागी ॥ २७

छेगी धरन पताल सिधाया, सप्त पतालां मांही ।
सेसनाग का दरसण कीया सेसनाग मुख सांई ॥ २८

सेसनाग के सहस मुहुंडा फनि-फनि रसना दोई ।
ररकार रसना अरु लाव और न दूजा कोई ॥ २९

देखी रटण विरह मोय लागी हम कहा सिवरण कीया ।
सेस मुखां सू सेस न पावै, धिक धिक हमरा जीया ॥ ३०

ऊठी करक कलेजा मांही रूम-रूम बिच पीरा ।
विरह वियोगण भई दिवाणी लगी भाल तन तीरा ॥ ३१

लागी भाल नीकल नांहीं उर अंतर बिच सालै ।
रोम रोम में विरही तीरा नखसिख सब ही हालै ॥ ३२

जालू प्राण करू तन भसमी पीव बिना नहिं जीऊ ।
अतर लागी अति यहु आतर विरह मिलाव सीऊ ॥ ३३

उलटा मूल अगम घर आसण सुरत सुहागण जागी ।
तज पाताल चढ़्या आकासां मेरु मझया अणरागी ॥ ३४

मेरु सिखर इक बीस सुरग है पाप पुन्य ता मांही ।
उन सूं न्यारा मारग निकस्या सत बैकुठ सिधाई ॥ ३५

धरमराय ऊपर हुय आया सत बैकुंठ विराजै ।
विष्णुदेव का दरसण कीया नाद अनाहद बाजै ॥ ३६

---

२७ पागी – खोज निकालने वाला। २९ मुहुंडा – मुँह। ३२ सालै – चुभती है।
३५ इक बीस सुरग – मेरुदण्ड की इक्कीस मणियां।

घुरै निसाण अनत जह वाजा, निरभै राज जमाया ।
विष्णुदेव सता सुखदाई, ता का दरसण पाया ।। ३७

विष्णुदेव सत राम अराधै, रूम-रूम सुखरासी ।
तासू मिल्या चरया हम आधा, सुन्य देस का वासी ।। ३८

ऐसा सुख्ख सत नहि मानै, सुरत अगम कू धारी ।
महमाया मुझ मात विराजै, ता सू प्रीत पियारी ।। ३९

बालक लग्या मात के चरणा, मात गोद मे लीया ।
राजी हुई बालका ऊपर, मन मान्या सुख दीया ।। ४०

बालक रमै मात के खोलै, कहो ऐसा कुण मारै ।
माता बाल आप मे राखै, तुष्टमान हुय तारै ।। ४१

बालक कहै सुणो महमाया, अन्तर अरज सुनाऊ ।
तुमरा खावद पिता हमारा, ताका दरसण पाऊ ।। ४२

माता कहै सुण रै बालक, धिन मै तोकू जाया ।
मेरै उद्दर माहि ऊपना, अस पिता का आया ।। ४३

राजी हुई बालका ऊपर, पिता पास तुम जावो ।
ता सेती चल हम मे आया, ता मे जाय समावो ।। ४४

माता पुत्र पिता पै सूपा, पिता वधायर लीया ।
अनत कोटि जह सत विराजै, सबका दरसण कीया ।। ४५

मा का महल रह्या अब लारै, पुत्र पिता पै आया ।
अनत जुगा का हुता बीछड्या, अबकै आण समाया ।। ४६

बालक लग्या पिता की सेवा, चरण कमल के माही ।
पिता निरजन है निज न्यारा, अणघड अमर गुसाई ।। ४७

रामदास पिता के चरणा, अधर एक लिव लावै ।
ऐसी बात कहौ कुण मानै, सतगुरु मिल्या लखावै ।। ४८

---

४५ वधायर – स्वागत कर के ।

साखी

रामदास चरणां लग्या, अमर पिता की सेव ।
जह माया व्यापै नहीं एक निरंजन देव ॥ ४६

चरण

रामदास पिता के खोले पिता हेत बहु दीया ।
पिता पुत्र अब बातां लागा, करणा था कुछ कीया ॥ १
तूठा पिता मांग रे बालक, जो मांग सो देऊं ।
तुम हो हमको बहुत पियारा करी हमारी सेऊ ॥ २
कै तो बाला रिध सिध लीजै के राजा पतसाई ।
के तो इन्द्रलोक को देऊ के बैकूंठ बड़ाई ॥ ३
तुम सेती मैं कछू न राखूं मेरै अब अपारा ।
जो चाव सो मांग बालका तूठा पिता तुमारा ॥ ४
बालक कहै पिता सुण मेरा अंतर अरज सुनाऊं ।
आदि अंत तुमसूं मिल खेलूं आवागमण न आऊं ॥ ५
तुम विन सुक्ख सब दुक्खदायक मेरे दाय न आव ।
मैं तो तुमरा दरसण मांगूं क्या मोकूं बहराव ॥ ६
रिध सिध मेरे आण माही मा राजा पतसाई ।
इन्द्र-लोक अंतर नहिं चाऊ ना बैकूंठ बड़ाई ॥ ७
और सुख सबही है झूठा सब माया मे आई ।
रामदास यूं चरणां राखो हैं है यह लगाई ॥ ८
मैं तो तुमरा दरसण मांगूं क संतां की सेवा ।
राम-नाम निज सिवरण मांगूं एतो दीजै देवा ॥ ९

---

१ पुत्र – जीवात्मा । २ के तो – यदि कहो तो या तो ।
३ बहराव – भुलावा देते हो ।

राम विना कोइ दूजो मागैं, ता का मुख नहिं देखू ।
रामदास कू राम पियारा, रूम-रूम सुख पेखू ।। १०

साखी

क्या वैकुंठा वैसणो, इद्रलोक को राज ।
रामदास कह रामजी, तुम विन सबै अकाज ।। १
विष खावैं सोई मरैं, तुम विन सब विपवाद ।
रामदास कू रामजी, राम करावो याद ।। २
मुगत न मागू बापजी, दूजी कितियक वात ।
रामदास कू भगति दो, मै पूता तुम तात ।। ३

इति श्री ग्रन्थ उभय ज्ञान सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ आदि बोध

छद अर्ध त्रिभगी

पिता पठाया, जनम धराया । सुण रे पूता, सिख, अवधूता ।। १
माया सग जावौ, माहि मिलावो । आकार बनावौ, भगति कमावो ।। २
चौरासी के दिसा न जावौ, मोह नसावो । निरगुण लीजै,
निस दिन पीजै ।। ३
सबद पियारा, करे पसारा । जीव जगाये, अमृत पाये ।। ४

चौपाई

राम-नाम निज पथ हलाये, मेरा मुझ मे आण समाये ।
मेरा है सब ही ससारा, राम कहै सो हम कू प्यारा ।। १
मेरा पूता ध्रू प्रहलादा, शुकदे व्यास मिल्या सहलादा ।
मरा पूत नामदेव क्वाया, हमरा हम मे आण समाया ।। २

मेरा पूता रामानदा, माया त्यागी मोहि अनदा।
मेरा पूता दास कबीरा कमाल कमाली सुख की सीरा ॥ ३

मेरा पूता पीपा धन्ना, दत्ता गोरख मिलिया सुन्ना।
पूता रका बका चन्दा, केवल कूबा अरु सुखनदा ॥ ४

मेरा पूता दादू देवा, निस-दिन हमरी लागा सेवा।
मरा पूता निरजनी स्वामा, हमरा हम मे आण समाया ॥ ५

मेरा पूता नानग दासा सतदास मो मांहि बिलासा।
और पूत का अंत न पारा, राम कहे सो सबी हमारा ॥ ६

अनत कोट सब सत कहाया, हमरा हम में आण समाया।
सुण पूता सतां की सोई, भगति कमाय'र ऐसा होई ॥ ७

छन्द अर्ध त्रिभगी

सुण रे पूता निरगुण रता। मो म माता भगति कमाये।
हमरा हम मे आण समाये ॥ १

साखी

पिता पुत्र कू सीख दी तुम आयो जग मांय।
भगति कमावण अवतरो हमसों मिलज्यो आय ॥ २

चौपाई

पुत्र कहे अब पिता सुणीजे या तो सीख मोहि मत दीजे।
कर जोड़े मैं अरज सुनाऊं एक पलक मैं परा न जाऊ ॥ ३

मैं जु कछु मेरी अरज सुणीजे माया सग मोहि मत दीजे।
माया मोकूं लागे खारी तुम प्यारा हो कुंज-विहारी ॥ ४

मैं हू अबल तुमारो चेलो माया सग मोहि मत मेलो।
भगति करारी करण न देसी माया खींच आप में लेसी ॥ ५

माया मोकू पकड रु खावै चौरासी दह माहि वुहावै ।
माया ताती बहुत पसार्या, पीर पडित तपसी बहु मार्या ॥ ६

मै दुरबलिया पुत्र तुमारा, मोकू मत मेलो ससारा ।
कलजुग मे बहु कूड भनीजै, घट-घट कलह सबै जग छीजै ॥ ७

रोवै बालो रुदन करीजै, या तो सीख मोय मत दीजै ।
पिता कहै पूता सुण जावो, बात हमारी कान रखावो ॥ ८

तुम ही हमकू बहुत पियारा, तुम हम भेला करा पसारा ।
भगति हमारी हमी कराऊ, हमही हम मे आण समाऊ ॥ ९

पिता पुत्र अब ब्याध्या बेला, सुन मे रहे अब अत अकेला ।
सुण रे बाला तुम मे आऊ, न्यारा हुय कर सुन गढ छाऊ ॥ १०

पुत्र कहै अब अरज सुनीजै, किस विध मोकूं माहे लीजै ।
माया तिरगुन बहुत पसारा, मै आऊ सो करो विचारा ॥ ११

सुण रे बाला सतगुरु कीजै, सीस नवाय नाम निज लीजै ।
सतगुरु मोहि एक कर ध्यावौ, माया न्यारी तुमहि समावौ ॥ १२

साखी

पिता पुत्र को सीख दी, जनम धरो धर जाय ।
सतगुरु सरणै आय कर, जग मे भगति कमाय ॥ १

सीख माग सुत नीसर्या, नुय-नुय करे सलाम ।
किरपा कीजै बापजी, माया सग गुलाम ॥ २

वेर-वेर तुम सू कहू, वाचा देऊ मान ।
हम तुम को चेतन करू, सबद रखावो कान ॥ ३

---

६ दह – अगाध गड्ढा (योनिया)

२ नुय-नुय –झुक-झुक कर ।

चौपाई

पुत्र पिता पैं आज्ञा पाई, लाख पसाव'रु भगति लिखाई ।
अपनो जान करो प्रतिपाला, भगत विछल वृद दीनदयाला ॥ १

छद अथ त्रिभगी

पिता पठाया मात सग आया माहि मिलाया, आकार बनाया ॥ १

चौपाई

उदर माँहि उरध मुख भूले तू ही तू ही पिता न भूलै ।
उद्दर माँहि बहुत दुख पावै तू ही तू ही पिता धियावै ॥ १
पिता पुत्र की खबर मगाई उद्दर माँही चूंण चुगाई ।
नवैं महीने बाहर आया मात पिता सबका मन भाया ॥ २
निस दिन सर-सर मोटा थावै मात पिता सो बहुत लडावै ।
पांच बरस को भोलो बालो बालां सग खेलै मतवालो ॥ ३
बीस बरस के साथ आयो, कुटब कडूंबै माया खायो ।
मगर पचीसां माँहि दीवानी माया बहुत सफल कर जानी ॥ ४
माया सूं बहु नेह लगाया माया पकड़'रु माँहि बैसाया ।
पिता पहलका वचन सभाला सुत माँही खेलै मतवाला ॥ ५
पिता पुत्र में कला जु मेली जग में तेरा कोइ न बेली ।
रूम-रूम में बहुत पिपासा सुत माँही पिता की आसा ॥ ६

---

१ लाख पसाव – प्राचीन समय में राजाओं द्वारा दिया जाने वाला सम्मान ।
भगत विछल – भक्तवत्सल । वृद – बरद ।

१ तूंही-तूंही – बच्चे का रोना (परब्रह्म का स्मरण कि तुम्हीं हो तुम्हीं हो) ।

ऐसा कोई पिता मिलावे, मनवा मेरा वहु दुख पावे।
हमहि जाय गुरु कान लगाया, तोहि पिता का नाम न पाया ॥ ७

बहुत भाति उपदेस जु लीया, पिता नाम मोय किणी न दीया।
भात-भात का भेप बनाया, तोहि पिता का नाम न पाया ॥ ८

गाय बजाय'रु ज्ञान दिढाया, दुनिया रीझी पिता न पाया।
देवल गया देहरा देख्या, वाहि पिता का नाम न पेख्या ॥ ९

तीरथ जाय'रु जल मे न्हाया, वाहि पिता का नाम न पाया।
जोगी जती सती सब बूझ्या, तोहि पिता का नाम न सूझ्या ॥ १०

फिर-फिर हम सब भेख जु जोया, पिता न पाया बहुता रोया।
सिहथल मे गुरुदेव बताया, हम तो चल कर वाभी आया ॥ ११

दरसण किया बहुत सुख पाया, दुख दालद सब दूर गमाया।
जनम-मरण भव-रोग मिटाया, आनद भया सरण सिष आया ॥ १२

साखी

सतगुरु सेती वीनती, लुल-लुल लागू पाय।
अरज करू आधीन हुय, पितु को नाम बताय ॥ १

निसाणी

सतगुरु देख्या दिल मे पेख्या, चरणा चित लावदा है।
सतगुरु पूरा सिष हजूरा, सनमुख सेव करदा है ॥ २

सतगुरु चेतन हमी अचेतन, चेतन हुय चेतदा है।
सतगुरु सबला मै हू अबला, निरभै कर खेलदा है ॥ ३

भव-जल भारी राख मुरारी, बाहि पकड काढदा है।
सतगुरु मेरा मै सिष तेरा, जुग-जुग वास बसदा है ॥ ४

किरपा कीनी कूची दीनी, ताला दूर झडदा है।
सतगुरु बोल्या अनर खोल्यो, हरि हीरा आखदा है ॥ ५

---

५ झडदा है – झरते हैं, खुल कर गिर जाते हैं। आखदा है –अखण्ड है।

साखी

हीर दिया निज नाम का रूम रूम सुख पाय ।
गुरु किरपा तें रामदास, दुख दालद सब जाय ॥ १

चौपाई

एक हुता मैं बहुत भिखारी, किरपा कीनी कुंज बिहारी ।
किरपा करी हीर निज दीया, एक हुता लाखेसर[1] कीया ॥ १

भरब खरब लग धन बताया एक हुता कोडीधज थाया ।
भरब खरब सब ही धन काचा[2], राम रतन सो सोदा साचा ॥ २

सोना रूपा धन सब आजा सबक ऊपर जंवरो राजा ।
दीसै सो धन परल जावे राम रतन धन दूणा थाव ॥ ३

राम रतन धन अगम अपारा, या कूं विणजै प्रीतम प्यारा ।
सतगुरु मेरा अरज सुनाऊ किस विध हीरा विणज हुलाऊ ॥ ४

सतगुरु मेरी अरज सुणीजै हीरा विणजण की मत दीज ।
सतगुरु कहै सुणो रे चेला, विणज करो तो रहो अचेला ॥ ५

निस दिन हीरा रसना ध्यावो दिल भीतर में हाट मडावो ।
हृदर भीतर विणज करीज और किसी कूं भद न दीज ॥ ६

घट मध अघट प्रगट दिखलावो, उलटा मिलो सुन्य घर आवो ।
जह हीरां की गूण भरावो काया पाटण विणज कगावो ॥ ७

ता पीछ तुम चौरा भवावो जब तुम जग में धुरा बंधावो ॥ ८

साखी

सतगुरु सिग कूं सीख दी, सीनी मग लगाय ।
राम रतन सो धन है निस दिन रसना ध्याय ॥ ९

---

१ लाखेसर – लखाधीश । २ काचा – अधूरा ।

छंद अर्ध त्रिभंगी

हीर जु पाया, रसना ध्याया । गद कठ लागी, सुख धुन आगी ।। १
हिरदा माई, सहजा आई । घम घमकारा, हृदा मझारा ।। २
हिल मिल हालै, हिरदै मालै । सुणलो सोई, हिरदै होई ।। ३
नाभी पैठा, सुखमन सैठा । सास - उसासा, सत पियासा ।। ४
रग - रग बोलै, अन्तर खोलै । रग - रग वाजै, सब तन गाजै ।। ५
अजपा होई, सत जु सोई । सुख लिव लागी, सत बडभागी ।। ६
वकी पीया, जुग-जुग जीया । उलट पियाणा, पिछम ठिकाणा ।। ७
उड आकासा, सुनघर वासा । मनवा छाजै, तखत विराजै ।। ८
पाचू आया, इक मन लाया । बीज चमक्कै, अबर घमकै ।। ९
अबर गाजै, अनहद बाजै । मोर झिगोरा, लगे टिकोरा ।। १०
मुरली भणकै, झालर झणकै । जत्र जु वाजै, गुरू निवाजै ।। ११
गगा जमना, कर असनाना । दसवे देवा, कर मन सेवा ।। १२
दरसण कीया, जुग-जुग जीया । क्या कह गाऊ, कथा सुनाऊ ।। १३
अलख अभेवा, निरजण देवा । गुरू गुसाईं, सुन मे साईं ।। १४
सुन मे सामी, अन्तर जामी । नाथ निराला, काल न जाला ।। १५
बुढा न बाला, सुन मतवाला । मरै न जीवै, खाय न पीवै ।। १६
आय न जावै, अनहद वावै । अलख जु होई, लखै न कोई ।। १७
न्यारा गैबी, लगै न ऐबी । निरगुण न्यारा, प्रीतम प्यारा ।। १८
छाया न विरखा, नार न पुरखा । विष्णु न ब्रह्मा, गोत न सरमा ।। १९
सेस न देवा, पथर न सेवा । खाण न वाणी, पिंड न प्राणी ।। २०
सूर न चदा, खड न मडा । हिन्दु न तुरका, मात न दुरगा ।। २१

साखी

सब सू न्यारा रामदास, है भी सब के माहि ।
सुन्य सिखर मे रम रह्या, मूरख जानै नाहि ।। १

१० झिगोरा – मयूरध्वनि ।

तेल तिलां में नीपजै आग पथर के मांहि ।
ज्यूं दूधन में घृत्त है यूं साईं सब मांहि ।। २

तुम सकल ही आसमा, जहं तहं सब विस्तार ।
जल-थल मांही रामदास सब तुम रा आधार ।। ३

छन्द चौसूमास

तुमही पेड़ रु तुमही बिरखा, तुमहि छांह हो तुम ही रूखा ।
तुमही मोहन तुमही माया, तुमही तीनूं-लोक उपाया ।। १

तुमही विष्णू तुमही ब्रह्मा, तुमहि वासुकि तुम कुल धरमा ।
तुमही सेस महेसर देवा तुमही सहै तुमारा भेवा ।। २

तुमही धरती तुम आकासा तुमही सुरग पताल निवासा ।
तुमही चन्दा तुमही सूरा तुमही अपरम तुमही नूरा ।। ३

तुमही तेज'रु तुमहि तारा तुमही ताणो वेज पसारा ।
तुमहि नदी हो तुमहि निवाणा तुमही परवत तुम पाषाणा ।। ४

तुमही कीड़ी कुञ्जर राया तुमही भार अठार छाया ।
तुमही हिन्दू तुमही देवा तुमही पडा तुमही सेवा ।। ५

तुमही तीरथ तुम असनानु तुमही पुन्न तुमी हो दानु ।
तुमही त्यागी तुमही भोगी, तुमही जगम तुमही जोगी ।। ६

तुमही सतगुरु तुमही चेला, तुमही रागा तुमहि अपेला ।
तुमही मादर तुमही गाया तुमही मार रु तुमही गाया ।। ७

तुमही हिन्दू तुरक कहाया, तुमही तीनूं ताप समाया ।
तुमही पिता रु तुमही माया, तुमही बंधू तुमही भाया ।। ८

तुमही गगना तुमही [illegible], तुम बिन अवर पयर न [illegible] ।
तुमही [illegible] उपागम देवा, तुमही पयिगय गोन अभेया ।। ९

साखी

तुम सब घट मे साइया, दूजा और न कोय ।
दुतिया[1] मिटगी रामदास, उलट आप मे जोय ॥ १

इति श्री ग्रन्थ आदि बोध सम्पूर्णम् ।

★

अथ ग्रंथ आकार बोध

चरण

हम ही चार खाण हम वाणी, हम ही देव कहाऊं ।
हम चौरासी जीव सिरजिया, हम ही उलट मराऊ ॥ १

हमही करम काम हम काया, हमही जाल पसारा ।
हमही काल ब्रह्म हम विरछा, हमहि ब्रह्म विस्तारा ॥ २

हमही दीपक हमहि पतगा, हमही तेल कहाऊ ।
हमही वाट हमी ले जालू, हमही आण बुझाऊ ॥ ३

हमही सरप गोहिरा हमही, हम इजगर हम खाऊ ।
हमही वेद गारडू हमही, हमही आन जिवाऊ ॥ ४

हमही रीछ सूर हम साबर, हम बदर हम हिरना ।
हमही पखी हम परवारा, हमही वन हम फिरना ॥ ५

हमही रूख विरख वनवासी, हमही वना वसाऊ ।
हमही सूषम स्थूल हम थूला, हम जह तहा रहाऊ ॥ ६

हमही गधा हमहि हू घोडा, हम हस्ती असवारू ।
हमही गाडर हमही गाया, हम नाहर हम मारू ॥ ७

हमही भूत प्रेत छल छिद्दर, हम डाकणि हम लागू ।
हमही रैण दिवस हम सूता, हम सयना हम जागू ॥ ८

---

१ दुतिया – द्वैतभाव ।

हमही जन्त्र मन्त्र जस जूणा हमही मूठ चलाऊं ।
हमही मारू मरुं हम जीऊ, हम वादीगर क्याऊ ॥ ९

हमही बावन वीर षट्टी जू, हम जोगण हम जाया ।
हमही खेल मसाड़ा मांड्या हमही डरू खाया ॥ १०

हमही भोपा हमही भैरू हमही मात महाऊ ।
हमही खडग खाजरू हमही, हमही मार जिवाऊ ॥ ११

हमही थान मान हम थाता हम थापन हम थापू ।
हमही धूप रूप हम खेऊ हम अजपा हम जापू ॥ १२

हमही देवल हमी देहरा, हम पूजा हम पाती ।
हमही सेवग हमही सेवा हम पत्रा हम जाती ॥ १३

हमही तीरथ बरत हम जाना हमही कूं मसनाना ।
हमही नदिया हमहि नियाणूं हम परबत पाषाणा ॥ १४

हमही होम जिगन तप दानूं हमही होम कराऊ ।
हमही कथा पंडित हम वाचूं हमही सुणूं सुणाऊं ॥ १५

हमही दाता हमही भुगता हमहि दान हम देऊं ।
हमही जाचक हमही जाचूं हम मगता हम लेऊं ॥ १६

हमही जतर हमी मजीरा हम कांवड हम गाऊ ।
हमही ताल पखावज बाजा हम कीरतन कराऊं ॥ १७

हमही नौबत हमहि निसाणू हमी निसाण घुराऊ ।
हमही राग छत्तीसूं रागी, हमही राग कराऊ ॥ १८

हमही नाचूं हमही कूदूं हम स्वामी हम स्वासूं ।
हमही ऊठूं हमही बैठूं हम चौषू हम चालूं ॥ १९

हमही ग्रेही त्याग हम भेखू हमही भेख बनाया ।
हमही कंठी तिलक हम माला हमही तिलक धराया ॥ २०

---

९. वादीगर – बाजीगर । १४ नियाणूं – कुवे तालाब बापी आदि । १९ चौषूं – चारों ओर ।

हमही साख जोग सिवज्ञानी, हमहि पाप हम पुन्नु ।
हमही चेतन हमहि अचेतन, हम बस्ती हम सुन्नु ।। २१
हमही जगम सेख सेवडा, हम विरकत वैरागी ।
हमही रूख विरख वनवासी, हम माया हम त्यागी ।। २२
हमही तपसी हम सन्यासी, हम सन्यास कहाऊ ।
हमही मुनी हमी मसवासी, हमही जोग कमाऊ ।। २३
हमही सरबग हम सरबगी, हम अवधूत कहाऊ ।
हमही भाँग धतूरा आका, हम ओघड हम खाऊ ।। २४
हमही पीर पडित हम पूरा, हम सिध साधक कहाऊ ।
हमही उड़ू गड़ू हम गोटा, हमही पवन चढाऊ ।। २५
हमही काजी हमी कतेबा, हमही करद कमाऊ ।
हमही सुमत'रु हमहि विसमला, हमी हलाल कराऊ ।। २६
हमही मुल्ला हमही बागा, हमही बाग दिराऊ ।
हमहि निवाज गुदारू हमही, हमही भिस्त कहाऊ ।। २७
हम नव नाथ हमी पथ बारू, हम चौरासी सिद्धू ।
हमही माल भडार भडारी, हम समरथ हम रिद्धू ।। २८
हमही दरसण हम पाखण्डी, हम पाखण्ड चलाया ।
हमही झूठ साच हम फंडा, हमही मत्त धराया ।। २९
हमही देवद्वार कामका, हम हिन्दू हम तुरका ।
हमही पखापखी हम निरपख, हम नारी हम पुरुखा ।। ३०
हमही ईद इग्यारस रोजा, हमही राम रहीमा ।
हमही हद्द हमा बेहद्दा, हमही रब्ब करीमा ।। ३१
हमही सबल निबल हम वादी, हमही न्याय अन्याई ।
हमही खोसू हमही बगसू, हमही दस्त चलाई ।। ३२

---

२ सेवडा – शैव सम्प्रदाय की एक शाखा । २३ मसवासी – श्मशानवासी ।
४ सरबग – सर्वत्र । सरबगी – वामपथ की एक शाखा । २५ गोटा – सिद्धि विशेष जिसमे मंत्र विशेष की साधना से पवन में उडने तथा पाताल मे गढ़ जाने की सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है ।

हमही रावण हमही रामा, हमी सीत ले आया ।
हमही सेना हमहि चलाई, हमही मार उडाया ।। ४५

हमही कृष्ण बुद्ध अवतारा, हमी नाग हम नाथे ।
हमही दाणू हमही देवा, हम मारया हम साथे ।। ४६

हमही निकलक हमी कालिमा, हमी सरज्या राणी ।
हमही दाणू हमही देवा, हमी बात हम जाणी ।। ४७

हमही सतजुग त्रेता द्वापर, हम कलियुग्ग कहाऊ ।
हमही आठ कूट चक चारू, चवदै भवन रहाऊ ।। ४८

हमही वेद हमी षट-सास्तर, हमी पुराण अठारा ।
हमही कथा भागवत गीता, हम नखतर तिथि वारा ।। ४९

हमही पवन'रु हमही पाणी, हमी चद हम सूरा ।
हमी तेजपुज नारायण, हम जहा तहा भरपूरा ।। ५०

हमही सेस हमी सनकादिक, हम कोरभ दिगपाला ।
हमही ब्रह्मा विष्णु महेसर, हम सबका रिछपाला ।। ५१

हमही इन्दर हम ऐरावति, हम तेतीस कहाऊ ।
हमही घोर गाज हम वरसूं, हमही बोज खिवाऊ ।। ५२

हमही वरुण कुवेरा हमही, हमही है ध्रमराया ।
हम जमदूत हमी जमराया, हमही पकड मगाया ।। ५३

हमही सुरग नरक सो हमही, हमही धर आकासा ।
हम पाताल हमी भूलोका, हम वैकुठा वासा ।। ५४

अनत कोट साधूजन हमही, हमही राम रटाया ।
हमही राम हमी कू करता, हम करतार कहाया ।। ५५

हम महमाया जोती परकत, हमही सुन्य रहाऊ ।
हमही आतम इच्छा भाऊ, हम परभाव कहाऊ ।। ५६

---

५१ कोरभ – कुवेर ५२ – खिवाऊ – चमकाता हूँ ।

हमही केवल हमी नकेवल, हमही हू निरधारा ।
हमही वाणी हम ही वेत्ता, हमरा वार न पारा ॥ ५७

आकास बोध अगम की वाणी अगम ऐस सू माया ।
रामदास केवल में मिलिया एको एक रहाया ॥ ५८

साखी

रामदास हम एक हू निराकार आकार ।
हम बिन दूजा को नहीं, हमही पेड विस्तार ॥ १

इति आकास बोध सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ नाममाला

चौपाई

इन्द्र बिना दुनिया दुख पावे राम बिना कसे गत जावे ।
राय रंक राणा अरु राजा राम बिना सब होय अकाजा ॥ १

बाहिर बणा भेष का संगा हिरदे नहीं राम का रंगा ।
अत्रे त्याग दोनूं पख भूला राम बिना यूं जमपुर झूला ॥ २

राम बिना सूनी सब काया जसे गणिका पूत कहाया ।
राम बिना सूनी इम देहा, जैसे नार पुरुष बिन नेहा ॥ ३

राम बिना झूठा संसारू मात पिता अरु कुल परिवारू ।
राजा बिना फौज कहा कहिये राम बिना कैसे गत लहिये ॥ ४

नींद बिना कैसी कहु खाना राम बिना सूना सब थाना ।
राम बिना सूना सब जोगा उपजे खपै पड बहु रोगा ॥ ५

---

२ झूला – नरक मर्य भ्रष्ट होना ।

५ जाना – बराबर ।

राम बिना सूना सब लोई, राम भजन बिन मुगत न होई ।
मेडी मन्दिर खूब बनायो, पक्का महल राय अगणाया ।। ६

बस्ती बिना कछू नहिं सूना, राम बिना यू रण मे रूना ।
दाम लगाय'रु कूप खिणाया, खाली माहि नीर नहिं आया ।। ७

राम बिना सबही जग खाली, दुनिया गोर पूजवा हाली ।
कूवै डार घरा कू आवै, खाजा जात फकीरा जावै ।। ८

पूजा पाती कछू न जाणै, मन मे आस पार की आणै ।
राम नाम हिरदै नहिं गाया, कहवै का फक्कीर कहाया ।। ९

ज्यू बाजीगर खेल बनाया, देखण लोक नगर का आया ।
खसर-फसर की दीसै बाजी, राम बिना पैकै का पाजी ।। १०

कागद मे लिख मूरत लाया, चित्रामी चित्राम बनाया ।
जल लागा पल माहि विलाई, राम बिना सब झूठ सगाई ।। ११

ज्यू बालक माता बिलमावै, रामतियो दे काम धियावै ।
यू कर सबही जग्ग भुलाया, विषै स्वाद माही लपटाया ।। १२

पतिवरता मूरत कू सेवै, खान पान वा कछू न लेवै ।
तासू सरै न एको कामा, काम सरै जब मिलसी रामा ।। १३

जैसे हाली खेत कमावै, धोरा पाली खूब बनावै ।
बीज बिना कुछ हासिल नाही, राम बिना कैसे गत पाही ।। १४

हाडी मार हीर यू पाया, चिलम तबाखू माहि गमाया ।
ज्यू मूरख मत्तगो पायौ, भारी साथै बाध गमायौ ।। १५

---

६ लोई – लोग । मेडी – मकान की छत पर बना हुआ छोटा कमरा ।
८ गोर पूजवा – पार्वती का पूजन करने के लिए । (राजस्थान का विशिष्ट त्यौहार)
खाजा – ख्व जा । १० खसर-फसर – घास-फूस । पैकै का पाजी – पैसो का गुलाम ।
११ चित्रामी – चित्रकार । चित्र म – चित्र । १२ रामतियो – खिलौना ।
१५ हाडी मार – कौवो को उडाने के लिए पत्थर फेंकना । मत्तगो – हाथी के गले का आभूषण ।

पखी चूण चुग घर मांही, ऊपर दौड़ बिलाई भाई ।
पखी देख मन में डरपाणा, चेतन हुय तरवर कूं जाणा ॥ १६

खाण भीत कबहु नहिं छूटे जहां जावे जहां जबरो लूटे ।
हरि तरवर है सच्चा भाई ता पखिया निरभै फल खाई ॥ १७

सहर सरब में पड़या भगाणा, सीस दिवी मुसती कूं जाणा ।
मुस्ती हदा मरम न पाया मुस्ती बदल बलू लाया ॥ १८

ज्यूं भूरख चिंतामनि पाई मनसा थी सब भूख गमाई ।
सोना का मंदिर बनवाया हीरा लालां मांहि जड़ाया ॥ १९

पूगी खबर देवता मांई देह धरी कउवा हुय भाई ।
चिंतामनि की खबर न पाई कउवा के संग वाहि गमाई ॥ २०

जसा था वसा फिर हूवा कुम मारग के लारे बूवा ।
ना इतका ना उतका भाई छः-काय भुगत निगोदां भाई ॥ २१

कोड़ी बदले जनम गमावे राम रतन सा हीर न ध्यावे ।
विष खाव सोई मर जाव, अमृत सूं अम्मर पद पाव ॥ २२

अघ्घ कियां सूं परले जाई लख चौरासी गोता खाई ।
अह-अगन सबही गुन जाल विष्णुदेव बहु लक्कड़ बाल ॥ २३

चारु थोक छुद्यम सा कहिये बड़ा पराक्रम या में लहिये ।
सुख-दुख मर बिल हुय जाई जुदा-जुदा सब फल भुगताई ॥ २४

अमल पीये सोइ सत सूरा, पूरण होय कहावे पूरा ।
नाम माल सो सत है भाई बड़ा-बड़ा सत साख बताई ॥ २५

याही माल विष्णु शिव ध्याव कलासां में ध्यान लगाव ।
याही माल ब्रह्मादिक भास सनकादिक ऋषि नारद पासे ॥ २६

---

१६ बिलाई – बिल्ली । १८ मुसती – चूहा । बेलू – रेती ।
२१ छ-काय – जैन सिद्धान्तानुसार छः शरीर भोग कर । निगोदां – नरक ।
२३ विष्णुदेव – अग्नि । २४ थोक – पदार्थ । छुद्यम – सूक्ष्म ।

पाताला मे शेष सुनीजै, सहस मुखा सू माल गुनीजै ।
धरमराय जमलोका ध्याई, नासकेतु को गुपत बताई ।। २७

आकासा धू ध्यान लगावै, जन प्रहलाद इणी को ध्यावै ।
याही माल कबीरा नामा, जिनका सर्या सकल सिध कामा ।। २८

कथा भागवत याहि बतावै, अनत कोटि सत इनकू ध्यावै ।
निगम पुरान कहै सुण सोई, राम-भगति बिन मुगति न होई ।। २९

राम नाम सो सत है माला, या सू कटै कर्म का जाला ।
याही नाम आतमा ध्याई, रसना हिृदै नाभि लिव लाई ।। ३०

उलटी सुरत अगम घर आया, अनभै राज अटल पद पाया ।
अनत कोटि सता उर माला, रामदास टलिया जम-जाला ।। ३१

साखो

माला एको नाम की, सब कू कही सुनाय ।
रामदास इण माल सू, मिलै निरजन राय ।। १

इति श्री ग्रंथ नाममाला सम्पूर्णम्

★

आतम सार

चरण

परथम रसना माल फिराई, स्वाद लग्या सुख पाया ।
गलै गिलगिली गद्गद् होई, कठ कमल चेताया ।। १

सरवण बिच मुरली धुन बाजै, सुणत होय मन राजी ।
चखिया माहि प्रेम परकासा, भजन करो जन गाजी ।। २

---

२ चखिया – नेत्र । गाजी – पण्डित, धर्मोपदेशक ।

चालो माल हृद घर माई हृदा कमल बहकाया ।
मनको माल फिर दिन राती, निरमल प्रेम हलाया ॥ ३
इक दिन ऐसा भया अचभा नाभि-कमल चेताया ।
सूती सूरत सहज में जागी गगन नाद गणणाया ॥ ४
सास-उसास फिरै निस माला रूम-रूम लिव लागी ।
सहजां कटया करम का जाला, सका डाकण भागी ॥ ५
ऊठस विरह लगत तन तरली, उलट मिल्या आकासा ।
हद कू जीत चलय वेहद किया निरंतर वासा ॥ ६
पश्चिम देस का मारग पाया मरु-मठ सुध होई ।
मिलिया जीव सीव के मांही जघ कहाव सोई ॥ ७
इला पिगला उलट मिलाई तिरवेणी तट तीरा ।
सुखमण मीर मिली सुख-सागर चुगत हंस जहं हीरा ॥ ८
धागो सुरत सबद कर मिणिया उनमुन माल फिराई ।
जागी जोत छोत सब भागी अनहद तार बजाई ॥ ९
घर असमान विच इच ध्यानू हुवा जीव जहं जोगू ।
ऊगा सूर सूर जहं बागा सहज कटया सब रोगू ॥ १०
आसण अम्बड खंड नहिं होई मिला अगम घर आगा ।
गुरु सबद म मांहि मिलाणी, नाद अनाहद बागा ॥ ११
धरणी चाल अगम घर माई मिल्या पह्म जह मादू ।
मयक सतगुरु भद बताया मारग पाया आदू ॥ १२
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण चारू चक्क मिलाई ।
निरती पायय अगम दसायन ग भी प्राण समाई ॥ १३

---

३ बहकाया – [illegible] । ४ सूती सूरत सहज में जागी – राममक्ति के प्रभाव से सुप्त कुण्डलिनी अनायास जागृत हो गई । ६ तन तरली – विरहाग्नि की ज्वाला ।
९ धागो सुरत – सुरति रूपी धागा । सबद कर मिणिया – राम-शब्दरूपी माला के दाने । उनमनि माल – उन्मना अवस्था रूपी माला । जागी जोत – ब्रह्म प्रकाश ।
१० सूर जह बागा – सूर्य नाद हुआ । ११ निरती पायय अगम दसायन – [illegible]

आठू कूट हुई जब एकै, नवसै नदी चलाई ।
ता बिच सातू समद गडूक्या, जलयज अगन जलाई ॥ १४

मन अरु पवन मिल्या लिव माई, पाच पचीस मिलाया ।
अरधे उरध मिल्या रवि चदा, धुन सू ध्यान लगाया ॥ १५

इद्री पाच विषै रस राती, पलट भई निज ज्ञानू ।
मिल्या विज्ञान विदेही पुरुषा, उलट लग्या इक ध्यानू ॥ १६

पिरथी आप तेज अरु वाया, ता ऊपर आकासा ।
पाचू उलट मिल्या घर एकै, ओउकार मे वासा ॥ १७

सेवा करै सुरत जह सन्मुख, रूम-रूम जयमालू ।
मिलिया जाय महा तत माही, कटिया करम जजालू ॥ १८

सबद स्पर्श रूप रस गधा, चित बुध मन अहकारा ।
नव तत लिग सरीरा कहिये, उलट गल्यो हुय सारा ॥ १९

तामस रजो सतोगुण मिटिया, तीनू ताप मिटाई ।
सब गुण थक्या त्रुगट्टी माही, आगे सुरत चलाई ॥ २०

सुरत निरत के माहि समाणी, मिटी अवस्था चारू ।
माखण ताय छछेडू काढ्या, लिया घृत्त तत सारू ॥ २१

माया जो अतर बल कहिये, तिरगुण लग आकारा ।
या सू धाम उलट नव आगे, तहा एक निरकारा ॥ २२

पलटी सुरत हुई महमाया, जोती परकत माही ।
चारू मिली भिली घर एके, माया सून्य समाही ॥ २३

---

१६ इद्री पाच – पच ज्ञानेन्द्रियां । १७ पिरथी आकासा – पच महाभूत ।
ओउकार में वासा – पच महाभूतो का कारण रूप प्रकृति में लय ।

१९ सबद सारा – पाँच विषय और चार अन्त करण की वृत्तिया आदि तत्त्वो से निर्मित कारण शरीर आदि सबका अपने कारण भूत प्रकृति मे लय होना ।

२१ अवस्था चारू – जाग्रत, स्वप्न, सुसुप्ति एव तुरीया । छछेडू – छाछ का अश ।

पलटी सून्य आतम जह इच्छा माव मिल्या परभावे ।
अस सुरत अवध पर जोजन, चारू ज्ञान मिलावे ॥ २४

चवदे धाम उलट जह आगे ज्यां है केवल धामा ।
ताके पर निकेवल न्यारा, अणघड कहिये रामा ॥ २५

अलख निरंजण अवगत देवा, ताकी गम्म न पावे ।
ररो ममो नित नेम अराधे, सो पद मांहि समावे ॥ २६

दिष्ट न मुष्ट न रूप न रेखा, निरगुण गुण सें न्यारा ।
रामदास हा मांहि समाणा जीव न सीव न यारा ॥ २७

साखी

सलिल समाणी सिंधु में, सिंधु सलिल हुय एक ।
रामदास केवल मिल्या जह कोइ रूप न रेख ॥ १

इति ग्रंथ आतम सार सम्पूर्णम्

*

ब्रह्म जिज्ञासा

चौपाई

सबद बाण सतगुरु का मांई मन कूं बींध लिया छिन मांही ।
मन बींध्या पांचू बींधाणा[1] पच्चीसां में उलट समाणा ॥ १

ज्ञान पाय अज्ञान मिटाये, दुरमति दुबध्या दूर गमाये ।
काम क्रोध मार अहंकारा राम नाम रसना रट प्यारा ॥ २

सील संतोष सहज में आया मान गुमान अपमान गमाया ।
धाका भूत भरम सब भाग्या कटिया करम ध्यान उर लागा ॥ ३

---

१ पांचू बींधाणा – पंच ज्ञानेन्द्रिय वश मे हो गई (अथवा पंच कर्मेन्द्रियां)
पच्चीसां – प्रकृति ।

सबद किया घट माहि पसारा , रूम-रूम लगिया ररकारा ।
तीनू कोट किया चकचूरा , चौथे जाय मड्या सत सूरा ।। ४

एकल मल्ल अभगत जूझै , चवदै क्रोड जमपुरी धूजै ।
रसना ह्रिदे नाभि लिव लागी , रूम-रूम चेतन हुय जागी ।। ५

सप्त पताल छेद छिन माई , पाताला सुख सीर हलाई ।
मूल उलट औघट मे आया , गुदकू छेद पीठ बध लाया ।। ६

पूरब पलट पिछम दिस लागा , चढिया सबद मेरु हुय आगा ।
मेरु-मड हुय चढ्या अकासा , सहज किया तिरवेनी वासा ।। ७

अरध-उरध बिच खेल मडाया , बिना पंख इक पखि उडाया ।
वक नाल वह अमृत धारा , पीया सत भया मतवारा ।। ८

माया मूल उलट घर आये , ररकार धुन ध्यान लगाये ।
ररकार की अमृत सीरा , पीवेगा कोइ सत सधीरा ।। ९

माला एक फिरे तन माई , आकासा लिव ध्यान लगाई ।
रूम-रूम बिच अणरट लागे , सिध-सिध माहि जीव सब जागे ।। १०

नाभि नैण बिच झिलमिल जोती, सुषमण घाट चुगै हंस मोती ।
सुषमण सीर चहू दिस छूटै , रूम-रूम अमृत रस फूटै ।। ११

धर अबर बिच अरट चलाया , उलटा नीर अकासा आया ।
जह सुख-सागर सहज भराया , रूम-रूम सीची सब काया ।। १२

उलटी गग अफूटी चाली , फूल्यो वाग बनी हरियाली ।
धरती माहि बीज बुहाया , आकासा फल फूल लगाया ।। १३

तीन-लोक मे नाल पसारा , वेल किया बहुता विस्तारा ।
मनसा चाल अगम घर आई , जह निज मनवा रह्या समाई ।। १४

---

४. तीनू कोट – रसना, कठ एव हृदय । चौथे-नाभि । ६ गुद कू छेद – मूल चक्र भेदन कर के । ७ पूरब पलट पिछम दिस लागा – शब्द, पूर्व माग से उलट कर पश्चिम मार्ग द्वारा ऊपर चढ़ने लगा । १० अणरट – स्वत जप । सिध-सिध – अस्थियो के जोड, सन्धिया । १३ धरती   लगाया – रसना द्वारा राम-स्मरण कर के त्रिकुटी मे समाधि लगाना ।

उलटी सुरत मिली आकासा, जहु देख्या एको 'सुखरासा ।
तेज पुंज जहां अपरम नूरा सहस कला से ऊगा सूरा ।। १५

चंद विहूणा देख्या चंदा, जहु पहुंचा निरभ हुय बंदा ।
अगम महल से दीपक बाला, तीन लोक में भया उजाला ।। १६

दसवें जाय परसिया देवा जहु मन सहज करत है सेवा ।
प्रेम हि पाती फूल चढ़ाय, भावहि भोजन भोग लगावे ।। १७

प्रेम पलीतो प्रेम हि जाय प्रेम हि झालर ताल बजावै ।
प्रेम आरती प्रम हि गाव, प्रेम हि सुन मे ध्यान लगावै ।। १८

घटा घूमर धमक बजाव, राग छतीसूं मंगल गावै ।
पांच पचीसूं रास मचाई पड नगारा नौबत घाई ।। १९

बाज झींझ सहज सुरनाई बाज ढोल ढमाढम ढाई ।
बाज ढोल ढमढमै ढाई भेर भूगला सबद सुनाई*
तार तम्बूर जन्त्र इक ढका बाजत बरघू हू हूं बका ।। २०

सुन के मांहि सख बजाय, सरवन मुरली टेर सुनाये ।
भवर गाज करे घन घोरा कोयल बोल पपइया मोरा ।। २१

बारो मास बहुत झड लाये नदी नाल बहु खाल चलाये ।
धुन की धजा नेज फरराया गढ जीता नीसाण घुराया ।। २२

चवदै लोक उपरै राजा जिनके बज अनाहद बाजा ।
देव दुनी सब दरसण आवै निवण कर बहु सीस निवाव ।। २३

चार कूंट को हासल आवे सतगुरु आगे आण चढ़ाव ।
सत का राज अटल गढ मांही परजा सुखी सरब सुख पांही ।। २४

---

१८. प्रेम पलीतो – प्रेमाग्नि । १९ घूमर – बड़े घुंघरू । २ भेर – भेरी वाद्य ।
भूंगला – वाद्य विशेष । बरघू – वाद्य विशेष ।
* यह पंक्ति दूसरी पुस्तक में अधिक है ।
२१ निवण – नमन करना ।

चेतन चौकीदार हराया, नाहर चोर'रु पकड मगाया ।
तखत वैस अरु हुकम हलावें, सिंघ बकरी सब सग चरावै ॥ २५

रूम-रूम मे राम दवाई, सत करै निरभै पतसाई ।
सुरत सुन्दरी सज सिणगारा, चाली महल पीव बहु प्यारा ॥ २६

सुखमण सेज पिया सग खेलै, पलक एक पाव नही मेलै ।
पूरण वर पाया अबिनासी, पाच पचीसू करत खवासी ॥ २७

सुरत सबद सुन्य मे लौटे, रिध-सिध दोनू पाव पलोटे ।
राजपाट पाया पटराणी, वर मिलिया है सारगपाणी ॥ २८

जाके रूप रग नहिं रेखा, ना कोइ ग्रहै त्याग नहि भेखा ।
ना कोइ मात पिता नहि जाया, ना ऊ किसकी कूख न आया ॥ २९

देख्या एक सुन्य मे रूखा, पेड न डाल न लील न सूका ।
फल नहिं फूल पान नहिं पाती, आपो आपहि अमर अजाती ॥ ३०

जीव न जिंद न करम न काया, ना कोइ मान न मोह न माया ।
धरती अम्बर तेज न तारा, मेघ न बरखा इद न यारा ॥ ३१

पवन न पाणी चद न सूरा, बाज न बाजै ना कोइ तूरा ।
ऐको ब्रह्म और नहिं काईं, ररकार सो सत है साईं ॥ ३२

ररकार देवन का देवा, जिनका लहै और नहिं भेवा ।
ररकार है प्राण अधारा, जा कू लखै सत जन प्यारा ॥ ३३

ररकार सत सबद हमारा, अनत कोट भज उतरै पारा ।
ररकार गुरुदेव बताया, राम-नाम हम निसदिन ध्याया ॥ ३४

हरिरामा है गुरू हमारा, ज्ञान ध्यान बहु अगम अपारा ।
ब्रह्म जिग्यास ग्रथ इम भाखू, उर मे गुरु सीस सत राखू ॥ ३५

रामदास सतगुरु का चेरा, सत है साहिब सिर पर मेरा ।
रामदास सतन का दासा, जुग-जुग राम तुमारी आसा ॥ ३६

---

२७. खवासी – सेवा करना, सेविका । २८ पाव पलोटे – पैर दबाते हैं ।
२९ कूख – गोद । ३०. अजाती – जातिविहीन, अजन्मा । ३२ तूरा – तूर्य वाद्य ।

साखी

रामदास की वीनती सांभलिये गुरुदेव ।
और कछू मांगू नहीं, जुग-जुग तुमरी सेव ॥ १

रामदास की वीनती, सांभलिये गुरदयाल ।
राम नाम सिवराइये, मेटो विषे जजाल ॥ २

इति श्री ग्रंथ आतम सार सम्पूर्णम्

★

पट दरसणी*

चौपई

सगुरु सो सत सबद धियावे, मन कूं जीत अगम घर आवें ।
सता समाधि सुन्य के मांही, सतगुरु सरणे करता नाही ॥
ऐ सतगुरु कहिये सोई, आवागवण मिटावे दोई ॥ १

सिष सोई सतगुरु का चेरा आग्याकारी चरणां नेरा ।
सतगुरु सरण ग्यान विचार मूल मारग की माण निवार ।
ऐसा शिष्य कहावें सोई आवागवण मिटावें दोई ॥ २

बोरा सोई ब्रह्म ब्योपारी, राम-नाम विणज बहु भारी ।
सत की ताजू निरभ तोल मुगत पद भंडारा खोल ।
ऐसा बोरा कहिये सोई ॥ ३

बोपारी सो मन कूं दवें, एको नाम निवेरल सेवे ।
सीस उतार धर मुग आगे, ता धुरकूं जमजोर न लागे ।
ऐसा धुर कहावे सोई ॥ ४

---

*पट दरसणी – अपनाणा री सम्पूर्ण कर्मोकंडी ।
१ ताजू – तराजू । बोरा – लेन-देन करने वाला । ४ धुर – चली ।

साधू सोई राम कू ध्यावै, रसना ह्रिदै नाम लिव लावै ।
पाच पचीस उलट घर आणै, सहज मिलै सुख सागर माणै ।
ऐसा साधू कहिये सोई । आवा० ॥ ५

वैरागी सो बेहद जावे, तीन गुणा का नास गमावै ।
निरगुण होय रहे निरदावे, इस विध यह अणराग कहावै ।
वैरागी जन कहिये सोई ॥ आवा० ॥ ६

ढूढ्या सोइ ब्रह्म कू ढूढै, सील सतोष की पाटी मूडै ।
आदि धरम सू पालै प्रीता, और सकल त्यागै विपरीता ।
ऐसा ढूढ्या कहिये सोई । आवा० ॥ ७

जती सो तो जत्त कमावै, सील तणा लगोट लगावै ।
भीणी माया रहे निराला, पेम पिवै सतगुरु का बाला ।
ऐसा जती कहावै सोई । आवा० ॥ ८

सत्ती सो सत सबद विचारै, राम-नाम निस-दिन उच्चारै ।
निज्ज नाम की नाव चलावै, ता घर माहि मोक्ष पद पावै ।
ऐसा सती कहावै सोई । आवा० ॥ ९

सूरा सो तो सिर बिन जूझै, पगतल मूड अगम घर बूझै ।
तीन-लोक धक्र धूरण हलावै, मन कू जीत अगम घर आवै ।
ऐसा सूरा कहिये सोई । आवा० ॥ १०

जोगी सोइ जुगत कू जाणै, मन मुद्रा का भेद पिछाणै ।
आसण करै अकासा माई, सीगी नाद सून्य मे बाई ।
ऐसा जोगी० ॥ ११

जगम सो मेटै जजाला, सिव अरु सक्ति एक घरवाला ।
जीव सीव मे रहे समाई, आदि पुरुष सेवा चित लाई ।
ऐसा जगम० ॥ १२

---

७ ढूढ्या – जैन साधु । १० धक्र धूण – धु आधार । १२ जगम – सन्यासियो का सम्प्रदाय विशेष ।

ब्राह्मण सो तो ब्रह्म पिछाण सबही जीव ब्रह्म कर जाणै ।
चारू वेद हिरदे कर जाणै, सुक्ष्म वेद का भेद पिछाण ।
ऐसा ब्राह्मण० ॥ १३

आचारी आचार हि ध्यावै रब रग सेती प्रीत लगावै ।
आदि ब्रह्म का आज्ञाकारी, सील सिनान सुच्च आचारी ।
आचारी जन० ॥ १४

ऋषि सोई रहता कूं जाण जाती माया हृदे न आण ।
अणघड़ सेती प्रीत लगावै, मरै न जीवै आय न आवै ।
ऐसा ऋषि कहावै सोई । आवा० ॥ १५

सामी सोई सुरत कूं बांधै, पांचू पकड़ एकठा रांधै ।
सब इंद्री का नास गमावै, अगम चढ़ै रणसींगा बावै ।
ऐसा सामी० ॥ १६

सोई अतीत अनहद में रत्ता, रूम-रूम ऐको मदमत्ता ।
अरध सबद में रहै समाई ऐको नाम निरंतर ध्याई ।
ऐसा अतीत० ॥ १७

तपसी सो तो तपस विराजे अधर गुफा में तपस्या साजै ।
आदि ब्रह्म का राज कमावै, जम की त्रासी कष्ट न आवै ।
ऐसा तपसी० ॥ १८

मूनी सो तो मन को घेरे सुरत सबद मिल पीठ न फेरे ।
उनमुन मुद्रा तारी लावै अगत जजाली मुक्ता न भावै ।
ऐसा मूनी० ॥ १९

औघड़ सो अणघड़ कूं जाण रूम-रूम एको रस माण ।
उलटा आप अमी रस पीवै सो औघड़ जुग-जुग जीवै ।
एसा औघड़० ॥ २०

---

१३ सुक्ष्म वेद – सूक्ष्म वेद । १४ सुच्च आचारी – शुद्ध आचरण करने वाला ।
१६ सामी – स्वामी । १७ अतीत – वीतराग गुणातीत ।

सिद्ध सोई सूधा हुय चाले, दवा वेदवा पखे न झालै ।
न्यारा उलट रहै सभाई, नेकी वदी करै सब साई ।
ऐसा सिद्ध० ।। २१

पीर सोई पश्चिम दिस आवै, माया मेट ररै चित लावै ।
रूम-रूम एको रस माणै, सब जीवन की पीर पिछाणै ।
ऐसा पीर० ।। २२

पडित सो तो पिंड परमोधै, पाच पचीस जडा सू खोदै ।
धूप ध्यान सू सुरत लगावै, मन की पूजा सहज चढावै ।
ऐसा पडित० ।। २३

काबडिया सो करम कसाई, अजपा जपै सून्य कै माई ।
जिभ्या तार जत्र घणलावै, आठ पहर निरभय पद पावै ।
ऐसा काबड० ।। २४

भोपा सो भीतर मन आणै, अदर माहिला भेद पिछाणै ।
उलटा खेले अगम अखाडै, प्रेम भाव की पाती चाडै ।
ऐसा भोपा० ।। २५

सोइ फकीर फिकर कू मेटे, उलटा चढै अगम घर भेटे ।
कलमा पाक करै सुन छाजै, सुरत सबद मिल तखत विराजै ।
ऐसा फकीर० ।। २६

काजी सोहि कुराण विचारै, दिल भीतर मे बाग पुकारै ।
तत की करद हाथ में सावै, मन मिरगा के गले करावै ।
ऐसा काजी० ।। २७

मुसलमान मुसाफिर साईं, एक अला बिन दूजा नाईं ।
नेकी रखै वदी चित नाणै, सहज मिलै दरगाह दिवाणै ।
मुसलमान कहिये० ।। २८

---

२२ पीर – सिद्ध पुरुष, मुसलमानो के धर्म-गुरु। २५ भोपा - भैरव आदि देवो के उपासक। चाडै – चढ़ाना। २७ करद – कटारी, तलवार।

हिंदू सो तो हद कूं त्यागै बेहद जीत अगम घर लागै ।
उलटा जीव सुखमन धारा सो हिन्दू हरि को बहु प्यारा ।
ऐसा हिन्दू० ॥ २९

गिरसत सो तो सत कूं सेवै, मन को ले हरि जप में भेवै ।
निंदा वचन पखे न राखै, बोलैं साच अभख नहिं भाखै ।
ऐसा गिरसत० ॥ ३०

ज्ञानी सो तो ज्ञान विचारै पखा-पखी का पंथ निवारै ।
उलटा मिलै अगम घर आवै सो ज्ञानी चिन ज्ञान विठावै ।
ऐसा ज्ञानी० ॥ ३१

षट-दरसण का करै विचारा, उलट मिलै सो उतरै पारा ।
षट-दरसण उलटा घर आया, सब में एको ब्रह्म समाया ॥ ३२

रामदास गुरु ज्ञान विचारा सतगुरु मिलिया अगम अपारा ।
रामदास सतगुरु सरणाई सहज मिल्या सुख सागर मांई ॥ ३३

साखी

सतगुरु है हरिरामजी मेरा प्राण अधार ।
चौरासी का जीव था सरण लिया सभार ॥ १

इति पद बरसवी सम्पूर्णम्

★

अथ ग्रंथ पद बत्तीसी

चरण

च्यारू वरण साधु का सेवग सेवा सूं सुख होई ।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कया, अतज सब ही कोई ॥ १

---

१ गिरसत – गृहस्थ । भेव – भिगोता है । ३३ सरणाई – शरण ।

राम-नाम बिन मुगत न जावै, सतगुरु ऐसे आखै ।
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, सेष सहस मुख दाखै ।। २

सतगुरु विना राम नहिं पावै, अनत कोटि की साखी ।
वेद पुराण भागवत गीता, भगवत ऐसे आखी ।। ३

राम सबद सो महा झीण है, क्या जाणै ससारा ।
जाणे विना पार नहिं पहुचे, रहे वार के वारा ।। ४

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र क्या, वहे आपणै धरमा ।
पट-दरसन आचार विचारा, सब बधे पट-करमा ।। ५

हिन्दू तुरक दुवध्या लागा, षट-दरसन सब भूला ।
आतम-राम जानियो नाही, अतकाल भव डूला ।। ६

चार वरण आश्रमा चारू, वेदा माहि अलूझ्या ।
जिनही भेद वेद का पाया, सो जन उलट सलूझ्या ।। ७

जगत भेख तीरथ अरु वरता, जाण ओस को पाणी ।
विरखा बिन नेपै नहिं होई, केवल बीज न जानी ।। ८

जगत भेख एको ई मारग, क्या हिन्दू क्या तुरका ।
पखा-पखी मे सब जन लाग्या, निरपख विन जमपुरका ।। ९

साख्य जोग नवध्या ए तिरगुन, वडे-वडे इण लागे ।
निरगुण सबद जानियो नाही, अतकाल भये नागे ।। १०

पीर पकबर सोऊ लागा, केई ॐ कारा ।
या तो सरव ब्रह्म की माया, ब्रह्म इणी ते न्यारा ।। ११

पाहन पडित सबही बोया, सकल मड कू घेरी ।
वेद कतेबा माहि बधाया, लख चौरासी हेरी ।। १२

सतगुरु बिना सबद नहि पावै, आतम-राम न जाणै ।
आतम-राम जानिया बाहिर, जम किकर गह ताणै ।। १३

---

८ नेपै — उपज । १२ कतेबा — कुरान । १३ किकर — दास ।

हिंदू सो तो दहू कूं त्यागै बेहद जीत अगम घर लागै ।
उलटा पीवे सुखमन धारा सो हिन्दू हरि को बहु प्यारा ।
ऐसा हिन्दू० ॥ २६

गिरसंत सो तो सत कूं सेवै, मन को ले हरि जल में भेवै ।
निंदा बदन पखे न राखै, बोलै साच अमख नहिं भाखै ।
ऐसा गिरसन० ॥ ३०

ज्ञानी सो तो ज्ञान विचारै पखा-पखी का पंथ निवारै ।
उलटा मिल अगम घर आवै सो ज्ञानी धिन ज्ञान दिढावै ।
ऐसा ज्ञानी० ॥ ३१

षट-दरसण का करै विचारा, उलट मिले सो उतरै पारा ।
षट-दरसण उलटा घर आया, सब में एको ब्रह्म समाया ॥ ३२

रामदास गुरु ज्ञान विचारा सतगुरु मिलिया अगम अपारा ।
रामदास सतगुरु सरणाइ सहज मिल्या सुख सागर मांई ॥ ३३

साखी

सतगुरु है हरिरामजी मेरा प्राण अधार ।
चौरासी का जीव था सरण लिया उभार ॥ १

इति षट दरसणी सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ पद बत्तीसी

चरण

चारं वरण साधु का सेवग सेवा सूं सुख होई ।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कया, अतज सब ही कोई ॥ १

---

१ गिरसत – गृहस्थ । भेव – भिगोता है । ११ सरणाई – शरण ।

मोह कू पकड पाव तल दीया, वकनाल रस पाया ।
पीया प्रेम भया मतवाला, मेरुडड मे आया ।। २६
मेरुडड मे मडी लडाई, काल क्रोध कू ढाया ।
मेरुडड हुय चढ्या अकासा, नाद अनाहद वाया ।। २७
वाजै नाद करै घनघोरा, नौबत होय हवाई ।
इला पिंगला सुषमण मेला, ता मझ सुरत समाई ।। २८
आतम माहि परातम देख्या, हरिजन मिलिया सूरा ।
तिरवेणी के तखत विराजै, घुरै अनाहद तूरा ।। २९
काया गढ कू कायम कीया, तिहू-लोक कू जीता ।
बैठा जाय अगम के छाजै, हरिजन भया वदीता ।। ३०
महमाया जोती अरु परकत, सुन्य के माहि समाये ।
उलटी सुन्य आतम जहा इछ्या, भावा माहि समाये ।। ३१
मिलिया जाय भाव परभावे, ता पर केवल रामा ।
रामदास ता माहि समाणा, सरै सहज सब कामा ।। ३२

साखी

रामदास केवल मिल्या, दिष्ट-मुष्ट कछु नाहि ।
अरस-परस हुय मिल रह्या, आर-पार पद माहि ।। १

इति श्री ग्रंथ पद बत्तीसी सम्पूर्णम्

★

अथ ग्रंथ पंच मातरा

चौपई

परथम रसना रस्त चलाये, कठ-कमल मे जीव जगाये ।
मन की रटण हृदा मे जागी, सरवण मुरली सुणवा लागी ।। १

---

३० वदीता – लोकप्रसिद्ध । ३१. महमाया–महत्तत्व । जोती–सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ।

अम की पासी सकल पसारा स्वर्ग र मध्य पयाला ।
या मू को निकसण नहिं पाय, मंधे अम्म के जाला ॥ १४

तीन-लोक पर जवरो डाणी सब सू डाण उगावे ।
भवन चतर दस जम के सार, पकर जमपुरी लावे ॥ १५

तीरथ वरत जोग जिग दाना, क्या आचार विचारा ।
एता किया ब्रह्म नहिं पावै रहे वार के आरा ॥ १६

कोट उपाय करे जो कोई सतगुरु बिन नहिं छूटै ।
सत का सबद जानिया नांही काल निरंतर लूटै ॥ १७

हद के मांहि काल का फेरा, जहं तहं पकड मंगावे ।
पाप पुन्न सू मव लग लागा सुरग नरग में जावे ॥ १८

हद का जीव हद सू राजी बेहद सू दुख पावे ।
बेहद गया जके नर सुखिया जह जम-जाल न जाय ॥ १९

प्रथम मिल्या पूरब की पोलां, रसना नाम रटाया ।
कठ-कमल में जीव जागिया हिरदै आण समाया ॥ २०

हिरदै मांहि मन का वासा मन स जूझ मचाया ।
सूर वीर सो मन सूं जूझे सत का खडग समाया ॥ २१

मन कू जीत चल्या हम आगा नाभि-कमल मे आया ।
मन पवना एके घर मिलिया, अंतर नाम भणाया ॥ २२

कम क्म में अजपा होई बिन रसना लिय लागी ।
सुनिया नाद हुवा जन सुखिया सुरत सुदरी जागी ॥ २३

नाभी जीत चल्या हम आगा सप्त पताल आया ।
उलट पयान अगम दिस लागा पिछम दिसा कूं ध्याया ॥ २४

पछिम घाट मन पवन सजूझे, अरधे उरध पयाना ।
गूग्यीर गा गिर खिम जूझ अजरा अमर अराना ॥ २५

---

१९ हद – माया । बेहद – निर्गुण परब्रह्म ।

खम्या खपनी अग पहराये, उनमुन मुद्रा सरवण लाये ।
दया टोपसो सीस विराजे, तत का तिलक लिलाटा छाजे ।। १३

कठी नेम मन की माला, मन मृग मार करी मृगछाला ।
सेलो सबद जोग का गोटा, ज्ञान ध्यान का कीया घोटा ।। १४

दाढी मूछ रखै जन सूरा, सिर सनकादिक जोगी पूरा ।
आसण सहज इकंतर वासा, उलटा चौपड खेलै पासा ।। १५

पाच तत्त की कथा पहरी, ससि हर भान थेगली चहरी ।
उडियाणी अडबध लगाया, दसध्या तार किलगी पाया ।। १६

मत का जोगी किया मतगा, अतर एक तत्त सू रगा ।
कुबज्या जोगी करी निरासा, हाथा सत्त लिया है आसा ।। १७

सील तणा लगोट लगाया, सत्त सबद सो मुख नै पाया ।
किरिया जोगी करी खडाऊ, करणी कमडल करवा भाऊ ।। १८

अकल अगोछा काछ विज्ञाना, अतर जोगी निरखै ध्याना ।
प्रेम पतर रिध-सिध भडारा, जोगी खेलै दसवे द्वारा ।। १९

जोग जुगत का झोली झडा, भिक्षा सहज रमै नव खडा ।
सुरत निरत ले आगम पथा, ए कहिये जोगी का मत्ता ।। २०

जब ते जोगी जोग कमाया, बकनाल प्याला भर पाया ।
पूरब चाल पछिम दिस आया, पुत्र पिता मिल जुग-जुग जाया ।। २१

पाचू मुद्रा साधै जोगी, सुख सागर सुषमण का भोगी ।
अगम धीवती अग लगाये, त्रिवेणी असनान कराये ।। २२

कर असनान अगम जहा बैठा, रामदास जोगी हुय सैठा ।
सबही भेख पहरिया जोगी, रामा कदै न व्यापै रोगी ।। २३

---

१३ खम्या खपनी – क्षमा की कफनी (साधु का वस्त्र) । टोपसो – टोपी ।
१४ सेली – वाद्य विशष, जो नाथ साधु अपने पास रखते हैं। गोटा – गदा ।
१६ पहरी – लगाई । थेगली – कारी । उडियाणी – उड्डियान बन्ध । दसध्या – दस प्रकार की भक्ति । किलगी – तुर्रा ।

खम्या खपनी अग पहराये, उनमुन मुद्रा सरवण लाये ।
दया टोपसो सीस विराजे, तत का तिलक लिलाटा छाजे ॥ १३

कठी नेम मन की माला, मन मृग मार करी मृगछाला ।
सेली सबद जोग का गोटा, ज्ञान ध्यान का कीया घोटा ॥ १४

दाढी मूछ रखै जन सूरा, सिर सनकादिक जोगी पूरा ।
आसण सहज इकंतर वासा, उलटा चौपड खेलै पासा ॥ १५

पाच तत्त की कथा पहरी, ससि हर भान थेगली चहरी ।
उडियाणी अड़बध लगाया, दसध्या तार किलगी पाया ॥ १६

मत का जोगी किया मतगा, अतर एक तत्त सू रगा ।
कुबज्या जोगी करी निरासा, हाथा सत्त लिया है आसा ॥ १७

सील तणा लगोट लगाया, सत्त सबद सो मुख नै पाया ।
किरिया जोगी करी खडाऊ, करणी कमडल करवा भाऊ ॥ १८

अकल अगोछा काछ विज्ञाना, अतर जोगी निरखै ध्याना ।
प्रेम पतर रिध-सिध भडारा, जोगी खेलै दसवे द्वारा ॥ १९

जोग जुगत का झोली झडा, भिक्षा सहज रमै नव खडा ।
सुरत निरत ले आगम पथा, ए कहिये जोगी का मत्ता ॥ २०

जब ते जोगी जोग कमाया, बकनाल प्याला भर पाया ।
पूरब चाल पछिम दिस आया, पुत्र पिता मिल जुग-जुग जाया ॥ २१

पाचू मुद्रा साधै जोगी, मुख सागर सुषमण का भोगी ।
अगम धीवती अग लगाये, त्रिवेणी असनान कराये ॥ २२

कर असनान अगम जहा बैठा, रामदास जोगी हुय सैठा ।
सबही भेख पहरिया जोगी, रामा कदै न व्यापै रोगी ॥ २३

---

१३ खम्या खपनी – क्षमा की कफनी (साधु का वस्त्र) । टोपसो – टोपी ।
१४ सेली – वाद्य विशष, जो नाथ साधु अपने पास रखते हैं । गोटा – गदा ।
१६ पहरी – लगाई । थेगली – कारी । उडियाणी – उड्डियान बन्ध । दसध्या – दस प्रकार की भक्ति । किलगी – तुर्रा ।

साखी

सब सिंगार जोगी किया, बैठा ध्यान लगाय ।
रामा अनहद नाद का विवरा देहु बताय ॥ १

कवित्त

होय भवर गुञ्जार, सुनीज सख का बाजा ।
इक डक नग्गार, गिड़गिडी[1] बाजे बाजा ॥ १
बज झल्लरत ढोल घुरै नौबत नीसानू ।
भारवी[2] बज अपार, होत बही विध के तानू ॥ २
बजै भर करनाल, होत बरघू की बाजा ।
रिणसींघा सहनाय बांसिया बाजै बाजा ॥ ३
बज ताल मरदग होय झालर झणकारा ।
बाज घटा नाद घूघरू सुण इकतारा ॥ ४
बाज तार तदूर मोरचग मुरली बीणा ।
पूंगी अरु सुरबीण राग झीणें सूं झीणा ॥ ५
होय छत्तीसूं राग, घुर अम्बर घनघोरा ।
सुणत रामियादास, होत बहु मोर झिगोरा[6] ॥ ६
अनत अनेट बाजा बज पहुंचे विरला साधु ।
रामदास आगा गया जाका मता अगाध ॥ ७

साखी

बाजा बाज गगन म पहुंच विरला सूर ।
रामदास स पहुंमिया छाना रहे न नूर ॥ १

---

१ गिड़गिडी – गड़गड़ाहट २ भारवी – वाद्य विशेष ।
६ झिगोरा – मयूर-ध्वनि ।

बाजा जह बाजै नही, दिष्ट-मुष्ट कछु नाहि ।
रामा मिलिया ब्रह्म मे, वार-पार पद माहि ।। २

इति श्री ग्रन्थ पच मातरा सम्पूर्णम

अथ ग्रंथ सोलह कला*

चौपई

अमावस दिन आस बधानी, सतगुरु मिलिया ब्रह्म पिछानी ।
पडवा चित चेतन हुय लाग्या, सिवरन करो हुई गुरु आज्ञा ।। १

बीजे बीज बध्या घट माही, अतर माहि प्रगट्या साई ।
तीजे तिरगुन माया त्यागी, सास-उसासा डोरी लागी ।। २

चौथे चहु दिस अजपा होई, रूम-रूम एको धुन सोई ।
पाचू प्राण पिछम दिस फिरिया, वकनाल रस अमृत झरिया ।। ३

छठे छाक चढी अति भारी, पिया प्रेम अरु लगी खुमारी ।
सातू दिन सनमुख आया, नाद अनाहद अकासा वाया ।। ४

आठू आठू कूट मिलाणी, उलटा चढ्या सिखर कू पाणी ।
नवमी नाथ निरजन पाया, इला पिंगला सुषमण न्याया ।। ५

दसवें देस देखिया भारी, सुरत सबद मिल लाई तारी ।
इग्यारस एको धुन हूवा, दसवे द्वार बोलिया सूवा ।। ६

बारस बाप मिल्या घट माही, सब घट व्यापक एको साई ।
तेरस तत्त मे प्राण समाया, आवागवण बहुरि नहि आया ।। ७

चवदस चवदै लोक बदीता, लगी समाधि सकल गुण जीता ।
पूनू पूरण सत कहाया, सोलै कला सपूरण थाया ।। ८

---

*सोलह कला – चन्द्रमा की सोलह कलायें अर्थात् तिथिया ।

साखी

रामदास सोल कला, सोलै तिथि मिलाय ।
सीस सुण धारण करै, सो अमरापुर जाय ॥ १

रामदास सोल कला, कही सपूरण साथ ।
जो या सेती मिल रह्या जाका मता अगाध ॥ २

इति श्री सोलह कला सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ आतम बेली*

चरण

अमर बीज मोय सतगुरु दीया हम मुख सेती बाया ।
कंठ में प्रेम हृदा म ध्याना नाभि-कमल में आया ॥ १

ऊगो बेल धरण के मांही, उर अंतर दरसाई ।
बहोतर कोठा में परकासा दिन दिन कला सवाई ॥ २

चार हजार नाड़ियां मांही बेल रही गणणाई ।
रूम-रूम म सब हरियाली पानां परमल आई ॥ ३

बेली जहां पताला मांई सप्त पयालूं छेया ।
सींघ सिध म किया पसारा, नख सिख सबही भेया ॥ ४

गरजी घन दोउं पुड़ गाजै मड़्या अचंभा भारी ।
भार अठार सब बन छाया कूंपल लगी करारी ॥ ५

ताता चल्या पिछम ग मारग बंकनाल में आया ।
बंकनाल इकबीगू मिणियां, छद मरु टहुगया ॥ ६

---

*बेली – लता। २ कोठा – स्थूल नाड़ियां।
५ दोउ पुड़ – धर ऊपर।

न सो छिपन।

उलट'रु बेल चढी आकासा, ब्रह्मड सब ही छाया ।
दिसा-दिसी मे किया पसारा, त्रुगटी मझ समाया ॥ ७

अरध-उरध विच वेलो पसरी, निज मन निरख तमासा ।
अटकी वेल न चालै आघी, अतर भया उदासा ॥ ८

इला पिंगला सुषमण माईं, वेल रही थिर ताईं ।
अटकी वेल न चालै आघी, सतगुरु करो सहाई ॥ ९

सतगुरु मोकू सीख दई है, लारै पूर करावौ ।
रसना रटो रटण अति भारी, निस-दिन अरट चलावौ ॥ १०

चालै अरट वहै विन बलधा, नाल-खाल खलकाया ।
वेली पिवी हुवा वन हरिया, प्रेम नीर ले पाया ॥ ११

वेलो पिवी किया विस्तारा, चली त्रिगुटी आगै ।
ताता जाय अगम घर पहुता, काल जोर नहि लागै ॥ १२

हद कू छाड चली बेहद्दा, सुन मे नाल हलाया ।
ताव तेज झोला नहि व्यापै, वेलि अमर-घर पाया ॥ १३

वेली ब्रह्म एक ही हूवा, निराकार पद माई ।
बारै मास सदा हरियाली, एकै रग रहाई ॥ १४

सुरग मरत पताला माही, तीन-लोक विस्तारा ।
वासू परै अगम सू आगै, वेली वार न पारा ॥ १५

चवदै भवन सबैहि फिर छाया, अगम-निगम बिच डाला ।
वेली माहि चानणा भारी, सुरग इकीस उजाला ॥ १६

सुरग ते परे अलख अविनासी, जहा धूप नहि छाया ।
वेली जाय जिकण घर पहुतो, करम काम नहि काया ॥ १७

वायो बीज धरण के माही, परम सुन्य जह फूली ।
भवरो जाय वास तहा लेवै, कली-कली निज खूली ॥ १८

---

१० लारै पूर करावौ – पीछे से भजन की पूर्ति होने दो । ११. बलधा – बैल ।
१३ ताव – बुखार ।

फूली फली कमल डहडाया, भवर बास रस माणे ।
वा सूं परे परम सुन पूगा, कोइ निज साधू जाणे ॥ १९

बेली अमर अमर-फल लागा खाय अमर जन हूवा ।
निराकार निरभ पद परस्या अब जग सेती जूवा ॥ २०

सूखे जाय अर्के फल खाया, बहुरि कूस नहिं आवे ।
अनभै बके अगम घर आसण, निरभै राज कमावै ॥ २१

हम अवधू अमरापुरवासी, आदि-ब्रह्म का बाला ।
जे कोइ आय मिलेगा मोसूं जाका मिटै जजाला ॥ २२

मेरै ग्यान अनी है भारी चार वरण कूं तारू ।
पकडूं काल डाढ से सीलूं ऊपर गरुड हकारू ॥ २३

मेरा भेव देव नहिं पाय जगत कहो कुण जाणे ।
निंदा कर अभागी अघा, फिर फिर आन वखाणे ॥ २४

आन देव सूं यारी राखै हरि बिन पंथ चलाय ।
चवद लोक परे निज केवल ताका भेव न पाय ॥ २५

केवल जनम आय नहिं आवै ना अवतार न धार ।
सबके माहि सकल सूं न्यारा ना कोइ पार न वार ॥ २६

उपज खप आपरा करमां कम जेवड़ी बधा ।
केवल राम सकल सूं न्यारा जगत न आवै धंधा ॥ २७

जानेगा कोई सत सयाना बहुर कूस नहिं आवै ।
जामण-मरण रोग दो मेट्या केवल माहिं समाव ॥ २८

केवल सबद हमार भाई हम केवल कूं ध्याऊं ।
केवल मिल्या करम सूं न्यारा केवल माहिं समाऊं ॥ २९

जे कोइ आग मिलेगा मोसूं जिण कूं द्यूं उपदेसा ।
केवल राम कहाऊं निस-दिन जाय मिलूं उण देसा ॥ ३०

---

२२ अवधू – अवधूत । २३ सीलूं – मंत्र शक्ति से वश में करना ।

मिलिया पछै विषै सू न्यारा, आदि ब्रह्म का भोगी ।
रामदास केवल में मिलिया, जानेगा जन जोगी ॥ ३१

रामदास राम सू मिलिया, आरपार गरकाबा ।
अनत जनम का हुता बीछड्या, अबके पाया बाबा ॥ ३२

बालक रमै बाप के खोलै, निस-दिन पिता लडावै ।
रामदास पिता सुख देख्या, दूजा दाय न आवै ॥ ३३

साखी

बालक मिलिया बाप सू, पूरी मन की आस ।
आठ पहर चौसठ घडी, रहू पिता के पास ॥ १

रामा बालक ब्रह्म का, अमर कवर पद होय ।
पुत्र पिता के सग रमै, जाणेगा जन कोय ॥ २

इति श्री ग्रंथ आतम बेली सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ निरालंब

छंद अर्द्ध भुजंगी

गुरुदेव पूरा , सरण सिष सूरा ।
अखी नाम दीया , अमी मान लीया ॥ १

मुखा वैण बोल्या , कमल कठ खोल्या ।
ह्रिदे नाम आया , जबै प्रेम पाया ॥ २

अघट प्रेम चालै , मनो देव झालै ।
पिया प्रेम प्याला , भया मत्तवाला ॥ ३

---

३२ गरकावा – आकण्ठ-मग्न । ३३ खोलै – गोद । दाय – पसन्द ।
१ बालक – जीव । बाप – ब्रह्म । १ अखी – अक्षय ।

हिरदे सीर छूटी , नाभी जाय चूठी ।
सर्वे सहर जग्या हुई राम मग्या ॥ ४

कमल नाभि फूल्या , उलट सस भूल्या ।
पश्चिम घाट खोल्या , गगन नाद बोल्या ॥ ५

उलट मेरु छेद्या अगम जाय भद्य ।
तिहू धार दीठी , सुखम सीर मीठी ॥ ६

सुखम गग चाले तहाँ संत माले ।
मिल्या सूर चदा बरम अनदा ॥ ७

मिल्या जीव सीऊं तहां एक पीऊ ।
मिल्या बूंद नादू बरम अनादू ॥ ८

मिल्या है अनाथो एको आद साथी ।
सुरत घर आई सता में समाई ॥ ९

मिल्या अनरागी , गगन तार लागी ।
मिल्या देव मांये , तहां ध्यान न्याये ॥ १०

घुनो ध्यान लागा सुनी संख वागा ।
पिया प्रेम पाणी अस्या बोल वाणी ॥ ११

उमट्टे पिराणी कथा एक जाणी ।
गगन बाल देख्या रुपो ना न रेखा ॥ १२

मढया ख्याल मांये उलट देस आये ।
जगे जोत ज्वाला हुया उज्जवाला ॥ १३

रभा एक खेलै अधर बूंद मेलै ।
धरा चाल आई गगन में समाई ॥ १४

तहां सूर ऊगा निर्भै जाय पूगा ।
तपे कोटि भानू दरगा दिवानू ॥ १५

---

७ बरम अर्नदा – आनन्द ब्रह्म ।

साईं साध प्यारा, कबू नाहि न्यारा ।
दोउ एक हूवा, कबू नाहि जूवा ॥ १६

चलत चाल आई, सता मे समाई ।
समद नद एका, नही काण रेका ॥ १७

उडे हस आया, गगन नाद छाया ।
निरभै निवासा, वरम् विलासा ॥ १८

चुगै हस मोती, झिगामिग जोती ।
ब्रह्मजोत जागी, तहा लिव्व लागी ॥ १९

साखी

लिव लागी जहा राम है, और राम के दास ।
ब्रह्म निरालब रामदास, जह माया नहिं पास ॥ १

छंद भुजंगी

काया न माया न कामो न क्रोधो, दाणू न देवा न देवी न व्रोधो ।
कानो न गोपी न ग्वालो न गायो, सेवा न पूजा न थान थपायो ॥ १

वेदू न खेदू न काजी कुराणू, कथा न गीता न पडित पुराणू ।
भाई न बधु पिता न मायो, सगो न सोई न जातौ न जायो ॥ २

होमो न जापो न तपो न दानू, तिरथो न वरतो न तुलो सनानू ।
भूतो न प्रेतो न दैतो न डेरू, जन्त्रो न मन्त्रो न भोपो न भैरू ॥ ३

चदो न सूरज न तारा न तेजू, नूरो न पूरो न वारा न रेजू ।
ब्रह्मा न विष्णु न सेसू महेसू, करमो न धरमो न गोती गहेसू ॥ ४

आभौ न गाभौ न धरणो न गिगनू, अडाणू मडाणू अकारो न विगनू ।
रेणौ न दिनो न सूता न जागै, पडितो न पौरौ न चौरो न लागै ॥ ५

गामो न ठामो न वस्ती न वासा, राजो न तेजो न हुकमो न ह्वासा ।
ख्वाजा न रोजा न मक्का मसीदू, ईदा न सईदा न पीरा मसीदू ॥ ६

जोगी न भोगी न भंगो न भुगता, रोगी न सोगी न रगो न रगता ।
जापो न छापो न तिलको न माला भेखो न घेको न कठी न जाला ।। ७

वरणो न सरणो न ऊषा न नीघू अचारूं विचारू न सुचा न सींघू ।
वाणी न खाणी न पवनो न जल्लू राणी न जाणी न सरणो न थल्लू ।। ८

खंडो न मडो न दीपो न दिपलू नदिया निवाणू न समदो न सपतू ।
भारू अकारू न नवो न नाथू संसारू न सारू न सुखो न साथू ।। ९

रागी न पोगी न नाडी न वेदू, जोरी न चोरी न जारी न जदू ।
नूरो न सूरो न नागा न लोगू सुखो न दुखो न ससा न सोगूं ।। १०

कालू न जालू न जिंदो न जीया अजालू छछालू सभायो न सीया ।
नादो न विंदो न हदो न विरखा, हदु न बेहद्दू न नारी न पुरखा ।। ११

साहिब सिरजण निरजण राया, नाथ अनाथ अजात अजाया ।
राम रहीम करीम ऐ कसा ब्रह्म निरालब निकाल निरेसा ।। १२

सच्चिदानद आनद अकरता पराब्रह्म सरवश अलिप्ना ।
नावं निकेवल केवल न्यारा रामजुदास मिल्या हाँ प्यारा ।। १३

साखी

निरालंब निरलेप है राम निरजन राय ।
रामदास सब ससजन मिल्या ताहि मे माय ।। १

ब्रह्म वृक्ष है रामदास छाया माया होय ।
उलट मिल्या सत ब्रह्म में जहं माया नहि कोय ।। २

इति श्री ग्रंथ निरालब सम्पूर्णम्

*

अथ ग्रंथ घघर निसाणी

पाचू छारी बहोत ठगारी, नाहर पकड घर लावदा ।
चेतै नाही मन भ्रम जाही, लख चौरासी जावदा ।। १

सहजा गुरु मेला सबदा केला, सिघ घोर गणणावदा ।
सतगुरु सबद हुय मन रबद, पाचू उलट मरावदा ।। २

मगना लिव लागी रूमा बडभागी, वकनाल घर आवदा ।
मन निज थीया प्रेम रस पीया, पिच्छम पार बसावदा ।। ३

मेर मघ जासा चढ आकासा, आकासा घर छावदा ।
अनहद नाद मिलिया साद, भवजल बहुरि न आवदा ।। ४

त्रिवेणी वासा कर हरदासा, उनमुन तारी लावदा ।
ध्यान अखडू मिले अमडू, सुरत सबद पद पावदा ।। ५

दसू दवारा निरत नियारा, परम जोत परसावदा ।
रामा गुरु दाता ब्रह्म विख्याता, नाम निकेवल ध्यावदा ।। ६

इति श्री ग्रंथ घघर निसाणी सम्पूर्णम्

\ *

अथ रेखता

रेखता १

गुरु परताप तै राम हम पाविया, गुरु परताप त काल भागा ।
गुरु परताप तै काल दूरै गया, गुरु परताप तै रटण लागा ।। १

गुरु परताप तै कठ परकासिया, गुरु परताप तै जीव जागा ।
गुरु परताप तै चाल हिरदै गया, गुरु परताप तै ध्यान लागा ।। २

---

१ छारी – बकरी ।

५ अमडू – जिसका कोई भवन नही है (ब्रह्म)

गुरु परताप तैं नाम मे सचरया, गुरु परताप अजपा जु होई ।
गुरु परताप तैं उलट ऊंचा चढया गुरु परताप तैं अगम जोई ॥ ३

गुरु परताप त बक नाली वहै, गुरु परताप तैं मेरु आया ।
गुरु परताप आकास मे रम रह्या गुरु परताप ब्रह्मंड छाया ॥ ४

गुरु परताप तैं तीन धारा मिली गुरु परताप असनान होई ।
गुरु परताप त गग जमुना वहै, गुरु परताप तैं करम खोई ॥ ५

गरु परताप से जोति सूं मिल गया गुरु परताप सब हाथ जोड़ै ।
गुरु परताप रिध सिध दासी भई गुरु परताप चढ़ ग्यान घोड़ ॥ ६

गुरु परताप तैं अनहद नौबत बज, गुरु परताप तिहु लोक जीता ।
गुरु परताप तैं राज निरभ भया गुरु परताप सब मे वदीता ॥ ७

गुरु परताप सैं जग चरनां परै गुरु परताप सुर असुर बदे ।
गुरु परताप की मत महिमा कर गुरु परताप मब वास खदै ॥ ८

गुरु परताप की महा महिमा कहू गुरु परताप तैं ब्रह्म हूवा ।
गुरु परताप त रामिया राम मिल गुरु परताप कछु नांहि जूवा ॥ ९

रेखता २

रसना नाम निस दिन सहज लिया कंठ पर हूए इक धार लागी ।
प्रेम परतीत [illegible] आया सब नाभ पर गुमर सुरमत लागी ॥ १

नाभ तैं [illegible] निज नाग माभी गया लाग उसास परकास पीया ।
अजपा जाप गुप्त सहज मे ऊपज्या रग हीं रम रग राम पाया ॥ २

उगलिया गयन घमसान आगा गया मरध पर उरध मैं बीन भागा ।
[illegible] प्रेम रग [illegible] मगन मन [illegible] पाया ॥ ३

१ बंकी – बंकनाल ।

त्रिगुटी घाट मे सतजन सापड्या, कटिया कर्म अरु ब्रह्म हूवा ।
गुरुदेव परताप तै दास रामा कहे, दसवे द्वार तुम बोल सूवा ।। ४

रेखता ३

प्रथम मुख द्वार हम सार सिंवरण किया, आठ ही पहर हरि नाम ध्याया ।
दूसरे कठ मे प्रेम परकासिया, गला मे गद सुख स्वाद आया ।। १
तीसरा ह्रिदा मे वासा लिया, मन्न ही मन्न मिल भीण गाया ।
बाज मुरली सुणी जोर नीका गुणी, सत कू बहुत इतबार आया ।। २
चतुरथै नाभि मे सबद परकासिया, भवर गुजार हुय एक बाजा ।
छेद पाताल अरु उलट पछिम दिसा, देखिया गैब का अगम छाजा ।। ३
उलघिया मेरु आकास मे घर किया, सहज विरखा बणी एक धारा ।
इला पिंगला सुषमणा गग चले, बन पीवत नख-सिख सारा ।। ४
गगन अंबर गजै अनत बाजा बजै, धिन्न अब धिन्न सत भाग तेरा ।
सत्तगुरु महर तै दास रामा कहै, जनम अरु मरण भव मिट्या फेरा ।। ५

रेखता ४

मन को वास निज नाभि मे रोपियो, धुन की वरत सुन बाध छाजै ।
पवन को नटवौ[1] ध्यान डाको लगै, अनहद डैबकी खूब बाजै ।। १
चित्त के चौहटै ख्याल आछा मड्या, अरध अरु उरध विच खेल बाजी ।
चेतिया सहर समसत[2] ही आविया, देखिया ख्याल अब जोर राजी ।। २
पाच पचीस मिल वरत कू भूमिया, सुरत नटणी चढी अगम आघी ।
सील सिणगार सतोष का सेहरा, हद वेहद विच धूस[3] लागी ।। ३
नाच आकास मे राम रिझाविया, जाय महाराज कू सीस न्याऊ ।
गुरुदेव परताप तै दास रामा कहे, मुगत का देस की रीज पाऊ । ४

---

१ नटवौ – ढोल बजाने की पतली चीपटी । डैबकी – ढोलक । डाको – डका ।
२ समसत – समस्त । ३ धूस – अनेक वाद्यो की सम्मिलित ध्वनि ।

गुरु परताप तैं नाम में सचरया, गुरु परताप अजपा जु होई ।
गुरु परताप तें उलट ऊंचा चढ़्या गुरु परताप तें अगम जोई ॥ ३

गुरु परताप तें बंक नाली बहे, गुरु परताप तैं मेरु आया ।
गुरु परताप आकास में रम रह्या गुरु परताप ब्रह्मंड छाया ॥ ४

गुरु परताप तें तीन धारा मिली गुरु परताप असनान होई ।
गुरु परताप त गंग जमुना वहै गुरु परताप तें करम खोई ॥ ५

गुरु परताप से जोति सू मिल गया गुरु परताप सब हाथ जोड़ै ।
गुरु परताप रिध सिध दासी भई गुरु परताप चढ़ ग्यान घोडै ॥ ६

गुरु परताप तें अखंड नौबत बजै गुरु परताप तिहु लोक जीता ।
गुरु परताप त राज निरभै भया गुरु परताप सब मे वदीता ॥ ७

गुरु परताप तें जग चरनां परै, गुरु परताप सुर असुर वदै ।
गुरु परताप की संत महिमा करै, गुरु परताप सब दास खदे ॥ ८

गुरु परताप की कहा महिमा कहू गुरु परताप त ब्रह्म हुवा ।
गुरु परताप त रामिया राम मिल गुरु परताप कछु नांहि जूवा ॥ ९

रेखता २

रसना नाम निस दिन नहचै लिया कंठ अरु हृदै इक धार लागी ।
प्रम परतीत जिग्यास आया सबै काल अरु कुबद दुरमत्त भागी ॥ १

चलत है लहर निज नाम नाभी गया सास उसास परकास कीया ।
अजपा जाप सुन्न सहज में उपज्या रूम ही रूम रग राम पीया ॥ २

उलटिया सवद असमान आगा गया अरध अरु उरध के बीच आया ।
बंकडी नाल का प्रम रस चाखिया मगन मत यान मन छक आया ॥ ३

---

३ बंकडी — बंकनाल ।

नीम तो चार

रेखता ७

राम ही आदि अरु अत मध राम है, राम ही घरै अरु माहि बारै ।
रूम ही रूम मे राम ही रम रह्या, राम ही राम मिल मुगत द्वारै ॥ १
राम ही जगत अरु भेप षट-दरसनी, राम ही ग्रहै अरु त्याग माही ।
राम ही जप्प अरु तप्प तीरथ सबै, रामहो राम विन ओर नाही ॥ २
सप्त-दीप अरु नव-खड मे राम है, राम ही देस-परदेस रमता ।
हद बेहद मे एक ही राम है, राम हो रहत परगट गुपता ॥ ३
राम ही तेज अरु पुज सो देवता, राम आकार निरकार न्यारा ।
राम ही दिष्ट अरु मुष्ट सो राम है, राम ही देख अदेख प्यारा ॥ ४
राम ही जल जीवादि अरु पवन है, राम हि चद अरु सूर तारा ।
राम ही केतु अरु राहु साढा-सती राम ही राम सो सप्त वारा ॥ ५
राम ही मात अरु तात बधव सबै, राम ही नार अरु पुरख होई ।
राम ही राम तिहु-लोक मे रम रह्या, राम बिन और दूजा न कोई ॥ ६
राम ही सुरग पाताल भूलोक मे, राम ही धरण अरु राम गिगना ।
रामिया एक ही राम सू मिल रह्या, राम ही राम कछु नाहि विगना । ७

रेखता ८

झूठ ही ऊच अरु नीच को जानबौ, झूठ ही ग्रहै और त्याग होई ।
झूठ ही भेष ससार षट-दरसणी, झूठ ही पाप अरु पुन्न होई ॥ १
झूठ ही जप अरु तप तीरथ सबै, झूठ ही दिष्ट आकार दीसै ।
झूठ ही झूठ त्रय लोक बाजी रखी, एक नित्य नाम बिन काल पीसै ॥ २
झूठ ही मात अरु तात बधव सबै, झूठ ही नार अरु पुरख प्यारा ।
रामिया सत्त इक सतगुरु सबद है, सिंवर जन उतरे अनत पारा ॥ ३

रेखता ९

ब्रह्म का सत ससार मे आविया, धार अवतार भूलोक माही ।
धरण अबर विचै माघ मुगता किया, जगत अरु भेख कू गम्म नाही ॥ १

रेखता ५

प्रथम सत सरवणां ग्यान नोमा सुण, मिटे प्रज्ञान सब भरम भागा ।
दूसर चाल गुरुदेव सरणे गया, सत्तगरू चरण सिष जाय लागा ॥ १

कर जोड़ डंडोत परनाम गुरु सें किया दीनदयाल गुरु दया कीजे ।
काम और क्रोध में भरम करमा भर्या, सुरत मे धार मोहि सरण लीजै ॥ २

अगम अपार गुरुदेव किरपा करी, होय सनमुख्ख सत सबद लीया ।
तीसर जाय हम राम रसना कथा, कठ हिरदा विच वास कीया ॥ ३

कठ में गिलगिली गदगदा होत है भवर भणकार उर मांहि लाग ।
चतुरथ हिर्दे धमकार धुन सांभली मिध में सिध सब जीव जाग ॥ ४

पच में चाल सत सबद नाभी गया, सास उसास रग रास पाये ।
षट चक्र छेद्‌ अरु मूल उलटायिया पीठ परसोत म बंध लाये ॥ ५

उडे एक पखी पिड अरु पख बिन उलट आकास ब्रह्मड छाये ।
त्रिगुटी तीर में हीर हसा चुगे सुन्य का सिखर में नाद धाये ॥ ६

देषता गम नहीं जगत की कथा पड़ी, देखिया राम निरकार राया ।
गुरुदेव परताप सें दास रामा कहै सत सो सूरवा भेद पाया ॥ ७

रेखता ६

अगम्य अपार का भेद विरला लहै अगम का पंथ कूं ध्याय कोई ।
गुप्त प्राचीन सत सबद में रम रही परसियो पीव दिल मांहि जोई ॥ १

अगम का नाद की गम्म पाई जब, चढ़ सुम गढ़ नीसाण घाये ।
प्रेम निज प्रीत जुग जीत नहचल भया उनमुनी ध्यान अगम लाये ॥ २

राम की श्रोट अघ चोट लाग नहीं दग दीदार का मगन होई ।
ब्रह्म निरकार में दास गहजां मिल्या त्रिगुटी मांहि निज जोत जोई ॥ ३

सतगुरु गयान से गिगन गयी मिल्या, पोष पचीस भिन्न अगम आपा ।
रामिया एक अपगत मू मिल रह्या आतमारांम मूं रंग लागा ॥ ४

रेखता ७

राम ही आदि अरु अंत मध राम है, राम ही घरै अरु माहि वारै ।
रूम ही रूम मे राम ही रम रह्या, राम ही राम मिल मुगत द्वारै ॥ १
राम ही जगत अरु भेष षट-दरसनी, राम ही ग्रहै अरु त्याग माही ।
राम ही जप्प अरु तप्प तीरथ सवै, रामहो राम विन ओर नाही ॥ २
सप्त-दीप अरु नव-खंड मे राम है, राम ही देस-परदेस रमता ।
हद वेहद मे एक ही राम है, राम हो रहत परगट गुपता ॥ ३
राम ही तेज अरु पुज सो देवता, राम आकार निरकार न्यारा ।
राम ही दिष्ट अरु मुष्ट सो राम है, राम ही देख अदेख प्यारा ॥ ४
राम ही जल जीवादि अरु पवन है, राम हि चद अरु सूर तारा ।
राम ही केतु अरु राहु साढा-सती राम हो राम सो सप्त वारा ॥ ५
राम ही मात अरु तात बधव सवै, राम ही नार अरु पुरख होई ।
राम ही राम तिहु-लोक मे रम रह्या, राम बिन और दूजा न कोई ॥ ६
राम ही सुरग पाताल भूलोक मे, राम ही धरण अरु राम गिगना ।
रामिया एक ही राम सू मिल रह्या, राम ही राम कछु नाहि विगना । ७

रेखता ८

झूठ ही ऊच अरु नीच को जानवौ, झूठ ही ग्रहै और त्याग होई ।
झूठ ही भेष ससार षट-दरसणी, झूठ ही पाप अरु पुन्न होई ॥ १
झूठ ही जप अरु तप तीरथ सबै, झूठ ही दिष्ट आकार दीसै ।
झूठ ही झूठ त्रय लोक वाजी रखी, एक नित्य नाम विन काल पीसै ॥ २
झूठ ही मात अरु तात बधव सबै, झूठ ही नार अरु पुरख प्यारा ।
रामिया सत्त इक सतगुरु सबद है, सिवर जन उतरे अनत पारा ॥ ३

रेखता ९

ब्रह्म का सत ससार मे आविया, धार अवतार भूलोक माही ।
धरण अबर विचै माघ मुगता किया, जगत अरु भेख कू गम्म नाही ॥ १

सतगुरु सबद से उलट सुन में मिल्या, नीझरी यात तिहुं-लोक जाणी ।
धरससी जब कोई आदि अनाद का, सुणत सबद अनभैत बाणी ॥ २

जगत कूं चूर कर उरड़ माथा धस्या सिखर महाराज महाराज होई ।
जीव अरु सीव अब द्वार दसवें मिल्या, रामिया ब्रह्म एको ज सोई ॥ ३

रेखता १०

सहर बाजार में खेल आछ्या मड्या आपका आप साथी बुलाया ।
हम भी सरब मैं मांहि भी खेलसें गुरां पैं जाय सत सबद लाया ॥ १

राम रसना किया चाल हिरदै गया, पिंड भारी भया पांव थक्के ।
दिप्ट कर देखियो मन चाल नहीं जाय अब खेल कुण खाय धक्के ॥ २

और ही खेलतां राम कूं रटत है थके सुथके हम पार बठें ।
सुरत सो उलट सुंन सिखर मे संचरी, गुरू के घाट में जाय बठें ॥ ३

सत ही बुध सू सोज सोजी कर, एक ही पेड़ सू ध्यान लावै ।
सुरत उलटाय अरु अगम ऊंचा चढ़े रामिया राम नीसाण वावै ॥ ४

रेखता ११

ऊंखरा सरब घर मांहि रोल्यां कर दिसाई दिसी सूं दौड़ आवै ।
एक ही ऊपर प्रेम पारो पिओ पिंड भारी भयो चैन पावै ॥ १

मकड़ी थूक सूं तार हुय ऊतरी, तार ही होय कर थूक मावे ।
सतगुरु तार सत सबद हम कूं दिया तार ही होय ब्रह्मंड छाये ॥ २

ताहि घर नीकस्या ताहि उलटा मिल्या हंस परहंस अन एक हुवा ।
गुरुदेव परताप सैं दास रामा कहै, जीव अरु सीव अब नांहि जूवा ॥ ३

रेखता १२

एक ही एक सत सबद है बावरे, सत का सबद बिन काल खावै ।
राव अरु रंक सुलतान अरु देवता काल की झपट में सरब आवै ॥ १

---

२ अनभैत – अनुभव । १ उरड़ – बलपूर्वक घुस कर ।

भेख अरु जगत जीहान छूटै नही, मरत मे लोक भूकाल कूटै ।
एक ही सेव बिन सेव सब थोथरी, धणी जजमान सम सेत लूटै ॥ २
आप कू खोज दीदार दरसण करै, पट-चक्र छेद अरु उलट आवै ।
काल कू जीत रणजीत सूरा भया, रामिया राम नीसाण वावै ॥ ३

रेखता १३

जाग रे जाग जन बहोत नैडा थको, सत्त के सबद का प्रेम आछा ।
सुरत समझाय गुरु-ज्ञान की खबर कर, मन मेमत कू मार पाछा ॥ १
जागिया ब्रह्म जहा खेल परभू तणा, नाभ अस्थान मे सबद पैठा ।
उलटिया सबद असमान आघा गया, सुन्य के बीच मे जाय बैठा ॥ २
अधर घर रम रह्या एक अवगत्त सू, वेद कतेब सू रहत न्यारा ।
राम महाराज सू निरत नीका मिल्या, गिगन का महल मे ध्यान धारा ॥ ३
सुरत की चचु सू हस मोती चुगै, त्रिगुटी माहि निज पीव दीठा ।
बरसता अब जह प्रेम सू पीवता, सुखमणा सीर का नीर मीठा ॥ ४
वाजता नाद जहा गैब का खेलणा, हरख कर देखता लाल झाई ।
गुरुदेव परताप तै दास रामा कहे, सहज सू भेटिया आप साई ॥ ५

इति श्री रेखता सम्पूर्णम्

*

अथ राम रक्षा

कवित्त

राम रिछक नव-खड, सप्त दीपा डर नाही ।
राम रिछक तिहुलोक, भवन चवदै सुख थाही ॥ १
राम रिछक तन माहि, गेह क्या वन मे बारै ।
राम रिछक तिहुलोक, कहो कुण जन कू मारै ॥ २

राम रिछक छल छिद्र भूत डाकण डर नाहीं ।
राम रिछक परताप तेजरो तन तें जाहीं ॥
राम रिछक तें काल दूर सेती करजोड़
राम रिछक तिहुलोक वचन कुण पूठा मोड़े ॥
राम रिछक नवदेव साधका रिछक होई ।
राम रिछक छतीस साधु कूं वद सोई ॥
राम रिछक रिघ सिघ, साध के चरणां दासी ।
राम रिछक तिहुलोक पड़े नहिं जम की पासी ॥
राम रिछक गुरुदेव सत सो सीस विराजे ।
राम रिछक परताप, अगम जहाँ बाजा बाजे ॥
राम रिछक परताप सूं सत सिखर निरभै भया ।
रामदास रट राम कूं अगम देस आषा गया ॥ १
राम रिछक परताप काल दूरे ही भागे ।
राम रिछक परताप जमा का दूत न लागे ॥
राम रिछक परताप मूठ छल छेद न लागे ।
राम रिछक परताप विघन दूरे ही भागे ॥
राम रिछक परताप भैरवा भूत नसावे ।
राम रिछक परताप वीर वेताल न आवे ॥
राम रिछक परताप ताप त्नु व्याप नाहीं ।
राम रिछक परताप रोग दुख दूर मसाई ॥
राम रिछक परताप नव-ग्रह निकट न आवे ।
राम रिछक परताप, इंद्र पूजा ले धावे ॥
राम रिछक परताप चौकियां चारू जीता ।
राम रिछक परताप जगत में भया वदीता ॥
राम रिछक परताप चढ़्या गढ़ ऊपर जाई ।
राम रिछक परताप नौबतां निरभ धाई ॥

राम रिछक परताप सू, सुन-सागर मे रम रह्या ।
रामा नाम परताप सू, काल विघन दूरै गया ।। २

राम नाम परताप, रामजी आप विराजै ।
राम नाम परताप, अगम जहा बाजा बाजै ।।
राम नाम परताप, अगम घर आसण कीया ।
राम नाम परताप, वास वैकूठा कीया ।।
राम नाम परताप, जीव सू ब्रह्म कहावै ।
राम नाम परताप, नीच ऊचो पद पावै ।।
राम नाम परताप, नव-ग्रह देव रिख्यावत ।
राम नाम परताप, मन मे रहत त्रिषावत ।।
राम नाम परताप, असुर सुर सबही बदै ।
राम नाम परताप, लोक तीनू कहै वदै ।।
राम नाम परताप, सत का कारज सरिया ।
राम नाम परताप, काल जम सबही डरिया ।।
राम नाम परताप, अभय अमर पद पाये ।
राम नाम परताप, बहुरि उद्दर नहि आये ।।
राम नाम परताप सू, सत सिवर निरभै भया ।
रामदास या राम का, सत्त भेद सत्तगुरु दिया ।। ३

इति श्री राम रक्षा सम्पूर्णम्

अथ घर परिचय का कवित्त

कह्या सत्तगुरु राम, नाम हम रसना लीया ।
रटिया दिवस'रु रैण, प्रेम भर प्याला पीया ।।
ह्रिदे पधारे राम, राम नाभी घर आये ।
रूम-रूम विच राम, राम पाताल सिधाये ।।

---

३ रिख्यावत – रक्षा करने वाले । त्रिषावत – तृषित ।

राम रिछक छल छिद्र भूत डाकण डर नांहीं ।
राम रिछक परताप तेजरो तन तें जांहीं ।।
राम रिछक तें काल दूर सेती करजोड़
राम रिछक तिहुलोक वचन कुण पूठा मोड़ै ।।
राम रिछक नवदेव, साधका रिछक होई ।
राम रिछक ससीस साधु कूं वदै सोई ।।
राम रिछक रिध-सिध, साध के चरणां दासी ।
राम रिछक तिहुलोक, पड़ नहिं जम की पासी ।।
राम रिछक गुरुदेव सत सो सीस विराज ।
राम रिछक परताप अगम जहां वाजा वाजे ।।
राम रिछक परताप सूं सत सिवर निरभै भया ।
रामदास रट राम कूं अगम देस आधा गया ।। १

राम रिछक परताप काल दूर ही भागै ।
राम रिछक परताप जमां का दूत न लागै ।।
राम रिछक परताप मूठ छल छेद न लाग ।
राम रिछक परताप विघन दूर ही भाग ।।
राम रिछक परताप भैरवां भूत नसावै ।
राम रिछक परताप बीर बेताल न आवै ।।
राम रिछक परताप ताप सनु व्याप नाहीं ।
राम रिछक परताप रोग दुख दूर मसाई ।।
राम रिछक परताप नव-ग्रह निकट न आवै ।
राम रिछक परताप, इंद्र पूजा ले धावै ।।
राम रिछक परताप चोकियां चारू जीता ।
राम रिछक परताप जगत में भया वदीता ।।
राम रिछक परताप चढ्या गढ ऊपर जाई ।
राम रिछक परताप नोबतां निरभै बाई ।।

राम रिछक परताप सू, सुन-सागर मे रम रह्या ।
रामा नाम परताप सू, काल विघन दूरै गया ॥ २

राम नाम परताप, रामजी आप विराजै ।
राम नाम परताप, अगम जहा बाजा बाजै ॥
राम नाम परताप, अगम घर आसण कीया ।
राम नाम परताप, वास वैकूठा कीया ॥
राम नाम परताप, जीव सू ब्रह्म कहावै ।
राम नाम परताप, नीच ऊचो पद पावै ॥
राम नाम परताप, नव-ग्रह देव रिख्यावत ।
राम नाम परताप, मन मे रहत त्रिषावत ॥
राम नाम परताप, असुर सुर सबही बदै ।
राम नाम परताप, लोक तीनू कहै वदै ॥
राम नाम परताप, सत का कारज सरिया ।
राम नाम परताप, काल जम सबही डरिया ॥
राम नाम परताप, अभय अमर पद पाये ।
राम नाम परताप, बहुरि उद्दर नहिं आये ॥
राम नाम परताप सू, सत सिंवर निरभै भया ।
रामदास या राम का, सत्त भेद सत्तगुरु दिया ॥ ३

इति श्री राम रक्षा सम्पूर्णम्

अथ घर परिचय का कवित्त

कह्या सत्तगुरु राम, नाम हम रसना लीया ।
रटिया दिवस'रु रैण, प्रेम भर प्याला पीया ॥
ह्रिदे पधारे राम, राम नाभी घर आये ।
रूम-रूम विच राम, राम पाताल सिधाये ॥

---

३ रिख्यावत – रक्षा करने वाले । त्रिषावत – तृषित ।

नाद-नाद चेतन भई, ठाम-ठाम ठमकार ।
रामदास या राम कू रूम-रूम उच्चार ।। १

उलट चढ़ अब राम राम पिछम दिस मामे ।
अरध-उरध बिच राम राम बकनाल सिधाये ।।

मेरुदंड हुय राम राम अब चढ़ अकासा ।
त्रिवेणी में राम, राम सुन मांही वासा ।।

राम सिवर रामें मिला, महामोप के मांहि ।
रामदास सब ऊपरे, केवल ब्रह्म कहांहि ।। २

सतगुरु सरण आय, गुरां की सेवा कीजे ।
मन तन अरप'र सीस, मांग सत आज्ञा दीजे ।।

सत का सबद समाय, मन्न सूं जूंझ मडावे ।
पांच महाबल पेल पचीस सूं पकड मगावे ।।

नव तत करो नास कर, काम क्रोध कूं पेल ।
ऐसा साधू रामदास, निरभ जग में खेल ।। ३

निरभ कहिये सोय लगी निरंजन सू ताली ।
जिस परम-सुख धाम गंग जहां उलटी चाली ।।

अधर किया असनान अधर लिय ध्यान लगाया ।
अधर किया आसन्न अधर सुख गोविन्द गाया ।।

रामदास जिस अधर में अधर निरंजण देव ।
मन पवना जिस पुग नहीं सुरत आप कर सेव ।। ४

होली एक दिन राम, राम दीवाली भयार्थ ।
सामा मिलिया राम राम जहं तहं बतलाय ।।

गंगे गेण कूं राम राम दुग मांही लेय ।
लाट छाटिया राम, राम मांदा पू देवे ।।

राम नाम निज मन्त्र है, दुख पडिया दुनिया कहै ।
रामदास या राम को, सत्त भेद साधू लहै ॥ ५

ऊच नीच बिच राम, राम सबके मन भावै ।
झूठ साच सब ठौर, राम की आण कढावै ॥
आद अंत मे राम, राम सबही कह नीका ।
सकल देव सिर राम, राम सबके सिर टीका ॥
चार चक्क चवदै भवन, राम नाम सारा सिरै ।
रामदास या राम को, साधू जन सिंवरण करै ॥ ६

चार वेद कहै राम, राम को पुराण बतावै ।
भागवत कह राम, राम गीता सत गावै ॥
पारायण कह राम, राम षट शास्तर भाखै ।
जती सती कह राम, राम वेदायत दाखै ॥
राम नाम सत सबद है, वेद पुराण सायद भरै ।
रामदास या राम कू, मुढ जीव नहिं उच्चरै ॥ ७

कहे पताला सेस, धू आकासा ध्यावै ।
सिवजी कह कैलास, राम पारबती गावै ॥
विष्णु धरम कह राम, राम ब्रह्मा मुख छाजै ।
धरमराय कह राम, राम वैकूठ विराजै ॥
सनकादिक नारद कहै, साख भरै सब देव ।
रामदास या राम को, विरला पावै भेव ॥ ८

कह्या तिथकर राम, राम प्रह्लाद धियाया ।
जनक कह्या सुखदेव, राम सब सता गाया ॥
बालमीक कहै राम, राम पाडव लिव लाई ।
कूता द्रोपदी राम, राम की भगति कमाई ॥
सीता माता सत्त कह्या, लछमन पाया भेव ।
रामदास यो राम है, सब देवन का देव ॥ ९

७ वेदायत – वेदान्त । सायद – साक्षी । मुढ – मूढ़ । ९ कूता – कुन्ति ।

नाड-नाड चेतन भई, ठाम-ठाम ठमकार ।
रामदास या राम कू रूम-रूम उच्चार ।। १

उलट चढ़े अब राम राम पिछम दिस आये ।
अरध-उरध बिच राम, राम बकनाल सिधाये ।।
मेरुडंड हुय राम राम अब चक्र प्रकासा ।
त्रिवेणी में राम, राम सुन मांही वासा ।।
राम सिखर रामें मिला महामोष के मांहि ।
रामदास सब ऊपरे, केवल ब्रह्म कहांहि ।। २

सतगुरु सरण जाय, गुरां की सेवा कीजे ।
मन तन अरप'रु सीस, मांग सत आज्ञा दीजे ।।
सत का सबद समाय, मन सूं जूंझ मडावे ।
पांच महाबल पेल पचीस सूं पकड़ मगावे ।।
नव तत केरो नास कर, काम क्रोध कूं पेल ।
ऐसा साधू रामदास, निरभ जग में खेल ।। ३

निरभै कहिये सोय लगी निरअन सूं ताली ।
मिल परम-सुख धाम गग जहां उलटी चाली ।।
अधर किया असनान अधर लिव ध्यान लगाया ।
अधर किया आसण अधर मुख गोविंद गाया ।।
रामदास मिल अधर में, अधर निरजण देव ।
मन पवना चित बुध नहीं सुरत भाव कर सेव ।। ४

होली के दिन राम राम दीवाली क्यावें ।
सामा मिलिया राम राम जह तह बतलावें ।।
सगी सैण कै राम राम दुख मांही लेवें ।
खाट छाडिया राम, राम मांदा कूं देवें ।।

जो सुत होय कपूत, पिता तोहि गोदी लेवै ।
जो सुत होय कपूत, पिता बहुता सुख देवै ।।
पिता रीस आणै नही, जो सुत होय कपूत ।
रामदास सब जगत कह, एह पिता का सूत ।। १४

पिता दूसरा होय, पृथ्वी परलै हुय जावै ।
पिता दूसरा होय, सूर ऊगण नहि पावै ।।
पिता दूसरा होय, सती सो सत कू त्यागै ।
पिता दूसरा होय, सूरवा रिण तज भागै ।।
पिता दूसरा होय, तो कलि ऊथल होय ।
रामदास मै क्या कहू, वेद भरत है सोय ।। १५

इति श्री कवित्त सम्पूर्णम्

*

सवैया मनहर

राम गाय, वेग ध्याय, मन माय, दूर नहिं जाइयै ।
प्रेम प्रीत, जुग जीत, सूर सत, रूम लिव लाइयै ।।
अगम आय, नीर पाय, ध्यान लाय, एक ही मिलाइये ।
अघाद वात, नावै हात, रामा कहत, गुरू गम्म ही तै पाइये ।। १

झूलणा

भजन किया दुख भाजसी जी, ऐतो सिवर्‌या राम निवाजसी जी ।
रसना मे रस आविया जी, मिसरी सा स्वाद लखाविया जी ।।
गले गदगदा दूजा सुख हिरदा, हिरदा मे राम पधारिया जी ।
हिरदा हलै फुरकाह चलै, मुरली की टेर सुनाविया जी ।।

---

१५ कलि – ससार । ऊथल –उथल पुथल ।
१ फुरकाह – रोमांच ।

राम कह्यो गजराज पलक में प्राण छुडाया ।
आदि अंत सब ठोड, भीड़ भगती की आया ।।
पतित उधारण राम राम सा और न कोई ।
वेद पुराण शास्तर, हम सब मेल्या जोई ।।
अजामेल गिनका तिरी नीच ऊच पद पाय ।
रामदास इक राम बिन सब चौरासी जाय ।। १०

नामदेव कह राम राम रामानंद लीया ।
पीपै अरु रैदास राम सेनै सत पीया ।।
धने सुरसुर राम, राम नापा हर सजना ।
रका बका राम राम सबहन का भजना ।।
दास कबीरै सत्त कह्या, लह्या निकेवल राम ।
रामदास या नाम बिन कहीं नहीं विसराम ।। ११

नानग कहियो राम, राम दादू जन लीया ।
सिध मिलिया सतरूप सहज में सिवरण कीया ।।
हरीदास कह राम राम सतवास धियाया ।
सरब संत कह राम राम गुरुदेव बताया ।।
राम नाम सत सबद है अनत कोट सायद भरै ।
रामदास यो राम है तीनलोक तारै तिरै ।। १२
जती मिलै नहि जोग कूण सतिया सत हालै ।
उडणी बिना न मेघ जगत कैसी विध चालै ।।
सूर न मिलै संग्राम कूण अवछर वर मालै ।
साधु न मिलहै संग कूण मग मुक्ति दिखाव ।।
चार थोक साचा सही थंभा बन्या आकास रै ।
रामदास निरभै भया राम नाम के आसरै ।। १३
जो सुत होय कपूत पिता सोहि रीस न आणै ।
जो सुत होय कपूत पिता सोहि पुत्र हि जाणै ।।

१३ उडणी – बादल । अवछर – अप्सरा ।

जो सुत होय कपूत, पिता तोहि गोदी लेवै ।
जो सुत होय कपूत, पिता बहुता सुख देवै ।।
पिता रीस आणै नही, जो सुत होय कपूत ।
रामदास सब जगत कह, एह पिता का सूत ।। १४

पिता दूसरा होय, पृथ्वी परलै हुय जावै ।
पिता दूसरा होय, सूर ऊगण नहिं पावै ।।
पिता दूसरा होय, सती सो सत कू त्यागै ।
पिता दूसरा होय, सूरवा रिण तज भागै ।।
पिता दूसरा होय, तो कलि ऊथल होय ।
रामदास मै क्या कहू, वेद भरत है सोय ।। १५

इति श्री कवित्त सम्पूर्णम्

*

सवैया मनहर

राम गाय, वेग ध्याय, मन माय, दूर नहिं जाइयै ।
प्रेम प्रीत, जुग जीत, सूर सत, रूम लिव लाइयै ।।
अगम आय, नीर पाय, ध्यान लाय, एक ही मिलाइये ।
अघाद वात, नावै हात, रामा कहत, गुरू गम्म ही तै पाइये ।। १

झूलणा

भजन किया दुख भाजसी जी, ऐतो सिवर्‌या राम निवाजसी जी ।
रसना मे रस आविया जी, मिसरी सा स्वाद लखाविया जी ।।
गले गदगदा दूजा सुख हिरदा, हिरदा मे राम पधारिया जी ।
हिरदा हलै फुरकाह चलै, मुरली की टेर सुनाविया जी ।।

---

१५ कलि – ससार । ऊथल –उथल पुथल ।

१ फुरकाह – रोमाच ।

राम कह्यो गजराज पलक में प्राण छुडाया ।
आदि अंत सब ठोड, भीड़ भगती की आया ॥
पतित उधारण राम राम सा और न कोई ।
बेद पुराण शास्तर, हम सब मेल्या जोई ॥
अजामेल गिनका तिरी नीच ऊच पद पाय ।
रामदास इक राम बिन सब चौरासी जाय ॥ १०

नामदेव कह राम राम रामानंद लीया ।
पीपै अरु रदास राम सैनै सत पीया ॥
धने सुरसुर राम राम नापा हूर सजना ।
रका बका राम, राम सबहुन का भजना ॥
दास कबीर सत्त कह्या, सह्या निकेवल राम ।
रामदास या नाम बिन कहीं नहीं बिसराम ॥ ११

नानग कहियो राम, राम दादू जन लीया ।
सिप मिलिया सतरूप सहज में सिवरण कीया ॥
हरीदास कह राम राम संतदास धियाया ।
सरब संत कह राम राम गुरुदेव बताया ॥
राम नाम सत सबद है अनत कोट सायब भरै ।
रामदास यो राम है, तीनलोक तारै तिरै ॥ १२

जती मिलै नहि जोग कूण सतिया सत हालै ।
उडणी बिना न मेघ जगत कैसी बिध चालै ॥
सूर न मिलै संग्राम कूण अबछर बर मालै ।
साधु न मिलहै संग कूण अग मुक्ति बिसाव ॥
चार थोक साचा सही थंभा बन्या आकास रै ।
रामदास निरभै भया राम नाम के आसरै ॥ १३

जो सुत होय कपूत पिता सोहि रीस न आणै ।
जो सुत होय कपूत पिता सोहि पुत्र हि जाणै ॥

---

१३ उडणी – बादल । अबछर – अप्सरा ।

रामदास चढ त्रुगटी, मिले पूरब घर आद ।
मुख सेती सिवरण किया, हिरदै पाया स्वाद ।। ३

चद्रायण

जग मे ऐसा नाहि, गुरू सा देव रे ।
ज्या दीना निज ज्ञान, भगत का भेव रे ।
नवका[1] नाम चढाय, उतारै शिष्य कू ।
हर हा यू कह रामदास, मिटावे विष कू ।। १

अणभी[2] मेरे माय, पिता सादूल रे ।
सुत है रामादास, मिल्या अस्थूल रे ।
मन पवना उलटाय, पच कू मोडिये ।
हर हा सतगुरु है हरिराम, ताहि सू जोडिये ।। २

क्या ग्रेही क्या त्याग, ऊच क्या नीच रे ।
कहा रक कहा राव, कहा बड नीच रे ।
नवका बैठे सोय, तिरे दरियाव मे ।
हर हा यू कह रामादास, गुरू का भाव में ।। ३

सतगुरु सरणै आय, बहुत फल लीजिये ।
कर सेती करजोड, निवण बहु कीजिये ।
कटे कोट अपराध, ऊपजै ज्ञान रे ।
हर हा यू कह रामादास, अदर लिव ध्यान रे ।। ४

लिव लागी परब्रह्म, तेजपुज नूर रे ।
जहा दरगा दीवाण, मिल्या सत सूर रे ।

---

१ नवका – नौका । २ अणभी – आचार्य श्री की मातेश्वरी । सादूल – आचार्य श्री के पितृश्री । अस्थूल – सूक्ष्म, परब्रह्म ।

नाभि माँहि आये रमा रग लाये, पुन नाद अनाहद बाजिया जी ।
दोउ पुड़ गर्जे बाजा बज नाद नाद माँहि धुन लाविया जी ॥
सासा सोक उठे द्रिग नीर छुटे, तहां नाचो हि नाच नचाविया जी ।
सूरा सत मड्या काल क्रोध छड्या, सब सातूं पयाल छेदिया जी ॥
उलटा फिर नीझर झरे, निज पीठ में वध लगाइये जी ।
आय मेरु छेदे प्रकास भदे तिरवेणी तट मे न्हाइया जी ॥
सिरगुण जीता किया राम मीता, सुन मंडल सहर बसाइये जी ।
रामदास कहै ब्रह्म सुख लहै, इम सिघोह सिष मिलाइये जी ॥ १

कुण्डलिया

हद बेहद का बीच मे, होत एक ररकार ।
सुरत मिली आ सुन्य म जहां ब्रह्म निरकार ॥
जहां ब्रह्म निरकार दिष्ट आकार न आवै ।
मिल सत जहां सूर अखंड निरभै पद पावै ॥
रामदास उण देस में, जहां नहीं ममकार ।
हद बेहद का बीच में होत एक ररकार ॥ १

पांचूं सुवटा उलट के पढ़ एक निज राम ।
अतर में आतुर घणी मना नहीं विसराम ॥
मना नहीं विसराम ध्यान एकै घर लावै ।
चढ़ कर दसवें द्वार अखड निरभय पद पावै ॥
रामदास सो संतजन तजिये सबी बिराम ।
पांचूं सुवटा उलट क, पढ़ एक निज राम ॥ २

सुग सखी सिवरण किया हिरदे पाया स्वाद ।
नाद नाद चेतन भर्‍ पुरै अनाहद नाद ॥
पुर अनाहद नाद नाभ घर नोबत बागी ।
गुम पिछम क द्वार गर जाय टापी लागी ॥

रामदास चढ त्रुगटी, मिले पूरब घर आद ।
मुख सेती सिवरण किया, हिरदै पाया स्वाद ।। ३

चद्रायण

जग मे ऐसा नाहि, गुरू सा देव रे ।
ज्या दीना निज ज्ञान, भगत का भेव रे ।
नवका नाम चढाय, उतारै शिष्य कू ।
हर हा यू कह रामदास, मिटावे विप कू ।। १

अणभी मेरे माय, पिता सादूल रे ।
सुत है रामादास, मिल्या अस्थूल रे ।
मन पवना उलटाय, पच कू मोडिये ।
हर हा सतगुरु है हरिराम, ताहि सू जोडिये ।। २

क्या ग्रेही क्या त्याग, ऊच क्या नीच रे ।
कहा रक कहा राव, कहा बड नीच रे ।
नवका बैठे सोय, तिरे दरियाव मे ।
हर हा यू कह रामादास, गुरू का भाव मे ।। ३

सतगुरु सरणै आय, बहुत फल लीजिये ।
कर सेती करजोड, निवण बहु कीजिये ।
कटे कोट अपराध, ऊपजै ज्ञान रे ।
हर हा यू कह रामादास, अदर लिव ध्यान रे ।। ४

लिव लागी परब्रह्म, तेजपुज नूर रे ।
जहा दरगा दीवाण, मिल्या सत सूर रे ।

---

१ नवका – नौका । २ अणभी – आचार्य श्री की मातेश्वरी । सादूल – आचार्य श्री के पितृश्री । अस्थूल – सूक्ष्म, परब्रह्म ।

पाया अणभै राज, अटल पद परसिया ।
हर हां यूं कह रामादास अखड इद वरसिया ।। ५

चले सुषमणा धार चहू दिस सीररे ।
पीवेगा निज दास, उलट जहां नीर रे ।
चुगे हंस जहां हीर, अगम दरियाव मे ।
हर हां यूं कह रामादास, मिल्या गुरुभाव में ।। ६

राव रंक सुलतान खान सब आय रे ।
नरपुर सुरपुर नाग काल सब खाय रे ।
रहता है इक राम, ताहि सूं लागिये ।
हर हां यूं कह रामादास और सब त्यागिये ।। ७

श्लोक

दया हीन भये कर्मी नाम पुन्य न जानवा ।
साधु सेवा संग नांही, कर्मी कर्म कमायवा ।। १
कर्मं बंधे फिर्त भवता कर्मं बंधे कुनारिका ।
कर्मं बंधे मूर्त बार्त कर्म बंधे मायवा ।। २
कर्मं बांधि जगत छीण कर्म परले आयवा ।
कहत रामा कटत कर्मं राम सूं लिव लायवा ।। ३

*

अथ हरिजस

[१]

राग भैरवी

सतगुरु समा और नहि कोई जहं मिलिया हरि दरसण होई । टेर
सतगुरु विना राम नहि पावे जनम-जनम बहुता दुख पावे । १

१ फिर्त भंवता – चक्कर काटते फिरते हैं। कुनारिका – दुष्ट नारी।

तीनलोक कबहू नहिं छूटै, सतगुरु बिना काल सब लूटे ॥ २

तीनलोक मे काल पसारा, सब जीवन का करे अहारा ॥ ३

जन रामा हरि गुरु तें पाया, दिल भीतर दीदार कराया ॥ ४

[२]

राग विलावल

जाग जाग रे जोगिया, क्यू नी नगर जगावै ।
आठ पहर जागत रहो, सुन्य सहर बसावै ॥ टेर

मुख सेती सिंवरण किया, कठ मे चल आया ।
गदगद लहरा सुषम की, सूता जीव जगाया ॥ १

हिरदे मे हरि आविया, चेतन तन सारा ।
बुध कमल परकासिया, जग सेती न्यारा ॥ २

नाभ कमल मे सतजन, सहजा चल आया ।
नाद अनाहद साभल्या, सुरत रास मडाया ॥ ३

सुरग मरत पाताल मे, एको धुन होई ।
तीनलोक चेतन भया, जाग्या सब कोई ॥ ४

उलट पयाल अकास चढ, उलघे मेरा ।
इला पिंगला सुषमणा, तिरवेणी डेरा ॥ ५

त्रुगटी सू आगे भया, सुन्य माहि समाया ।
सुख-समाधि सहजा लगी, निरभै पद पाया ॥ ६

मन पवना पहुचे नही, बुध जाण नहिं पावे ।
रामदास धिन सतजन, ता घर मे लिव लावे ॥ ७

[३]

राम सिंवर रे प्राणिया, भूलै मत भाई ।
सिंवरण बिन छूटै नही, जम द्वारै जाई ॥ टेर

सब दुनिया भरमी फिरै, तीरथ अरु बरता ।
जैसे पाणी ओस का, कोइ कारज नहिं सरता ॥ १

तपसी त्यागी मुनेसरा पढ़िया अरु पिंडता ।
नाम बिना खाली रहा, सिध उडता अरु गडता ॥ २

क्या आचार विचार है, क्या साधन सेवा ।
सतगुरु बिन पावै नहीं आतम निज देवा ॥ ३

जगत भेस एकोमता एके दिस जाय ।
तत्त नाम आने नहीं फिर फिर गोता खावै ॥ ४

साधु संगति निस दिन करै, एको राम धियावै ।
रामदास निज संतजन निरभै पद पावै ॥ ५

[४]

नाम महातम कहा कहूं कैसे पतित उधारे ।
तुम समरथ हो सांइयां गज गणिका तारे ॥ टेर

सुवो बैठो वृक्ष पर, एको राम उचार ।
सरवण सुण मुख सूं कह्यो, सो वैकूंठ सिधारे ॥ १

ऐक घेलो नाम है, एकै पाप गलाया ।
घाल तराजू तोलिया हरि नाम बधाया ॥ २

पारवती कूं सिव कह्या, अम्मर भई काया ।
कवियो देह सूवो भयो शुकदेव नाम धराया ॥ ३

अजामल ब्राह्मण हुतो बहु करम कमाये ।
पुत्र हेत पुकारतो, सोई मोप सिधाये ॥ ४

अहिल्या गौतम घरणी थी, ब्यभिचार कराये ।
ऋषि श्राप सिला भई, धरणी पर आये ॥ ५

---

१ कवियो – निर्मित हुआ ।

रमता राम पधारिया, जोडी झटकाये ।
रज लागा अहिला भई, ज्या की जहा सिधाये ।। ६

झीवर बहुता पतित था, बहुता जीव मराये ।
चरण लगाया रामजी, वैकूठा सिधाये ।। ७

कीता थोरी बावरी, गनिका अरु सिवरी ।
नाम प्रताप ऊचा भया, जन घाटम उधरी ।। ८

बहुता पतित उधारिया, जाका अत न पारा ।
रामदास की वीनती, सुण सिरजणहारा ।। ९

[५]

भीड पडी जब साध मे, सारे सब काजा ।
विपत पड्या हरि आविया, राखी जन की लाजा ।। टेर

मिनिया आया न्याव मे, दोली अगन लगाई ।
कार कढाई राम की, वाऊ आच न आई ।। १

भारथ मे टीटोडी जो, कीनी हरि कु पुकारा ।
घटा नखाई रामजी, वाका बाल उबारा ।। २

चात्रग बैठो वृक्ष पर, उभै मारन ध्याये ।
करुणा सुनत पधारिया, हरि लीया वचाये ।। ३

ताता ग्राह पसारिया, गजराज बधाये ।
टेर सुनत हरि आविया, वाका फद कटाये ।। ४

विखा मे पडव हुता, आये दरवासा ।
करुना सुनत पधारिया, पूरी जन की आसा ।। ५

४(६) जोडी – खडाऊ । झटकाये – झटकी । ४(८). थोरी बावरी–निम्न जाति विशेष ।
५(१). न्याव–कुभार के कच्चे घडे पकाने का अग्नि-समूह । ५(२) भारथ – महाभारत ।
टीटोडी – पक्षी विशेष [महाभारत मे टिटहरी से सम्बन्धित एक अन्तर्कथा] टिटहरी ।
नखाई – डाल दिया । (५) विखा – विपत्ति । दरवासा – दुर्वासा ।

सब दुनिया भरमी फिरै, तीरथ अरु बरता ।
जैस पाणी ओस का कोइ कारज नहि सरता ॥ १

तपसी त्यागी मुनेसरा पढ़िया अरु पिंडता ।
नाम बिना खाली रह्या, सिध उड़ता अरु गड़ता ॥ २

क्या आचार विचार है, क्या साधन सेवा ।
सतगुरु बिन पावै नहीं आतम निज देवा ॥ ३

जगत भेख एकोमता एके दिस जावै ।
तत्त नाम जाने नहीं फिर फिर गोता खावै ॥ ४

साधु सगति निस दिन कर एको राम धियावै ।
रामदास निज संतजन निरभै पद पावै ॥ ५

[४]

नाम महातम कहा कहूं केते पतित उधारे ।
तुम समरथ हो सांइयां, गज गणिका तारे ॥ टेर

सुवो बठो बृक्ष पर, एको राम उचारै ।
सरवण सुण मुख सूं कह्यो सो बैकूंठ सिधारे ॥ १

ऐके चेलो नाम है, एक पाप घलाया ।
धाम तराजू तोलिया हरि नाम बधाया ॥ २

पारवती कूं सिव कह्या, अम्मर भई काया ।
कदियो ईंड सूवो भयो शुकदेव नाम धराया ॥ ३

अजामल ब्राह्मण हुतो बहु करम कमाये ।
पुत्र हेत पुकारतां, सोई मोष सिधाये ॥ ४

अहिल्या गौतम घरणी थी, व्यभिचार कराये ।
ऋषि श्राप सिला भई धरणी पर पाये ॥ ५

---

१ सांइयां – विर्वासित हुआ ।

परलौ तो जब तब हुवै, उपजै खप जाव ।
साई अणघड देव है, घट वध नहि थावै ।। ४

घट वध तो माया हुवै, साई थाह न कोई ।
वार-पार दीसै नही, ऐसा समरथ सोई ।। ५

आदि अंत मध एक ही, दूजा और न कोई ।
तीनलोक चवदै भवन, व्यापक सब मे होई ।। ६

सबके माई साइया, है सब सू न्यारा ।
दिष्ट-मुष्ट आवै नही, ऐसा करतारा ।। ७

दीसे सोई विनससी, साई दिष्ट न आवै ।
इसा भीण सू भीण है, विरला जन पावै ।। ८

तुम ही मार उबार हौ, तुम तारण हारा ।
भाजण घडण तुम साइया, सब तुमरा सारा ।। ९

तीनलोक को पातसा, मै जिनको बाला ।
ता चरना लागै नही, जम हदा जाला ।। १०

रामदास की वीनती, साभलिये साई ।
आप पधार्‍या का गुण कहा, मेरा दुख न जाई ।। ११

[७]

पतता पावन रामजी, मेरी स्याय करीजै ।
सरणागती जान के मोकू, विपदा दूर हरीजै ।। टेर

त्रिविध ताप की त्रास तें, जिवरा दुख पावै ।
तुम बिन मेरे रामजी, कुण कष्ट मिटावै ।। १

मेरा करम सबला घणा, भाकर सा भारी ।
घेर लियो मुझ प्राण कू, जैसे सिंघ मजारी ।। २

७(टेर) स्याय – सहाय । (१) जिवरा – जीव । (२) भाकर – पर्वत ।

साखा जू हरि सिखकिया, मांहे पखय दीया ।
बलता राम उबारिया जी हरि काढ़'र लीया ॥ ६

मारग मांई सतजन दोनू रमता आये ।
रोही में राकस मिल्यो सीता खोसाये ॥ ७

सीता की बांही गही बन मांहि सिधारे ।
किरपा करन पधारिया वाकू पकड़ पछारे ॥ ८

सिबरी जात की भीलनी रियो भिख करागे ।
गग पलट हुय राघकी, लोही दरसागे ॥ ९

सिवरी पांव पखालतां गगा पलटाय ।
वाका ऐंठा बोर था हरी भोग लगागे ॥ १०

ऊध मुख ग्रभवास में कीनी प्रतिपाला ।
जठरा अगन में राखिया, ऐसा दीन-दयाला ॥ ११

दुख पड़ियो जब साध मे चूका कबहू नांही ।
रामदास की बीनती सांभलिगे सांई ॥ १२

[६]

तुम माया का गुण कहा, हरिजन दुख पावै ।
दुनियां मे हासी हुय बिडद तुमारो जाय ॥ टेर

ब्रह्म एक चेतन सदा, तातें भई माया ।
माया ब्रह्म संजोग हुय, सब जग उपजाया ॥ १

ब्रह्म आप चेतन सदा माया जड़ होई ।
चेतन मिल चेतन भया जड़ता सब खोई ॥ २

सांई मेरे सीस पर, दूजा और न कोय ।
जो दूजा सांई कहू सो जग परस होय ॥ ३

६(१) पखालतां – प्रक्षालन करते समय । ऐंठा – उच्छिष्ट ।

[९]

राग गूढ़ विलावल

सतगुरु समा और नहिं देव, तन मन अरप करू मै सेव ॥ टेर
अनत जुगा के विछरे जीव, सतगुरु सहज मिलाये पीव ॥ १
भव-सागर मे डूबत राखै, अमृत वैण अमर पद आखै ॥ २
गुरु की महिमा कहे सब सत, तासू मिलै निकेवल तत ॥ ३
जन रामा सतगुरु के बाल, ताकी सरण मिटे भव काल ॥ ४

[१०]

सरब धरम सतगुरु की लार, तासू मिलै ब्रह्म दीदार ॥ टेर
जोग जिग्गं जप तप जो करे, सतगुरु बिन कारज नहि सरै ॥ १
कोटि तीरथ जो न्हावै तन्न, सतगुरु बिन सुलझै नहिं मन्न ॥ २
सतगुरु ब्रह्म एक ही होई, ता बिच भिन्न भेद नहिं कोई ॥ ३
जनरामा सतगुरु का दास, छोडी और आन की आस ॥ ४

[११]

जीव जिंद द्यू वारी हो, वाकै दरसन की बलिहारी हो ॥ टेर
धिन साधु जग माही हो, तीन-ताप तन नाही हो ॥ १
साधु हमारे आये हो, तन की तपत बुझाये हो ॥ २
साधु चरण हू जीया हो, ता सग अमृत पीया हो ॥ ३
साधु चरण का चेरा हो, साधू साहिब मेरा हो ॥ ४
साधु हमारे देवा हो, जन रामा कर सेवा हो ॥ ५

[१२]

हिरदै एक सतगुरु धार, और भरम सब दूर विडार ॥ टेर
सतगुरु समा सगा नहिं कोई, अनत कोटि सायद कहै सोई ॥ १

९(४) भव काल – ससार का दुख। ११ (टेर) जिंद – आयु। द्यू – देता हू।

मैं दुष्टी इक पापिया, सुण साचा सामी ।
अवसो चाकर जान के मेटो मुझ खामी ॥ ३

आन देव आराधतां, बिपता मिट जाव ।
तुमही को बल रामजी, सेवग दुख पावे ॥ ४

दीन दुखी कीजे नहीं, सुण आप मुरारी ।
रामदास की बीनती, राखो लाज हमारी ॥ ५

[८]

किरपा कीज बापजी, वेगा वाहर आवो ।
बालक मांही दुख घणो, ततकाल छुड़ावो ॥ टेर

बालक में बिपता पड़े बहुता दुख पावे ।
सब दुनिया हासी करे, बिड़द पिता को जाय ॥ १

बालक जो दुखिया हुय मात पिता कूं पुकारे ।
अपनो जायो जान के बिपता दूर बिडारे ॥ २

कामी क्रोधी लालची तोही बालक तेरा ।
बिड़द तुमारो जावसी कया जाये मेरा ॥ ३

सेवग तो दुखिया हुय स्वामी आण छुडावे ।
अपना जन के कारण, औतार धरावे ॥ ४

भीड़ पड़ी गजराज में, प्यादा हुय आया ।
फन्द काट दुख मेटिया ततकाल छुडाया ॥ ५

साई वेग पधारज्यो कीजे वेग दमेला ।
बालक मांही दुख घणो मारे ह्वे पेला ॥ ६

रामदास की बीनती सांभलिये बावा ।
बालक चरणां राखिये मेटो जुग हावा ॥ ७

---

(१) सामी – धनी । ८(७) जुग हावा – जनम मरण कौ चक्र ।

[१४]

वापजी विडद तुमारो जोवौ ।
तुम हो पिता पुत्र मै तेरो, करम हमारा खोवो ॥ टेर
बालक दुष्ट भिष्ट जो होई, काम माहि मतवाला ।
तोहि पिता रिजक नहिं भूलै, ऐसा दीन-दयाला ॥ १
बालक विषै करम मे माता, तोहि पिता नहि मानै ।
जायो जान करै प्रतपाला, अपनौ विडद पिछानै ॥ २
बालक जाय सरप कू पकडै, पिता दौड उर लेवे ।
आठ पहौर मे रिछक बाबा, मन मान्या सुख देवै ॥ ३
सब सता का कारज सारै, भीड पडी जहा आयो ।
मै तो दुखी बहोत दुख पाऊ, अजहु क्यू नहिं ध्यायो ॥ ४
बालक विषय करम मे राता, बाध करम का भारा ।
तोही पिता रीस नहिं आणै, ऐसे कह ससारा ॥ ५
मेरे बुरा जगत के हासो, विडद तुम्हारा जावै ।
तुम समरथ हो अकरण कारण, दालद दूर गमावै ॥ ६
तुमरे ख्याल उधरणा मेरा, पिता गोद मे लेवो ।
तीनलोक मे रिछक बाबा, भगति दान मोहि देवो ॥ ७
भगति दान का ऐह सदेसा, रिध-सिध चरणादासी ।
रूम-रूम मे व्यापक रामा, सदा एक सुख-रासी ॥ ८
किरपा कर सब सूज बनाई, रिजक काहि नहिं देवो ।
दास रामियो बालक तेरो, उलट आप में लेवो ॥ ९

[१५]

मन रे करो गुरा की सेव, उलट परसो देव ॥ टर
अज्ञान मे मद मोह माता, नामसू नहिं नेह ।
एक सत की सगत बिना, होयगा सब खेह ॥ १

दूजा सगा साधु जुग मांही राम बिना कछु भासै नांही ॥ २
तीजा सगा है रामदयाल, ताकी सरन मिटै भव-काल ॥ ३
मात पिता कुटम परवार ताकी संग जाय जम द्वार ॥ ४
राम विना चौरासी धार काल गिरास वारमवार ॥ ५
माता पिता सिरजणहार, रामदास मिल मोष-दवार ॥ ६

[११]

राग आसावरी

राम राम ऐसी किरपा कीज, उलट आप में लीज ॥ टेर
मैं पतित करमां का भारा, करमां थाह न कोई ।
तुम हो राम पतित के पावन, सबके तारो सोई ॥ १
मैं हूं कुचील करमां हीणो, ओछी बुध हमारी ।
तुम हो राम सुखां के सागर तारो मोहि मुरारी ॥ २
तुम हो दयाल दया के सागर बिड़द तुम्हारो भारी ।
आगे पतित अनेक उधारे, अबकी बर हमारी ॥ ३
और मांड मैं सबही सोधी, हमसा बुरा न कोई ।
तातै सरण तुमारी आयो सुण तारण की सोई ॥ ४
तीन लोक मैं सबही फिरियो, हम कूं कोई न राखै ।
तुमरी सरण अनेक उधरिया साधु सास्तर भाखै ॥ ५
धरम कलण मैं सबही धसिया काढ़ पकड़ मेरी बांही ।
चरण गह्यां की लाज वहीजे उलट मिलावो मांही ॥ ६
रामदास का किया न देखो तुम हो धनी कीज ।
अंतर मांहो प्रगटो जामी सनमुख दरसन दीज ॥ ७

११(२) कुचील – कुकर्मी। (४) मांड – संसार। (६) कलण – कीचड़।

[१८]

भुरकी ले जन प्यारा रे, सोई मित्र हमारा रे । टेर
इन भुरकी सू अनेक उधरिया, फेर अनत कू तारे रे ।
सेसनाग या भुरकी लीनी, मुख हजार पुकारे रे ।। १
या भुरकी सनकादिक लीनी, ध्रू नारद उपदेसा रे ।
ब्रह्मा विष्णू शिव पारबती, उलट मिल्या सुन देसा रे ।। २
या भुरकी प्रह्लादे लीनी, याही जनक सुखदेवा रे ।
नामदेव इन तै हरि मोह्या, मिल्या निरजन देवा रे ।। ३
बालमीत के याही भुरकी, पडवा आण न खाई रे ।
पूर पचायण परगट कीनी, सबही कू पत आई रे ।। ४
दास कबीर या भुरकी लीनी, रामानंद ले आया रे ।
गुरा सहत गुरु भाई मोह्या, सब कू भेद बताया रे ।। ५
या भुरकी वूढण ले आया, दादूदास न खाई रे ।
नानग हरीदास या लीनी, सतदास उर लाई रे ।। ६
या भुरकी करता कू मोहे, जे कोइ उर मे धारे रे ।
जामण मरण रोग दोय मेटे, सबही काम सुधारे रे ।। ७
राम नाम की भुरकी मेरे, सब सता कू मोह्या रे ।
जिण या भुरकी नाहि पिछाणी, यू ही जनम विगोया रे ।। ८
रामदास या भुरकी लीनी, सतगुरु के परतापा रे ।
सो लेवै ताही मै डारू, मिलै निरजण आपा रे ।। ९

[१९]

मत्र सजीवन हो पायो, मेरै जिवडा की जीवन हो । टेर
मत्र सजीवन सतगुरु दीया, हम सनमुख हुय लीया हो ।
रटिया मत्र अत्र के माही, रूम-रूम रस पीया हो ।। १

१८(४) पूर पचायण – पाचजन्य शख वजा कर । १८(६) वूढ़ण – श्री दादूजी के गुरु ।

साध सबही बस मेल, कुपस मुरख जाय ।
औघट घाटी लूट लेसी, सरन कू जम खाय ।। २

वेद बावर भखी भाडी हाफ तीनू देस ।
पारधी जमकाल लूटै मान फररा सेस ।। ३

सोड बावर डाह फररा दौड बाहिर भाय ।
रामिया गुरुज्ञान लागा उलट सहज समाय ।। ४

[१६]

प्रभुजी हमसा बुरा न कोई, अब राखो सरण मोई । टेर

केता अकरम करम कमाया दम-दम का अपराधी ।
पवडै चोर करी मैं चोरी कूडो वाद-विवादी ।। १

वहांती कौल यहा कर आयो यह भूलो भवहारी ।
सील सतोष साच नहिं मेर, किस विध पार उतारी ।। २

हमसा केता पतित उधारया, तुम समरथ सुखदाई ।
दास रामियो बालक तेरो कृपा करो रघुराई ।। ३

[१७]

प्रभुजी मन धरज्यो नहिं लाग जाय मिलै विष आगै । टेर

मनवा पलट अगम नहिं आवै विषै विकलता डोल ।
पल में रूप करै बहुतेरा मैं तैं लीया बोलै ।। १

छिन में दौड पताला जाव छिन आकासां पाड ।
मनवो मरी सीख न मानै घर में धुरड़ा पाड ।। २

दास रामियो बालक तेरो पीव मिलन कू हलफै ।
मो दुरबल को जोर न कोई मन इमी दिस हलफ ।। ३

१६(१) पवडै – पग पग में। कूडो – झूठो। १७(२) धुरड़ा – दीवार तोड़ना।
(३) हलफै – हुलसित होता है।

[१८]

भुरकी ले जन प्यारा रे, सोई मित्र हमारा रे। टेर
इन भुरकी सू अनेक उधरिया, फेर अनत कू तारे रे।
सेसनाग या भुरकी लीनी, मुख हजार पुकारे रे ॥ १
या भुरकी सनकादिक लीनी, ध्रू नारद उपदेसा रे।
ब्रह्मा विष्णू शिव पारबती, उलट मिल्या सुन देसा रे ॥ २
या भुरकी प्रह्लादे लीनी, याही जनक सुखदेवा रे।
नामदेव इन तै हरि मोह्या, मिल्या निरजन देवा रे ॥ ३
बालमीत के याही भुरकी, पडवा आरण न खाई रे।
पूर पचायण परगट कीनी, सबही कू पत आई रे ॥ ४
दास कबीर या भुरकी लीनी, रामानद ले आया रे।
गुरा सहत गुरु भाई मोह्या, सब कू भेद बताया रे ॥ ५
या भुरकी वूढण ले आया, दादूदास न खाई रे।
नानग हरीदास या लीनी, सतदास उर लाई रे ॥ ६
या भुरकी करता कू मोहे, जे कोइ उर मे धारे रे।
जामरा मरण रोग दोय मेटे, सबही काम सुधारे रे ॥ ७
राम नाम की भुरकी मेरे, सब सता कू मोह्या रे।
जिण या भुरकी नाहि पिछाणी, यू ही जनम विगोया रे ॥ ८
रामदास या भुरकी लीनी, सतगुरु के परतापा रे।
सो लेवै ताही मै डारू, मिलै निरजण आपा रे ॥ ९

[१९]

मत्र सजीवन हो पायो, मेरै जिवडा की जीवन हो। टेर
मत्र सजीवन सतगुरु दीया, हम सनमुख हुय लीया हो।
रटिया मत्र अत्र के माही, रूम-रूम रस पीया हो ॥ १

१८(४) **पूर पचायण** – पाचजन्य शख बजा कर। १८(६) **वूढण** – श्री दादूजी के गुरु।

चलिया मन्त्र अगम घर आया परम सुख जहां पूगा हो ।
रजनी मिटी भरम सब भागा, अनत भाण जहां ऊगा हो ॥ २

जामण-मरण रोग नहि व्यापे काल न पहुंचे आई हो ।
दावा छोड भया निरदावे ऐसा मन्त्र पढ़ाई हो ॥ ३

सिव सिनकादिक सेस अराध ब्रह्मा विष्णु धियावे हो ।
सिध साधक जूना जोगेसर रट रट पार न पावे हो ॥ ४

पारबती कूं मन्त्र पढ़ायो, अमर भई उण काया हो ।
गदियो इंड भयो संजीवन, सुखदेव नाम धराया हो ॥ ५

चौबीस तिथंकर राम अराध्यो केवल मांहि समाया हो ।
निरभै भया निरंजन परस्या, भव-जल बहुरि न आया हो ॥ ६

अनत कोट संतां यो पायो, वैकूंठा में वासा हो ।
चौथा पद में आय समाया, छोड जगत की आसा हो । ७

यो ही मन्त्र अलख अविनासी बिनस कभू नहि जावे हो ।
जो विणसै जो माया इन की मूरख मांहि बधावे हो ॥ ८

मन्त्र सजीवन जीवन जानै सो परसा मे हूवा हो ।
जिन यो मन्त्र गुरां मुख लीयो अमर लोक कूं चूवा हो ॥ ९

और जगत की कूण चलावे नर सुर नाग न जानै हो ।
रामदास निज साधू जान अमर लोक सुख माण हो ॥ १०

[२]

अरज मेरी मान हो महाराज अनत सुधारण काज । टेर

तुम समरथ आदी हो देवा, तुम सा और न कोय ।
अनत कोट का कारज सारे वेद भरत है सोय ॥ १

तुमरा किया कोईयन मेटै तुम हो आप अलेख ।
तुम हो जसो कीजियो मेरा किया न देख ॥ २

भाजण घड़ण अपार अकरण, सबका करता राम ।
रामदास की वीनती, सकल सुधारण काम ॥ ३

[२१]

भजन करो चित लाय, रामजी ऐसो रे भाई । टेर
रामदेव कै घर नही हो, घर विना दुख पाय ।
चेजारा हरिजी भया, सोना की छान छवाय ॥ १
दीनी कबीरै दोवटी हो, बैठो देवल जाय ।
नारायण नायक भया, बालद ले घर आय ॥ २
धनै बीज सबही दियो, बीज विना हल वाय ।
ठाला ऊबरा काढिया, साई निपायो स्वाय ॥ ३
भूख घणी रैदास के, पारस दीनो लाय ।
पारस तो लीनो नही, पाच मौर नित पाय ॥ ४
सेवा करता साध की, राजा रे अति रीस ।
नारायण नाई भया, खिजमत की जगदीस ॥ ५
तीन सै साठ रुपईया, साह माग्या तीन-लाख ।
सवा क्रोड साई भर्या, रखी मलूका(नी)साख ॥ ६
मीरा कू विष भेजियो, मुख मे दीयो डार ।
जहर पलट अमृत भयो, साईं सुणी पुकार ॥ ७
अनत कोट जन तारिया, सब की करी सिहाय ।
मै दालद्री रामियो, (मेरा) दालद दूर भगाय ॥ ८

[२२]

देवाजी सुणियो अरज हमारी ।
जो हरिजन की न्याय न होई, जावै भगति तुमारी ॥ टेर

२१(१). चेजारा – भवन बनाने वाला । (२) दोवटी – धोती । (३) ठाला ऊबरा – बिना धान के खाली हल चलाना । स्वाय – सवाई ।

दीन-दयाल दया के सागर, बिड़द तुमारो जोवो ।
तेरे जन सु द्वेष चलाव, जड़ा-मूल सूं खोवो ॥ १

जाण अजाण जहर कूं पीवे सो प्राणी मर जाई ।
अमृत जाण अजाण हु पीव, सांई अम्मर थाई ॥ २

तज वकूंठ भूमण्डल आये भगति हेत अवतारा ।
अनत कोटि की स्याय कराई मारे दैत अपारा ॥ ३

जहं तहं भीड़ परी संतन में, जहां तहां हरि ध्याये ।
भगति हेत आपहि दुख पाव जन की करत सिहाये ॥ ४

भगति करावण आपहि सांई जन सूं भगति न होई ।
जो अब पिता पुत्र कूं त्याग भगति करे नहि कोई ॥ ५

पूरण ब्रह्म अलख अविनासी तीन गुणां सू न्यारा ।
जहं जहं भीड़ परी भगतन में, जहां धरिया अवतारा ॥ ६

चेतन ब्रह्म किया सब चेतन अनत धरे अवतारा ।
जैसो काम कला लै तैसी, जसा कारज सारा ॥ ७

भगति हेत अवतार धरत है, निरगुण ब्रह्म निआरा ।
ऐसी भगति राम कूं प्यारी, सुरगुण मांहि पसारा ॥ ८

महमाया सब बालक जाया, सब कं पोष दिराये ।
भगति करण पदा कियो माया में उलझाये ॥ ९

भगति करण कूं सत मलिया पिता पुत्र पठाये ।
जे कोई होय भगति को द्रोही घर अवतार मराये ॥ १०

गरम मार भगति कूं पापे दुष्ट नरक में दीना ।
रामदास राम सूं मिलिया पिता आप म लीना ॥ ११

[२१]

मन रा तीरथ न्हायल कया भटकण सूं काम ।
अड़सठ तीरथ मवही कीया, एक मला मुख राम ॥ टेर

तीन सौ पचीस

मन माही मथुरा बसै, दिल द्वारिका जान ।
काया कासी न्हायलै, आठू पहर सिनान ॥ १

बारे सोलै सहेलड़ी, मिल कर न्हावण जाय ।
तिरबेणी के घाट मे, नित्त सिनान कराय ॥ २

पाचू हि पाखर पहर के, चढै पचीसू जाय ।
नौबत बाजे गैब की, मार लियो अहकार ॥ ३

हद छाडी बेहद गया, अगम रह्या लिव लाय ।
जीव सीव भेला भया, सुन्न मे रह्या समाय ॥ ४

दसवे देवल परसिया, जागी अदर जोत ।
रामदास जह रम रह्या, पाप पुन नहि छोत ॥ ५

[२४]

राम-राय तुम ऐसी कीजै ।
औगुण मेरा उर नहि आणो, विपता दूर हरीजै ॥ टेर

तुम हो राम सुखा के सागर, सुख मे दुख क्यू होई ।
अनत कोट की सायद बोलै, विड़द तुमारो जोई ॥ १

तुमरी सरण करम नहि लागै, सुणो निरजण राया ।
सुख का सागर राम कहीजो, वेद पुराणा गाया ॥ २

रामदास की एह अरज है, सुख का सागर साई ।
मेरा औगुण मेटो बाबा, मै तेरी सरणाई ॥ ३

[२५]

मन रे गुरा का उपदेस, पाया आदू देस ॥ टेर

पथ विन एक पथ पाया, पाव विन चल जाय ।
पथ विन एक उड्या पखी, अगम बैठ्या आय ॥ १

२३(२) सहेलडी – सखिया । (३) पाखर – युद्ध के वस्त्र, कवच आदि ।

नीर बिन दरियाव भरिया, वार-पार न कोय ।
पंख बिन हंस चुगे मोती, पिंड पख न होय ॥ २
पेड़ बिन एक वृक्ष देख्या डाल पात न फूल ।
जा बिच हंसा केल करत है, जगत सबही भूल ॥ ३
नींव बिन एक देवल देख्या, देह बिन एक देव ।
करां बिन जहां बजे बाजा सुरत कर है सेव ॥ ४
अगम देस में गैब चानणा, दिवस रात न होय ।
रामदास जहां जाय पहुता, दुबध्या रही न कोय ॥ ५

[१९]

चालो मन उन देस में जहां संतां का वास ।
जहां पहुंचा निरभै हुवै, लगे न जम की त्रास ॥ टेर
पूरब दिस सूं चालिया, कठ किया परकास ।
उर भीतर वासा लिया मगन भया निज दास ॥ १
अरध कमल परकासिया, खुली बंक की बाट ।
बंक-नाल हुय चालिया, बस्या पिछम के घाट ॥ २
मरु-डंड उल्लंघिया, उरध-कमल परकास ।
चंद सूर मेला भया गगन किया जाय वास ॥ ३
पांच पचीस सूं एक हुय मिल्या त्रुगटी मांय ।
अनहद बाजा घुर रह्या हंस मिल्या जहां जाय ॥ ४
हंस मिल रह्या परहंस में, लागी सुन्य समाधि ।
रामदास निरभै भया, मिल्या पूरब घर आदि ॥ ५

[२०]

चलो संतां जहां जइये गुरु गोविंद के पास ।
दरसण सूं सब दुख मिटे, हिरदै भगति परकास ॥ टेर

१९(२) बंक – बांक । (५) गैब चानणा – ब्रह्म का प्रकाश ।

श्रवणा सुणिया सत्तगुरु, मन मे उठ्या हुलास ।
सुनत समा पैंडे चल्या, अति दरसन की प्यास ।। १

दरसण सू दुवध्या मिटै, नैणा वध्या सनेह ।
रूम-रूम आनद भया, दूधा वूठा मेह ।। २

परदिपणा डडोत कर, चरण नवाये सीस ।
किरपा कर गुरुदेवजी, नाम किया वगसीस ।। ३

मुख सेती सिंवरण किया, कठ जगाया जीव ।
हिरदै हिल-मिल होत है, नाभि पधारे पीव ।। ४

सप्त पयालू छेद कर, उलट पिछम के देस ।
अरध-उरध परकासिया, अगम किया परवेस ।। ५

अगम देस मे रम रह्या, गगन रह्या गिणणाय ।
तिरवेणी के तखत पर, हस विराज्या जाय ।। ६

गढ चढिया नौबत घुरी, थप्या ब्रह्म का राज ।
तिहूलोक कायम किया, मिल्या राम महाराज ।। ७

दसवे देवल परसिया, अरस-परस दीदार ।
सुरत मिली जाय ब्रह्म सू, ब्रह्म आप निरकार ।। ८

तज अकार निरकार मिल, ब्रह्म निरजनराय ।
रामदास केवल मिल्या, सुख मे रह्या समाय ।। ९

[२८]

राग सारङ्ग

सतो सचो करो हरिनाम को ।
इस सचा सू बहु सुख पावै, आदि अत यो काम को । टेर

दुनिया सचै गरथ भडारा, सोना रूपा दाम रे ।
सचो रह्यो धूल के माही, जीव गयो बेकाम रे ।। १

जगत भप माया के कारण पच मर दिन रात रे ।
अत बेर नागा हुय चाले ना कोई संग न साथ रे ॥ २

दुनियां करे मान की सेवा दस दिन सरसा थाम रे ।
अतकाल आडा नहि आवे, जम्म पकड़ ले जाय रे ॥ ३

सांख्य योग नवधा भष तिरगुन, सुरग लोक लग जाय रे ।
या सूं नहीं ब्रह्म सू मला, जनम धरे धर आय रे ॥ ४

जोग जज्ञ जप-तप व्रत दानां ऐ सब फूल कहाय रे ।
फूल देख दुनियां लोभाणी अतकाल कुमलाय रे ॥ ५

नाम बिना सघा सब झूठा फास फूस हुय जाय रे ।
रामदास इक राम रटीज अमर-लोक लेजाय रे ॥ ६

[१९]

सतो सुणो सघा रो विवेक रे ।
इण संघा सू अनेक उधरिया, पाया पुरस अलेख रे । टेर

ब्रह्मा विष्णु सप भव शंकर रहे राम लिव लाय रे ।
सनक मत्र पा करता पहिये जहां यो सगो पाय रे ॥ १

गोपीचंद भरथरी सच्यो, सच्यो गोरखनाथ रे ।
नव माया में यो ही मारी, मिल्या निरजण नाथ रे ॥ २

चोवीस तिथकर यो ही सच्यो केवल मिलिया जाय रे ।
बहुरि जनम धरण नहि आया मुग में जाय समाय रे ॥ ३

सनकादिक अरु सप्त रिषस्वर, नव योगेश्वर पाय रे ।
जनक विदेह र ध्रू प्रह्लादा रया अलख मठ छाय रे ॥ ४

पाडू हरिचंद मयो विभीषण निहच राज ममाय रे ।
सुखदेव व्यास परीक्षित राजा मिल्या मुगति में जाय रे ॥ ५

राज करता अनेक उधरिया गुणी गुरां की सीख रे ।
दुरयासा ऋषि उलट मिलाया भगत हेम अमरीख रे ॥ ६

वालमीक अरु गणिका सिवरी, रका वंका दास रे।
भीवर कुटम सहित हो तार्‌या, राख लिया हरि पास रे ॥ ७

नामदेव अरु रामान्‌दा, पीपा धना कवीर रे।
सेना सजना अरु रैदासा, मिलिया सुख की सीर रे ॥ ८

दादू जाय दीन सू मिलिया, सिष साखा वहो लार रे।
नानग हरीदास ततवेता, परसा खोजी पार रे ॥ ९

दास मुरार मलूका ज्ञानी, सतदास दरियाव रे।
किसनदास सुखरामा नानग, मिल्या ब्रह्म के भाव रे ॥ १०

अनत-कोट साधूजन पहुता, जाका अत न पार रे।
केता पतित पारगत हूवा, मिल्या मुगत के द्वार रे ॥ ११

जन हरिराम चरण हम लागा, सब सता का दास रे।
रामदास गुरु गोविंद सरणै, पूरी मन की आस रे ॥ १२

[३०]

राग कल्याण

आरती करू गुरु हरिराम देवा, ब्रह्म विलास अगम घर भेवा। टेर
आये सत ब्रह्म व्यौपारी, राम नाम बिणजै बहु भारी ॥ १
ज्ञान-ध्यान अणभै अणरागी, रूम-रूम मे झालर बागी ॥ २
इला पिंगला सुषमणा भोगी, अटल अमर अनभै गत जोगी ॥ ३
सील सतोष साच सतधारी, सता समाध सुन्य सू यारी ॥ ४
आय रामियो सरण तुमारी, पल-पल ऊपर प्राण अवारी ॥ ५

[३१]

ऐसी आरती अतर कीजै, अतर कीया जुगे-जुग जीजै। टेर
पहली आरती मुख सू करावौ, सास-उसास राम रस पावौ ॥ १
दूसरी आरती हिरदै माही, सरवन मुरली टेर सुनाई ॥ २

तीसरी आरती नाम मझारा, रूम-रूम झालर झणकारा ॥ ३
चौथी आरती त्रुगटी ध्याना अनहद बाजे उपज ज्ञाना ॥ ४
पांचमी आरती सुन्य समाई सता समाध अखंड लिव लाई ॥ ५
पांचूं आरती जन कोइ साजे, रामदास के सीस विराजे ॥ ६

[१२]

ऐसी आरती जन कोई साज भव दुख भंजन राम निवाज । टेर
सास-उसास राम रस पीजे हिरदे मांहि उजाला कीजे ॥ १
नाभि-कमल में प्राण विराजे झालर ताल सख धुन बाज ॥ २
अरध-उरध बिच झिलमिल जोती, तिरवेणी बिच ओतर पोती ॥ ३
बिना नींव एक देवल दस्या देह बिना एक देव अलेखा ॥ ४
रामदास यह सेवा लागा, जुरा-मरण का भय डर भागा ॥ ५

[१३]

निरगुण आरती राम कूं भावे सत-सबद नित सतगु ध्यावे । टेर
प्रथम ज्ञान गुरु कान सुनाया सतगुरु सेती सीस नवाया ॥ १
दुतीये रसना राम धियाया, कंठ-कंवल में प्रेम मिलाया ॥ २
त्रितीये नाम हृदे घर आया, दिल भीतर दीपक दरसाया ॥ ३
चौथे परम गुरु नाभि पधारे, रूम-रूम में मंगल उचारे ॥ ४
उलटा अजपा जाप जपाया हद कूं जीत बेहद मे आया ॥ ५
अनहद नाद अखंडत बाजे रामदास जहां आरती साजे ॥ ६

[१४]

राग कनड़ा

राम सरीसा और न कोई जिन सिवरयां सुख पावे सोई । टेर
राम नाम सूं अनेक उधरिया, अनत-कोट का कारज सरिया ॥ १
जो हरि सेती लावे प्रीता राम-नाम ताही का मींता ॥ २

१२(१) ओतर पोती – ओतप्रोत ।

राम नाम जिनही जिन लीया , जिन-जिन वास व्रह्म मे कीया ।। ३
रामदास इक राम धियाया , परम-जोति के माहि समाया ।। ४

[३५]

ऐसी जडी मोय सतगुरु दीनी , तन-मन अरप अतर मे लीनी । टेर
श्रवणा सुनत बहुत सुख पाया , निरखत जडी नैण खुल आया ।। १
सूघत मगन भया मन मेरा , चाखत मिटग्या भरम अधेरा ।। २
पीवत जडी हृदा मे ऊगी , चलत लहर नाभि जाय पूगी ।। ३
रूम-रूम मे सरव वियापी , उलटी जाय अगम घर थापी ।। ४
उर-अनर एको धुन लागी , इला पिंगला सुपमण जागी ।। ५
मुगत-द्वार मे ाण समाया , जनम-मरण दोय रोग मिटाया ।। ६
व्रह्मादिक सनकादिक जाणै , राम जडी सिव सेस वखाणै ।। ७
अनत कोट सता या पाई , रामदास गुरुदेव बताई ।। ८

[३६]

मेरे राम रसायण बूटी , पीवत रोग गया सब तूटी । टेर
मुख तै भ्रम गया सव भागी , कठ मे विषै-वासना त्यागी ।। १
हिरदा माहि किया परकासा , मनवा मूवा हुवा निज दासा ।। २
नाभ-कमल मे आण समाये , पाच सरपणी पकड मराये ।। ३
उलटा चढ्या पिछम की वाटी , कलह कलपना ले भुय दाटी ।। ४
सूरा सत मेरु मे मडिया , ढाया काल करम सब छडिया ।। ५
चढ आकासा त्रुगटी न्हाया , सासा सोग'रु रोग गमाया ।। ६
त्रिगुण ताप मोह दुख गलिया , काम क्रोध सहजा पर जलिया ।। ७
नव तत पाच पचीसू मूवा , रामदास पी निरभै हूवा ।। ८

[३७]

आवौ राम हमारै माही , तुम आया बिन जीऊ नाही । टेर

३६(४) भुय दाटी – धरती मे दवा दिया।

किरपा करो करम सब कापो आदि अंत अपनो कर थापो ।। १
तुम बिन निसदिन जाय अकाजा तुम आवो त्रिभुवनपति राजा ।। २
तीनूं लोक तुमारे सार तुम तारो जाकू कुण मारे ।। ३
तुम बिन जीव बहुत दुखियारी मो अपंग की लग न कारी ।। ४
मो अबला को ओर न कोई , तुम समरथ करस्यो ज्यूं होई ।। ५
मैं अपती बहु अपत कमाया अब तो शरण तुमारी आया ।। ६
रामदास डूबां डर नांही बिड़द तुमारो लाज सांई ।। ७

[१८]

हरि पारस सतगुरु सें पाया दिल की गांठी बांध घुलाया । टेर
पाया सें सुख पाया भाई अनंत जनम की भूख गमाई ।। १
हम तो होता छुरी कसाई , पारस परस सोलमो थाई ।। २
मल-संग बिचे कसर नहिं काई आदि-अंत कछु पलट न जाई ।। ३
जेती धातु हमारे आवै परस्या तें कंचन हुय जावै ।। ४
रामदास कं कमी न काई , कंचन खान खुली घट मांई ।। ५

[१९]

भीड़ पड़्यां आपहि हरि ध्याये संतन का दुख तुरत मिटाये । टेर
राम राय देवन का देवा ब्रह्मा विष्णु शेष शिव सेवा ।। १
तुम हो अगम गम्म नहीं कोई , नर सुर नाग न जानें सोई ।। २
सब संतां का कारज कीया दुख मिटाय अपना सुख दीया ।। ३
सुख के सागर राम कहावो बिड़द तुमारो तुमहि सुहावो ।। ४
नामदेव की गऊ जिवाई , देवल फेर्‌या दूध पिलाई ।। ५
महलां मांही भाव लगाये चुगड़ा-चुगड़ो बहु सुख पाये ।। ६
पातसाह कूं चरण लगाये , बाबा जिव को दुख मिटाये ।। ७

१७(४) कारी – वैद्य उपचार। (६) अपती – पापी।
१८(२) सोलमो – उत्तम स्वर्ण। १९(६) चुगड़ा-चुगड़ी – बालक-बालिकायें।

सूकी सेज गगा सू लाये, बहल जिवायौ छान छवाये ॥ ८
तिलोचद घर खुद हरि आये, बारै मास टहल करवाये ॥ ९
दास कबीर घर बालद लाये, माथै बाध'रु द्रव पहुचाये ॥ १०
मजधार कबीर कूं दीया, साईं पकड काढ उर लीया ॥ ११
आसपास ले पावक दीया, सीतल रूपी साईं कीया ॥ १२
कबीर ऊपर हाथी लाया, सिंघ रूप हुय केसव आया ॥ १३
पातसाह आय चरना लागा, वाकै मन का धोखा भागा ॥ १४
भगति रूप हुय पारस दीया, अगीकार रैंदास न कीया ॥ १५
सुपनै माहि वीनती कीनी, पाच मोर दिनो-दिन दीनी ॥ १६
सेना के घर हरिजन आये, सेवा करत राज रीसाये ॥ १७
सेना को हरि रूप धराये, राजा की खिजमत करवाये ॥ १८
सता के मुख बीज बुहाये, खेती माहि नाज निपजाये ॥ १९
बिन बाही बेला उगवाये, तूबा मे गेहू निपजाये ॥ २०
पीपा कू द्वारिका दिखाये, छापा दे अरु राम पठाये ॥ २१
परसा को पेडो पूठाये, ऊदा कू परचौ दिखराये ॥ २२
मीरा बाई कू विष दीयो, हिरदै आय आप हर लीयो ॥ २३
दास मलूक को रूप धराये, दामोदर को द्रब चुकायो ॥ २४
दास मलूक घर ऐधी आये, दिल्ली नगर कू उतर सिधाये ॥ २५
गैब कि छडिया तुरत लगाये, दे परमोध'रु दिषण पठाये ॥ २६
नरसी कू राजा रोकाये, माला दिवी आप हरि आये ॥ २७
खडग सभाय'रु राजा आये, थभा मे अवतार धराये ॥ २८
नख सेती ले उदर विडारे, अपना जन का काज सुधारे ॥ २९
अरज किया सू आप पधारे, द्रोपद सती को चीर वधारे ॥ ३०
सत हेत अवतार धराये, वाचा चूक कबू नहिं आये ॥ ३१
सब सता का कारज सारै, बहुता अपत्री पतित उधारै ॥ ३२

३९(२०) बिन बाही – बिना बोये।

तुम समरथ हो केवल रामा, अनन्त कोट का सारै कामा ॥ ३३
दास रामियो बालक तेरो अजहु दुख न मेटो मेरो ॥ ३४

[४०]

अपने जन की बाहिर ध्यावौ कृपा करो पल मांहि छुडावौ । टेर
जग में होय जनांदा हाबा, विड़द तुमारो लाजे बाबा ॥ १
जग में होय जनां की हासी सांई विड़द तुमारो जासी ॥ २
जन क और आसरो नाई एको शरण तुमारी साई ॥ ३
अरज हमारी सुनिय देवा नीतर जाय भगति का भेवा ॥ ४
जे हरिजन की स्याय न होई जग में भगति कर नहिं कोई ॥ ५
तुम समरथ हो केवल रामा, भगति कराय सारो सब कामा ॥ ६
रामदास को जोर न कोई बालक के बल रोवण होई ॥ ७

[४१]

राग विहाग

गुरु मेरे ऐसी कदर बताई तातें सुरत सबद घर माई । टेर
रसना नाम नेम कर लीया, निस-दिन प्रीत लगाई ।
हिरदा मांही पेम परकासा आतम की गम पाई ॥ १
नाभी मांही नाद परकासा सबही बन गूंजाणा ।
पिछम दिसा की घाटी खूली मेरु-मंड हुय आणा ॥ २
सहजां उलट आदि घर आया तिरवेणी को तीरा ।
रामदास सुन सागर मांही चुगत हंस अह हीरा ॥ ३

[४२]

धिन जाके साधु समागम होई जाके विघन न व्याप कोई । टेर
सब तीरथ साधां के चरनां सरब देवता लारै ।
राम निरंजण राय पधारै साधू आवत द्वारै ॥ १

---

४ (टेर) बाहिर ध्यावौ – रक्षा के लिये आवो। (१) हाबा – हल्ला (अपवाद)।

साधु राम एको ही कहिये, जा बिच अंतर नाही ।
दरसण कीया सबै अघ जावै, भगति उदै घट माही ॥ २
साधु सगत सत है जग माही, जे कोई सरणै आवै ।
रामदास साधा के चरना, साधू राम मिलावै ॥ ३

[४३]

संतो साचा सिरजनहारा, ता भज उतरो पारा । टेर
झूठी देह नेह पण झूठा, झूठा है व्यौहारा ।
मात पिता सबही है झूठा, झूठा कुल परिवारा ॥ १
झूठा सैण सजन सब झूठा, झूठी है मित्राई ।
झूठी लोक लाज कुल करणी, झूठी मान बडाई ॥ २
झूठा राव रंक सुलताना, झूठा रानी राजा ।
झूठा सहर मिंद्र पुरपाटण, झूठा मंदिर छाजा ॥ ३
झूठा सास-वास पण झूठा, झूठ जगत की आसा ।
झूठा देव सेव सब झूठी, झूठा है कैलासा ॥ ४
पाणी पवन झूठ रवि चंदा, झूठा धर आकासा ।
रामदास साचा इक साईं, जहा संत किया वासा ॥ ५

[४४]

संतो सतगुरु भेद बताया, राम सिंवर घर पाया । टेर
परथम सबद सरवना सुनिया, सुणत भरमना भागी ।
सिष हुय लग्या सतगुरु के चरनां, बुध चेतन हुय जागी ॥ १
सतगुरु दिया एक निज नामो, रात-दिवस हम ध्याया ।
चतुर पख का कमल छेदिया, कंठ में जीव जगाया ॥ २
चेतन भया जीव अब जाग्या, गदगद होत निवासा ।
षष्ट पख का कमल छेदिया, हृदै लिया निज वासा ॥ ३

घम-घमकार हुवा बिच लागी पेम लहर बरसाई ।
फुरका चल सब पिंड चेतन मन की रटण जगाई ॥ ४

अष्ट-पख का कमल हुवा बिच छेद नाभि में आया ।
मन पवना एके घर मिलिया सहजां नाच नचाया ॥ ५

नाड-नाड एको धुन लागी, रूम-रूम परकासा ।
रग रग मांही भया अघभा, सिवरण सास-उसासा ॥ ६

सोलै पंख कमल नाभी का छेद पीठ बिच लाया ।
उलटा चढ्या पछिम के मारग, मेरु डंड में आया ॥ ७

पख बतीस मेरु का कमला, छेद चढ्या आकासा ।
इला पिंगला सुषमण मेला त्रिवेणी में बासा ॥ ८

गरज आभ गिगन घन घोरा नाद अनाहद बाया ।
बीज भलाभल चमकण लागी अखंड एक भड लाया ॥ ९

पंख हजार कमल तहा फूल्या, कली कली रस छूटा ।
उलटी सुरत मिली सुख-सागर हीर अमोलक बूठा ॥ १०

कंमल छाड मबे जाय विलम्या, भवर रह्या लपटाई ।
रामदास मुक्ताहल पाया ब्रह्म बाग के मांई ॥ ११

[४१]

संतो एसा औषध पाया (मोहि) सतगुरु भेद बताया । टेर

औषध एक दिया गुरु भरे खायां बेद न जाई ।
ताव तेजरो और तिषा सब पच गूबड़ गडबाई ॥ १

खांसी कफ जरा तन खाई रोग छतीसूं दूरा ।
रोम रोम मे औषध रमिया उर-अंतर निज नूरा ॥ २

आवागवण बहुरि नहि आऊ, जामण-मरण मिटाया ।
त्रिगुण-ताप काल भव नाहि, सुन्न में जाय समाया ॥ ३

अनंत कोटि या औषध पाई भव जल बहुरि न आया ।
रामदास राम निज औषध खाया रोग मिटाया ॥ ४

[४६]

सतो ऐसी खेती करावो, बीज राम सत बावौ । टेर
मन पवना का करो बलदिया, चित हाली चेतावो ।
हल कर हेत हाल हेतारथ, चिंत्या चऊ लगावो ।। १
सुमत रासडी जोत जतन का, जूडौ जोग बनावौ ।
आरत आर प्रेम की प्राणी, लिव हलबाणी लावौ ।। २
सत की नाई चडौ चूप को, नाडी जत बधावो ।
बीज'रु खात सत्तगुरु दीया, प्रीत सहित हल बावौ ।। ३
बायो बीज ह्रिदा मे ऊगो, नाभ-कमल डहडायो ।
सोल सतोष की बाड करावो, जम रुलियार न खायो ।। ४
बधियो बीज मेरु जा पूगो, पाना बहु दरसायो ।
किरिया कसी कसीडो किरतब, क्रम नीनाण करायो ।। ५
गरज्यौ बीज गगन जाय फूल्यौ, सुन मे सिरो निपायो ।
गोफरा ग्यान ध्यान का गोला, चिडी अज्ञान नसायो ।। ६
सुरत निरत मिल करी बेरणी, लाटौ अगम मडायौ ।
ग्यान विचार लियो हम लाटौ, भ्रम को डूर उडायौ ।। ७
मिल्या विज्ञान भाव परभावै, हीरा भर्‌या भडारा ।
खावत खरचन कबू न खूटै, धन का वार न पारा ।। ८
काल जाल सो कबू न व्यापै, दालद दूर गमाया ।
रामदास निरभै हुय बैठा, सतगुरु भेद बताया ।। ९

[४७]

सतो हम हरि का बेजारा, हरि जजमान हमारा । टेर
प्राणी प्रेम सूत ले भेया, नलिया नेम भराया ।
दया दमड का सुरत सिलाया, ऊरा सत्त कराया ।। १

४६(२) रासडी – रस्सी, (३) नाई – धान बीजने का यत्र। (४) रुलियार–आवारा।
(५) कसी कसीडो – फावडे आदि। निनाण – घास काटने की क्रिया।
(७) वेरणी – सिट्टो तोडना। डूर – धान का फूस।

पाच पचीसू किया कामडा छूटी स्यास विराई ।
सासोसास सण्यो हम ताणो प्रीत पाण ले पाई ॥ २
धर-अंबर विच माल मडाई, अगम कलूण कराया ।
छसै सहस इकीसू धागा, आतम राछ भराया ॥ ३
मन की बादर पवन का डोरा, ब्रम्या खडग ले दीनी ।
धुन की कला गुणां का झेला चेतन चकरी कीनी ॥ ४
इला पिंगला करी पावडी सील सतोष अगाडी ।
जोग जुगत का वेलण कीया, वासग पूठ पछाडी ॥ ५
धीरज तुरी ज्ञान का खूटा बुध की रास कराई ।
छायो ज्ञान तत्त की नलियां सुरत नाल सेवाई ॥ ६
मारी सूंज सत्तगुरु दीनी, वेजा भला बनाया ।
रामदास राम का वण कर राम खजीना खाया ॥ ७

[४८]

संतो एक राम का चेरा समरथ साहिब मेरा । टेर
जापू एक अलख अविनासी तीनलोक को राजा ।
जिन तूठां सबही सुख पावै सरै सफल ही काजा ॥ १
केवल राम अनत सुख-सागर, खोल मोप भडारा ।
आवागवण मिटावै दोई ऐसा है करतारा ॥ २
मिलिया जाय महा सुख मांही सांसा सबही भागा ।
रामदास निरभै पद पाया, सावर चरणां लागा ॥ ३

[४९]

सन्तो यह स्याम त न्यारा सोई राम हमारा । टेर

४७(२) थाव – बहुत । (३) कलूण – कहण कहाना ।
(४) छसै सहस इकीसू धागा – श्वास के कथनानुसार चौबीस घण्टे की अवधि में मनुष्य इक्कीस हजार छः सौ श्वास लेता है । (५) पावड़ी – खड़ाऊ ।
वासग पूठ पछाड़ी – शेषनाग की पीठ के पीछे ।

ग्रेही बध्या ग्रेह आपदा, त्यागी त्याग दिढावै ।
ग्रेह त्याग दोनू पख भूल्या, आतम-राम न पावै ।। १

ग्रेह साध सगत नही कीनी, त्यागी राम न गावै ।
ग्रेह त्याग दोनू पख झूठा, निरपख ह्वै सोइ पावै ।। २

ना मै ग्रैही ना मै त्यागी, ना षट-दरसण भेखा ।
रामदास तिरगुण तै न्यारा, घट मे औघट देख्या ।। ३

[५०]

मन रे अपना राम रिझाये, हरख-हरख गुण गाये । टेर

त्यागौ सरब आन की सेवा, एको रामहि ध्यावो ।
ररो ममो दोय मात पिता है, ता सू प्रीत लगावो ।। १

रसना स्वाद कठ मे प्रेमा, ह्रिदा कमल मे ध्याना ।
नाभि-कमल मे नाच नचाये, सुनिये नाद सयाना ।। २

सप्त पताल छेद चढ ऊचा, पिछम देस कू प्याना ।
वकनाल का अमृत पीकर, हरिजन भया दिवाना ।। ३

मेरुडड की घाटी हुय कर, अगम देस मे आया ।
गग-जमन के बीच सरस्वति, जह असनान कराया ।। ४

अनहद घुरै अखड धुन बाजै, परम सुन्य जह ध्याना ।
हरिजन जाय दरीबै बैठा, उपजै केवल ज्ञाना ।। ५

होठ कठ रसना बिन अजपा, बिन रसना गुन गाये ।
मूरत माहि अमूरत देवा, ताहि चरण चित लाये ।। ६

बैठा जाय अगम के छाजै, राज दिया अविनासी ।
जनम-मरण का सासा मेट्या, कटी काल की पासी ।। ७

रीझै राम मुगति को दाता, सेवग सदा हजूरा ।
रामदास चरणा का चेरा, निमष न जावे दूरा ।। ८

पाच पचीसू मिया कामड़ा, सूटी स्यात दिराई ।
सासोसास सण्यो हम ताणो प्रीत पाण ले पाई ।। २

धर-अम्बर बिच साल मडाई, अगम कलूण कराया ।
छसै सहस इकीसू धागा, आतम राछ भराया ।। ३

मन की बावग पवन का डोरा, सम्या सडग ले दोनी ।
धुन की कला गुणा का झेला चेतन चकरी कीनी ।। ४

इला पिंगला करी पावड़ी सील सतोष अगाडी ।
जोग जुगत का वेलण कीया, बासग पूठ पछाडी ।। ५

धीरज तुरी ज्ञान का सूटा, बुध की रास कराई ।
हाथो ज्ञान तत्त की नलियां सुरत नाल लेयाई ।। ६

मारो सूंज सतगुरु दीनी वेजा भला बनाया ।
रामदास राम का बण कर राम खजीना लाया ।। ७

[४८]

संतो एक राम का चेरा समरथ साहिब मेरा । टेर

जाणूं एक अलख अविनासी तीनलोक को राजा ।
जिन सूठां सबही सुख पावै सर सकल ही काजा ।। १

केवल राम अनत सुख-सागर खोल मोप भडारा ।
आवागवण मिटावै दोई, ऐसा है करतारा ।। २

मिलिया जाय महा सुख मांही सांसा सबही भागा ।
रामदास निरभ पद पाया चाकर चरणां लागा ।। ३

[४९]

संतो ग्रह त्याग स न्यारा मोई राम हमारा । टेर

४७(२) पाच – पचप । (१) [illegible] – [illegible] ।
(३) छसै सहस इकीसूं धागा – योग के मतानुसार चौबीस घण्टे की अवधि में मनुष्य इक्कीस हजार छ: सौ श्वास लेता है । (५) पावड़ी – खड़ाऊ ।
बासग पूठ पछाडी – [illegible] के पीछे ।

नीन सौ [illegible]

पाच पचीसू एक ठाय, सुरत सबद के मिलिया माय ।
रमत पियारी पीव पास, रूम-रूम मे मड्यौ रास ।। २
अलख निरजन अमर देव, जहा सुरत निरत मिल करत सेव ।
रमत पिया सग आदि अत, अनक कोटि जहा मिले सत ।। ३
सतगुरु मोहि मिलाये पीव, उलट जीव जहा होत सीव ।
कहत रामइया अगम अपार, सुर नर नागा लहै न पार ।। ४

[५४]

मिले पिव पूरबले भाग, रहे सहेली अखङ लाग । टेर
अगम महल में पधारे पीव, प्रेम ढोलियो विराजै सीव ।
सुरत सुन्दरी सज सिणगार, हीर चीर मोतिया गलहार ।। १
सोलै सखी बिछावै सेज, राजा राणी अधिक तेज ।
पाच पचीसू खवासी माहि, परम-सुख कहणा मे नाहि ।। २
गैब का दीपक अगम उजास, तेजपुज को भयो प्रकास ।
रात दिवस व्यापै नहिं कोय, केवल ब्रह्म एक ही होय ।। ३
दुख सुख पाप पुन्य नहिं होय, हिन्दू तुरक न जानै कोय ।
षट-दरसण कू गम नहिं काय, जह विरला साधूजन जाय ।। ४
दिष्ट न मुष्ट न अमर अलेख, रूप न रेख न देह न भेख ।
मन पवना जहा पहुचै नाहि, जह चल सुरत अकेली जाहि ।। ५
सुरत सबद वा दुबध्या नाहि, निराकार निरगुण पद माहि ।
कहण सुणत नहिं धूप न छाही, अणभै सबद कहत है आहि ।। ६
सुन्य सेज मे मड्यो विलास, अनत जनम की पूरी आस ।
रामदास जहा निरभै देस, हम पाया गुरु के उपदेस ।। ७

[५५]

रमत सत जहा वसत फाग, मिले पीव जन बडे भाग । टेर
प्रथम मुख सू पीव रमाय, रमत रमत हिरदा मे जाय ।
जहा मुरली की टेर सुनाय, बधी प्रीत अब प्रेम अघाय ।। १

[११]

राग काफी

ऐसा हरिजन हरि कू प्यारा, रूम-रूम लिव लाई हो । टेर
निसदिन करता सतगुरु सेवा, एको एक धियाई हो ॥ १
सुख-दुख दोनू एक समाना हरख-सोक कछु नाई हो ॥ २
पाप पुन्य दोनू से न्यारा, हरिजन हरि-पद माई हो ॥ ३
मान-अमान एक ही जान एक अग रहाई हो ॥ ४
तीनू उलट जोत घर चौथे परम-जोत मिल जाई हो ॥ ५
रामदास ऐसा जन होई मेरे सीस रहाही हो ॥ ६

[१२]

सिवरू सास-उसास पिवजी प्यारा लागो हो । टेर
मो अबला की बीनती सतगुरु सुणो पुकार ।
भगति दान मोय दीजिये मैं जुग-जुग जपू मुरार ॥ १
मैं अपग हू एकली, मरे पिवजी समदां पार ।
माड़ा परबत बीच बन मोहि लीज्यो बांहि पसार ॥ २
तुम केता जन तारिया हो तुमसा और न कोय ।
मेरा औगुण मेट के अब दरसण दीज मोय ॥ ३
रामदास की बीनती हो सुणज्यो सिरजणहार ।
तुम हो ऐसी कीजियो मरी आवागवण निवार ॥ ४

[१३]

राग बसंत

रमत पियारी पीव संग तन मन अरपै सब अंग । टर
फाग रमण कूं चले मुरार सब सखियन मिल गग सार ।
प्रम प्रीत की डान गुलाल सुन्य महल मे मंड्यो ख्याल ॥ १

पाच पचीसू एक ठाय, सुरत सबद के मिलिया माय ।
रमत पियारी पीव पास, रूम-रूम मे मड्यौ रास ॥ २
अलख निरजन अमर देव, जहा सुरत निरत मिल करत सेव ।
रमत पिया सग आदि अत, अनक कोटि जहा मिले सत ॥ ३
सतगुरु मोहि मिलाये पीव, उलट जीव जहा होत सीव ।
कहत रामइया अगम अपार, सुर नर नागा लहै न पार ॥ ४

[५४]

मिले पिव पूरबले भाग, रहे सहेली अखड लाग । टेर
अगम महल मे पधारे पीव, प्रेम ढोलियो विराजै सीव ।
सुरत सुन्दरी सज सिणगार, हीर चीर मोतिया गलहार ॥ १
सोलै सखी बिछावै सेज राजा राणी अधिक तेज ।
पाच पचीसू खवासी माहि, परम-सुख कहणा मे नाहि ॥ २
गैब को दीपक अगम उजास, तेजपुज को भयो प्रकास ।
रात दिवस व्यापै नहिं कोय, केवल ब्रह्म एक ही होय ॥ ३
दुख सुख पाप पुन्य नहिं होय, हिन्दू तुरक न जानै कोय ।
षट-दरसण कू गम नहिं काय, जह विरला साधूजन जाय ॥ ४
दिष्ट न मुष्ट न अमर अलेख, रूप न रेख न देह न भेख ।
मन पवना जहा पहुचै नाहि, जह चल सुरत अकेली जाहि ॥ ५
सुरत सबद वा दुबध्या नाहि, निराकार निरगुण पद माहि ।
कहण सुणत नहिं धूप न छाही, अणभै सबद कहत है [illegible]
सुन्य सेज मे मड्यो विलास, अनत जनम की पूगी [illegible]
रामदास जहा निरभै देस, हम पाया गुरु के [illegible]

[५५]

रमत सत जहा वसत फाग, मिले पीव [illegible]
प्रथम मुख सू पीव रमाय, रमत रमत [illegible]
जहा मुरली की टेर सुनाय, बधी प्रीत [illegible]

नाभि कमल में नाद घोर एक ढकै पर लागत ठौर ।
रूम-रूम में सुख अपार, पिवजी पधारै नाभि मझार ॥ २

वकनाल पिचकार कीन पाँच-पचीसूं संग लीन ।
अरध-उरध बिच मड्यो ख्याल, पिवजी पधार महल चाल ॥ ३

अनहद बाजा घुर अपार जहँ अलख निरंजण अमर मुरार ।
मिल संत ता मांही आय अनंत कोटि रहे फाग रमाय ॥ ४

रमत नारद सनकादिक सेस ब्रह्मा विष्णू आद महेस ।
शुकदेव और ध्रू प्रह्लाद सुख सागर जहा सुख सवाद ॥ ५

जनक विदेह मिल्या तां आय बालमीक पांडू ता मांय ।
गोरख भरत रु गोपीचन्द, सुख-सागर मिल कर आनंद ॥ ६

नामदेव अरु रामानंद नापा कबीर तिलोकचंद ।
पीपा धना सजन रदास रका बका सेता ब्यास ॥ ७

नानग दादू हरीदास केवल कूबा संतदास ।
जन दरियाव रमे हरि रंग किसनदास सुखरामा संग ॥ ८

अनंत कोट रहे फाग रमाय जन हरिराम मिले तहां आय ।
रामदास सहूआं चरण निवास, गुरु गोविन्द मिल पूरी आस ॥ ९

[३९]

राग कमेड़ी धनाश्री

संतो एसा मारग झीणा सतगुरु सबदां चीना । टेर
पावां बिन हलणां करां बिन चलणा बिन पैंड जहां पैडा हो ॥ १
पांखां बिन उडणा अगम कूं मडणा अगम देस कूं चलणा हो ॥ २
गंगा बिन गंगा पाणी बिन पाणी, बिन सरवर जहां झुलणा हो ॥ ३
सीस बिन देवल देही बिन देवा बिन पड जहां सेवा हो ॥ ४
झालर बिन झालर बाजा बिन बाजा, बिन सरवण जहां सुणणा हो ॥ ५

धजा बिन धजा इक सुन्य मे फरूकै, सख बिन सख की बाजा हो ।। ६
रामदास जहा जाय पहुता, अनत कोटि का रमणा हो ।। ७

[५७]

सनो ऐसा देस हम देख्या, सतगुरु सबदा पेख्या हो । टेर
सतगुरु हमको भेव बताया, उलट'रु मिल्या असखा हो ।। १
खाण न बाण न वेद कतेबा, ना कोई पढिया पडिता हो ।। २
धरन न गगन न पवन न पाणी, आपो आप अलेखा हो ।। ३
चद न सूर न तेज न तारा, केवल ब्रह्म वसेखा हो ।। ४
ब्रह्मा विष्णु न सेस महेसा, ना माया परवेसा हो ।। ५
साख्य न जोग न नवध्या तिरगुन, ना षट-दरसण भेखा हो ।। ६
जाग्रत स्वप्न सुषुपत तुरिया, सत्ता माहि वसेखा हो ।। ७
रूप न रेख न बध न मोपा, हद वेहद नही देसा हो ।। ८
रात न दिवस न जनम न मरना, काल न जाल न शेसा हो ।। ९
तीरथ न वरत न प्रतिमा सेवा, आपो आप अलेखा हो ।। १०
बाल न दीरघ वृद्ध न होई, तिरगुण नाम निरेसा हो ।। ११
राम रामियो एकज होई, विरला जाने वमेखा हो ।। १२

[५८]

राग कल्याण

आयजा राम हबोला मे रे नर आयजा राम हबोला मे ।
साधु सगति मिल ज्ञान परापति, भक्ति मुक्ति की छोला मे ।। टेर
नर नारायण सूझ मिलो है, मत खोय टाला टोला मे ।
बाल पणो हस खेल गमायो, तरणापो रस रोला मे ।। १
खान पान अरु मान बडाई, कामिनी काम किलोला मे ।
स्वप्न देख मत भूल दिवाने, यो जग झामर झोला मे ।। २

५७(१२) वमेखा – विवेक ।

मरता देख तु ही मर जासी, कालनीर तन झोला में ।
देह जीव के होय विछेवा, सासा छूट खटोला में ॥ ३
अवसर अजब राम भज लीज जीतब सफल सवाला में ।
रामदास निरभय घर यो ही आनन्द हरिजन खोला में ॥ ४

[११]

राग गूढ बिलावल

आज काज सब सारे हो, म्हारे सतगुरु राम पधारे हो । टेर
साधु चरण जहां धरिये हो धिन भूमि पवित्र करिये हो ॥ १
नगर पुरी धिन आजा हो जहां विराजे महाराजा हो ॥ २
घर घर सहज सरावन हो, आसन वासन पावन हो ॥ ३
नव निधि सब घर आई हो प्रगट मगट सुखदाई हो ॥ ४
विलयमान अघ सारा हो आनन्द अगम अपारा हो ॥ ५
अनत कोटि मन भाये हो इण सतगुरु दर्शन पाये हो ॥ ६
विष्णु ब्रह्मा शिव अगम्य हो, रामदास गुरु दर्शन हो ॥ ७

[१]

राग केदार

इचरज है मोटो है मोटो
पिंड प्राण पर मन मल कीया ताहि भज्या जिन तोटो । टेर
जीयत हरष मूवां लेये राम नाम कहो भाई ।
रामायण भागवत पुकारे ताको गूझ न काई ॥ १
सूकर कूकर पशू गारया गर्भमा गाल विगाड्या ।
हीर समानगण पयड़ी पदम जीमी बाजो हारया ॥ २
तारण मत्र राम निज मुक्तो पता पतित उधारया ।
गज गणिका शिव भामु भगता परगट पत्थर तारया ॥ ३

वाचक साची धारे नाही, दोनू नरका जासी ।
रामदास बडभागी रैसी, हरि गुरु टेक निभासी ।। ४

[६१]

राग चलत ठुमरी

और सबहि जग रूठण दै, मेरो राम न रूठो चहिये हो । टेर
आठ पहर आनन्द मे रहिये, निसदिन ध्यान धरइये हो ।
मात पिता स्वारथ के सगी, इनके सग न रहिये हो ।। १
जगत जाल जजाल छोडि के, रग सो रग मिलइये हो ।
दीन जान अपनो करलीजे, चरण शरण मे रहिये हो ।। २
जह देखू वह रामहि रामा, कहलग हीड फिरइये हो ।
पिंड ब्रह्माण्ड मे व्याप रहे हो, नैना सो नेडा रहिये हो ।। ३
रामहि गाता राम बजाता, रामहि राम रटइये हो ।
रामदास इक राम भजन बिन, जम के द्वारे जइये हो ।। ४

[६२]

राग चरचरी

जागरे बडभागी जीव साधुसूर ऊगो ।
ज्ञान पखी सुरति श्रवण शब्द आदि पूगो ।। टेर
सत पथ चलत वृन्द मोक्षद्वार खूलो ।
जगत अगत मेट स्वप्न दूर भूलो ।। १
निशा भूत जम का दूत मिटी राम माया ।
निशक दे प्रभात भयो राम नाम गाया ।। २
आनचोर जोर भाग भरम जलद नाही ।
कमल सवल उदयकार दरस परस माही ।। ३
भजन काज कीजे आज जनम दरद जावे ।
परिपूरण परमतत्त्व रामदास गावै ।। ४

मरता देख तु ही मर जासी, कालनीर तन भोला में ।
देह जीव के होय विछेवा, सासा खूट खटोला में ॥ ३
अवसर अजब राम भज लीजे जीतब सफल सबोला में ।
रामदास निरभय घर यो ही आनन्द हरिजन खोला में ॥ ४

[११]

राग गूढ़ विलावल

आज काज सब सारे हो, म्हारे सतगुरु राम पधारे हो । टेर
साधु चरण जहां धरिये हो धिन भूमि पवित्र करिये हो ॥ १
नगर पुरी धिन आजा हो जहां विराजे महाराजा हो ॥ २
पर घर सहज सरावन हो आसन वासन पावन हो ॥ ३
नव निधि सब घर आई हो अगड बगड सुखदाई हो ॥ ४
विलयमान अघ सारा हो आनन्द अगम अपारा हो ॥ ५
अनत कोटि मन भाये हो इक सतगुरु दर्शन पाये हो ॥ ६
विष्णु ब्रह्मा शिव प्रसन्न हो, रामदास गुरु दरसन हो ॥ ७

[१]

राग केदार

इचरज है मोटो है मोटो
पिंड प्राण अरु अन-जल कीया ताहि भज्यां विन तोटो । टेर
जीवत डरप मूवां सेवे राम नाम कहो भाई ।
रामायण भागवत पुकारे ताकी सूझ न काई ॥ १
सूकर कूकर पशू सारसा गर्भना कोल विसार्‌या ।
हीर अमोलख अवधी अदल जीती बाजी हार्‌या ॥ २
तारक मन्त्र राम निज भुरकी अता पतित उधार्‌या ।
गज गणिका कपि भालु देखलो परगट पत्थर तार्‌या ॥ ३

पाच पचीसो मिल तेतीसो, नाचन लागी सधरकी ए माय ॥ २
ररररररगा सुमरण अगा, मुरली नूपुर ठुमरी ए माय ॥ ३
रतमत ताना लिव गलताना, रामत आदू धरकी ए माय ॥ ४
सुरत सनेही सबद मिले ही, अनुभव नैंना निरखी ए माय ॥ ५
ज्योति अपारा दसवे द्वारा, ऊर्ध ध्यान धुनि सुधकी ए माय ॥ ६
सहजा आतम मिले परमातम, आज्ञा भई मुरसिद की ए माय ॥ ७
रामत साची हरिरग राची, रामदास धिनजनकी ए माय ॥ ८

[६६]

राग बड़हंस

मनरे आन कथा तजदीजै,
वाद विवाद दूर कर प्राणी उन मुन मुद्रा लीजै । टेर
राम सुमिर मुख श्वास न खाली, कोटि जनम को लाहो ।
मौसर भलो जग्यो बडभागी, फिर न होय पछितावो ॥ १
तस्कर आन काल धाडायत, जाग्या निकट न आसी ।
भजन पोरायत घर सतसगी, निरभै वास विलासी ॥ २
करमकाड राजस डर नाही, दिव्य दृष्टि हुय जावे ।
रामदास सतगुरु के शरणे, राम खजाना पावे ॥ ३

[६७]

मनरे जागण जहा जाय कीजै,
साधु समाज दरस भगवत को, राम अमीरस पीजै ॥ टेर
पातक हरे करे जिव निर्मल, चरचा ज्ञान सुणीजै ।
भरम अज्ञान जगत भव भागे, धारण भक्ति पतीजै ॥ १
श्रद्धावत गाढ सुमरण को, निद्रा नेह तजीजै ।
आलस ऊघ उबासी आवै, जद हरिजस चित दीजै ॥ २
विरही वचन जीव करुणाकर, भक्त विछल विर्द भारी ।
अबके साय करो परमानद, पावन पतित मुरारी ॥ ३

[१३]

राग प्रभाती

जीवन प्राणपद निर्वाण रामनाम गायो
खोय मत मानव देह श्वास लेखे लायो । टेर
गया सोई गया आन रह्या यत्न कीजे ।
मनरे मत होय अजान राम रस पीजे ॥ १
गभ में कवल किया सो सभारो ।
जगत स्वप्न जलमरीचि भ्रंत कौन धारो ॥ २
खान पान यत्न कैता रामजी कहावे ।
रामदास ताहि भूले सोई पछितावे ॥ ३

[१४]

राग सोरठ

हरि का भजन करो मडके राम का भजन करो भड़के ।
गाफिल हुय नर क्या गरवाणा काल सदा कड़के ॥ टेर
बहुता जतन करो या तन का, गढ़पोल्यां जड़के ।
काया काचो धागो मूरख टूट जाय तड़के ॥ १
पांचूं घेर रखो घट भीतर, मनवा से लड़के ।
सूरा हो सो सार सभार कायर सो धड़के ॥ २
भवसागर में नौका नर तन, भाय लगी कड़के ।
सतगुरु केवट पार उतारे डूबो मति पड़के ॥ ३
कुसके सग कुशल नहीं कबहू भड़ां ज्यों भिड़के ।
रामदास सतगुरु समझ्यमे सबदां के सड़के ॥ ४

[१५]

राग सूर सारग

धिन धिन किरपा सतगुरु केरी रसना राम रमास्यां ए माय । टेर
निदचल आसण सहज सिहासन धारण धारी परची ए माय ॥ १

पाच पचीसो मिल तेतीसो, नाचन लागी सधरकी ए माय ॥ २
ररररररगा सुमरण अगा, मुरली नूपुर ठुमरी ए माय ॥ ३
रतमत ताना लिव गलताना, रामत आदू धरकी ए माय ॥ ४
सुरत सनेही सबद मिले ही, अनुभव नैना निरखी ए माय ॥ ५
ज्योति अपारा दसवे द्वारा, ऊर्ध ध्यान धुनि सुधकी ए माय ॥ ६
सहजा आतम मिले परमातम, आज्ञा भई मूरसिद की ए माय ॥ ७
रामत साची हरिरग राची, रामदास धिनजनकी ए माय ॥ ८

[६६]

राग बड़हंस

मनरे आन कथा तजदीजै,
वाद विवाद दूर कर प्राणी उन मुन मुद्रा लीजै । टेर
राम सुमिर मुख श्वास न खाली, कोटि जनम को लाहो ।
मौसर भलो जग्यो बडभागी, फिर न होय पछितावो ॥ १
तस्कर आन काल धाडायत, जाग्या निकट न आसी ।
भजन पोरायत घर सतसगी, निरभै वास विलासी ॥ २
करमकाड राजस डर नाही, दिव्य दृष्टि हुय जावे ।
रामदास सतगुरु के शरणे, राम खजाना पावे ॥ ३

[६७]

मनरे जागण जहा जाय कीजै,
साधु समाज दरस भगवत को, राम अमीरस पीजै ॥ टेर
पातक हरे करे जिव निर्मल, चरचा ज्ञान सुणीजै ।
भरम अज्ञान जगत भव भागे, धारण भक्ति पतीजै ॥ १
श्रद्धावत गाढ सुमरण को, निद्रा नेह तजीजै ।
आलस ऊघ उबासी आवै, जद हरिजस चित दीजै ॥ २
विरही वचन जीव करुणाकर, भक्त विछल विर्द भारी ।
अबके साय करो परमानद, पावन पतित मुरारी ॥ ३

जन्म-मरण वेदन मिट जावै, अम्मर पद अविनासी ।
राम सभा मे थिन जन जाग ब्रह्मपुरी का वासी ॥ ४
दरशन परशन रामसनेही अनन्त कोटिजन भेला ।
रामदास जहां सगति कीज, सुरत सबद का मेला ॥ ५

[६८]

राग भैरव

मौसर मिनखा देह मिल्यो है मत कोई गाफिल रहज्यो रे ।
छूटा स्वास बहुरि नहिं आवे राम राम भज लीज्यो रे । टेर
जानत है सिर मौत खड़ी है चलणो सांझ सवेरे ।
पांच पचीसूं बड़े जोरावर लूटत है जिय डेरो र ॥ १
नर नारायण सहर मिल्यो है जामें सूंज अपारा र ।
राम कृपा कर तोहि बसायो, यामें काज तुमारा र ॥ २
जन्म जन्म का खाता चूके हुयमन रामसनेही रे ।
रामदास सतगुरु के सरणे जन्म सफल कर लही रे ॥ ३

[६९]

राग कम्मायच

रामनाम रट लीजै नहीं जेज करीजै । टेर
काल करे सो आज करीजे छिनक छिनक तन छीज ॥ १
मृगतृष्णा ससार भयो है, तासूं काय पतीजै ॥ २
काल कबाण कसीस खड़ो सिर हरिगुरु ओट गहीज ॥ ३
ना कोई तेरा तूं न काहूको माया मोह तजीज ॥ ४
रामदास गुरुदेव बताया अंतर अलख लखीजै ॥ ५

[७०]

राग गूढ बिलावल

रामजना घर आये हो हलमिल मंगल गाये हो । टेर
करूं स्तुति प्रणामा हो सब सिध पूरण कामा हो ॥ १

परिक्रमा मन वारी हो, वार वार बलिहारी हो ॥ २
चार पदारथ सारे हो, सतगुरु लिया पधारे हो ॥ ३
कहा वदन मुख गइये हो, गुरु सम दूजा नाही हो ॥ ४
निजमन भाव बधाई हो, रामदास बलि जाई हो ॥ ५

[७१]

राग बसत होरी

रामजना के दरवाजे हो, रगभरी बधाई बाजै । टेर
घर घर तोरण ध्वजा फरूके, बदरमाल विराजै ॥ १
सात सखी मिल मगल गावै, मोत्यारो चौक पुराजै ॥ २
गगन मडल मे अनहद बाजे, इन्द्र देखत लाजै ॥ ३
बार फेर द्रव्य दान देत है, हीर चीर बहु जाजै ॥ ४
रामदास तहा हाजर हजूरी, टहल करन के काजै ॥ ५

[७२]

राग भैरव

हरिभज ३ प्राणी, श्वास श्वास दिन जावे रे ।
भरतखड मिनखा तन मौसर, वार वार नहि पावे रे । टेर
श्वासा तीर नामजल सरिता, मारुत जल बहावे रे ।
देखत जीव जीव तज जासी, पाला पिंड विलावे रे ॥ १
कागद अक तेलतन तिरिया, केल फले इक वारा रे ।
ओला गले पतासा पाणी, यो मानव अवतारा रे ॥ २
बेलू भीत खिलौना बालक, वाजी महल मडाणा रे ।
मृग मरीच धाय जल निर्फल, ज्यो जग स्वप्न भुलाना रे ॥ ३
अंजलिनीर ओस का पानी, शीत कोट ज्यो रचना रे ।
समय पाय मग काल न दर्शे, सबै काल की झपना रे ॥ ४
वेद पुराण सत सब साखी, किया कोल सोइ कीजे रे ।
रामदास सतगुरु के शरणे, रामनाम जप लीजे रे ॥ ५

इति श्री आचार्य वाणी सम्पूर्णम्

श्री मवाद्य रामस्नेहि संप्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री दयालजी महाराज (द्वितीय खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव वाणी

अथ नामीनाम निर्णय को अंग

साखी

गांम सहत सब नाम सूं गांम मांहि बहु नाम ।
सब नामां पति राम है नमो अनामी राम ।। १

गाम नाम किए भवन को, भवनवृन्द जहां गाम ।
नामी जांही नाम है, नमो अनामी राम ।। २

अन्योअन्याभाव में सब नामां को ठाट ।
परध्वंसापरभाव में, वो होसो सोई राट ।। ३

प्राग प्रथम एको हुतो, अन्यो सुरगुण रूप ।
परध्वंसा लग जानिये आत्यन्तक भण रूप ।। ४

सूं पद जीवसु जाणिये ततपद करता ईस ।
नामी नांम विचार कर असिप्स साख मनीस ।। ५

तूतत मांही रूप बहु सुरगुण माया ठाट ।
असि अनादहु ब्रह्म इक मेटण अप्ट वैराट ।। ६

सचिदानद अद्वैत इक ब्रह्म असंगी सोय ।
जनम मरण माया परै, मेटण सधम दोय ।। ७

ज्ञे ज्ञाता नहि ज्ञान जहां ध्ये ध्याता नहि ध्यान ।
परमातम परवाण नहि कहिये कहा विधान ।। ८

जसे नभके बीच में जलद भये बहु नाम ।
पंच वरण इनके विषे सथिर प्रकास न साम ।। ९

असी मिलावण नाम है, सतगुरु के परसाद ।
आप श्रूप निश्चै भयो, पायो थानक आद ।। १०

धार छुरीमध जानिये, धार छुरी को मोल ।
साध राममध जानियै, राम साध मुख बोल ।। ११

निरणै सारी नामते, नामी निरणै नांम ।
गरथ अरथ बकता जिता, श्रोता धारण ताम ।। १२

विष्णु ब्रह्मा शिव आद दे, शेष एक निज सार ।
ऋषि मुनि साध विचार कर, अनभै अनत अपार ।। १३

अरथ जथारत नाम ते, सब सिंध करता आद ।
रामा राम उचार मुख, परापरायण साध ।। १४

रमतीत रमतीत हैं, घट घट परगट सोय ।
लहै जथारथ गुरु कृपा, आतम परचै होय ।। १५

सोरठा

नाम सत्तगुरु नांम, रामदास महाराज धिन ।
द्यालबाल विश्राम, अकल जथारथ जान सिध ।। १६

इति श्री नामीनाम निर्णय को अंग

★

श्री मदाद्य रामस्नेहि संप्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री मयालजी महाराज (द्वितीय खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव वाणी

—•—

अथ नामीनाम निर्णय को अंग

साखी

गाम सहत सब नाम सूं गाम मांहि बहु नाम ।
सब नामां पति राम है नमो अनामी राम ॥ १

गाम नाम किए भवन को, भवनवृन्द सही गाम ।
नामी जांही नाम है, नमो अनामी राम ॥ २

अन्योमन्याभाव में सब नामों को ठाट ।
परध्वंसापरभाव में, जो होतो सोई राट ॥ ३

प्राग प्रथम एको हुतो, अन्यो सुरगुण रूप ।
परध्वंसा लग जानिये आत्यन्तक अण रूप ॥ ४

तू पद जीवसुं जाणिये तत्तपद करता ईस ।
नामी नांम विचार कर, अलिप्त साख अनीस ॥ ५

तूंतत मांही रूप बहु सुरगुण माया ठाट ।
असि अनादहु ब्रह्म इक मेटण अष्ट वैराट ॥ ६

सच्चिदानद अद्वैत इक ब्रह्म अखंडी सोय ।
जनम मरण माया परै, मेटण संशय दोय ॥ ७

न ज्ञाता नहिं ज्ञान तहां ध्ये ध्याता नहिं ध्यान ।
परमाता परमाण नहिं कहिये कहां विधान ॥ ८

असे नमके बीच में, अलख भये बहु नाम ।
पच परण इनके विषे सुपिर प्रकास न साम ॥ ९

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री अर्जुनदासजी महाराज (चतुर्थ खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव बाणी

श्री हरिगुरु हरिराम धिन, रामदास मुझ श्याम ।
द्याल पुरुष पूरण प्रति, अर्जुन की परणाम ॥ १

मनहर छन्द

सम्प्रदा प्रथम रामानन्द जू प्रसिद्ध करी ,
साढीबारा शिष्य मुख्य अनन्तानन्द जान जू ।
कर्मचन्द भये शिप ताके देवाकर ,
द्वितीय मालवी पूरन तास दामोदर मानजू ।
नरायण मोहन जास नमो माधोदास ,
तास सुन्दर चरणदास जैमल परणाम जू ।
पाट हरिराम ताके रामदास उजागर ,
निर्गुण भक्ति करी द्याल गुरू ज्ञान जू ॥ २

इति

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री हरलालदासजी महाराज (पंचम खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव बाणी

साखी

नमस्कार करजोड के, रामदास धिन द्याल ।
पूरण अर्जुन गुरू प्रति, विनय करै हरलाल ॥ १

आरती

आरती करू गुरुदेव तुम्हारी, श्री अर्जुन गुरु की बलिहारी ॥ टेर
नित अवतार सन्त वपु धारी, वार वार अरदास हमारी ॥ १
निर्गुण आप सगुण जन हेता, जीव उधारण देह धरेता ॥ २

श्री मदाद्य रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री पूरणदासजी महाराज (तृतीय खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव वाणी

अथ गुरुवंदन को अंग

साखी

वदन वदन वदना, गुरु कूं वार हजार ।
पूरण सतगुरु वंदियां कटजाय कोटि विकार ॥ १
परकम्मा पण धारकै, कीजै इक व्रत नित्त ।
चौरासी फेरा मिटै अरु मिटे जियकृत्त ॥ २
मीन नीर मृतमान ज्यूं जल में रमे निसंक ।
भारजता कोमल हृदै, मन में रखे न वंक ॥ ३
उरध अरु छिटकायकर, कीजै फिनक डंडोत ।
पूरण कारज जद सरे सब ही भ्रम रद होय ॥ ४
सबद कृत गुरु देखिये, देह कृत दूर निवार ।
देही सूं दावा किसा सबद भमी की धार ॥ ५
चेला कहिये सबद का, सबद सजीवण बीज ।
पूरण सतगुरु वंदियां, पावे उत्तम चीज ॥ ६
पतवरता कहै पीव सूं मैं हूं सील समाज ।
परदारारत पीव है कहतन आवे लाज ॥ ७
पुत्र पिता सूं यूं कहै मैं हूं असल सपूत ।
पूरण सो सिख जाणिये सबही मांहि कपूत ॥ ८
वंदिया जाकूं वंदिये निंदिये कबहू नांहि ।
उत्तम सिख की धारणा परागरथ के मांहि ॥ ९
गुरु चरणों में सिर धरौ हिरदै गुरु को ध्यान ।
पूरण जबही पाइये परा परी को ग्यान ॥ १०

सोरठा

वंदन वार अनेक उत्तम सिख निसदिन कर ।
कबहुन छाडे टेक धारी जैसी धारणा ॥ ११

इति श्री गुरुवंदन को अंग

*

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री अर्जुनदासजी महाराज (चतुर्थ खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव बाणी

श्री हरिगुरु हरिराम धिन, रामदास मुझ श्याम ।
द्याल पुरुष पूरण प्रति, अर्जुन की परणाम ।। १

मनहर छन्द

सम्प्रदा प्रथम रामानन्द जू प्रसिद्ध करी,
साढीबारा शिष्य मुख्य अनन्तानन्द जान जू ।
कर्मचन्द भये शिष ताके देवाकर,
द्वितीय मालवी पूरन तास दामोदर मानजू ।
नरायण मोहन जास नमो माधोदास,
तास सुन्दर चरणदास जैमल परणाम जू ।
पाट हरिराम ताके रामदास उजागर,
निर्गुण भक्ति करी द्याल गुरू ज्ञान जू ।। २

इति

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री हरलालदासजी महाराज (पंचम खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव बाणी

साखी

नमस्कार करजोड के, रामदास धिन द्याल ।
पूरण अर्जुन गुरू प्रति, विनय करै हरलाल ।। १

आरती

आरती करू गुरुदेव तुम्हारी, श्री अर्जुन गुरु की बलिहारी ।। टेर
नित अवतार सन्त वपु धारी, वार वार अरदास हमारी ।। १
निर्गुण आप सगुण जन हेता, जीव उधारण देह धरेता ।। २

निराकार निरलेप मुरारी अड़सठ तीरथ चरण मझारी ॥ ३
ध्यान समाधि इडग मति धारी निजानंद आतम ब्रह्मचारी ॥ ४
पूरण सिष पूरण मति भारी, हरलालदास है शरण तुम्हारी ॥ ५

इति

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री लालदासजी महाराज (षष्टम खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव वाणी

छप्पय

ज श्री जमलदास पुनि ज जै हरिरामा,
रामदास पद नमो दयाल कूं नित परणामा,
पूरण चरण नमामि अहनिस अर्जुनदासा
वंदन गुरु हरलाल भक्त मन पूरण आसा
इमि सब संत पद पद्म निव लालदास विनती करे,
भक्ति पदारथ दीजो सदा हंसा मह सहुधा तिरे ॥ १

इति

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री केवलरामजी महाराज (सप्तम खेड़ापा पीठाधीश्वर) की अनुभव वाणी

साखी

राम-स्नेही गुरु प्रभु श्री अर्जुन गुणधाम ।
जनहरलाल र लालदास वन्दे केवलराम ॥ १

छप्पय

जय जय जगमग राम सभा हरिव्यास स्वामी ।
जय श्री रामदास पमित पावन पद नामी ॥
नमो स्वामी दय ब्रह्म पूरण पधतार ।
श्री दर्जुन [illegible] [illegible] गुरु नमो उदार ॥

जनपालक भगवत कला, दिव्य रूप धर अवतरे ।
तिन पद पकज मह सदा, जन केवल वन्दन करे ॥ २

कवित्त

राम गुरु सत की उपासना हमारे सदा
नाम को महत्व शास्त्र-सत बतलाते है ।
मगल स्वरूप राम रूप ऊर ध्यान धारे
कलि के कठोर पाप-ताप मिट जाते है ।
अपार ससार पारावार तरिबे को पोत
होत शुद्ध प्रानी मन चाहैं फल पाते हैं ॥ ३

इति

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री हरिदासजी महाराज (वर्तमान खेड़ापा पीठाधीश्वर) कृत

— श्रीगुरु सप्तकम् —

जटिलदर्शनशास्त्रविवेचक, कमलकोमलशुद्धनिसर्गकम् ।
नतजनार्थिकुरिक्तिविनाशक, सुकृतधर्मसुशर्मविवद्र्धकम् ॥ १
परतर भवबन्धनिवारक, विरतषड्रिपुघोरकुपातकम् ।
विषयलीनमलीनविबोधक, मतिविहीनमहीनविधायकम् ॥ २
शरणसचयपूजितपादप, करनिराकृतभक्तजनैनसम् ।
तिमिरजे मतिजालविलुम्पने, ह्यलमल विमल नयनेक्षणै ॥ ३
सकलदुष्कृतनाशनसच्चण, सकलभव्यमुभव्यसमाकरम् ।
सुकृतिवृन्दसुवन्दितमावर, भवहर सुवर श्रुतियोषित ॥ ४
परमचिन्त्यसुवैभवशालिन, विमलभक्तिसुकाननमालिनम् ।
तिमिरजाभवजालकघस्मर, श्रुतिसुसारप्रसारणतत्परम् ॥ ५
प्रबलदारुणकालसुकालक, दुरितमन्मथमन्थनकारकम् ।
अमितघोरभवाम्बुधितारक, शिवसमानशिवाशयधारकम् ॥ ६
अतिशयाशयभावितमानस, करुणया शरणागतपालकम् ।
भजति 'केवलराम गुरु' हरिर्मधुकरो रसिकोऽङि्घ्रसरोरूह ॥ ७

इति श्रीगुरु सप्तकम्

अथ श्री १०८ श्री कबीरजी महाराज की साखियां

कबीर प्रणमत गुरु-गोविन्द कूं भवजन वन्दूं सोय।
पहल भये प्रणाम तहि नमो सु आगे होय॥ १
कबीर सतगुरु समा न को सगा सोधी समी न दास।
हरिजी समा न को हितु हरिजन समी न जात॥ २
कबीर जात हमारी आतमा प्राण हमारा नाम।
अलख हमारा इष्ट है गगन हमारा गाम॥ ३
कबीर जात हमारी जगत गुरु परमेस्वर परिवार।
सगा हमारे सन्त है, सिरपर सिरजणहार॥ ४
कबीर सतगुरु की महिमा अनत, अनत किया उपकार।
लोचन अनत उघारिया अनत दिखावण हार॥ ५

अथ श्री १०८ श्री नामदेवजी महाराज का पद

राम बोले राम बोले, राम बिनां को बोले रे भाई॥ टेर
एकल मीटी कुंजर चींटी, भजन र बहु नामा।
थावर-जंगम-कीट-पतंगा, सब घट राम समाना॥ १
एकन चिंता रहिले मिंसा छूटीले सब आसा।
प्रणवत नामा भये नहमाया तुम ठाकुर मैं दासा॥ २

अथ श्री १०८ श्री रैदासजी महाराज का पद

जो तुम तोरो राम मैं नहि तोरूं तुम सा तार कवन सों जोरूं॥ टेर
तीरथ व्रत का करु न अंदेसा तुमरे चरण कमल का भरोसा॥ १
जह जाऊं जह तुमरी पूजा तुमसा देव और नहि दूजा॥ २
मै अपनो मन हरिसु जोर्यो तुमसा जार सबस सुं तोर्यो॥ ३
सब प्रकार तुम्हारी आसा मन क्रम वचन कहे रैदासा॥ ४

इति

नैन की सैन

॥ श्री रामोजयति ॥

ब्रह्म स्तुति

परम वदन परम सेवा, परम दीन दयालतू ।
परम आतम परम यारी, परम स्वरग पयालतू ॥ १
नमो निरगुण नमो नाथू, नमो देव निरजनम् ।
नमो सम्रथ नमो स्वामी, नमो सकल सिरजनम् ॥ २
नमो अविगत नमो आपू, नमो पार अपपरम् ।
नमो महरम नमो न्यारा, नमो पद परमेश्वरम् ॥ ३
नमो चेतन नमो तारी, नमो निज्ज निरासनम् ।
नमो आद न नमो अनता, नमो ब्रह्म प्रकाशनम् ॥ ४
नमो प्रीतम नमो प्यारा, नमो नाम नकेवलम् ।
नमो कायम नमो करता, नमो राम निरमलम् ॥ ५
नमो निकलक नमो निकुला, नमो नित्य नरायनम् ।
नमो अम्मर नमो अधरा, नमो पीव परायनम् ॥ ६
नमो हरदम निराकारम्, नमो निगम निरूपनम् ।
नमो अवचल नमो अनभै, नमो एक अनूपनम् ॥ ७
नमो साहिब नमो सहजा, नमो काल निकदनम् ।
दास हरिया नमो दाता, नमो तुम निर्द्वंदनम् ॥ ८

इतिश्री ब्रह्म स्तुति

श्री मदाद्य रामस्नेहिसंप्रदायमूलाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री जयमलदासजी महाराज (दुलचासर) की अनुभव वाणी

पद (राग काफी)

दीस रह्या दिल माँहि दरसण साँईदा
साँईदा साँईदा झिगमिग झाँईदा ॥ टेर
सुन्य मण्डल मे सुण रह्या वे वागा अनहद वैण ।
भया उजाला गैब का वे सहजाँ मिलियाँ सैंण ॥ १
निगम खोज पावै नहीं वे जप तप लहे न कोय ।
सो साँई तन में वसै वे निमख न न्यारा होय ॥ २
साचा साँई यूं सखा वे, संताँई सुख दैण ।
संसा न्यारा कर दिया वे, देख्या नैणाँ नैण ॥ ३
जमलदास अवसर मिल्या वे सनमुख सिरजणहार ।
भरम जु भागा जीव का वे दरस्या है दीदार ॥ ४

पद २

कदे न उतरे खुमार हरि रंग यूं लागो,
यूं लागो यूं लागो यो तो भरमजु यूं भागो ॥ टेर
चित चेतन में ठाहरया वे, परम तेज परकास ।
वेद पुराणाँ गम नहीं वे दरसण पावे दास ॥ १
दूर धजा सुन्य में खड़ी वे घुरे दमामा घोर ।
मुरली बाजे सोहणी व लाग रही है ठोर ॥ २
मनही में मन जाणिया वे कहिये कूं कछु नाहिं ।
मूरख भूला भरम में वे बाहिर ढूंढण जाहिं ॥ ३
गगन मण्डल बादल झरे वे, उलटा बूठा सास ।
पावस बूटा प्रेम का वे भीना जैमलदास ॥ ४

इति

श्री मदाद्य रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री हरिरामदासजी महाराज (श्री सिंहस्थल पीठाधीश्वर) की अनुभव वाणी

अथ देखा देखी को अंग

साखी

देखा देखी जाय थी, कीडी कुल की लार ।
हरिया विच ही फस रही, होय न सक्की पार ॥ १
दुनिया देखा देख मे, पकडी कुल की रेख ।
ऊल पैल मे रच रही, हरिया दूर अलेख ॥ २
देखा देखी जुग चले, हरिया कुल की लाज ।
आये थे कुछ काज कू, करि करि गये अकाज ॥ ३
हरिया देखा देख मे, भगति न आई हाथ ।
दुनिया दीन गमाय के, दुनी न चाली साथ ॥ ४
हरिया देखा देख मे, धरे ब्रह्म को ध्यान ।
एसे चित विन चाकरी, चूक जु पडे निदान ॥ ५
देखा देखी हरि भजे, प्रेम नेम नहि प्यास ।
जन हरिया मन मिरगज्यु वन वन फिरे उदास ॥ ६
देखा देखी भेख धरि, हुय बैठे हरिदास ।
ऊडे थे असमान कू, आय पडे धर पास ॥ ७
देखा देखी दास हुय, दुनिया दाखे ग्यान ।
खाली रहिया नाम विन, ज्यू तेगे विन म्यान ॥ ८
देखा देखी दास हुय, आपे हरि की ओट ।
खरा खरी के खेत मे, चले चापडे चोट ॥ ९
देखा देखी रूखडे, जाय चढी फल लेण ।
जन हरिया फिर जोइयो, लैन न काहू देण ॥ १०

रेखता १

जिदरी औसरे अजब जोगी बस, जुगत विन जानिया नांहि जाई।
प्रथम गुरुदेवकी आप सरसूत धरि, मग्न अरु सबकूं देत भाई ॥ १
रसनां रामकूं सिवर मत ढील कर एक विन दूसरी आस नाहीं।
पाट हिरदा खुले कवल नाभी फुल बोलता पुरुष कूं देख मांही ॥ २
आप गुरुदेव का दस्त राम्भै नहीं और कूं ग्यान उपदेश देव।
आठहि पहोर हरिनाम जो उच्चर, सांच नहिं आंण गुरुवेमुख सेव ॥ ३
आवता एक अरु एकही जात है अंघ अग्यान बहु करत मोहा।
दास हरिराम निज भेव पायां विनां, हाथ कंचन गह्यां होत लोहा ॥ ४

रेखता २

अगम अगाध मैं ग्यान पोथी पढ्या भ्रम अग्यांन कूं दूर त्याग्या।
नाम निरधार आधार मेरे भया गहर गुमांन मनमोह मारया ॥ १
तीन चकचूर कर चित्त चौथे गया नाम अस्थान धुन धम्मकारा।
सास उसास मे वास निरभै किया रमरया एक आतमयारा ॥ २
सहज मैं साम सुख रास ऐसे मंडे रूम में रूम ररकार लागे।
दास हरिराम गुरुदेव परतापतें हद कूं जीत बेहद लागे ॥ ३

इति

सम्मतियाँ

१३, सिविल लाइन्स,
१६ अप्रैल, १९६२

आजकल हमारे देश मे आर्थिक विकास के बहुत बडे-बडे कार्य चल रहे हैं परन्तु आध्यात्मिक विकास के अभाव मे किसी व्यक्ति या राष्ट्र का विकास अधूरा ही मानना चाहिये।

हमारे देश की सस्कृति को व्यापक व सुदृढ़ बनाने मे सन्तों व महात्मओं का सदैव पूरा योग रहा है। आज यह परम आवश्यक ह कि इन सन्त-महात्माओं के अनुभवों व विचारों का प्रसार किया जाय। इस दिशा मे श्री मदाद्य रामस्नेही साहित्य शोध प्रतिष्ठान, सेडापा, के द्वारा बहुत ही सराहनीय कार्य किया गया है। आचार्य श्री रामदासजी महाराज की वाणी का प्रकाशन इस दिशा मे एक महान व स्तुत्य प्रयत्न है। मे आशा करता हूँ कि यह प्रतिष्ठान और भी सन्त साहित्य को प्रकाशित करके हिन्दी साहित्य व भारतीय सस्कृति के गौरव को बढ़ायेगा।

रामनिवास मिर्धा
अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा जयपुर

× × ×

विनोबा स्वागत समिति
शिवसागर (आसाम)
१५-११-६१

पत्र मिला। श्री रामस्नेही सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य श्री रामदासजी महाराज की वाणी का सग्रह आप प्रकाशित कर रहे हैं, यह खुशी की बात है। हिन्दी में इस प्रकार का बहुत सा संत-साहित्य अप्रकाशित भरा पडा है। उसका प्रकाशित होना हिन्दी का गौरव बढायेगा, इसमें शक नहीं। लेकिन उसके साथ-साथ उस साहित्य में जो विशेषताएँ या नवीनताएँ हों वह भी लोगों के सामने आनी चाहिए। आशा करता हूँ मूल ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद इस तरफ भी 'शोध प्रतिष्ठान' ध्यान देगा।

विनोबा का जय जगत

× × ×

'श्री रामदासजी महाराज की वाणी' का मुद्रित संस्करण पाकर बडी प्रसन्नता हुई। इतने दिनों तक यह ग्रथ केवल हस्तलिखित रूप में ही पड़ा था और सबके

लिए सुलभ नहीं हो सकता था यह बड़े दुःख की बात थी और इसे देखने की इच्छा रखने वाले संत साहित्य के प्रेमी इसके लिए आतुर थे। पुस्तक बड़े अच्छे ढंग से छपी है और इसको सुन्दर बनाने में भरपूर चेष्टा की गई जान पड़ती है। प्रतिष्ठान का यह कार्य सर्वथा सराहनीय है और मैं आशा करता हूँ कि यह आगे भी ऐसे ही ग्रंथ-रत्न प्रकाशित कर एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति करेगा तथा हमारे साहित्य की समृद्धि में हाथ बंटायेगा। क्या ही अच्छा होता यदि यह संस्था 'रामस्नेही संप्रदाय' का पूरा साहित्य प्रकाशित कर देती और इसके साथ उसका एक प्रामाणिक इतिहास भी प्रस्तुत कर हमें उसका उचित ज्ञान कराती। संप्रदाय के वास्तविक सिद्धान्त एवं साधना तथा अन्य ऐसे संप्रदायों के साथ इसका तुलनात्मक अध्ययन भी एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जिसे वही पूरा कर सकने में समर्थ हो सकती है।

मैं ऐसी सुन्दर सफलता के लिए सम्पादकों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

बलिया
२६-१२-६१

आपका—
परशुराम चतुर्वेदी

× × ×

आपका २८-१०-६१ का कृपा पत्र मिला। इसे छपे पृष्ठ भी प्राप्त हुए। श्री रामस्नेही साहित्य शोध प्रतिष्ठान का यह प्रयत्न अत्यन्त अभिनन्दनीय है। मैं इस अनुष्ठान की हृदय से सफलता चाहता हूँ।

सहल सदन पिलानी
१०-११-६१

आपका—
कन्हैयालाल सहल

× × ×

श्री रामदासजी महाराज के साखी-संग्रह के कुछ पृष्ठ जो मुद्रित हो चुके हैं आपने भेजे। अनेक धन्यवाद। मैं तुरन्त उत्तर न दे सका। कारण था कि मैं पढ़ने के लिए समय न निकाल सका था। शरदावकाश में मैंने इन्हें पढ़ा। आपके सुप्रयास के लिए साधुवाद देता हूँ। इस पुस्तक का प्रकाशन संत परम्परा को एक सुन्दर शृंखला देगा जो मनुष्यों के हृदयों एवं आचार को अध्यात्म से बांधेगी और हिन्दी साहित्य को नवीन सामग्री देगी। पढ़ने पर पता चला अन्य संत कवियों के समान संग्रह में कोमल हृदय प्रतिबिंबित है। कृपया पूरा संग्रह प्रकाशित कर डालिये। प्रसाद के लिए धन्यवाद। समाप्त हो जाने पर पुस्तक रूप में भेज सकेंगे तो अनु-

गृहीत हूंगा। मैंने गुणगंज नामा का सार रूप में प्रकाशन किया था जो दयालु फार्मेसी बीकानेर से प्रकाशित हुआ था। उस समय भी रामदासजी का कुछ काव्य पढा था।

भवदीय—
गोपीनाथ तिवारी
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
(गोरखपुर विश्वविद्यालय)

३-१-६२

× × ×

राजस्थान मे सन्त साहित्य बहुत विस्तृत है व सुरक्षित है। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी से आरम्भ नाथ वाणियों के साथ-साथ राजस्थान के जितने सम्प्रदाय हैं उनके प्रवर्त्तकों तथा अनुयायियों ने अपनी आध्यात्मिक अनुभूति की हिन्दी भाषा में जो रचनाएँ की है वे हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने वाली है।

हरिदास, दादू, हरनामदास, दरियाव, चरणदास, रामचरण, रामदास आदि जो-जो सम्प्रदाय प्रवर्त्तक हुये हैं उन सबकी वाणी में आध्यात्मिक साधना की उच्च-कोटि की रचनायें है।

इन महात्माओं के अनुयायियों ने भी अपने आचार्यों का अनुसरण कर सस्कृत के उच्चकोटि के ज्ञाता हो कर भी अपनी रचनाएँ प्रचलित देशभापा में की। यह सब महत्वशाली सन्त-साहित्य साहित्यिकों से सर्वथा उपेक्षा किया हुआ महात्माओं के स्थानों मे बंधा पडा है। न मालूम कितना साहित्य जीर्ण-शीर्ण व विलुप्त हो गया है। इस सन्त साहित्य मे से कुछेक का प्रकाशन हुआ है।

जनजीवन के नैतिक स्तर को ठीक रखने के लिए यह सन्त-साहित्य अतीव हितकर हे। इसके प्रकाशन व प्रसार की परम आवश्यकता है।

वर्त्तमान खेडापा पीठाचार्य महोदय ने रामदासजी व रामदासजी महाराज के शिष्य-प्रशिष्यों द्वारा रचे गये साहित्य के प्रकाशन का शुभ निश्चय किया है यह अतीव प्रशसनीय कार्य है। उक्त निश्चयानुसार महाराज रामदासजी की वाणी का प्रकाशन हो रहा है। सम्पादन करने वाले हैं जसवन्त कॉलेज हिन्दी विभाग के प्राध्यापक रामप्रसादजी दाधीच तथा पीठाचार्य श्री हरिदासजी महाराज।

मुद्रित अश देखने में आया है—वह ठीक है। कठिन शब्दों के पर्याय व कठिन साखियों तथा साखीचरणों की समुचित व्याख्या की गई है जिससे पाठक को अर्थ समझने में किसी तरह की कठिनाई न हो। छपाई, कागज अच्छा है। पाठकगण उक्त साहित्य को पाकर अपनी आध्यात्मिक भावना की पूर्ति का पथ प्राप्त कर सकेंगे। आचार्यजी व सम्पादक महोदय इस स्तुत्य कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

दादू महाविद्यालय, जयपुर
१५-१०-१९६१।

मगलदास स्वामी

सहायक ग्रन्थों की सूची

क्र.	ग्रन्थ	लेखक
१	उत्तरी भारत की सन्त परम्परा	परशुराम चतुर्वेदी
२	कबीर	डा हजारीप्रसाद द्विवेदी
३	कल्याण (संत अंक)	गीता प्रेस गोरखपुर
४	कल्याण (साधनांक)	
५	भक्तिदर्शन	डा सरनामसिंह अरुण
६	भारतीय तत्व चिंतन	जगदीशचन्द्र जैन
७	भारतीय दर्शन	उमेश मिश्र
८	मराठी सन्तों का सामाजिक कार्य	डा वि भि कोलते
९	राजस्थानी भाषा और साहित्य	डा मोतीलाल मेनारिया
१	राजस्थानी भाषा और साहित्य	डा हीरालाल माहेश्वरी
११	राजस्थान का आध्यात्मिक परिचय	
१२	सन्तवाणी	वियोगी हरि
१३	सन्त सुधासार	
१४	सन्त दरियावजी की वाणी	
१५	साहित्य कोष	डा धर्मवीर भारती
१६	श्री आचार्य चरितामृत	हरिदास शास्त्री दर्शनायुर्वेदाचार्य
१७	श्री रामस्नेही धर्मप्रकाश	बड़ा रामद्वारा बीकानेर
१८	हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय	डा पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल
१९	हिन्दी साहित्य की भूमिका	डा हजारीप्रसाद द्विवेदी
२	हिन्दी साहित्य का आदिकाल ----	,,
२१	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा रामकुमार वर्मा